ગુલિસ્તાઁ-એ-શાયરી

સંપાદક:
[illegible] ભટ્ટ

अदा

अदा परियों की, जोबन हूर का, शोखी गज़ालों की
गरज माँगे की हर ईक चीज़ है, ईन हुस्नवालों की

हफीज़ जौन पुरी

मैं देर तक तुझे खुद ही न रोकता लेकिन
तू जिस अदा से उठा है इसीका रोना है

'फिराक' गोरखपुरी

अदा है याद तेरे मुस्कुरा के आने की
और उसके बाद वो दामन छुड़ा के जाने की

असर लखनवी

हमारी आँखों में आओ तो हम दिखाएं तुम्हें
अदा तुम्हारी, जो तुम भी कहो कि 'हाँ, कुछ है'

रियाज़ खैराबादी

अपना अदा-शनास[१] बन, अपना जमाल भी तो देख
तुझमें कमी है कौन-सी, तुझमें कमी कोई नहीं

अदीब मालेगांवी

अदा आई, जफा आई, गरुर आया, हिजाब आया,
हजारों आफतें लेकर हसीनों का शबाब आया

नूर नारवी

---

१. अदा पहचानने वाला

कुछ ईस अदा से आज वो पहलूनशीं रहे
जब तक हमारे पास रहे, हम नहीं रहे

जिगर मुरादाबादी

आफत तो है वो नाज़ भी, अंदाज़ भी, लेकिन
मरता हूँ मैं जिस पर वो अदा और ही कुछ है

अमीर मीनाई

कुछ इस अदा से आपने पूछा मेरे मिज़ाज
कहना पड़ा कि शुक्र है परवरदिगार का

ये तबस्सुम[१], ये तकल्लुफ[२], ये तगाफुल[३], ये अदा
यही अंदाज़ तो दीवाना बना देते हैं

कमर सम्भली

साथी शोखी[४] के कुछ हिजाब[५] भी है
ईस अदा का कहीं जवाब भी है

दाग़

खुदा जाने करेगा चाक[६] किस किसके गरीबाँ को
अदा से उनका चलने में वो दामन[७] को उठा लेना

जुरअत

इश्वों[८] को चैन ही नहीं आफत किए बगैर
तुम और मान जाओ शरारत किए बगैर

जोश मलीहाबादी

---

१. स्मित, २ शिष्टाचार, ३. उपेक्षा, ४. चंचलता, ५. शरम
६. फटा हुआ, ७. पालव, ८. नखरें और अदा

तेरी एक-एक अदा पहचानी
अपनी एक-एक खता मान गए

ज़हेरा निगाह

मिलते हैं इस अदा से कि गोया खफा नहीं
क्या आपकी निगाह से हम आशना[१] नहीं ?

हसरत मुहानी

तेरी अदाएं दिल को लुभाएं तो क्या करें ?
आँखें न मानें देखे ही जायें तो क्या करें ?

असर लखनवी

मुझसे इरशाद यह होता है कि 'तडपा न करो'
कुछ तुम्हें अपनी अदाओं पे नज़र है कि नहीं ?

जलील मानिकपुरी

हम जिस पर मर रहे हैं वो बात ही कुछ और
आलम में तुझ-सा लाख सही, तू मगर कहाँ ?

हाली

आइनें में वो अपनी अदा देख रहे हैं,
मर जाए कि जी जाए कोई, उनकी बला से

राना अकबराबादी

इस अदा का तेरी जवाब नहीं
मेहरबानी भी, सरगिरानी[२] भी

फिराक गोरखपुरी

इस अदा से मुझे सलाम किया
अेक ही आन[३] में गुलाम किया

आसफुद्दौला

१. परिचित, २. गुस्सा, ३. क्षण

अजब अदा से चमन में बहार आती है
कली कली से मुझे बू-ए-यार आती है

जलील मानिकपुरी

बिजलियों से सीख ली उनके तबस्सुम[१] की अदा
रंग ज़ुल्फों का चुरा लाई घटा बरसात की

'सबा' अफगानी

मैं सवाले-वस्ल[२] करके उस अदा पे मिट गया
हँस के फरमाया कि ये दरख्वास्त[३] नामंज़ूर है

रसा

अदाएं उनकी दिल से खेलती हैं
वो क्या जानें वफा क्या है ? जफा क्या ?

फिराक गोरखपुरी

अदाएं तेरी कोई समझा न समझे
हँसाकर रुलाया, रुलाकर हँसाया

साग़र

किस अदा से पूछते हैं, मेरी सूरत देखकर -
'यह तेरा क्या हाल है, दो दिन में कैसा हो गया ?

आगा शाइर किजिलबाश

सामने आईना रखते गश[४] आ-आ जाता
तुमने अन्दाज़ नहीं अपनी अदा का देखा

आतिश

अै जान ! कहो फिर इस अदा से -
'मैं आज 'निज़ाम' से खफा हूँ'

निज़ाम रामपुरी

---

१. स्मित, २. मिलन की मांग, ३. प्रार्थना, ४. बेहोशी

लडकपन की अदा है जानलेवा
गजब ये छोकरी है हाथ-भर की

फिराक गोरखपुरी

नया बिस्मिल[१] हूँ मैं वाकिफ नहीं रस्मेशहादत[२] से
बता दे तू ही ए जालिम ! तड़पने की अदा क्या है?

चकबस्त

जो तेरे दिल को लुभा ले वो अदा मुझमें नहीं
क्यों न तुझको कोई तेरी ही अदा पेश करुँ ?

साहिर लुधियानवी

मेरा करार[३], मेरा चैन, मेरा सब्रो-सुकूँ[४]
सभी को लूट लिया आपकी अदाओं ने

तमन्ना अम्बालवी

तबियत जो उन पर आ गई तो क्या करुँ
अदा उनकी जो भा गई तो क्या करुँ

अनवर आगेवान

इस अदा से वो जफा[५] करते हैं
कोई जाने कि वफा करते हैं

दाग़

आपने तस्वीर भेजी, मैंने देखी गौर से
हर अदा अच्छी खामोशी की अदा अच्छी नहीं

जलील मानिकपुरी

हया से सर झुका लेना, अदा से मुस्कुरा देना
हसीनों को भी कितना सहल है बिजली गिरा देना

---

१. घायल २. शहीद होने का तरीका, ३. संतोष, ४. धैर्य और शांति ५. अत्याचार

अफसाना (कथा)

मैं इसे शोहरत कहूँ या अपनी रुसवाई कहूँ
मुझसे पहले उस गली में मेरे अफसाने गए
कतील फिरकाई

बज़्म में सुबह हुई, छा गया इक सन्नाटा,
सिलसिला छिड़ गया जब आपके फसाने का
यास 'यगाना' चंगेजी

कोई हद ही नहीं शायद मोहब्बत के फसाने की
सुनाता जा रहा है, जिसको जितना याद होता है
जिगर मुरादाबादी

वाए नादानी कि वक्ते-मर्ग[१] ये साबित हुआ
ख्वाब था जो कुछ कि देखा, जो सुना अफसाना था
मीर 'दर्द'

मज़ा आता अगर गुजरी हुई बातों का अफसाना
कहीं से हम बयाँ करते, कहीं से तुम बयाँ करते
वहशत कलकतवी

है हस्ती-ए-आशिक का[२] बस इतना ही फसाना
बर्बाद थी, बर्बाद है, बर्बाद रहेगी
कुंवर महेन्द्रसिंह बेदी

बात बढकर फसाना बनती है
बात सुनता नहीं है जब कोई
'राही' कुरैशी

---

१. मृत्यु समय २. आशिक की जिंदगी का

सुनता हूँ बड़े गौर से अफसाना-ए-हस्ती
कुछ ख्वाब है, कुछ असल है, कुछ तर्जे-अदा है
असगर गोंडवी

तुम्हारी अंजुमन से उठ के दीवाने कहाँ जाते
जो वाबस्ता हुए तुमसे वो अफसाने कहाँ जाते
कतील शिफाई

बैठिये, सुनिये अब अफसाना-ए-फुर्कत[१] मुझसे,
आपने याद दिलाया तो मुझे याद आया
दाग़

वो फसाने हो गए हैं अब मता-ए-खासो-आम[२]
जो फसाने हम समझते थे, हमींको याद है
हसन 'नइम'

कह के ये फेर लिया मुँह मेरे अफसाने से
फायदा रोज़ कही बात के दोहराने से
फहीम गोरखपुरी

तुझे कुछ इश्को-उल्फत के सिवा भी याद है ऐ दिल
सुनाए जा रहा है एक ही अफसाना बरसों से
अब्दुल मजीद 'सालिक'

है, 'सैफ' बस इतना ही तो अफसाना-ए-हस्ती[३]
आए थे परेशान, परेशान गए हम
सैफुद्दीन 'सैफ'

कहानी है तो ईतनी है फरेबे-ख्वाबे-हस्ती की
कि आँखें बंद हों और आदमी अफसाना हो जाए
सीमाम अकबराबादी

१. विरह की कहानी २. सामान्य और विशेष लोगों की संपत्ति ३. जीवन कहानी

कभी कहा न किसीसे तिरे फसाने को
न जाने कैसे खबर लग गई ज़माने को

कमर जलालवी

अफसाना-गो ने और भी बेताब कर दिया,
जालिम सुना रहा है मेरी दास्तां मुझे -

तस्लीम लखनवी

ये उड़ी-उड़ी सी रंगत ये खुले-खुले से गैसू[१]
तेरी सुबह कह रही है, तेरी रात का फसाना[२]

एहसान दानिश

सावन की रैन अँधेरी तनहाइयों का[३] आलम
भूले हुए फसाने सब याद आ रहे हैं

जिगर मुरादाबादी

कौन सुनता है कहानी मेरी
और फिर वह ज़ुबानी मेरी

गालिब

कहने सुनने में जो नहीं आती
वो भी एक दास्तान है प्यारे

जिगर मुरादाबादी

सुबह तक देखना अफसाना बना डालेगा
तुझको इक शख्स ने देखा है मेरे कमरे में

ज़फर गोरखपुरी

मुझे तो होश नहीं, आप मशवरा[४] दीजे
कहाँ से छेड़ूँ, फसाना कहाँ तमाम करूँ ?

शकील नोमानी

---

१. जुल्फ २. बात ३ एकान्त ४. सलाह

मेरी जबाँ से मेरी दास्ताँ सुनो तो सही
यकीं करो या न करो, मेहरबाँ सुनो तो सही

सुदर्शन फाकिर

खामोशी मेरी मानीखेज[१] थी ऐ 'आरज़ू' कितनी
कि जिसने जैसा चाहा वैसा अफसाना बना डाला

आरज़ू लखनवी

चलते-चलते किस नज़र से उसने देखा क्या कहूँ ?
दिल के अफसाने में इक टुकडा नया शामिल हुआ

दिल शाहजहाँपुरी

दर्दे-दिल सुनके मेरा समझे फसाना है कोई
बोले -'रुकिये न, कहे जाईये, हाल अच्छा है'

हफीझ जौनपुरी

तुम सुनोगे उसे ? तुम सुनके तसल्ली[२] दोगे ?
वाह ! क्या खूब ! कहूँ तुमसे फसाना दिल का

नसीम भरतपुरी

नजर में ढलके उभरते हैं दिलके अफसाने
ये और बात है, दुनिया नजर न पहचाने

गुलाम मुस्तुफा 'तबस्सुम'

अपनी मुहब्बत के अफसाने कब तक राज़ बनाओगे
रुसवाई से डरने वालों, बात तुम्हीं फैलाओगे

अहमद फराज़

दास्ताँ उनकी अदाओं की है रंगीं, लेकिन
उसमें कुछ खूने-तमन्ना भी है शामिल अपना

असगर गौंडवी

---

१ अर्थपूर्ण २ धैर्य

देखकर मेरी तरफ खामोश हो जाना जरा
मैं फसाना जब कहूँ आँसू न भर लाना जरा

अभी से जाने लगे हो, जरा ठहर जाओ
अभी पहाड़ सी ये दास्तान बाकी है

वजीर आगा

सुनायें तुम्हें दास्ताने-फिराक
मगर कब किसीसे सुना जाये है

फिराक गोरखपुरी

अब आगे इसमें तुम्हारा भी नाम आएगा
जो हुकम हो तो यहीं छोड़ दूँ फसाने को

कमर जलालवी

दुश्वार[१] होती ज़ालिम, तुझको भी नींद आनी
लेकिन सुनी न तूने टुक भी मेरी कहानी

ख्वाजा मीर दर्द

समझे वही उसको जो हो दीवाना किसीका
अकबर ये गज़ल मेरी है अफसाना किसीका

अकबर ईलाहाबादी

मिर हयात का[२] उन्वान[३] बनके आ जाओ
हे नातमाम[४] अभी जिन्दगी के अफसाने

मेंहदी हसन

फराहम[५] कर रहा हूँ अपनी बर्बादी के अफसाने
जो गलियाँ मैंने देखी थीं वो गलियाँ देखता हूँ मैं

नातिक

---

१. मुश्किल २. जिन्दगी ३. शीर्षक ४. अधूरा ५. इकट्ठा

कई उन्वान[१] तो ऐसे हैं कि तडपा देंगे
खत्म तक कौन सुनेगा मेरे अफसाने को ?

बेखुद देहलवी

वही झगड़ा है फुर्कत[२] का, वही किस्सा है उल्फत[३] का
तुझे ऐ 'दाग़', कोई और भी अफसाना आता है ?

दाग

तेरी नजरों से गिर जाना, तेरे दिल से उतर जाना
ये वो अफसाना है, जिससे बहुत अच्छा है मर जाना

महरुम

वो शबाब[४] के फसाने जो मैं सुन रहा हूँ दिल से
अगर और कोई कहता तो न एतबार आता

साकिब लखनवी

दफन कर सकता हूँ सीने में तुम्हारे राज़[५] को
और तुम चाहो तो अफसाना बना सकता हूँ मैं

मजाज़

बनाने वाले बना लें हजार अफसाने
मगर मिरे गम-ए-पिन्हाँ[६] को कोई क्या जाने

फलक

आलम-ए-हू[७] में इक आवाज़ सी आ जाती है
चुपके-चुपके कोई कहता है फसाना दिल का

रियाज खैराबादी

अपना अफसाना सुनाता हूँ किसीके नाम से
इस तरह दिलचस्प ये रुदाद[८] कर लेता हूँ

अर्श मल्सियानी

---

१. शीर्षक २. विरह ३. प्यार, ४. जवानी ५. भेद ६. छिपी हुई व्यथा ७. शांत स्थिति ८. कहानी

हँसी फिर उड़ने लगी इश्क के फसाने की
नकाब[१] उठाओ, बदल दो फिजा[२] जमाने की

जिगर मुरादाबादी

हो चुकी जब खत्म अपनी जिन्दगी की दास्ताँ
उनकी फरमाईश हुई है इसको दोबारा कहें

शमशेर बहादुर सिंह

कहूँ क्या फसाना-ए-गम[३], उसे कौन मानता है
जो गुजरी है मुझ पर मिरा दिल ही जानता है

कतील शिफाई

सुनेगा कौन मेरी चाक-दामानी[४] का अफसाना
यहाँ सब अपने-अपने पैरहन[५] की बात करते हैं

कलीमुद्दीन

जो कह रहा था तो कुछ भी न सुना दुनिया ने
जो चुप हुआ हूँ तो बनने लगे हैं अफसाने

'नाजिश' प्रतापगढी

मेरी दीवानगी, नासेह[६] को आकिल[७] बन के समझाना
इस अफसाने को जो सुनता है, घड़ियों मुस्कुराता है

शाद अजीमाबादी

फसाना ना समझना इसे, जिंदगानी है मेरी
हर मरीज़े-ईश्क८ को ये अपनी सी लगे

कुमार 'आँसू'

---

१. परदा २. वातावरण ३. दु:ख की कथा ४. पल्लू का फटना ५ वेशभूषा ६. उपदेशक ७. बुद्धिमान ८. प्रेम में घायल

जिद्दी, वहशी[१], अल्हड, चंचल, मीठे लोग, रसीले लोग
होंट उनके गझलों के मिसरे[२], आँखों में अफसाने

इब्ने इन्सा

वो बात, सारे फसाने में जिसका ज़िक्र न था
वो बात उनको बहुत नागवार[३] गुजरी है

फैज अहमद फैज

ये बातें, और मुझसा कहने वाला
फसाना और फिर तेरा फसाना

हफीज़ जौनपुरी

न मैं सुनाऊँ, न कोई सुने जमाने में
गजब ये कैद लगी है मेरे फसाने में

हफीज़

रुख बदलने लगा फसाने का
लोग महफिल से उठके जाने लगे

बाकी सिद्दीकी

बाकी जहाँ में कैस[४] न फरहाद रह गया
अफसाना आशिकों का फकत याद रह गया

दाग़

इज्तिराबे-दिल[५] की हालत हमनशीं[६] मुझसे न पूछ
इक नया अफसाना छिड़ जाता है अफसाने के बाद

पं.जगमोहननाथ रैना

तुमने बात कह डाली, कोई भी न पहचाना
हमने बात सोची थी, बन गए हैं अफसाने

ज़ेहरा बानो 'निगाह'

---

१. जंगली २. पंक्तियाँ ३. अप्रिय ४. मजनु ५. बेचेन दिल ६. मित्र

अमल (आचरण)

अमल से ज़िंदगी बनती है, जन्नत भी जहन्नुम भी
ये खाकी[१] अपनी फितरत में[२] न नूरी[३] है न नारी[४] है
ईकबाल

जो भी करना हो वो कर गुजरो, ये दिल की राय है
सोचने वाला हमेशा सोचता रह जाए है
वकील 'अख्तर'

अमल जब तक न हो अच्छा-बुरा परखा नहीं जाता
यही है वो कसौटी जो खरे खोटे को कसती है

जब मैं कहता हूं कि या अल्लाह मेरा हाल देख
हुकम होता है कि अपना नामा-ए-आमाल[५] देख
स्वामी राम

आखिरत में अमल-ए-नेक[६] ही काम आऐंगे
पेश है तुझको सफर, जाद-ए-सफर[७] पैदा कर
अमीर मीनाई

अमल की छाँव में चलता रहा गर कारवाँ अपना
वहीं मंझिल चली आए, कदम पहुँचे जहाँ अपना
जामी कामटवी

बशर, आमाल कर अच्छे, तिरे उकबा[८] में काम आए
वहाँ जन्नत नहीं मिलती, यहाँ से साथ जाती है
बनारसी

---

१. मनुष्य २. प्रकृति, ३ दैवी ४. नारकीय ५. कामों की सूचि ६. भलाई का काम
७. यात्रा का मार्ग ८. परलोक

अयादत (बीमारी का हाल पूछने जाना)

आया न एक बार अयादत[१] को वो मसीहा[२]
सौ बार फरेब-से[३] मैं बीमार हो चुका

अमीर मीनाई

किस वक्त आप मेरी अयादत को आये हैं
जब सुन चुके, गले से उतरती दवा नहीं

मुश्तरी लखनवी

अयादत को मेरी आकर वो यह ताकीद करते हैं
'तुझे हम मार डालेंगे, नहीं तो जल्द अच्छा हो'

दाग़

आने में सदा देर लगाते ही रहे तुम
जाते रहे हम जान से, आते ही रहे तुम

रासिख

उनके देखे से जो आ जाती है मुँह पर रौनक
वो समझते हैं कि बीमार का हाल अच्छा है

गालिब

तुमने आकर मिज़ाज पूछ लिया
अब तबीयत कहाँ सँभलती है

जलील मानिकपुरी

हाले-बद[४] गुफ्तनी[५] नहीं मेरा
तुमने पूछा तो मेहरबानी की

मीर

---

१. बीमार का हाल पूछना २. मित्र, प्रेमिका ३. चालाकी से ४. खराब हालात
५. दिखाने जैसा

देखने आये थे वोह अपनी मुहब्बत का असर
कहने को ये है कि आये हैं अयादत करने

हसरत मुहानी

आया है अयादत को मेरी सारा जमाना
अब वो भी चले आयें, ये इम्कॉं[१] सा लगे हैं

मुजफ्फर शिकोह

अगर आप भी बीमार को हौसला दें
तवानाइयाँ[२] ही तवानाइयाँ हैं

अदम

देख आओ मरीजे-फुरकत को[३]
रस्मे-दुनिया[४] भी है, सबाब[५] भी है

देख लेता है वो पहले चारसू अच्छी तरह,
चुपके से फिर पूछता है, 'मीर' तू अच्छी तरह ?

मीर

पुरसिशेगम[६] का शुक्रिया, क्या तुझे आगही[७] नहीं
तेरे बगैर जिन्दगी, दर्द है, ज़िन्दगी नहीं

अेहसान दानिश

उसने अगर करम भी किया तो जफा[८] के बाद
आया मेरी खबर को सितमगर कजा[९] के बाद

दाग़

अभी बीमारे-गम[१०] को देखना है तो आ जाओ
कि थोड़ी देर में फिर खुदा जाने कहाँ होगा ?

नादाँ बरेलवी

---

१. संभावना २. शक्ति ३ विरह से बीमार ४. दुनियाकी रीत ५. पुण्य ६. दु:ख के बारे में पूछना ७. जानकारी ८. अत्याचार ९. मौत १०. प्रेमी

वो अयादत के लिये आये हैं, लो और सही
आज ही खुबी-ऐ-तकदीर[१] से हाल अच्छा है

दाग़

किस वक्त बहरे-पुर्सिशे-बीमार[२] आये वो
जब आँख से भी अपनी इशारा न हो सका

नूरजहाँ नाझ

बहरे-अयादत आये वो लेकिन कजा[३] के साथ
दम ही निकल गया मेरा, आवाजे-पा[४] के साथ

मोमिन

वो न आये कभी अयादत को
दर्द बढ़कर दवा हुआ तो क्या

हर्जी

अयादत होती जाती है, इबादत होती जाती है
मेरे मरने की देखो, सबको आदत होती जाती है

मीनाकुमारी

अयादत को आए शिफा[५] हो गई
मेरी रूह[६] तन से जुदा हो गई

कभी की थी जो अब दवा कीजिएगा
मुझे पूछकर आप कया किजिएगा ?

हसरत मुहानी

सब तो खैर, उनकी हाल-पुरसी पर[७]
दिल उमड़ आया, अश्क[८] भर आए

आरजू लखनवी

---

१. भाग्य २. बीमार का हाल पूछना ३. मृत्यु ४. पाँव की आवाज़/आहट ५. तंदुरस्ती
६. आत्मा ७. बीमार का हाल पूछते समय ८. आंसु

जब पुर्सिशे-हाल[१] पर कहता हूँ एहसान है आपका जिंदा हूँ
कहते हैं किस-किस पहलू[२] से अब मेरी शिकायत होती है

अंजुम मानपुरी

जब हमें बज़्म में[३] आने की इजाजत न रही,
फिर ये क्यों पुर्सिशे-हालात है, ये भी न सही

आजाद अंसारी

सब आये मेरी अयादत को वो भी आया था,
जो सब गये तो मेरा दर्द-आश्ना भी गया

परवीन शाकिर

अयादत को आए शिफा हो गई
अलालत[४] हमारी दवा हो गई

अकबर ईलाहाबादी

इक बार और भी मेरी अयादत को आईए
अच्छी तरह से मैं अभी अच्छा नहीं हुआ

तस्वीर

मुँद गई खोलते ही खोलते आँखें 'गालिब'
खूब वक्त आये हो इस आशिक-ए-बीमार के पास

गालिब

१. हाल पूछने पर २. तरीका ३ महेफिल में ४. रोग, बीमारी

उसने किस लुत्फ[१] से पूछा कि 'असर' कैसे हो
बेखुदी[२] का हो बुरा, कह दिया कुछ याद नहीं

असर लखनवी

गैर के साथ अयादत को वो दिलरुबा[३] आया
लो मसीहा[४] मलकुल-मौत[५] को लेकर आया

शोर

बहुत अच्छा हूँ ऐसी क्या जरुरत थी अयादत की
अदू[६] के साथ आप आए, बड़ी मुझ पर इनायत[७] की

हमीद मेरठी

ठहर जा ऐ कजा[८], आता है वो मेरी अयादत को
दम-ए-आखिर[९] तो मिल लेने दे मुझको उस सितमगर से

हमदम

कभी अफसोस आता है, कभी रोना आता है
दिल-ए-बीमार के हैं दो ही अयादत वाले

जौक

उठे, उठकर चले, चलकर रुके, रुककर कहा होगा
मैं क्यों जाऊँ, बहुत हैं उनकी हालत देखने वाले

मुजतर खैराबादी

जाँ-बलब[१०] था तो अयादत को भी आ जाते थे
मैं तो लो और बुरा हो गया, अच्छा होकर

'तस्वीर'

'अज़ीज' अब कौन सा वक्त आ गया ? क्या होनेवाला है ?
कि वो खुद पूछते हैं हाल आकर दम-ब-दम[११] मेरा

अज़ीज लखनवी

---

१. मज़ा, २. बेहोशी ३. प्रियतमा ४. देव-दूत ५. यमराज ६. शत्रु ७ कृपा, ८ मौत ९. अंतिम श्वास १०. मरणासन्न ११. बारबार

अरमान

हझरते - दिल ! आप हैं किस ध्यान में
मर गए लाखों इसी अरमान में

दाग़

हजारों ख्वाहिशें ऐसी कि हर ख्वाहिश पे दम निकले
बहुत निकले मिरे अरमान लेकिन फिर भी कम निकले

गालिब

सीने से लगाऐं तुम्हें अरमान यही है
जीने का मज़ा है तो मेरी जान यही है

अकबर ईलाहाबादी

मुझको अरमान मनाए कोई मेरे दिल को
उनको यह हट कि खफा हैं तो खफा रहने दो

रियाज

गैरों के पास जाना, हमसे कभी न मिलना
अफसोस है तो यह है, अरमान है तो यह है

रंगीन

अरमान तमाम उम्र के सीने में दफन है
हम चलते-फिरते लोग मजारों से कम नहीं

शेफता

नाक रगड़ी बरसों इसी अरमान में
सुन ले मेरी बात एक दिन कान में

अकबर

देर हो जाए बला से उन्हें आराइश[१] में
रह न जाए किसी कमबख्त का अरमान कोई

दिले-वीराँ में अरमानों की बस्ती तो बसाता हूँ
मुझे उम्मीद है हर आरज़ू गम साथ लाएगी

जलील

जिसकी हसरत थी उसे पा भी चुके, खो भी चुके
अब किसी चीज का हमको नहीं अरमान होता

नातिक गुलावठी

किस दर्जा दिल-शिकन[२] थे मुहब्बत के हादसे
हम जिंदगी में फिर कोई अरमान न कर सके

साहिर लुधियानवी

आपके सर की कसम, 'दाग़' को परवाह भी नहीं
आपसे मिलने का होगा जिसे अरमान होगा

दाग़

परेशां हुआ दोस्ती करके मैं
बहुत मुझको अरमान था चाह का

मीर

एक हम हैं कि हुए ऐसे पशेमान[३] कि बस
एक वो हैं कि जिन्हें चाह के अरमाँ होंगे

मोमिन

दिल है किसका जिसमें अरमाँ आपका रहता नहीं
फर्क है इतना कि सब कहते हैं, मैं कहता नहीं

नातिक लखनवी

---

१. सजावट २. दिल को तोड़ने वाला ३. लज्जित

अरमान हमें एक रहा हो तो कहें भी
क्या जाने, ये दिल कितनी चिताओं में जला है
जाँनिसार अख्तर

जिन्हें हासिल है तेरा कुर्ब[1] खुश किस्मत सही लेकिन
तेरी हसरत पे मर जाने वाले और होते हैं
पंडित हरिचन्द अख्तर

उठ गया आखिर मुहब्बत का भी पर्दा उठ गया
अब न मेरे दिल में हसरत है न उनके दिल में है
जिगर मुरादाबादी

मुन्हसिर[2] मरने पे हो जिसकी उमीद
ना-उमीदी उसकी देखा चाहिए
गालिब

दिल में 'हाली' के रहे बाकी न बस अरमान कुछ
जी में है कुछ अब अगर बाकी तो यह अरमान है
हाली

हसरतों का सिलसिला कब खत्म होता है 'जलील'
खिल गये जब गुल तो पैदा और कलियाँ हो गईं
जलील मानिकपुरी

अरमान बहुत रखते थे हम दिल के चमन में
बैठे न खुशी से कभी साये के तले हम
वजीर

अरमानों के सूने घर में हर आहट बेगानी निकली
दिल ने जब नजदीक से देखा हर सूरत अनजानी निकली
साहिर लुधियानवी

---

१. सामीप्य २. निर्भर

आ गई है तेरे बीमार के मुँह पर रौनक
जान क्या जिस्म[1] से निकली, कोई अरमाँ निकला

फानी बदायूनी

आह होती मेरे लब पर न ये नाला[2] होता
एक भी तूने जो अरमान निकाला होता

रसा

अश्क (आंसु, अश्रु)

देख सकता है भला कौन ये प्यारे आँसू
मेरी आँखों में न आ जायें तुम्हारे आँसू

अख्तर शीरानी

थमते-थमते थमेंगे आँसू
रोना है कुछ हँसी नहीं है

मीर

जब किसी आँख से गिरा आँसू
अपनी पलकों पे ले लिया हमने

नरेश कुमार 'शाद'

मुद्दत के बाद उसने जो की लुत्फ की निगाह,
जी खुश हो गया मगर आँसू निकल पड़े

'कैफी' आझमी

रोने वाले तुझे रोने का सलीका ही नहीं
अश्क पीने के लिए हैं कि बहाने के लिए ?

आनंद नारायण मुल्ला

---

१. शरीर २. आर्तनाद

कुछ हसीं ख्वाब और कुछ आँसू
उम्र भर की यही कमाई है

मज़हर इमाम

अजनबी शै थी खुशी, घबरा गए
हँसते ही आँखों में आँसू आ गए

शहीद कबीर

बह गए अश्क मेरी आँखों से
कारवाँ लूट गया बहारों का

'खलिश'

शक न कर मेरी खुश्क[१] आँखों पर
यूँ भी आँसू बहाए जाते हैं

'सागर' निज़ामी

उन्हीं गलियों में जब रोते थे हम 'मीर'
कई दरिया की धारें हो गई हैं

मीर

इन आँसुओं की हकीकत को कौन समझेगा ?
कि जिनमें मौत नहीं, जिन्दगी का मातम[२] है

सिरहाने[३] 'मीर' के आहिस्ता बोलो
अभी टुक रोते-रोते सो गया है

मीर

मैं वह रोने वाला जहाँ से चला हूँ
जिसे अब्र[४] हर साल रोता रहेगा

मीर

---

१. शुष्क/सूखी २ शोक ३. तकिया ४. बादल

अजब नहीं जो उगें याँ दरख्त[१] पानी के
कि अश्क बोये हैं शब-भर[२] किसीने धरती में

शिकेब जलाली

आज हमारे अश्कों से दामन को बचा लें आप मगर
ये वो मोती हैं कल जिनको, शबनम शबनम चुनियेगा

सहबा अख्तर

तड़पती क्यों हैं ऐ बुलबुल, कमाल इतना तो पैदा कर
कि तेरा अश्क जिस जा[३] गिर पड़े गुलझार[४] पैदा हो

सोज

क्या जानिये कि दिल पर गुजरे है 'मीर' क्या-क्या
करता है बात कोई आँखें पुरआब[५] कर-कर

मीर

अश्क-ए-खूँ चश्म से बहते हैं
फिर भी तो रौशनी नहीं होती

'हामिद'

इन्हें आँसू समझकर यूँ न मिट्टी में मिला जालिम
पयामे-दर्दे-दिल[६] है और आँखों की जबानी है

जिगर मुरादाबादी

जो आग लगाई थी तुमने उसको तो बुझाया अश्कों ने
जो अश्कों ने भडकाई है, उस आग को ठंडा कौन करे

मुईन अहसन 'जज्बी'

आज आँसू तूने पोंछे भी तो क्या
ये तो अपना उम्र भर का काम है

जलील मानिकपुरी

---

१. पेड़ २. रात भर ३. जगह ४. बाग ५. आंसु भर के ६. दिल के हाल का संदेश

हम तो 'हजीं' ये समझे हैं दामन जो भिगो दे पानी है
आँसू तो वही इक कतरा है, पलकों पे जो तड़पे बह न सके

'हजीं'

मेरी आँखें भी हैं वीरां मेरा दिल भी खाली
चन्द आँसू भी नहीं खुद पे बहाने के लिए

मखमूर सइदी

तुम इसे शिकवा समझकर किस लिए घबरा गए
बाद मुद्दत के जो देखा था तो आँसू आ गए

अनवर साबरी

जब तुम्हें मुझसे जियादा है जमाने का खयाल
फिर मेरी याद में यूँ अश्क बहाती क्यों हो ?

साहिर लुधियानवी

बरस ऐ अब्र[१] जितना चाहे तू अब तेरी बारी है
कभी दिल था तो मैं रो-रोके एक दरिया बहाता था

जियाउद्दीन 'जिया'

पी लीया ? लौट गया ? खुश्क[२] हुआ ? -कुछ तो बता
क्या हुआ आँख से आँसू वो टपकने वाला

वजीर आगा

अश्क ने मेरे मिलाये कितने ही दरिया के पाट
दामने सहरा[३] में वर्ना इस कदर कब फेर था ?

ख्वाजा मीर दर्द

शबनम[४] और आँसू दोनों हैं, इस फर्क को लेकिन क्या कहिए ?
जो खाक पे है वह पानी है, जो फूल पे है वह मोती है

नज्मा तसदुक

१. बादल २. सूखा ३. जंगल ४. ओस

हवादिस[1] से उलझकर मुस्कुराना मेरी फितरत है
मुझे दुश्वारियों[2] पर अश्क बरसाना नहीं आता

अख्तर शीरानी

गिर के उसीकी गली में खाक में मुफ्त
अश्क की मोती की-सी आब[3] गई

मीर

हर दर्दमन्द दिल को रोना मेरा रुला दे
बेहोश जो पड़े हैं, शायद उन्हें जगा दे

इकबाल

कोई 'काविश' भले न समझे
अश्क एक दास्तान होता है

'काविश'

दुनिया का एतबार करें भी तो क्या करें
आँसू तो अपनी आँख का अपना हुआ नहीं

'अदीब'

अपनी खुशी में मेरे गम को भी निबाह लो
इतना हँसो कि आँख से आँसू निकल पड़े

कोई पहुँचा न उनके दामन तक
अश्क आँखों में बेशुमार आए

'मस्त रहमानी

थक गई है जबाँ तो चुप होकर
काम में आँसूओं को लाए है

'मखमूर' कादरी

---

१. दुर्घटना २. कठिनाइयाँ ३. चमक

हजार जब्त किया फिर भी आ गए आँसू
अगर किसीने कहा हमसे मुस्कुराने को

'अलमास'

कहते हैं आँसूओं से बुझाएंगे हम तुझे
ये दिल्लगी भी करते हैं दिल की लगी से हम

दाग़

मेरी आँखों में आँसू तुझसे हमदम[१] क्या कहूँ क्या है
ठहर जाए तो अंगारा है, बह जाए तो दरिया है

फानी बदायूनी

बेसबब आँख से जब अश्क उमड़ आते हैं
हमको बेवक्त की बरसात से डर लगता है

'आसी' कानपुरी

दर्द सीने में जरा जागा तो आँखें खुल गईं
दिल में कुछ चोटें उभर आई तो आँसू आ गए

शायर अमरोहवी

दिल आँसू की दो बूँदों से कुछ हल्का-सा हो जाता है
अब इससे ज्यादा और उजाला टूटे तारे क्या करते

अब्बासअली खाँ 'बेखुद'

इतने आँसू ही कहाँ थे कि बुझाते ये आग
अपना घर हमने यूँ ही जलता हुआ छोड़ दिया

अेस. अे. रज्झाक

किसीकी याद में आँसू बहाए थे न कभी
मैं आज क्यों मेरे परवरदिगार रोता हूँ

अली अख्तर 'अख्तर'

---

१. मित्र

तारा टूटा सब ने देखा, ये नहीं देखा एक ने भी
किसकी आँख से आंसू टपका, किसका सहारा टूटा है

आरजू लखनवी

देखा उन्हें करीब से हमने तो रो दिये
जिन बस्तियों को आग लगाने चले थे हम

खुर्शीद उल इस्लाम

हमने रो-रो रात काटी है
आँसुओं पर ये रंग तब आया

असर लखनवी

चुप हो गए तेरे रोने वाले
दुनिया का खयाल आ गया है

फिराक गोरखपुरी

आँसू तो बहुत से हैं आँखों में 'जिगर' लेकिन
बिंध जाये सो मोती है, रह जाये सो दाना है

जिगर मुरादाबादी

बरसात का तो मौसम कबका निकल गया पर
पलकों की ये घटायें अब तक बरसतियाँ हैं

सौदा

जिस तरह हँस रहा हूँ मैं पी पी के गर्म अश्क
यूँ दूसरा हँसे तो कलेजा निकल पड़े

कैफी आझमी

आँख के आँसू से दिल घबरा गया
खैर हो कश्ती में पानी आ गया

कमर जलालवी

दु:ख जाता है जब दिल तो उबल पड़ते हैं आँसू
'मुल्ला' को दिखावे का तड़पना नहीं आता

आनंदनारायण 'मुल्ला'

चलो आज जी भरके आँसू बहा लें
यह तारों भरी रात आये न आये

'खिजां'

कभी अश्क भर आये तो पी गये हम
कि मद्दे-नजर[१] आबरू थी किसीकी

मुश्ताक

ऐसा नहीं जो यार की ला दे खबर मुझे
ऐ सैले-अश्क[२] तू ही बहा ले उधर मुझे

अकबर इलाहाबादी

एक उम्र बाद मिला है तो मुस्कुरा के मिल
जो खुश्क[३] हो चुके उन आँसूओं की बात न कर

मंजूर नदीम

कोई आँसू तेरे दामन पर गिराकर
बूँद को मोती बनाना चाहता हूँ

कतील शिफाई

मुत्तसिल[४] रोते ही रहें तो बुझे आतिश[५] दिल की
एक दो आँसू तो और आग लगा जाते हैं

मीर

भोले बनकर हाल न पूछो, बहते हैं अश्क तो बहने दो
जिससे बढ़े बेचैनी दिल की ऐसी तसल्ली[६] रहने दो

आरज़ू लखनवी

---

१. नजर के सामने २. आँसू का झरना ३. सुख जाना ४. लगातार ५. आग ६. धीरज

मैं तेरी आँख से ढलका हुआ एक आँसू हूँ
तू अगर चाहे बिखरने से बचा ले मुझको

मुहसिन अेहसान

किसके आँसू छिपे हैं फूलों में
चूमता हूँ तो होठ जलते हैं

बशीर बद्र

जब नाम तेरा लीजिए, तब अश्क भर आए
यूँ जिंदगी करने को कहाँ से जिगर आए

मीर

आया ही था खयाल कि आँखें छलक पड़ीं
आँसू किसीकी याद से कितने करीब थे

अंजुम

दामन बचाकर यूँ न हिकारत[१] से देखिए
अश्कों की आबरू भी सितारों से कम नहीं

खलिश

आँख का पानी है, लेकिन आँसू है
आँसूओं को बालटी न चाहिए

चिनु मोदी 'इर्शाद'

अहबाब (दोस्त, मित्र)

तुम्हारी दोस्ती को देखकर सब रश्क[२] करते हैं
जो बस चलता तो दुनिया छीन लेती जिंदगी मेरी

एहसान दानिश

---

१. बेईज्जती २. ईर्ष्या

तुम तो दिल माँगे हो, यहाँ जान तलक हाजिर है
बात ये भी है कोई आपके फरमाने की

अहसन अली अहसन

मैं हैराँ हूँ कि क्यूँ उससे हुई थी दोस्ती अपनी
मुझे कैसे गँवारा हो गई थी दुश्मनी अपनी

एहसान दानिश

अहबाब के काँधे से लहद[१] तक आए
किस चैन से सोए हुए हम अपने घर आए

रियाज खैराबादी

हम क्या कहें अहबाब क्या कार-ए-नुमायाँ[२] कर गये
बी.ए. हुए, नौकर हुए, पेन्शन मिली, फिर मर गये

अकबर इलाहाबादी

दोस्तों से हमने इस कदर सदमें[३] उठाए जान पर
दिल से दुश्मन की अदावत का गिला जाता रहा

कौसर

जमाने से अदावत[४] का सबब[५] थी दोस्ती जिनकी
अब उनको दुश्मनी है हमसे, दुनिया इसको कहते हैं

बेखुद देहलवी

'अहसान' अपना काई बुरे वक्त का नहीं
अहबाब बेवफा हैं, खुदा बेनियाज[६] है

'अहसान' दानिश

तुम तकल्लुफ[७] को भी इखलास[८] समझते हो 'फराज़'
दोस्त होता नहीं हर हाथ मिलाने वाला

अहमद फराज़

---

१. कबर २. उपलब्धि ३. दुःख ४. दुश्मनी ५. कारण ६. निस्पृह ७ औपचारिकता ८. प्रेम

इत्तिफाकन[१] भी जिंदगी में ‘फराज’
दोस्त मिलते नहीं ‘जिया’[२] जैसे

अहमद फराज़

सब कुछ सही ‘फराज़’ पर इतना जरुर है
दुनिया में ऐसे लोग बहुत कम है दोस्तों

अहमद फराज़

कुछ छोटे-छोटे दुःख अपने, कुछ दुःख अपने अजीजों के
इनसे ही जीवन बनता है, सो जीवन बन जाऐगा

जमीलुद्दीन आली

जिनमें चर्चा न कुछ तुम्हारा हो
ऐसे अहबाब, ऐसी सुहबत क्या ?

आसी

जो राहे-दोस्ती में ऐ ‘मीर’ मर गये हैं
सर देंगे लोग उनके पा के निशान पर

मीर

जिसका तू आश्ना[३] हुआ होगा
उसने क्या-क्या सितम सहा होगा

सोज़

कल तक तो आश्ना थे, मगर आज गैर हो
दो दिन में यह मिजाज है आगे की खैर हो

दाग़

आडे-आया[४] न कोई मुश्किल में
मशवरे[५] देके हट गए अहबाब

जोश मलीहाबादी

---

१. सहसा २. फराझ का संकेत मित्र जियाउद्दीन ‘जिया’की ओर है ३. मित्र
४. काम आना ५. सलाह

दोस्त यकरंग[१] जो यकजा[२] कहीं मिल बैठे हैं
लुत्फ[३] के साथ गुजर जाती है सोहबत कैसी

दाग़

ये हकीकत है कि अहबाब को हम
याद ही कब थे जो अब याद नहीं

नासिर काजमी

अहबाब से क्या कहते, इतना न हुआ 'फानी'
जब जिक्र मेरा आता मरने की दुआ करते

फानी बदायूनी

ऐ 'शाद' जिनके साथ जमाना बसर किया
अल्लाह ! अब वही मुझे पहचानते नहीं

शाद अजीमाबादी

सियहरोजी[४] में मेरी कद्र को अहबाब क्या जाने
अँधेरी रात में किसको कोई पहचानता होगा

कल जहाँ से उठा लाए थे अहबाब मुझे
ले चला आज वहीं फिर दिल-ए-बेताब[५] मुझे

जौक

जिंदगी है ना लुत्फे-सोहबते-अहबाब[६] का
ये नहीं 'फानी' तो जीना कोई जीना ही नहीं

फानी बदायूनी

वो क्या है और हकीकत में क्या लगे हैं मुझे
कि उसका दर्द भी तो दिलरुबा लगे हैं मुझे

शहवार बेगम

---

१. एक स्वभाव २. एक साथ ३. आनंद ४. दुर्भाग्य ५. व्याकुल हृदय ६. मित्रों की संगति का आनंद

हमको अग्यार[१] से गिला कैसा
जख्म खाये हैं हमने यारों से

बढ़ाओ न आपस में मिल्लत[२] जियादा
मबादा[३] कि हो जाय नफरत जियादा

मौलाना हाली

हमारा काम ही दुश्मन से प्यार करना है
जमाने भर को दिया दर्से-दोस्ती[४] हमने

लतीफ फहमी

दोस्त बन-बन के मिले मुझको मिटानेवाले
मैंने देखे हैं कई रंग बदलने वाले

सइद राही

वो नहीं मिलता मुझे इसका गिला अपनी जगह
उसके मेरे दरमियाँ का फासला अपनी जगह

इफ्तिखार इमाम सिद्दीकी

ये कहाँ की दोस्ती है कि बने है दोस्त नासेह[५]
कोइ चारासाज़[६] होता, कोइ गमगुसार[७] होता

गालिब

हमारी बात पे क्यों सर झूका दिया ऐ दोस्त
यही कि बात मेरी, काबिले-जवाब[८] नहीं

शाद अजीमाबादी

ऊँचा नीयत का अपना जीना रखना
अहबाब से साफ अपना सीना रखना

अकबर इलाहाबादी

---

१. परायी व्यक्ति २. मनमेल ३. ऐसा न हो ४. दोस्ती का पाठ ५. उपदेशक ६. हकीम ७. अनुकंपाशील ८. उत्तर देने लायक

यूँ तो मिलने को मिल गया है खुदा
पर तेरी दोस्ती नहीं मिलती

फिराक गोरखपुरी

किया सैर सब हमने गुलज़ारे-दुनिया[१]
गुले-दोस्ती[२] में अजब रंगोबू[३] है

हर तरफ जीस्त[४] की राहों में कड़ी धूप है दोस्त
बस तेरी याद के साये हैं पनाहों[५] की तरह

सुदर्शन फाकिर

तुझसे करीब आके बड़ी उलझनों में हूँ
मैं दोस्तो में हूँ कि तेरे दुश्मनों में हूँ

अहमद फराज

तुम अपने दोस्तों के जरा नाम तो बताओ
मैं अपने दुश्मनों की तादात[६] तो समझ लूँ

रो रहे हैं दोस्त मेरी लाश पर बेइख्तियार[७]
ये नहीं दरियाफ्त[८] करते किसने इसकी जान ली

अकबर इलाहाबादी

दुश्मनी जम कर करो, लेकिन ये गुंजाईश रहे
जब कभी हम दोस्त हो जाऐं तो शरमिंदा न हो

बशीर बद्र

दुश्मनों से पनाह माँगी है
दोस्तों के खुलूस[९] के डर से

रामनाथ 'असीर'

---

१. संसारनो बाग २. मैत्रीनुं पुष्प ३. रंग अने सुगंध ४. जिंदगी ५. आश्रय ६. संख्या ७. विवश/लाचार ८. मालूम ९. निष्ठा

दोस्ती आम है, लेकिन ऐ दोस्त
दोस्त मिलता है बड़ी मुश्किल से

हफीज़ होशियारपुरी

अपनों की दोस्ती ने सिखाया है ये सबक
गैरों की दुश्मनी भी इनायत[1] से कम नहीं

जोश मल्सियानी

दोस्तों की दोस्ती को देखकर
दुश्मनों से दोस्ती करनी पड़ी

अखगर शहानी

दुश्मनों के साथ मेरे दोस्त भी आज़ाद है
देखना है फेंकता है मुझपे पहला तीर कौन

परवीन 'शाकिर'

हम तुम दोनों दोस्त पुराने, सदियों की मजबूरी के
इससे बढ़कर तुम ही बोलो और भी कोई रिश्ता है

विश्वनाथ 'दर्द'

हमें भी आ पड़ा है दोस्तों से काम कुछ यानी
हमारे दोस्तों के बेवफा होने का वक्त आया

हरिचन्द्र 'अख्तर'

हसीनों से फक्त साहब-सलामत दूर की अच्छी
न उनकी दोस्ती अच्छी न उनकी दुश्मनी अच्छी

'हफीज़' जौनपुरी

दोस्त या अज़ीज़ हैं खुद फरेबियों[2] के नाम
आज आपके सिवा कोई आपका नहीं

'ताजवर' नजीबाबादी

---

१. महेरबानी २. आत्म प्रवंचना

काफी दिनों जिया हूँ किसी दोस्त के बगैर
अब तुम भी साथ छोड़ने को कह रहे हो, खैर
फिराक गोरखपुरी

मुझको आशिक कह के उसके रू-ब-रू मत कीजियो
दोस्तो, गर दोस्त हो तो ये कभू मत कीजियो
मीर 'हसन'

मुट्ठियों में खाक लेकर दोस्त आये वक्ते-दफन[१]
जिंदगी भर की मोहब्बत का सिला[२] देने लगे
साकिब कजलबाश

दुश्मनों की भीड़ में कुछ दोस्त भी मौजूद हैं
देखते रहना करेगा मुझपे पहला वार कौन
मंजर मजीद

ये दोस्ती, ये मरासिम[३], ये चाहतें, ये खुलूस
कभी-कभी मुझे सब कुछ अजीब लगता है
जाँनिसार अख्तर

समन्दरों से वो रखता था दोस्ती, लेकिन
मरा तो विरसे में[४] सदियों की प्यास छोड़ गया
खुसरो मतीन

कभी हममें तुममें भी चाह थी, कभी हममें तुममें भी राह थी
कभी हम भी तुम भी थे आशना[५], तुम्हें याद हो कि न याद हो
मोमिन

आ कि तुझ बिन इस तरह ऐ दोस्त घबराता हूँ मैं
जैसे हर शय[६] में किसी शय की कमी पाता हूँ मैं
जिगर मुरादाबादी

---

१. दफन करते समय २. बदला/पुरस्कार ३. रिवाज ४. विरासत में ५. मित्र ६. चीज

दोस्ती और किसी गरज के लिए
वो तिजारत[१] है, दोस्ती नहीं

अदम

इससे बढकर दोस्त कोई दूसरा होता नहीं
सब जुदा हो जाऐं, लेकिन गम जुदा होता नहीं

जिगर मुरादाबादी

तेरे जलवों[२] ने मुझे घेर लिया है ऐ दोस्त
अब तो तनहाई के लम्हें[३] भी हसीं होते हैं

सीमाब अकबराबादी

चार दुश्मन आ मिले हैं रात की छत के तले
मुद्दतों के बाद फिर अगले जमाने आए हैं

बशीर बद्र

आज कल के दोस्त क्या हैं जिस तरह कागज के फूल
देखने में खुशनुमा[४] बुए-वफा[५] कुछ भी नहीं

प्यारे साहब रशीद

रफीकों से[६] रकीब[७] अच्छे, जो जलकर नाम लेते हैं
गुलों से खार बेहतर हैं, जो दामन थाम लेते हैं
गो[८] जरा सी बात पर बरसों के यारानें[९] गए
लेकिन इतना तो हुआ कुछ दोस्त पहचाने गए

खातिर गझनवी

वफा का दोस्तों दामन कभी न छोडूँगा
कदम-कदम पे मुझको चाहे कोई ठुकराये

शहीद देहलवी

---

१. व्यापार २. रुपकी शोभा ३. अेकांत के पल ४. सुंदर ५. निर्वाहकी सुगंध
६. दोस्तों से ७. दुश्मन ८. यद्यपि ९. दोस्ती

याद आती है तेरी ऐ दोस्त
जाने क्यों खूद को भूल जाता हूँ

नक्श

कल जिन्हें दोस्ती का था दावा
उनसे अब बात भी नहीं होती

साजन पेशावरी

बहुत तहकीक[१] की लेकिन अगर पाया तो यह पाया
वजूद-ए-दोस्ती[२] कुछ है तो यारों की जुबाँ तक है

रंजूर

दिल अभी पूरी तरह टूटा नहीं
दोस्तों की मेहरबानी चाहिए

अदम

क्यों कहूँगा मैं किसीसे तेरे गम की दास्ताँ
और अगर ऐ दोस्त, लब पर तेरा नाम आ ही गया ?

मजरूह सुलतानपुरी

फायदा क्या सोच आखिर तू भी दाना[३] है 'असद'
दोस्ती नादाँ की है जी का जियाँ[४] हो जाएगा

गालिब

दोस्तों की दोस्ती ने गुल खिलाये
फूल मेरे हक में काँटे बो गये

ऐ दोस्त हमने तर्क-ए-तअल्लुक[५] के बावजूद[६]
महसूस की है तेरी जरूरत कभी-कभी

सैफुद्दीन सैफ

---

१. जाँच २. मैत्री होना ३. बुद्धिमान ४. नुकसान ५. संबंध छोडना ६. फिर भी

दुश्मनों से क्या गरज दुश्मन है वो
दोस्तों को आज़मा कर देखिए

साजन पेशावरी

न दोस्तों से शिकायत, न दुश्मनों से गिला
किसीने मुझको भुलाया, किसीने याद किया

कमर जलालाबादी

जो सुनाते दोस्तों को तो उन्हें यकीं न आता
वो सितम हमारे दिल पर राह-ए-दोस्ती में[१] गुजरे

'निसार'

दोस्तो, मुझको मुहब्बत में नसीहत[२] न करो
और कुछ रोज इसी तरह गुजर जाने दो

माहिर उल कादरी

कौन रोता है किसी और की खातिर ऐ दोस्त
सबको अपनी ही किसी बात पे रोना आया

साहिर लुधियानवी

दोस्ती और इस जमाने में
जिक्र करते हो किस जमाने का ?

शाद अजीमाबादी

तुम्हें अपनी जिंदगी का अब राज मैं बता दूँ
मेरे दोस्तों की यारी[३] मेरी जिन्दगी है यारो

विनय वाईकर

---

१. मित्रताके मार्ग में २. उपदेश ३. दोस्ती

आईना (दर्पण)

अंदाज़ अपना अपना देखते हैं आईने में वो,
और ये भी देखते हैं, कोई देखता न हो

निझाम रामपुरी

आईने में वो देख रहे थे बहारे हुस्न
आया मेरा खयाल तो शर्मा के रह गए

हसरत मुहानी

पूछते क्या हो कि दिल में कौन है
लो यह आईना उठा कर देख लो

'हसन'

न देखना कभी आईना, भूल कर देखो
तुम्हारे हुस्न का पैदा जवाब कर देगा

'बेखुद' देहलवी

जबसे आया है वो मुखड़ा नजर आईने को
तबसे अपनी भी नहीं है खबर आईने को

मजनूँ

अपनी सूरत आईने में तुम न देखो हर घड़ी
कर दिया देखो इसी सूरत ने दीवाना हमें

'कैसर'

आईना चूम-चूम रहे थे वो बार-बार
देखा जो यक-ब-यक[१] मुझे शरमा के रह गए

जिगर मुरादाबादी

---

१. सहसा

मुझको क्या काम कि आईने की हैरत देखूँ
देख तू आईना और मैं तेरी सूरत देखूँ

मोमिन

मैंने जो तुम्हें चाहा, क्या इसमें खता मेरी
ये तुम हो, ये आईना, इन्साफ जरा करना

जलील मानिकपुरी

सच बात मान लीजिए चेहरे पे धूल है
इल्जाम आईनों पे लगाना फिझूल है

अंजुम रहबर

जरा विसाल[१] के बाद आईना तो देख ऐ दोस्त
तेरे जमाल[२] की दोशीजगी[३] निखर आई

फिराक गोरखपुरी

आरसी देखकर न हो मगरूर
खुदनुमाई न कर, खुदा से डर

वली दकनी

देखकर आईना कहते हैं कि - लासानी[४] हूँ मैं
आईना देता है उनकी लनतरानी[५] का जवाब

पं. अमरनाथ साहिर

न देख अन्दाज़ आईने में अपना, पूछ ले हमसे
जमाने भर से अच्छा और तेरे सर की कसम अच्छा

नज्म तबा तबाई

आईना देखकर तसल्ली हुई
हमको इस घर में जानता है कोई

गुलझार

१. मिलन २. खूबसूरती ३. यौवन, कौमार्य ४. अनुपम ५. शेखी

आईना देखकर खयाल आया
तुम मुझे बेमिसाल[१] कहते थे

उम्मतुलरुफ नसरी

किस सोच में हैं आईने को आप देखकर,
मेरी तरफ तो देखिए सरकार क्या हुआ

अनवर

दिल के आईने में है तस्वीर-ए-यार
जब जरा गरदन झुकाई देख ली

मोमिन

आईना देख अपना सा मुँह लेके रह गये
साहब को दिल न देने पे कितना गुरुर था

गालिब

आईना क्या बताएगा मुझसे मिलाओ आँख
मेरी नजर कसौटी है हुस्न-ओ-जमाल की

बेखुद देहलवी

देखिएगा सँभलकर आईना,
सामना आज है मुकाबिल[२] का

रियाझ खैराबादी

कहता है अक्स[३] हुस्न को रुसवा[४] न कीजिऐ
हर वक्त आप आईना देखा न कीजिऐ

रियाझ खैराबादी

मैं तो जब जानूँ कि मेरे दिल की बेताबी मिटे
क्या हुआ गर आईने को तुमने हैराँ[५] कर दिया

तिलोकचंद 'महरूम'

---

१. अनुपम २. बराबर का ३. प्रतिबिम्ब ४. बदनाम ५. चकित

देखकर आईने को, अक्स से कहता है वो शोख[१]
कुछ अगर हुस्न का दावा है तो बाहर आओ

अमीर मीनाई

आईना छोड़ के देखा किये सूरत मेरी
दिले-मुज्तरने[२] मेरे उनको सँवरने न दिया

अजीज लखनवी

मुँह तका ही करे है जिस-तिसका
हैरती[३] है ये आईना किसका

मीर

इसलिए देखभाल करते हैं
आईने में हुजूर रहते हैं

अदम

प्यार की उँगलियों से जरा छू लिया
देर तक आईना गुनगुनाता रहा

कुंअर बेचैन

देखना अच्छा नहीं जानूँ[४] पे रख कर आईना
दोनों नाजुक हैं, न रखो, आईने पर आईना

दाग़

आईना तुम्हारे रुबरु[५] है
सच-सच कहो, कौन खूबरु[६] है

'बर्क'

सँवर के आये जिस दिन आईने के करीब
तो आईने ने तुझे लाजवाब देखा है

साहिल झाँसवी

---

१. चंचल २ व्याकुल मन ३. चकित ४. गोद ५. सन्मुख ६. खूबसूरत

आरज़ू (इच्छा)

आरज़ू है मुझे एक शख्स से मिलने की बहुत
नाम क्या लूँ कोई अल्लाह का बंदा होगा

अकबर इलाहाबादी

अब क्या जवाब दूँ मैं कोई मुझे बता दे
वो मुझसे कह रहे हैं, क्यों मेरी आरज़ू की

जिगर मुरादाबादी

तुझसे मिले न थे तो कोई आरज़ू न थी
देखा तुझे तो तेरे तलबगार[१] हो गए

'ज़िया' अकबराबादी

इक आरज़ू थी अपनी जगह मुस्तकिल[२] रही
जब वो करीब आए तो हम दूर हो गए

'खिज्र' बर्नी

आरज़ू तेरी बरकरार रहे
दिल का क्या है, रहा रहा, न रहा

हसरत मोहानी

बाकी अभी है तर्के-तमन्ना[३] की आरज़ू
क्यों कर कहूँ कि कोई तमन्ना नहीं मुझे

असर लखनवी

उससे मिलने की आरज़ू में 'अदम'
अपने नजदीक आ रहा हूँ मैं

अदम

---

१. चाहनेवाला २. मजबूत ३. इच्छात्याग

'सौदा' जहाँ में आके कोई कुछ न ले गया
जाता हूँ एक मैं दिले पुरआरज़ू[१] लिये

सौदा

हम क्या करें अगर न तेरी आरज़ू करें
दुनिया में और भी कोई तेरे सिवा है क्या ?

हसरत मोहानी

झुकी जरा चश्मे-जंगजू[२] भी
निकल गई दिल की आरज़ू भी
बड़ा मझा उस मिलाप में है
जो सुलह हो जाए जंग होकर

दाग

उस आदमी को सौंप दूँ दुनिया का कारोबार
जिस आदमी के दिल में कोई आरज़ू न हो

जौक

यूँ ही रोज मिलने की आरज़ू, बड़ी रख-रखाव की गुफ्तगू[३]
ये शराफतें[४] नहीं बेग़रज, उसे आपसे कोई काम है

'फानी' को या जुनूँ[५] है, या तेरी आरज़ू है
कल नाम ले के तेरा दीवानावार[६] रोया

फानी बदायूनी

अजब आरज़ू है, अनोखी तलब है
तुझीसे तुझे माँगना चाहता हूँ

सिकन्दर अली वज्द

---

१. इच्छासे पूर्ण २. लड़ायक नजर ३. वातचीत ४. सज्जनता ५. पागलपन
६. पागल की तरह

दिल ऐ 'सीमाब' आरज़ू से खाली रह न सकता था
न होती आरज़ू तो आरज़ू की आरज़ू होती
सीमाब अकबराबादी

देखकर दिलकशी जमाने की
आरज़ू है फरेब खाने की
अदम

जिंदगी को बेनियाज़े-आरज़ू[१] करना पड़ा
आह किन आँखों से अंजामे-तमन्ना[२] देखते
'साहिर' लुधियानवी

है हुसूले-आरज़ू[३] का नाम तर्के-आरज़ू[४]
मैंने दुनिया छोड़ दी तो मिल गई दुनिया मुझे
सीमाब अकबराबादी

जो कुछ भी हमने की है तमन्ना मिली मगर
ये आरज़ू रही कि कुछ आरज़ू न हो
ख्वाजा मीर 'दर्द'

मुझको यह आरज़ू वो उठाऐं नकाब खुद
उनको यह इन्तिजार तकाज़ा करे कोई
मजाज़

मरते हैं आरज़ू में मरने की
मौत आती है पर नहीं आती
गालिब

दफनाना देखभाल के हसरत भरे की लाश
लिपटी हुई कफन में कोई आरज़ू न हो

---

१. इच्छा के बिना २. इच्छा का अंत ३. इच्छा पूर्ण होना ४. इच्छात्याग

गो मैं हूँ तुझसे दूर, तेरी आरज़ू तो है
तेरा पता मिले न मिले आरज़ू तो है

वहाशत कलकतवी

बस इतनी आरज़ू है बादे-फना[१] जनाजा
निकले मेरे मकाँ से, ठहरे तिरी गली तक

नाझा

मुझे तमाम जमाने की आरज़ू क्यों हो ?
बहुत है मेरे लिए एक आरज़ू तेरी

जलील मानिकपुरी

क्या पूछते हो मुझसे मेरे दिल की आरज़ू
खुद देख लो, फकीर की सूरत सवाल है

फीरोजशाहखाँ रामपुरी

गुझर रही है तसव्वुर में[२] जिंदगी अपनी
अब आरज़ू न सही, आरज़ू का ख्वाब तो है

नसीर आरज़ू

हसरत[३] भी है, उम्मीद भी है, आरज़ू भी है
सब कुछ मेरे नसीब में है, एक तू नहीं

अकबर हैदरी

होठों पे आज मेरे मचलती है आरज़ू
मैं सोचती हूँ आज नई बात क्या करुँ ?

मजरूह सुलतानपुरी

मुझे यह डर है तिरी आरज़ू न मिट जाए
बहुत दिनों से तबीयत मिरी उदास नहीं

'नाझिर' काझमी

---

१. मृत्यु के बाद २. कल्पनामें ३. अभिलाषा

गम-ए-हयात ने आवारा कर दिया वर्ना,
थी आरज़ू कि तिरे दर पे सुबह-ओ-शाम करें

मजरूह सुलतानपुरी

तिरी आरज़ू है अगर जुर्म कोई
तो उस जुर्म की मैं सजा चाहता हूँ

हसरत मोहानी

तमन्ना है तेरी अगर है तमन्ना
तेरी आरज़ू है अगर आरज़ू है

ख्वाजा मीर दर्द

आरज़ू लेके कोई घर से निकलते क्यों हो ?
पाँव जलते हैं तो फिर आग पे चलते क्यों हो ?

वाली आसी

अगर तू चाहता है आरज़ू तेरी करे दुनिया
तो दिल पर जब्र करके बेनियाझे आरज़ू हो जा

सीमाब अकबराबादी

ये आरज़ू थी तुझे गुल[१] के रुबरु[२] करते
हम और बुलबुले-बेताब[३] गुफ्तगू[४] करते

आतिश

आशिक के दिल में और तेरी आरज़ू न हो !
इस बाग का तू फूल हो फिर उसमें बू न हो !!

दाग़

सिवा तेरी आरज़ू के दिल में कोई भी आरज़ू नहीं है
हर एक जज़्बा[५] हर एक धड़कन, हर एक हसरत तेरे लिए है

साहिर लुधियानवी

---

१. फूल, गुलाब २. सम्मुख ३. व्याकुल बुलबुल ४. बात ५. प्रबल इच्छा

आशिक (प्रेमी)

आदम[१] का जिस्म[२] जब कि अनासिर[३] से मिल बना
कुछ आग बच रही थी सो आशिक का दिल बना

सौदा

मुझको आशिक कहके उसके रुबरु मत कीजिए
दोस्तो, गर दोस्त हो तो यह कभी मत कीजिए

मीर हसन

तू लुत्फ़[४] करे या न करे खुश हो कि नाखुश
इस बात पे मरता हूँ कि आशिक हूँ तिरा मैं

खुदाबख्श 'कैसर'

दिल में तुम, आँखों में तुम, छुपते हो फिर किस वास्ते
तुमको शर्म आती नहीं आशिक से शरमाते हुए

हुस्न बरेलवी

आशिक की भी कटती है क्या खूब तरह रातें
दो चार घड़ी सोना, दो चार घड़ी बातें

सौदा

अझल से[५] हुस्नपरस्ती लिखी थी किस्मत में
मेरा मिजाज लड़कपन से आशिकाना था

रहमत

इस इश्को-आशिकी के मज़े हमसे पूछिए
दौलत मिटाई, रंज सहे, खो दिया शबाब[६]

बेखुद देहलवी

---

१. मनुष्य २. शरीर ३. पाँच तत्त्वों से ४. कृपा ५. अनादि काल से ६. जवानी

अपनी तो आशिकी का किस्सा ये मुख्तसर[१] है
हम जा मिले खुदा से दिलबर बदल-बदल के

माईल देहलवी

गर्द[२] ऊड़ी आशिक की तुरबत[३] से तो झुंझलाकर कहा
वाह ! सर चढ़ने लगी, पाँवों की ठुकराई हुई

अमीर मीनाई

अपनी जबाँ से कुछ न कहेंगे, चुप ही रहेंगे आशिक लोग
तुमसे तो इतना हो सकता है, पूछो हाल बेचारों का

इब्ने इन्शा

आह ! क्या सहल गुजर जाते हैं जी से आशिक
ढब कोई सीख ले उन लोगोंसे मर जाने के

मीर

हैफ[४] उस चार गिरह[५] कपडे की किस्मत 'गालिब'
जिसकी किस्मत में हो आशिक का गरेबाँ[६] होना

गालिब

यहाँ आने से किस वास्ते जलता है हमारे
आशिक तो नहीं है कहीं दरबान तुम्हारा

तसकीन देहलवी

आशिकी से मिलेगा ऐ जाहिद[७]
बन्दगी से खुदा नहीं मिलता

दाग

दम-ब-दम[८] रोना हमें, चारों तरफ तकना हमें
या कहीं आशिक हुए, या हो गया सौदा[९] हमें

मोमिन

---

१. संक्षिप्त २. धूल ३. कबर ४ अफसोस ५. गांठ
६. पहेरन का कालरवाला हिस्सा ७. भक्त ८. बारबार ९. पागलपन

फिरते हैं 'मीर' ख्वार[१] कोई पूछता नहीं
इस आशिकी में इज्जते-सादात[२] भी गई

मीर

वफा[३] के गीत जब हुस्नो-मोहब्बत मिल के गायेंगे
वो दौरे आशिकी[४] 'सीमाब' कितना दिलकुशा[५] होगा

सीमाब अकबराबादी

काबे[६] से न गरज उसको, न बुतखाने[७] से मतलब
आशिक जो तेरा है, न इधर का न उधर का

नसीर देहलवी

हम ऐसे साहिबे-इस्मत[८] परी पैकर[९] पे आशिक है
नमाजें पढ़ती हैं हूरें हमेशा जिसके दामन पर

जौफ

जो दानिशमंद[१०] हैं वो यूँ दुआ देते हैं लड़कों को
न हो मक्कार[११] पीरी[१२] में, न हो आशिक जवाँ हो कर

अकबर इलाहाबादी

मुझे दफन करना तू जिस घड़ी, तो ये उससे कहना कि ऐ परी
वो जो तेरा आशिके-झार था, तहे-खाक उसको दबा दिया

बहादुरशाह 'जफर'

दिल बना आशिकी में खुद मुख्तार[१३]
और मजबूर कर दिया हमको

'नासिख'

---

१. तुच्छ २. सैयद जाति की मर्यादा ३. प्यार ४. प्रेम चक्कर ५. मनोहर ६. मक्का ७. मंदिर ८. शील ९ परी जैसी सुंदर १०. बुद्धिमान ११. दगाबाज १२. वृद्धावस्थामें १३. प्रतिनिधि

चैन दिन को न शब को राहत है
आशिकी क्या है इक मुसीबत है

'हैराँ'

लोग कहते हैं आशिकी जिसको
मैं जो देखा बड़ी मुसीबत है

मीर

अलग 'कतील शिफाइ' का नहीं कोई कबीला
जो आशिक की जात[१] वो उस की जात है सच्चे साँइ

कतील शिफाइ

इतना तो जानते हैं कि आशिक फना हुआ[२]
और उससे आगे बढ़ के खुदा जाने क्या हुआ ?

आसी गाझीपुरी

वसीयत 'मीर' ने मुझको यही की
'कि सब कुछ होना, तू आशिक न होना'

मीर

कभी सरे-राह इत्तफाकन जो अजनबी की तरह मिला था
'नियाझ' फिर मेरी रुह में भी उतर गया कौन शख्स था वह ?

नियाझ बदायूनी

कल किसीने जो कहा मरता है आशिक तेरा
हँस के गैरों की तरफ, कहने लगा 'और सुना !'

जाफरअली 'हसरत'

---

१. स्वत्व २. मिट जाना

आशियाना (पंछी का घोंसला/घर)

हमने अपने आशियाने के लिए
जो चुभें दिल में वही तिनके लिए

वहीउद्दीन वहीद

फस्ले-बहार[१] अपनी गुजरी है यूँ ही सारी
यहाँ आशियाँ बनाए, वहाँ आशियाँ बनाए

मौलाबख्श

चार तिनके सही पर ऐ सैयाद,[२]
मेरी दुनिया थी आशियाने में

कैस शेखपूरवी

हम ऐसे बदनसीब कि अब तक न मर गऐ
आँखों के आगे आग लगी आशियाने में

यास यगाना चंगेझी

खुदा किसीको भी ये खाबे-बद[३] न दिखलाऐ
कफस[४] के सामने जलता है आशियाँ अपना

यास यगाना चंगेझी

बागबाँ ने आग दी जब आशियाने को मेरे
जिनपे तकिया[५] था वही पत्ते हवा देने लगे

साकिब लखनवी

बागबाँ, काम हमें क्या है, वो उजड़े कि रहे
जब हमीं बाग से निकले तो नशेमन[६] कैसा ?

रियाझ खैराबादी

१. वसंत ऋतु २. शिकारी ३. दुःस्वप्न ४. पिंजरा/कैदखाना ५. आश्रय ६. घोंसला

नशेमन न जलता, निशानी तो रहती
हमारा था क्या, ठीक, रहते, न रहते

साकिब लखनवी

क्या बताऐं कि इस चमन के बीच
कहीं अपना भी आशियाना था

असर लखनवी

सच कहो ऐ बुलबुलो, किस बाग से आती हो तुम
है हमारे भी तुम्हें कुछ आशियाने की खबर ?

यकीन

चली कुछ अैसी मुखालिफ[१] हवा जमाने की
पनाह[२] बर्क ने[३] ली मेर आशियाने की

जिगर मुरादाबादी

जल भी जाए नशेमन तो परवाह नहीं
बिजलियों से मेरा दोस्ताना तो है

कतील शिफाई

बनाऐं क्या समझकर शाखे गुल पर आशियाँ अपना
चमन में आह ! क्या रहना, जो हो बेआबरु रहना

इकबाल

मिरे आशियाँ के तो थे चार तिनके
चमन ऊड़ गया आँधियाँ आते-आते

दाग़

चमन फूँक डालूँगा आह-ओ-फुगाँ[४] से
वो मेरा नशेमन जलाकर तो देखें

इनायत

---

१. विरुद्ध २. आश्रय ३. बिजली ४. निश्वास से जोर से बोलना

बच गया कल किसी हिकमत[१] से नशेमन अपना
आज की तुन्द[२] हवा देखिए क्या करती है

नवाब जफर मुजफ्फरपुरी

सब बाँध चुके कबके सरेशाख[३] नशेमन
हम हैं कि गुलिस्ताँ की हवा देख रहे हैं

जलील मानिकपुरी

नशेमन फूँकने वाले, हमारी जिंदगी क्या है
कभी रोये, कभी सजदे[४] किये ख़ाके-नशेमन के[५]

बेखुद मुहानी

जुबाँ कटती है जिक्रे आशियाँ पर
तमन्ना भी बहुत थी आशियाँ की

फानी बदायूनी

इस साल फस्ल-ए-गुल[६] में उजड़ा था बनते बनते
रहता तो आशियाँ को अब एक साल होता

'आसी' उलदनी

यह सोचते ही रहे और बहार खत्म हुई
कहाँ चमन में नशेमन बने, कहाँ न बने

'असर' लखनवी

फस्ले-गुल जो याद आई, आशियाँ भी याद आया
फस्ले-गुल में उजड़ा था शायद आशियाँ अपना

फानी बदायूनी

मिरा घर है, बुरा है या भला है
लगा दूँ आग क्यों कर आशियाँ को

'जोश' मलसियानी

---

१. युक्ति २. तेज ३. डाल पर ४. प्रणाम ५. जले हुए घरकी ख़ाक ६. वसंत ऋतु

आशियाँ छोड़ चले ऐ चमनआरा[१] हम तो
तू ही ले जाइयो सर पर यह गुलिस्ताँ उठा

हसरत मोहानी

नशेमन ही के लूट जाने का गम होता तो क्या गम था ?
यहाँ तो बेचने वालोंने गुलशन बेच डाला है

बेकल उत्साही

कैद में इतना जमाना हो गया
अब कफस[२] भी आशियाना हो गया

हफीझ जौनपुरी

बर्क[३] का आसमान पर है दिमाग
फूँककर मेरे आशियाने को

मोमिन

आज कुछ मेहरबान है सैयाद[४]
क्या नशेमन भी हो गया बर्बाद !

असर लखनवी

कफस में मुझसे रूदादे-चमन[५] कहते न डर हमदम[६]
गिरी है जिसपे कल बिजली वो मेरा आशियाँ क्यों हो ?

गालिब

ऐसे भी हमने देखे हैं दुनिया में इन्किलाब
पहले जहाँ कफस[७] था, वहीं आशियाँ बना

सीमाब अकबराबादी

---

१. किरदार निभानेवाला, २. पिंजरा ३. बिजली ४. शिकारी ५. बागकी बात ६. दोस्त ७. पिंजरा

हमारे फूल, हमारा चमन, हमारी बहार
हमींको जा[१] नहीं मिलती है आशियाने में

आगा शायर

गुलची[२] बुरा किया जो ये तिनके जला दिये
था आशियाँ मगर तेरे फूलों से दूर था

साकिब लखनवी

बहाना मिल न जाऐ बिजलियों को टूट पड़ने का
कलेजा काँपता है आशियाँ को आशियाँ कहते

असर लखनवी

दिल घूट रहा है आपसे आप आशियाने में
अच्छी नहीं चमन की हवा इस जमाने में

साकिब लखनवी

चार दिन की इस बुलंदी[३] में भी थी पस्ती[४] निहाँ[५]
आशियाने से नझर आता था घर सैयाद[६] का

साकिब लखनवी

बहारों में यह होश ही कब रहा था
कि जलती है क्या शै[७], कहाँ आशियाँ है

मदहोश ग्वालियरी

कफस[८]-ओ-आशियाँ का फर्क ऐ सैयाद, सुन मुझसे
ये तेरी दस्तकारी[९] है, उसे मैंने बनाया है

साकिब लखनवी

---

१. जगह २. माली ३. उच्चता ४. नीचापन ५. छुपा हुआ ६. शिकारी ७. चीज
८. पिंजरा ९. हाथकी करामत

कफस की तीलियों में जाने क्या तरकीब रखी है
कि हर बिजली करीबे-आशियाँ मालूम होती है

सीमाब अकबराबादी

कनाअत[१] न कर आलमे-रंगो-बू[२] पर
चमन और भी आशियाँ और भी है-

इकबाल

फूलों की टहनियों[३] पे नशेमन बनाईए,
बिजली गिरे तो जश्ने-चरागाँ[४] मनाइए

अदम

मेरी कैद का दिलशिकन[५] माजरा[६] था
बहार आई थी, आशियाँ बन चुका था

साकिब लखनवी

तमाम उम्र इसी एहतियात[७] में गुझरी
कि आशियाँ किसी शाखे चमन पे बार[८] न हो

महशर लखनवी

जल गया अपना नशेमन तो कोई बात नहीं
देखना ये है कि अब आग किधर लगती है

जाँनिसार अख्तर

सोच रही है कैसे आशाओं का नशेमन बनता है
मन की चिड़िया, तन के द्वारे बैठी, चोंच में घास लिए

'रिफअत' सरोश

---

१. संतोष २. रंग और सुगंध की दुनिया ३. डाली ४. दिपावली का उत्सव ५. दिल तोड़ने वाला ६. प्रसंग ७. सतर्कता ८. बोज

अँधेरा देखते ही गुलिस्ताँ में
लगा दी आग मैंने आशियाँ में

कवी टौंकी

हमने बना लिया है नया फिर से आशियाँ
जाओ, ये बात फिर किसी तूफान से कहो

कतील शिफाई

गुलशन बहार पर था नशेमन बना लिया,
मैं क्यों हुआ असीर[१] मेरा क्या कुसूर था ?

साकिब लखनवी

जल के आशियाँ अपना खाक हो चुका कबका
आज तक ये आलम है रोशनी से डरते हैं

खुमार बाराबंकवी

मेरे चमन में कोई नशेमन नहीं रहा
या यूँ कहो कि बर्क की दहशत नहीं रही

दुष्यंत कुमार

लाऊँ वो तिनके कहाँ से आशियाने के लिए
बिजलियाँ बेताब हों जिनको जलाने के लिए

इकबाल

सारे चमन को मैं तो समझता हूँ अपना घर
तू आशियाँपरस्त है, जा आशियाँ बना

सीमाब अकबराबादी

अब उस चमन में बनाऐंगे आशियाँ अपना
कि आस्माँ जहाँ बिजलियाँ गिरा न सके

सफीक जौनपुरी

---

१. कैदी

खबर क्या थी जश्ने-बहारां[1] की खातिर
हमें आशियाना जलाना पड़ेगा

फना निझामी

क्यूँ न देखूँ चमन को हसरत[2] से
आशियाँ था मेरा भी यहाँ परसाल

मीर

जब मैं नहीं तो बाग में इसका मुकाम क्यों ?
अच्छा हुआ कि लग गई आग आशियाने में

साकिब लखनवी

हालात की बिजली ने किया राख नशेमन[3]
पर आस का पंछी कि चहकता ही चला जाऐ

कतील शिफाई

बचे-खुचे हुऐ तिनके भी फूँक दे सैयाद
हँसी उड़ाते हैं सब मेरे आशियाने की

खुमार बाराबंकवी

मिली तो क्या मिली सैयाद[4], ऐसी आझादी
जब एक शाखे-नशेमन[5] पे इख्तियार[6] न हो

अलम मुजफ्फरनगरी

कहीं बिजली, कहीं गुलचीं[7], कहीं सैयाद का खतरा
फले-फूलेगी इस गुलशन में शाखे-आशियाँ क्यों कर ?

अलम मुजफ्फरनगरी

चमन को याद करके देर तक आँसू बहाता हूँ,
कोई तिनका जो मिल जाता है उजड़े आशियाने का

शाद अझीमाबादी

---

१. वसंतोत्सव २. कामना ३. घोंसला ४. शिकारी ५. घोंसले की डाल ६. अधिकार ७. माली

तिनकों से खेलते ही रहे आशियाँ में हम
आया भी और गया भी जमाना बहार का

फानी बदायूनी

कहूँ क्यों कर कि मैं कुछ भूल आया हूँ नशेमन में
मेरा सैयाद कहता है कि 'क्या रक्खा है गुलशन में ?'

साकिब लखनवी

है भरी बहार तो क्या करुँ, न मिले करार तो क्या करुँ
मिरे सामने हैं वो आशियाँ, जो भरी बहार में जल गए

फरीद जावेद

आशियाने की बात करते हो
किस जमाने की बात करते हो ?

जोहरा निगाह

आह

आह को चाहिए एक उम्र असर होने तक
कौन जीता है तेरी जुल्फ[१] के सर होने तक

गालिब

हम आह भी करते हैं तो हो जाते हैं बदनाम
वो कत्ल भी करते हैं तो चर्चा नहीं होता

अकबर इलाहाबादी

आह जो दिल से निकाली जाएगी
क्या समझते हो कि खाली जाएगी ?

अकबर इलाहाबादी

---

१. केश

क्या जानिए ये आह कि क्या है
कुछ आग सी आई है जुबाँ पर

अफसोस

मेरी आह का तुम असर देख लेना
वो आएँगे थामे जिगर देख लेना

दाग़

है मेरे दिल में वो आहें कि जो बिजली न बनीं
मेरी आँखों में वो कतरा[१] है जो तूफाँ न हुआ

दत्तात्रेय कैफी

सुन के मेरी आह शब को वो मेरे घर आ गए
हँस के पूछा, कुछ अभी बाकी है असर होने को ?

कैफ

शम्मा रोशन है हमारी आह से
लौ लगाऐ बैठे हैं अल्लाह से !

दाग़

आह होती न मेरे लब पे न नाला होता
एक भी तूने जो अरमान निकाला होता

रसा

कहानियाँ असरे-आह की गलत हैं 'शाद'
किसीके दिल पे किसे इख्तियार[२] होता है

शाद अझीमाबादी

आह के साथ खुल न जाऐ भरम
दर्द कितना है और कितनी उमंग

यगाना चंगेझी

१. पानी की बूंद २. काबू

आह ने इतनी तो की तासीर[१] पैदा, शुक्र है
बाम[२] पर आने लगे वो, सामना होने लगा

नसीम लखनवी

इधर से भी है सिवा कुछ उधर की मजबूरी
कि हमने आह तो की, उनसे आह भी न हुई

जिगर मुरादाबादी

रूक के जो साँसें आईं गईं माना कि वो आहें थी, लेकिन
आपने तेवर क्यों बदले ! आहों में किसीका नाम नहीं

फानी बदायूनी

और इकबाल-ए-जुर्म[३] क्या हो 'शकील'
थरथराते लबों पर आह तो है

शकील बदायूनी

खैर गुजरी कि न पहुँची तेरे दर तक, वर्ना
आह ने आग लगा दी है, जहाँ ठहरी है

हसरत मोहानी

न इक आह की, जख्म सौ सौ उठाये
तुझे आफ्रीं 'जौक' सदआफ्रीं[४] है

'जौक'

यूँ उठे आह इस गली से हम
जैसे कोई जहाँ से उठता है

मीर

दर्दे दिल कुछ कहा नहीं जाता
आह ! चुप भी रहा नहीं जाता

कायम

---

१. असर २. अटारी ३. गुन्हे की कबूलात ४. सौ सौ बार शाबाशी

आहों के शोले[१] जिस जा उठते थे 'मीर' से शब[२]
वहाँ जा के सुबह को देखा मुश्ते-गुबार[३] पाया

मीर

तारे तो ये नहीं, मेरी आहों से रात की
सुराख[४] पड़ गये हैं तमाम आसमान में

मीर

नीला नहीं सपहर[५], तुझे इश्तबाह[६] है
दूदे-जिगर[७] से मेरे यह छत सब सियाह[८] है

मीर

आह नाले मत किया कर इस कदर बेताब हो
ऐ सितमकश[९] 'मीर' जालिम है जिगर भी दिल के पास

मीर

आह और अश्क[१०] सदा ही यहाँ
रोज बरसात की हवा है यहाँ

मीर

सुबह है कोई आह कर लीजै
आसमाँ को सियाह कर लीजै

मीर

तुम्हें आहें सुनने का शौक था, मगर अब बताओ करोगे क्या
जो कराहता था तमाम शब[११], वो मरीज़ 'जोश' तो मर गया

जोश मलीहाबादी

---

१. लौ २. रात्रि ३. मुट्ठी भर धूल ४. छेद ५. आकाश ६. भ्रम ७. दिल की आग का धुआँ ८. काला ९. अत्याचार पीडित १०. आँसू ११. रातभर

आग जो दहर में[१] लगा न सके
क्या जरूरत है ऐसी आहों की

उमर अंसारी

बेहतर तो यही है, हँसता रह, तू कोह[२] है खुद को काह[३] न कर
यह बन न पड़े तो कम से कम, खामोश ही रह, आह न कर

जोश मलीहाबादी

आह ! किसने मुझे दुनिया से मिटाना चाहा
आह ! उसने कि जिसे हासिले-दुनिया जाना

आझाद अन्सारी

अन्दाज़ वो ही समझे मेरे दिल की आह का
जख्मी जो हो चुका हो किसीकी निगाह का

मीर दर्द

'दर्द' अपने हाल से आगाह[४] क्या करें ?
जो साँस भी न ले सके वो आह क्या करें ?

मीर दर्द

न करता जब्त मैं नाला तो फिर ऐसा धुआँ होता
कि नीचे आसमाँ के एक नया और आसमाँ होता

जौक

कभी तक के दर[५] को खड़े रहे, कभी आह भर के चले गए
तेरे कूचे[६] में जो हम आए भी तो ठहर के चले गए

मुसहफी

अर्श[७] तक जाती थी अब लब तक भी आ सकती नहीं
रहम आता है 'बयाँ' अब मुझको अपनी आह पर

बयाँ

---

१. जमाने में २. पर्वत ३. घास ४. जानकारी देना ५. द्वार ६. गली ७. आकाश

आह ! किससे कहें कि हम क्या थे ?
सब यही देखते हैं कि क्या है हम

अस्रर लखनवी

अंगड़ाई

कौन यह ले रहा है अंगड़ाई
आसमानों को नींद आती है

फिराक गोरखपुरी

अपने मरकज[१] की तरफ माइल-ए-परवाझ[२] था हुस्न
भूलता ही नहीं आलम[३] तेरी अंगड़ाई का

'अजीज' लखनवी

शाखे-गुल[४] झूम के गुलझार[५] में सीधी जो हुई
फिर गया आँख में नकशा तेरी अंगड़ाई का

आगा शरफ

अंगड़ाई भी वो लेने न पाये उठा के हाथ
देखा जो मुझको तो छोड़ दिए मुस्कुरा के हाथ

निझाम रामपुरी

दरिया-ए-हुस्न और भी दो हाथ बढ़ गया
अंगड़ाई उसने नशे में ली जब उठा के हाथ

'नासिख'

इलाही[६] क्या इलाका[७] है वो जब लेते हैं अंगड़ाई
मेरे सीने के सब जख्मों के टाँके टूट जाते हैं

अमीर मीनाई

---

१. केंद्र २. ऊँचे उड़ रहा था ३. दृश्य ४. फूल की डाल ५. बाग ६. ईश्वर ७. लगाव

दिल का क्या हाल कहूँ, सुबह को जब उस बुत ने
ले के अँगडाई कहा नाझ[१] से हम जाते हैं

दाग

अबस[२] अंगड़ाइयाँ ले ले क्यूँ मलते हो आँखों को
भला यह भी तो घर है, सो रहो गर नींद आती है

'जुरअत'

हुस्न के हाथ बँधे, वो जरा देर सही,
मुझ पे अहसाँ तेरी आई हुई अंगड़ाई का

साकिब लखनवी

देर तक इस शुबह[३] में देखा हिलाल[४]
ये किसी काफिर की अंगड़ाई न हो

शाइल देहलवी

शाख-ए-गुल तनती है क्या बाग में जोश-ए-बहार[५]
इसमें अंदाज कहाँ यार की अंगड़ाई का

रियाझ खैराबादी

उनसे छीके से कोई चीज उतरवाई है
काम का काम है, अंगड़ाई की अंगड़ाई है

रियाझ खैराबादी

अंगड़ाई पर अंगड़ाई लेती है रात जुदाई की
तुम क्या समझो, तुम क्या जानो, बात मेरी तनहाई[६] की

कतील शिफाई

अंगड़ाई लेकर, अपना मुझ पर खुमार डाला
काफिर की इस अदा ने, बस मुझको मार डाला

मुसहफी अमरोहवी

---

१. गर्व २. व्यर्थ ३. संदेह ४. आधा चंद्र ५. वसंत ऋतु का जोश ६. अकेलापन

कैफ-ए-मस्ती[१] में भी रहता है जोबन का लिहाज
उनको अंगड़ाई भी आती है तो शरमाई हुई

अमीर मीनाई

जहाँ जागे, वहीं अंगड़ाईयाँ लो
यहाँ फैलाई है सुस्ती कहाँ की

मुश्ताक

अंजुमन (महफिल, बज़्म, सभा)

दुनिया की महफिलों से उकता गया हूँ या रब
क्या लुत्फ अंजुमन का जब दिल ही बुझ गया हो

इकबाल

बने वो रौनके-महफिल जिस अंजुमन में रहे
रहे बहारे चमन, जिस चमन में रहे

हसरत मोहानी

जिस अंजुमन में बैठ गया, रौनक आ गई
कुछ आदमी 'रियाझ' अजब दिल्लगी का है

रियाझ खैराबादी

बहुत लगता है जी सोहबत में तेरी
तू अपनी जात से इक अंजुमन है

हसरत मोहानी

रौशन जमाले-यार[२] से है अंजुमन तमाम
दहका हुआ है आतिशे-गुल[३] से चमन तमाम

हसरत मोहानी

१. मस्ती का नशा २. प्रियतमा का सौंदर्य ३. फूल की आग

निकल के जाऊँ कहाँ तेरी अंजुमन के सिवा
चमन की बू[१] हूँ, बसूँ फिर कहाँ चमन के सिवा

आगा शरफ

तेरी महफिल से उठाता गैर मुझको क्या मजाल
देखता था मैं कि तूने ही इशारा कर दिया

हसरत मोहानी

शायद मुझे निकालकर पछता रहे हैं आप
महफिल में इस खयाल से फिर आ गया हूँ मैं

अदम

कल वो अपनी जात में एक अंजुमन था दोस्तो
आज वो टूटा हुआ तस्बीह[२] का दाना लगे

'नश्तर'

यूँ चुराई उसने आँखें सादगी तो देखिए
बज़्म में गोया मेरी जानिब इशारा कर दिया

फानी बदायूनी

महफिल में तेरी आके यह बेआबरु हुए
पहले थे आप, आप से तुम, तुम से तू हुए

वो आए बज़्म में इतना तो 'मीर' ने देखा
फिर उसके बाद चिरागों में रौशनी न रही

मीर

तुम कि हर महफिल में बन सकते हो फिर्दौसे-नज़र[३]
मुझको ये दावा कि हर महफिल पे छा सकता हूँ मैं

मजाज़

---

१. सुगंध २. माला ३. दृष्टि का स्वर्ग

हम ने सोचा, तिरी आँखें तो उठें, लब तो हिलें
इसलिए हम तिरी महफिल से चले आये हैं

परवीन 'फना'

आए भी लोग, बैठे भी, उठ भी खड़े हुए
मैं जा ही ढूँढ़ता तिरी महफिल में रह गया

आतिश

इस सोच में बैठे हैं झुकाए हुए सर हम
उठके तेरी महफिल से जाऐंगे किधर हम

सिराज लखनवी

तेरी महफिल भी गई, चाहने वाले भी गए
शब की आहें भी गईं, सुबह के नाले भी गए

इकबाल

'हसरत' तिरी निगाह-ए-मुहब्बत को क्या करूँ
महफिल में उनसे रात शरारत न हो सकी

हसरत मोहानी

लहद में क्यूँ न जाऊँ मुँह छुपाए
भरी महफिल से उठवाया गया हूँ

शाद अज़ीमाबादी

फिर नजर में फूल महके, दिल में फिर शम्माऐं जलीं
फिर तसव्वुर ने लिया उस बज़्म में जाने का नाम

फैझ अहमत 'फैझ'

उठकर तो आ गये हैं तेरी बज़्म में मगर
कुछ दिल ही जानता है कि किस दिल से आये हैं

फैझ अहमद 'फैझ'

कोई दम का मेहमां हूँ ऐ अहले-महफिल[१]
चिरागे-सहर[२] हूँ बुझा चाहता हूँ

इकबाल

आज महफिल से तुम आए हो उठाने हमको
हाय ! वो दिन कि जो उठते थे बिठाने हमको

अमीर मीनाई

आने पाता नहीं कोई आशिक
खूब महफिल का इन्तझाम किया

दाग़

आनेवालों की निगाहें बख्शती है रौशनी
झगमगाती है चिरागों से कोई महफिल कहाँ

खलिश मुजफ्फर

उन्हींकी बज़्म सही, ये कहाँ का है दस्तूर
इधर को देखना, देना उधर को पैमाना

हरवंशनारायण 'अमन'

दुल्हन बनी हुई अब के चमन में आई है
बहार हो के तेरी अंजुमन में आई है

असर लखनवी

यूँ उठे वो बझ्म में ताझीम[३] को गैरों की हाय
हमनशीं[४] तू बैठ, यहाँ हम से न बैठा जाएगा

मुझे तो निकाला है खैर तुमने महफिल से
तुम्हारा चेहरा भी उतरा सा क्यूँ लगे है मुझे

---

१ महेफिल में उपस्थित लोग २. प्रभातदीप ३. स्वागत ४. दोस्त

खुल गया राझ छुपी चाह का सब महफिल पर
नाम लेकर जो मेरा उससे पुकारा न गया

'वहीद'

कहाँ की ऐसी उलझन है, तकाजों पर तकाजा है
जरा मैं दिल को समझा लूँ उठा जाता हूँ महफिल से

'हयात'

दिले-मुझ्तर[1] से पूछ ऐ रौनके-बज़्म
मैं खुद आया नहीं, लाया गया हूँ

'शाद' अझीमाबादी

यूँ तड़पकर दिल ने तडपाया सरे-महफिल मुझे
उसको कातिल कहने वाले कह उठे कातिल मुझे

'जिगर' मुरादाबादी

एक आँसु ने डुबोया मुझको उनकी बझ्म में
बूँद भर पानी से सारी आबरू पानी हुई

जौक

जो तेरी बझ्म से उठ्ठा वो इस तरह उठ्ठा
किसीकी आँख में आँसू, किसीके दामन में

अब्दुल मजीद 'सालिक'

ये न जाना था कि इस महफिल में दिल रह जाएगा
हम ये समझे थे चले आऐंगे दम भर देख कर

'ममनून' सोनीपती

मुहब्बत करने वाले कम न होंगे
तिरी महफिल में लेकिन हम न होंगे

हफीझ होशियारपुरी

---

१. व्याकुल मन

हैं तो महफिल में, मगर ऐसी जगह बैठे हैं
जामे-मय[१] हादसा[२] बन जाए तो हम तक पहुँचे

नवाब अफसर

खुदा जाने ये किसकी जलवा[३] गहे नाझ है दुनिया
हझारों उठ गये, रंगत वही बाकी है महफिल की

असीर लखनवी

भरी बज़्म में राझ की बात कह दी
बड़ा बे-अदब हूँ सज़ा चाहता हूँ

इकबाल

महिफले-वाझ[४] तो ता-देर[५] रहेगी कायम
ये है मैखाना अभी पीके चले आते हैं

कायम चाँदपुरी

खुदा हाफिझ है, क्यों महफिल में उसका नाम आया था
तड़पने से अभी दिल को मेरे आराम आया था

हसरत मोहानी

मुहब्बत ने किया बदनामो-रुस्वा[६] इस कदर मुझको
कि हर महफिल में मेरी दास्तां दुहराई जाती है

मु. तकी कैस शेखपुरवी

महफिल की महफिल है गमगीं[७]
किस-किस का दिल शाद[८] करोगे ?

तासीर

---

१. शराब की प्याली २. दुर्घटना ३. रूप ४. सभा जिसमें उपदेश दिये जाते हों ५. देर तक ६. कलंकित ७. उदास. ८. प्रसन्न

कैसी कैसी महफिलें सूनी हुई
फिर भी दुनिया किस कदर आबाद है

सहर अंसारी

'दाग़' उस बझ्म में मेहमान कहाँ जाता है
तेरा अल्लाह निगहबान[1], कहाँ जाता है ?

दाग़

बात करनी हमें मुश्किल कभी ऐसी तो न थी
जैसी अब है तेरी महफिल, कभी ऐसी तो न थी

बहादुरशाह 'जफर'

चले थे, एक नजर तेरी बझ्म देख आयें
यहाँ जो आए तो बेईख्तियार बैठ गए

रझा न्योतनवी

बझ्म से उसकी 'आरझू' आए हो जो तुम शाद-शाद[2]
मुझदा[3] हमें भी देते जाओ, दिल जो लिया तो क्या दिया

अरझू लखनवी

इस अंजुमन में आपको आना है बार-बार
दीवारो-दर को गौर से पहचान लीजिए

शहरयार

कुछ देर फिक्र आलमेबाला[4] की छोड़ दे
इस अजुंमन का राझ इस अंजुमन में है

असर लखनवी

किसीकी आँखो से अश्क ढलके हैं
अंजुमन में बड़े तहलके हैं

झहीर गाझीपुरी

---

१. रक्षक २. प्रसन्न ३. खुशखबर ४. परलोक

हुई हमसे यह नादानी तेरी महफिल आ बैठे
झमीं की खाक होकर आसमाँ से दिल लगा बैठे

तुम छेड़ते हो बझ्म में मुझको तो हँसी से
पर मुझ पे जो हो जाये है पूछो मेरे जी से

मुमकिन नहीं कि बज़्मे-तरब[१] फिर सजा सकूँ
अब ये भी है बहुत कि तुम्हें याद आ सकूँ

जगन्नाथ आझाद

वो भी कुछ कहते हुए दूर तक आए पीछे
हम जो उस बझ्म से निकले भी तो तौकीर[२] के साथ

निझाम रामपुरी

कुछ दर पे झुकाए हुए सर बैठे हैं 'साबिर'
इस बझ्म से शायद कि निकलवाए हुए हैं

'साबिर' कादिर बख्श

उनकी महफिल में हम रंगे महफिल बने
मुस्कुराते थे सब, मुस्कुराना पड़ा

यूँ ही तो नहीं कहता रहता नझ्में,[३] गझलें, गीत 'कतील'
ये तो किसीकी महफिल तक जाने का एक वसीला[४] है

कतील शिफाई

जब हमें बज़्म में आने की इजाज़त न रही
फिर यह क्यों पुरसिशे-हालात[५] है ? यह भी न सही

आझाद अन्सारी

---

१. आनंद मंडली २. सम्मान ३. कविता ४. साधन ५. खबर पूछना

इसे बसा के अगर यूँ उजाड़ देना था
तो अंजुमन ये सजायी थी किस लिए तूने ?

जमील मलिक

यह क्या मुंसिफी[१] है, कि महफिल में तेरी
किसीका भी हो जुर्म, पायें सजा हम

हसरत मोहानी

कौन है बझ्म के काबिल वो समझ जाते है
सब निकाले गए, परवाने निकाले न गए

हफीझ जौनपुरी

ये बझ्मे-मै है, याँ कोताह[२] दस्ती[३] में है महरुमी[४]
जो बढ़कर खुद उठा ले हाथ में, मीना उसीका है

शाह अझीमाबादी

जो बयाने-इश्क भी समझे, जबाने हुस्न भी
आपकी महफिल में ऐसा राझदाँ कोई नहीं

अलम मुझफ्फरनगरी

दिखावे के हैं सब यह दुनिया के मेले,
भरी बझ्म में हम रहे हैं अकेले

अफसर मेरठी

अनोखे खयालों की महफिल जमाये
पड़े रहते हैं घर में 'अफसर' अकेले

अफसर मेरठी

तेरी महफिल में मेरा बैठना बेलुत्फ[५] था लेकिन
जरा यह भी तो सुन लूँ, मेरे उठ जाने पे क्या गुझरी ?

अदा अकबराबादी

---

१. न्यायपरायणता २. छोटा ३. हाथ ४. वंचित ५. बेमजा

शे'र-ओ-फन[1] की सजी है नयी अंजुमन,
हम भी बैठे हैं कुछ नौजवानों के बीच

जाँनिसार अख्तर

जो अपनी जात[2] से इक अंजुमन कहा जाए,
वो शख्स तक मुझे तनहा दिखाई पड़ता है

जाँनिसार अख्तर

उसी पे खत्म है यादों की महफिलें भी 'नईम'
जो देखने में अकेला दिखाई देता है

हसन नईम

कौन लाया तेरी महफिल में हमें होश नहीं
कोई आए तेरी महफिल से उठा ले जाए

अहमद फराज़

उंघने वालों की आँखों में काँटा बनकर नींद चुभे
प्यारे साथी, इस महफिल में कोई ऐसा राग अलाप

कतील शिफाई

तेरी महफिल में आकर सोचता हूँ
न आता तो बहुत नुकसान होता

सरशार सिद्दीकी

जो भी हो साहिबे-महफिल[3] वही कहता है 'फराझ'
कि वह उठ जाए जो महफिल से तो महफिल न रहे

अहमद फराझ

आप की कौन-सी बड़ी इज्जत ?
मैं अगर बझ्म में जलील[4] हुआ

मोमिन

---

१. शायरी और कला २. व्यक्तित्व ३. सभापति ४. अपमानित

आज उस बझ्म में तूफ़ान उठाकर उट्ठे
यहाँ तलक रोये कि उनको भी रुला कर उट्ठे

मोमिन

'असर' उठाए गए आज उसकी महफिल से
हमें यकीन था ये बे-बुलाए जाते हैं

असर लखनवी

हमारे सामने कातिल है, क्या किया जाये
वो अब भी झीनते-महफिल[१] है, क्या किया जाए !

मज़कूर[२] तेरी बज़्म में किस का नहीं आता
पर जिक्र हमारा नहीं आता, नहीं आता

जौक

सारी महफिल जिसपे झूम उठ्ठी 'मजाझ'
वो तो आवाज़े-शिकस्ते-साज़[३] है

मजाझ

महफिल से निकालो हमें कुछ सोच-समझ कर
जब हम न रहे, आप की महफिल में रहा क्या ?

जोश मलसियानी

वाह क्या रंग है क्या खूब तबीयत है 'रियाझ'
हो जमीं कोई, तुम्हें फूलते फलते देखा

रियाझ खैराबादी

हमीं जब न होंगे तो क्या रंगेमहफिल
किसे देखकर आप शर्माइयेगा ?

जिगर मुरादाबादी

---

१. महेफिल की शोभा २. चर्चा ३. साज़ टूटनेकी आवाज़

हझरते 'दाग़' जहाँ बैठ गये, बैठ गये
और होंगे तेरी महफिल से उभरने वाले

दाग़

किस्मत की शिकायत किससे करें, वो बझ्म मिली है हमको जहाँ
राहत के हजारों साथी हैं, दुःख-दर्द में शामिल कोई नहीं

वासित भोपाली

मेरा उठ जाना जरूरी था मगर
आपकी महफिल तो खाली हो गई

सबा अकबराबादी

हमारे साथ सभी हैं, मगर कोई भी नहीं
हम अंजुमन में हैं बैठे हुए मगर तनहा[१]

जफर अकबराबादी

आँखे

उन मस्त अँखडियों को कँवल कह गया हूँ मैं
महसूस कर रहा हूँ गझल कह गया हूँ मैं

अदम

जब मिली आँख होश खो बैठे
कितने हाझिर जवाब हैं हम लोग

जिगर मुरादाबादी

रह गये लाखों कलेजे थामकर
आँख जिस जानिब तुम्हारी उठ गई

'दाग़'

१. अकेला

जिस तरफ तूने किया एक इशारा न जिया
न जिया, आह ! तेरी चश्म का मारा न जिया

खिलना कम कम कली ने सीखा है,
उसकी आँखों की नीमखाबी से

मीर

मीर उन नीमबाझ[1] आँखों में
सारी मस्ती शराब की सी है

मीर

न और खोल अभी नीमबाझ आँखों को
तेरे निसार, ये जादू, अभी जगाए जा

फिराक गोरखपुरी

रहते हो तुम आँखों में फिरते हो तुम्ही दिल में
मुद्दत से अगरचे यहाँ आते हो न जाते हो

मीर

आँखें जो खुल रही हैं मरने के बाद मेरी
हसरत[2] यह थी कि उनको मैं एक निगाह देखूँ

मीर

उसकी आँखों को गौर से देखो
मंदिरों में चिराग जलते हैं

बशीर बद्र

तुम्हें जरुर कोई चाहतों से देखेगा,
मगर वो आँखें हमारी कहाँ से लायेगा ?

बशीर बद्र

---

१. आधी खुली हुई २. इच्छा

मेरे रास्तें में उजाला रहा
दिये उसकी आँखों में जलते रहे

बशीर बद्र

आज इतनी पीला दे आँखों से
खत्म दरिंदो की[१] प्यास हो साकी

अदम

आँखों से आँखे चार हुई, कुछ मैंने कहा, कुछ उसने कहा,
चुप रहने से क्या होता है, अब राझ छुपाना मुश्किल है

'हादी'

एक मुद्दत से चिरागों की तरह जलती है
इन तरसती हुई आंखों को बुझा दे कोई

'साकी' फारुकी

मोती के दो थाल सजाए आज हमारी आँखों ने
तुम जाने किस देश सिधारे, भेजें ये सौगात कहाँ ?

फिराक गोरखपुरी

लोग कहते हैं जिन्हें नील कंवल वो तो 'कतील'
शब[२] को इन झील सी आँखों में खिला करते हैं

कतील शिफाई

और भी मेरे लिए आफत का सामां हो गई
हाय वो मखमूर आँखें जब पशेमां[३] हो गई

'जिगर' मुरादाबादी

देखी थी एक रोज तेरी मस्त अँखडियाँ
अँगड़ाईयाँ-सी लेते हैं अब तक खुमार में

'मीर' साहब

---

१. शराबी की २. रात्रि ३. लज्जित

वो चीज कहते हैं फिर्दोसे–गुमशुदा[1] जिसको
कभी–कभी तेरी आँख में पाई जाती है

'जिगर' मुरादाबादी

आप दिल के करीब हैं फिर भी
आँखें दीदार[2] को तरसती है

शाद अझीमाबादी

आँख उसकी जब नशे में गुलाबी हो जाए
सूफी उसे देखे तो शराबी हो जाए

जौक

आँखें तुम्हारी मस्त भी है, मस्ती का पैमाना भी
एक छलकते सागर में मय भी है, मयखाना भी

सागर

आँखें खोलीं भी, बंद भी की
वह शकल न सामने से गुजरी

अमीर मीनाई

एक जंगल है तेरी आँखों में
मैं जहाँ राह भूल जाता हूँ

दुष्यंत कुमार

मेरी आँखें और दीदार आपका
या कयामत आ गई या ख्वाब है

आसी गाझीपुरी

तिरे जमाल की तस्वीर खींच दूँ लेकिन
जुबाँ में आँख नहीं, आँख में जुबाँ नहीं

जिगर मुरादाबादी

---

१. खोया हुआ स्वर्ग २. दर्शन

यूँ चुराई उसने आँखें सादगी तो देखिए
बज़्म में[१] गोया मेरी जानिब[२] इशारा कर दिया
'फानी' बदायूनी

इन रसभरी आँखों में हया खेल रही है
दो जहर के प्यालों में कज़ा[३] खेल रही है
'अख्तर' शीरानी

होता है राज़-ए-इश्क-ओ-मुहब्बत इसीसे फाश
आँखें जुबाँ नहीं है मगर बेजुबाँ नहीं
असगर गोंडवी

खुदा बचाये तेरी मस्त-मस्त आँखों से
फरिश्ता हो तो बहक जाय आदमी क्या है
खुमार बाराबंकवी

वो सूरतें इलाही किस मुल्क में बसतियाँ हैं
अब देखने को जिनके आँखें तरसतियाँ हैं
सौदा

मेरे मौला मिरी आँखों को समुन्दर दे दे
चार बूँदो से गुजारा नहीं होगा मुझसे
इशरत किरत पुरी

आ जाये मयस्सर[४] जिसे आँखों के वो सागर
वह रिंद[५] तो पी-पी के बहकता ही चला जाए
कतील शिफाई

उसके लहजे का असर तो है बड़ी बात 'कतील'
वो तो आँखों से भी करता हुआ जादू आए
कतील शिफाई

---

१. महफिलमें २. तरफ ३. मृत्यु ४. प्राप्त ५. शराबी

मैकदे बंद हुए, ढूँढ रहा हूँ तुझको
तू कहाँ है मुझे आँखों से पिलाने वाले

कतील शिफाई

जाम तोड़ूँ भी तो आँखों से पिलाना चाहे
फिर वो जालिम मुझे मैख्वार बनाना चाहे

कतील शिफाई

जानम ये रसीली, ये कटीली आँखें
रहती है जो बे-पिये नशीली आँखें
ऐसा न हो, आखिर डुबो दे मुझको
ये तेरी समंदरों-सी नीली आँखें

कतील शिफाई

कभी इन मदभरी आँखों से पिया था एक जाम
आज तक होश नहीं, होश नहीं, होश नहीं

जिगर मुरादाबादी

असर लुभाने का प्यारे तेरे बयान में है
किसीकी आँख में जादू तुम्हारी ज़बान में है

एक सी शोखी[१] खुदा ने दी है हुस्नो इश्क को
फर्क बस इतना है, वो आँखों में है, ये दिल में है

जामिन अली जलाल

आपसे आँख मिलाऊँ ये मेरी ताकत है ?
देखता हूँ कि वो अगली सी नजर है कि नहीं

जलील मानिकपुरी

---

१. चंचलता

बस रहा है मेरी आँखों में वही जाने-बहार[1]
जिसका हम-रंग[2] कोई फूल चमन भर में नहीं
ताजवर नजीबाबादी

वो जिनके ज़िक्र से 'नाहीद' ज़िंदगी है हसीं
वो लोग आऐं तो आँखों पे हम बिठाऐं भी
किश्वर 'नाहीद'

आँखों ही में रहे हो, दिल से नहीं गए हो
हैरान हूँ, ये शोखी आई तुम्हें कहाँ से ?
मीर

देखो तो चश्मे-यार[3] की जादू-निगाहियाँ[4]
हर एक को है गुमाँ[5] कि मुखातिब[6] हमीं रहे
हसरत मोहानी

आँखों पर पलकों का साजन, कब होता है बोझ
दूर से आये हो तुम नैनन बीच करो आराम
इरफाना अझीझ

हम आँख बन्द किए तसव्वुर में पड़े हैं
ऐसे में कहीं छम से वो आ जायें तो क्या हो ?
रियाझ खैराबादी

क्या हुस्न का अफसाना महदूद[7] हो लफझों में
आँखें ही कहें उसको, आँखों ने जो देखा है
जिगर मुरादाबादी

तुझे देखने का सौदा[8] तो जहान में है सबको
मगर आँख देखने की कोई लायेगा कहाँ से ?
अर्श मलसियानी

---

१. वसंत ऋतु का प्राण २. समान रुप रंग वाला ३. प्रिया की आँखें ४. दृष्टि का जादु
५. विचार ६. सम्बोधित ७. सीमित ८. उन्माद

हुई सामने यों तो एक एक के
हमींसे वह कुछ आँख शरमा गई

मीर

वे दिन गये कि आँखें दरिया सी बहतियाँ थीं
सूखा पड़ा है अब तो मुद्दत से यह दोआबा[१]

मीर

वह जब देखे मेरी जानिब[२] समंदर जैसी आँखों से
न उभरा जाये है मुझसे, न डूबा जाये है मुझसे

सहबा अख्तर

तुम्हारी बेरुखी[३] ने लाज रख ली बादाखाने[४] की
तुम आँखों से पिला देते तो पैमाने कहाँ जाते ?

कतील शिफाई

वो मेहरबाँ है बहुत फिर भी हम ये कहते हैं
तमाशे आँखों ने ऐसे बहुत से देखे हैं

अहमद हमदानी

इक हसीं आँख ने कुछ जख्म दिए थे मुझको
अब कोई आँख मिलाता है तो रो देता हूँ

अल्ताफ मशहदी

शायद हुझूर से कोई निस्बत हमें भी हो
आँखों में झाँककर हमें पहचान जाइए

कतील शिफाई

दोनों जहान की न रही फिर खबर उसे
दो प्याले जिसको आँखों ने तेरी पिला दिए

मीर दर्द

---

१. पास की दो नदियों के बीच का प्रदेश २. तरफ ३. उपेक्षा ४. शराबखाना

नैन से नैन जब मिलाय गया
दिल के अंदर मेरे समाय गया

आबरू

आँखें नहीं हैं चेहरे पे तेरे फकीर के
दो ठीकरे हैं भीक के, दीदार के[1] लिए

आतिश

भरी महफिल में हर इक से बचा कर
तेरी आँखो ने मुझसे बात कर ली

फिराक गोरखपुरी

हमारी आँखों से चुन लो कि फिर किसी दामों
न मिल सकेंगे ये गौहर[2] अभी यहाँ से न जाव

फिराग गोरखपुरी

तेरी आँखों का कुछ कुसूर नहीं
हाँ, मुझीको खराब होना था

जिगर मुरादाबादी

बहुत अज़ीज़[3] हैं आँखें मेरी उसे, लेकिन
वह जाते-जाते इन्हें कर गया है पुरनम[4] फिर

परवीन शाकिर

दिखा के मद भरी आँखें कहा ये साकी ने
हराम कहते हैं जिसको ये वो शराब नहीं

खुमार बराबंकवी

देख छोटों को है अल्लाह बड़ाई देता
आसमाँ आँख के है तिल में दिखाई देता

जौक

१. देखने के लिए २. मोती ३. प्रिय ४. अश्रुपूर्ण

आँखें खुली तो जाग उठीं हसरतें तमाम
उसको भी खो दिया जिसे पाया था ख्वाब में

सिराझ लखनवी

वो कहते हैं कि हम आँखों में सब को ताड़ लेते हैं
मोहब्बत सारी दुनिया की इसी काँटे पे तुलती है

अमीर मीनाई

कदम रंजा फर्माइये बेतकल्लुफ[१]
सरे राह आँखें बिछाये हुए हैं

आग दिल में लगी न हो जब तक
आँख अश्कों से[२] तर नहीं होती

आरझू लखनवी

हसीं तेरी आँखें, हसीं तेरे आँसू
यहीं डूब जाने को जी चाहता है

जिगर मुरादाबादी

इन्तज़ार

कहीं वो आके मिटा दें न इंतज़ार का लुत्फ
कहीं कुबूल न हो जाए इल्तझा[३] मेरी

जिगर मुरादाबादी

अब इन हदूद[४] में लाया है इंतज़ार मुझे
वो आ भी जाऐं तो आऐ न एतबार मुझे

खुमार बाराबंकवी

१. शिष्टाचार बिना २. आंसुओं से ३. प्रार्थना ४. सीमा

अब मिले हम तो कई लोग बिछड़ जाऐंगे,
इंतज़ा और करो अगले जनम तक मेरा

बशीर बद्र

मोहब्बत इंतज़ारे-दाइमी[१] का नाम है, ऐ दिल
कोई आया तो क्या होगा, नहीं आया तो क्या होगा ?

खुमार बाराबंकवी

जो भी बिछड़े वो कब मिले हैं 'फराझ'
फिर भी तू इंतज़ार कर शायद

अहमद फराझ

और कुछ पल उसका रस्ता देख लूँ
आसमाँ पर एक तारा और है

परवीन शाकिर

सजे हुए है दरीचे[२] पे फूल बेले के
बहुत रहा है तेरा इन्तज़ार तेरे बाद

इरफाना अझीझ

झिंदगानी तवील[३] थी लेकिन मौत के इंतज़ार में गुज़री
जो भी गुज़री बुरी भली 'सानी' आप के इख्तियार में गुझरी

डॉ. झरीना सानी

उनके खत की आरझू है, उनकी आमद[४] का खयाल
किस कदर फैला हुआ है, कारोबारे-इन्तज़ार

हसरत मोहानी

ता फिर न इन्तज़ार में नींद आये उम्र भर
आने का अहद कर गये आये जो ख्वाब में

गालिब

१. स्थायी प्रतीक्षा २. खिड़की ३. लंबी ४. आगमन

वस्ल की शब[१] का इन्तज़ार न पूछ
हमने मर-मर के दिन तमाम किया

अहसन मारहरवी

जिनके हम मुंतज़िर[२] रहे उनको
मिल गया और हमसफर शायद

अहमद फराझ

वह न आएगा हमें मालूम था उस शाम भी
इंतज़ार उसका मगर कुछ सोचकर करते रहे

परवीन शाकिर

तुम्हें ये भी कभी खयाल आया
कि कोई राह देखता होगा ?

निझाम रामपुरी

तमाम उम्र यूँ ही हो गई बसर अपनी
शबे-फिराक[३] गई, रोजे-इंतज़ार आया

नासिख

खुदा करे कि मझा इन्तझार का न मिटे
मेरे सवाल का वो दें जवाब बरसों में

दाग़

शबे इन्तज़ार की कश्मकश न पूछ कैसे सहर हुई,
कभी एक चराग जला दिया, कभी इक चराग बुझा दिया

मजरुह सुलतानपुरी

कोइ वादा नहीं, उम्मीद नहीं
फिर मुझे इन्तज़ार सा क्या है

काबिल अजमेरी

---

१. मिलन की रात २. प्रतीक्षा करना ३. विरहरात्रि

मौत का इन्तज़ार बाकी है
आपका इन्तज़ार था न रहा

फानी बदायूनी

इन्तज़ारे-दोस्त की अल्लाह रे मायूसियाँ[1]
डूबते जाते हैं तारे, डूबता जाता है दिल

गौहर गोरखपुरी

यह, आधी रात को उनका पयाम[2] आया है,
'हम आज आ नहीं सकते, अब इन्तज़ार न हो'

रियाझ खैराबादी

गजब किया तेरे वादे पे एतबार[3] किया
तमाम रात कयामत का इन्तज़ार किया

दाग़

ये न थी हमारी किस्मत कि विसाले-यार[4] होता
अगर और जीते रहते यही इन्तज़ार होता

गालिब

कोई आया न कोई आयेगा लेकिन
क्या करें गर न इन्तज़ार करें

फिराक गोरखपुरी

इक मैं कि इन्तज़ार में घडियाँ गिना करुँ
इक तुम कि मुझसे आँख बचाकर चले गए

जोश मलसियानी

वक्त सौ मुंसिफों का मुंसिफ है
वक्त आएगा इन्तज़ार करो

---

१. निराशा २. संदेश ३. विश्वास ४. प्रेमी से मिलन

खुदा गवाह कि काटे से अब नहीं कटती
ये इन्तज़ार की रातें ये इन्तज़ार के दिन

जोश मलीहाबादी

सब दुनिया ने कहा तुझे, मत एतबार कर उसका
बैठा सारी उम्र मियाँ, अब इंतज़ार कर उसका

कतील शिफाई

बेखुदी[१] ले गई कहाँ मुझको
देर से इन्तज़ार है अपना

मीर

मैं जिन्दा था कि तिरा इंतज़ार खत्म न हो
जो तू मिला तो अब सोचता हूँ, मर जाऊँ

अहमद नदीम कासमी

हम इंतज़ार करेंगे तिरा कयामत तक
खुदा करे कि कयामत हो और तू आये

साहिर लुधियानवी

कुछ इतनी तेझ थी रफतारे-कारवाने-हयात[२]
कहीं ठहर के तिरा इंतज़ार कर न सके

उमर अंसारी

आये हो क्या तुम ही मुझे आवाझ दो जरा
आँखों का नूर छीन लिया इन्तज़ार ने

आनंद नारायण 'मुल्ला'

न कोई वादा, न कोई यकीं, न कोई उम्मीद
मगर हमें तो तेरा इन्तज़ार करना था

फिराक गोरखपुरी

---

१. तन्मयता २. जीवन के काफिले की गति

अभी कहूँ तो करें लोग शर्मसार मुझे
कि किसके वादे पे है इतना इन्तझार मुझे

शेफता

किसे यकिन कि तुम देखने को आओगे
आखिरी वक्त मगर इन्तझार और सही

आगा शायर

है किसका इन्तझार, कहाँ ध्यान लगा है
क्यों चौंक-चौंक पड़ते हो आवाज़-ए-पा[१] के साथ

निझाम रामपुरी

कहते हैं लोग, मौत से बदतर है इन्तज़ार
मेरी तमाम उम्र कटी इन्तज़ार में

मजाझ

तमाम उम्र तेरा इन्तज़ार हमने किया
इस इन्तज़ार में किस किससे प्यार हमने किया

हफीझ होशियारपुरी

कुछ रोज ये भी रंग रहा इन्तज़ार का
आँख उठ गई जिधर बस उधर देखते रहे

असर लखनवी

है खुशी इन्तज़ार की हरदम
मैं ये क्यों पूछुँ कब मिलेंगे आप

निझाम रामपुरी

खुलूसे-दिल[२] से पुकारे जो एक बार मुझे
उस आदमी का अभी तक है इन्तज़ार मुझे

हफीझ जालंधरी

---

१. पगरव/आहट २. सरल और पवित्र हृदय से

तमाम उम्र तेरा इन्तज़ार कर लेंगे
मगर ये रंज रहेगा कि जिंदगी कम है

शाहिद सिद्दीकी

अल्लाह रे बेखुदी कि तेरे पास बैठकर
तेरा ही इन्तज़ार किया है कभी कभी

नरेश 'शाद'

'नज़मा' अब आ चली है सितारों को नींद सी
क्यों उनका इन्तज़ार किए जा रही हूँ मैं

'नज़मा' शमशाद

इक उम्र कट गई है तेरे इन्तज़ार में
ऐसे भी हैं कि कट न सकी जिनसे एक रात

फिराक गोरखपुरी

माना कि तेरी दीद[१] के काबिल नहीं हूँ मैं
तू मेरा शौक देख, मेरा इन्तज़ार देख

इकबाल

सारे पहाड़ काट मैं मिलने आऊँगा
हाँ, मेरे इन्तज़ार में दरिया रुका भी हो

बशीर बद्र

मैं आ ही जाउंगा और तू भी मिल ही जाएगा
इस एतिमाद[२] से अब मेरा इंतज़ार न कर

अतीकुल्ला

मेरी आँखों के दोनों पट खुले हैं इंतझारी में
बहाना मत करो, गर तुमको आना है तो आ जाओ

सिराझ औरंगाबादी

---

१. दर्शन २. विश्वास

मेरी ना'श के सिरहाने वो खड़े ये कह रहे हैं
इसे नींद यूँ न आती अगर इंतिज़ार होता

सफी लखनवी

इन्कार

इस 'नहीं' का कोई इलाज नहीं
रोज कहते हैं आप, 'आज नहीं'

दाग़

माँगता हूँ जो दुआ वस्ल[१] की उनके आगे
चुपके चुपके वो कहे जाते हैं मुमकिन ही नहीं

दाग़

कही जब बात मतलब की तो वो कहने लगा हँसकर
कि सब कुछ और मुमकिन है, पर ऐसा हो नहीं सकता

रश्क

आता है मुझको याद सवाले-विसाल[२] पर
कहना किसीका, हाए, वो मुँह फेरकर 'नहीं'

दाग़

दिन नहीं, रात नहीं, सुबह नहीं, शाम नहीं
रह गई एक 'नहीं' 'हाँ' का कोई नाम नहीं

अमीर

जी चाहता है फिर करूँ तुमसे कोई सवाल
तेरी 'नहीं, नहीं' ने गजब का मझा दिया

जलील मानिकपुरी

---

१. मिलन २. मिलनकी बिनती

इसलिए वस्ल से इन्कार है, हम जान गये
यह न समझे कोई, क्या जल्द कहा मान गये

दाग़

फिर इस 'नहीं' का लुत्फ दिखायेंगे आपको
सुन ली अगर, खुदा ने हमारी दुआ कभी

राना

झिडकी सही, अदा सही, चीने-जबीं[१] सही
सब कुछ सही, पर एक 'नहीं' की नहीं सही

इन्शा

ये रात है वस्ल की मेरी जाँ, भरे हैं दिल में हजारों अर्मां
नहीं न निकले जबाँ से, हाँ-हाँ अरे ये मौका नहीं, नहीं का

जलील मानिकपुरी

इतनी भी किसी बात पर यों हट नहीं करते
इतना भी बस इन्कार मिरी जाँ नहीं होता

बेखुद देहलवी

हो गई आदत तुम्हें वस्ल में इन्कार की
फिर वही झगड़ा निकाला, फिर वही तकरार की

नाझ वली

याद की शर्त लगा देते हो वादा करके
खूब इन्कार का पहलू है यह इकरार[२] के साथ

'कैसर'

गाली सही, अदा सही, चीने-जबीं सही
यह सब सही पर एक 'नहीं' की नहीं सही

'रश्क'

---

१. २. स्वीकृति

कोई मुँह चूम लेगा इस ‘नहीं’ पर
शिकन[१] रह जाएगी यूँ ही जबीं[२] पर

रियाझ खैराबादी

जब तक था दिल में आपके, इकरारे-वस्ल[३] था
जब आ गया जबान पे इन्कार हो गया

बेखुद देहलवी

मिरे इझहारे-गम[४] का कुछ तो लाझिम[५] था जवाब उनको
न कहते ‘हाँ’, मगर मुँह से ‘नहीं’ भी तो नहीं निकली

अमीर मीनाई

अपने मतलब की कहें जायेंगे हम
गरचे सौ बार ‘नहीं’ कीजियेगा

मीर कल्लू शायर

ये क्या कहा कि मेरी बला भी न आयेगी
क्या तुम न आओगे तो कझा[६] भी न आयेगी

दाग़

रात दिन नामा-ओ-पैगाम[७] कहाँ तक होंगे ?
साफ कह दीजिए मिलना हमें मंजूर नहीं

दाग़

अच्छा किया जो शबे-वस्ल[८] से इन्कार कर गये
खुशी से मर गये होते अगर इकरार[९] हो जाता

रियाझ खैराबादी

---

१. झुर्री २ मस्तक ३. मिलन की स्वीकृति ४. दु:ख की अभिव्यक्ति ५. जरुरी ६. मृत्यु ७. पत्र और संदेश ८. मिलन की रात्रि ९. स्वीकृति

इम्तहान (परीक्षा)

हमारा इम्तहाँ करते हो लेकिन
तुम्हारा भी इसमें इम्तहाँ है

'बेनझीर' शाह

बात अब इम्तहाँ पे आई है
किस्सा कोताह[१], जाँ पे आई है

मिर्झा असकरी

यही है आझमाना तो सताना किसको कहते हैं
अदू[२] के हो लिये जब तुम तो मेरा इम्तहाँ क्यों हो ?

गालिब

कहीं ऐसा न हो मर जाऊँ मैं हसरत[३] ही हसरत में
जो लेना हो तो ले लो सबसे पहले इम्तहाँ मेरा

जावेद लखनवी

इम्तहाँ और भी बाकी हैं, वो यों होते हैं
यह भी अंदाझ है, मुझसे उन्हें नफरत कैसी

दाग़

इम्तहाँ क्या है मेरा मैं किसी लायक ही नहीं
खूब तुमको तो है बंदे की हकीकत मालूम

निझाम रामपुरी

लो इम्तहाँ तुम मेरे नालों[४] का शौक से
क्यों डर के आस्माँ के नीचे से हट गए

जलाल लखनवी

---

१. संक्षिप्त में, २. शत्रु ३. कामना ४. रुदन

बदनाम होंगे, जाने भी दो इम्तहाँ को
रक्खेगा कौन तुमसे अज़ीज़[1] अपनी जान को

बस हो यारब[2] यह इम्तहान कहीं
या निकल जाए अपनी जान कहीं

मीर महम्मद 'असर'

घबरा के जब फिराक[3] में माँगी दुआ-ए-वस्ल[4]
आई सदा[5] यही तो मकाम इम्तहाँ के हैं

अमीर मीनाई

मय वो क्यों बहुत पीते बज़्म-ए-गैर[6] में यारब
आज ही हुआ मंझूर उनको इम्तहाँ अपना

गालिब

यारब, तेरी रहमत[7] से मायूस[8] नहीं 'फानी'
लेकिन तेरी रहमत की ताखीर[9] को क्या कहिए ?

फानी बदायूनी

साफ कब इम्तहान लेते हैं
वो तो दम दे के जान लेते हैं

दाग़

तुम उसके सब्र का अब और इम्तहान न लो
वो सह गया है तुम्हारी हर एक सजा चुपचाप

सफदर सलीम सियाब

हमसे जो हो सका सो कर गुझरे
अब तेरा इम्तहान है प्यारे

जिगर मुरादाबादी

---

१. प्रिय २. ईश्वर ३. वियोग ४. मिलन की प्रार्थना ५. आवाज ६. परायों की महफिल ७. कृपा ८. निराश ९. विलम्ब

आये है आलमे-बाला[१] से सदा[२] 'माँगे सो दूँ'
इम्तहाँ को भी मैं लेकिन कभी साइल[३] न हुआ

नासिख

कम से कम हममें ये होसला तो रहा
जिन्दगी काट दी इम्तहानों के बीच

जाँनिसार अख्तर

इल्जाम (आरोप)

तुम मेरे लिए अब कोई इल्जाम न ढूँढो
चाहा था तुम्हें इक यही इल्जाम बहुत है

साहिर लुधियानवी

मुझ पे रखते हैं हश्र में इल्जाम
आ न जाए जबाँ पे तेरा नाम

फानी बदायूनी

रगें खिंचने लगीं, अब मौत का हंगाम[४] आता है
वो जाएें, वर्ना उनके सर पर सब इल्जाम आता है

अजीज लखनवी

अपने दिले-बेताब[५] से मैं खुद हूँ परीशां
क्या दूँ उन्हें इल्जाम मैं कुछ सोच रहा हूँ

साकिब कानपुरी

दोनों ही तो सच्चे थे, इल्जाम किसे देते ?
कानों ने कहा सहरा, आँखों ने सुना पानी

अहमद मुस्ताक

१. स्वर्ग २. आवाज़ ३. भिक्षुक ४. समय ५. बेचैन दिल

जीना है तो जी जीने की तरह
जीने का फकत इल्जाम न ले

फना कानपुरी

दुनिया ने हम पे जब कोई इल्जाम रख दिया
हमने मुकाबिल[१] उसके तिरा नाम रख दिया

कतील शिफाइ

अपने ऐबों को छुपाने के लिये दुनिया में
मैंने हर शख्स पे इल्जाम लगाना चाहा

फर्रार नूरी

शमा पर खून का इल्जाम हो साबित क्यों कर
फूँक दी लाश भी कमबख्त ने परवाने की

हमीद अल्मास

हम पर तुम्हारी चाह का इल्जाम ही तो है
दुश्नाम[२] तो नहीं है ये इकराम[३] ही तो है

फैज अहमद 'फैज'

गैर तो गैर ही थे, उनसे शिकायत कैसी ?
हम पे अपनों ने भी इल्जाम तराशे[४] क्या-क्या

'तफता'

दिल पे तेरी आँख का इल्जाम लेकर पी गया
आज वाइझ भी खुदा का नाम लेकर पी गया

कतील शिफाई

सैंकडों मिलते हैं इल्जाम के देने वाले
एक दो भी नहीं आराम के देने वाले

दाग

---

१. सम्मुख २. गाली ३. कृपा ४. लगाना

खुदा-खुदा करो मैं कब गया था मस्जिद में ?
मुझे लगाओगे इल्जाम पारसाई[१] का !

नसीम भरतपुरी

तुहमत-ऐ-चन्द[२] अपने जिम्मे धर चले
किस लिए आए थे हम, क्या कर चले

ख्वाजा मीर दर्द

फिर शौक से हुजूर लेते गालियाँ
साबित किया तो होता हमारे कुसूर को

बादशाह महल 'आलम'

मुझको तुहमत न दो, मैं शराबी नहीं
वह नजर से पिलाए तो मैं क्या करुँ ?

ताबिश कानपुरी

डरता है जमाने की निगाहों से भला क्या
इन्साफ तेरे साथ है इल्जाम उठा ले

साहिर लुधियानवी

एक हमें आवारा कहना, कोई बड़ा इल्जाम नहीं
दुनियावाले दिलवालों को और बहुत कुछ कहते हैं

हबीब जालिब

मेरी तबाही मेरा मुकद्दर[३]
आप पे कुछ इल्जाम नहीं है

शेरी भोपाली

एक मुद्दत की रफाकत[४] का हो कुछ तो इनआम[५]
जाते-जाते कोई इल्जाम लगाते जाओ

मुहसिन भोपाली

---

१. सदाचार २. जूठा आरोप ३. भाग्य ४ दोस्ती ५. पुरस्कार

जब-जब वो नज़र उठी मेरे सर
लाखों इल्जाम मढ़ गयी है

फिराक गोरखपुरी

कुछ तो हालात ने मुजरिम[१] हमें ठहराया है
और कुछ आप भी इल्जाम दिये जाते हैं

सुदर्शन फाकिर

एक कब्रस्तान में तब्दील[२] किया
आशिकी पर यह मेरा इल्जाम है

चिनु मोदी 'इर्शाद'

इलाही (खुदा)

जवाब दो कि न दो ऐ बुतों नहीं परवा
कहूँ जो कुछ वो बराये-खुदा[३] सुनो तो सही

नवाब बेगम 'हिजाब'

तेरे कमाल की हद कब कोई बशर[४] समझा
उसी कदर उसे हैरत है, जिस कदर समझा

शाद अज़ीमाबादी

खुदा ऐसे बन्दों से क्यों फिर न जाये
जो बैठा हुआ माँगना जानता है

यगाना चंगेजी

दर्दे-दिल की कोई दवा न दुआ
या इलाही ! यह माजरा[५] क्या है ?

यगाना चंगेजी

---

१. अपराधी २. परिवर्तित ३. भगवान के खातिर ४. मनुष्य ५. हाल

तुम नहीं कोई तो सबमें नज़र आते क्यों हो ?
सब तुम ही तुम हो तो फिर मुँह को छुपाते क्यों हो ?

आसी गाझीपुरी

किसीके दर पे 'आसी' रात रो-रो के यह कहता था
कि 'आखिर मैं तुम्हारा बन्दा हूँ, तुम बन्दा परवर[१] हो'

आसी गाझीपुरी

खुदा के डर से तुमको हम, खुदा तो कह नहीं सकते
मगर लुत्फे-खुदा[२], कहरे-खुदा[३], शाने-खुदा[४], तुम हो

नूह नारवी

फना[५] बगैर बका का[६] मझा नहीं मिलता
खुदी[७] मिटाओ न जब तक खुदा नहीं मिलता

अहसन मारहरवी

है फर्ज तुझ पर फकत बन्द-ए-खुदा की[८] तलाश
खुदा की फिक्र न कर, वो मिला, मिला-न-मिला

अलम मुजफ्फर नगरी

सुना है फिर वो सुनने आ रहे हैं दास्ताँ मेरी
इलाही ! आज तो रंगे-असर लाये जबाँ मेरी

अलम मुजफ्फर नगरी

सरापा[९] में उसके नज़र करके तुम
जहाँ देखो अल्लाह अल्लाह है

मीर

खुदा खुदा न सही राम राम कर लेंगे
मिलेगा राह में काबा सलाम कर लेंगे

---

१. दीनबन्धु २. ईश्वरीय आनंद ३. ईश्वरीय आपत्ति ४. ईश्वर की सजावट ५. नाश
६. अमरत्व ७. अहंभाव ८. ईश्वर का सेवक ९. नखशिख

कृशन का हूँ मैं पुजारी, अली का बन्दा हूँ
'यगाना' शाने खुदा[१] देखकर रहा न गया

यगाना चंगेझी

न अल्फाजे[२] हम्दो सना[३] जानता हूँ
न दिलचस्प तर्जे अदा[४] जानता हूँ

मेरी बंदगी है उसीमें कि तुझको
खुदा मानता हूँ, खुदा जानता हूँ

अकबर हैदरी

हम खुदा के कभी कायल[५] न थे
उनको देखा तो खुदा याद आया

मीर

बंदे न होंगे जितने खुदा हैं खुदाई में
किस-किस खुदा के सामने सझदा[६] करे कोई

यगाना चंगेझी

जब उनको खुदा ठहरा ही लिया फिर और को सझदा क्या करते
ऐ दीन-ए-मुहब्बत[७] तुझपे कोई इल्जाम गवारा हो न सका

जाँनिसार अख्तर

इलाही कैसे होते हैं जिन्हें है बंदगी ख्वाहिश
हमें तो शर्म दामनगीर[८] होती है खुदा होते

मीर

जो चाहे सो माँग 'आतिश' दरगाह-ऐ-इलाही[९] में
मरहूम[१०] कभी फिरते देखा नहीं साइल[११] को

आतिश

---

१. इश्वरकी भव्यता २. शब्दसमूह ३. इश्वरकी प्रशंसा ४. हावभावका प्रकार ५. माननेवाला
६. वंदन ७. प्रेमका धर्म ८. दावेदार ९. इश्वरके दरबारमें १०. वंचित ११. भिक्षुक

बड़ा करीम[1] है, देने को क्या नहीं देता
करम[2] हो उसका तो मिलने को क्या नहीं मिलता

शफक

होश किसीका भी न रख जलवागहे-नियाझ में[3]
बल्कि खुदा को भी भूल जा सजद-ए-बेनियाझ में[4]

असगर गोंडवी

यहाँ भी तू, वहाँ भी तू, जमीं तेरी, फलक[5] तेरा
कहीं हमने पता पाया न हरगिझ आज तक तेरा

दाग़

जिन्दगी अपनी जब इस शकल से गुझरी 'गालिब'
हम भी क्या याद रखेंगे कि खुदा रखते थे

गालिब

सुख में होता है हाफिझा[6] बेकार
दु:ख में अल्लाह याद आता है

अफसर मेरठी

दावर[7] के सामने बुते-काफिर[8] को क्या कहूँ
दोनों की शक्ल एक है, किसको खुदा कहूँ ?

जाहिद[9] शराब पीने दे मस्जिद में बैठकर
या वो जगह बता दे जहाँ पर खुदा न हो

दाग़

कुछ समझकर ही खुदा तुझको कहा है वरना
कौन सी बात कही इतने यकीं से हमने

जाँनिसार अख्तर

---

१. दयालु २. कृपा ३. प्रेम मंदिर में ४. भक्ति की तल्लीनता में ५. आकाश ६. स्मरण-शक्ति ७. न्यायकर्ता ८. नास्तिक प्रियतमा ९. इश्वर का भक्त

'दाग़' को कौन देनेवाला है
जो दिया ऐ खुदा दिया तूने

दाग़

मेरी हस्ती[१] गवाह कि मुझे
तू किसी वक्त भूलता ही नहीं

फानी बदायूनी

जग में आकर इधर उधर देखा
तू ही आया नज़र जिधर देखा

ख्वाजा मीर दर्द

मौत ने कर दिया लाचार वर्ना इन्साँ
है वो खुदबीं[२] कि खुदा का भी न कायल होता

जौक

खुदी को कर बुलंद इतना कि हर तकदीर से पहले
खुदा बन्दे से खुद पूछे, बता तेरी रझा[३] क्या है

इकबाल

वो खुदा है, किसी टूटे हुए दिल में होगा
मस्जिदों में उसे ढूँढो, न कलीसाओं[४] में

कतील शिफाई

बुतखाना[५] तोड़ डालिये, मस्जिद को ढाईये
दिल को न तोड़िये, ये खुदा का मुकाम है

आतिश

तुम खुदा को खुश करो, सबकी खुशामद छोड़कर
बाखुदा[६] हाकिम जो होगा, खुद ही खुश हो जाएगा

अकबर

---

१. अस्तित्व २. अभिमानी ३. इच्छा ४. ईसाईयों का प्रार्थना स्थान / चर्च ५. मंदिर
६. भगवान के समक्ष

पता यूँ तो बताते हैं वो सबको लामकाँ[१] अपना
मगर मालूम है रहते हैं वो टूटे हुए दिल में

अनीस दाउदनगरी

जो ठोकर ही नहीं खाते वो सब कुछ हैं, मगर वाएज[२]
वो, जिनको दस्ते-रहमत[३] खुद सम्हाले, और होते हैं

पंडित हरिचंद अख्तर

खुदा मुझको तुझसे ही महरूम[४] कर दे
जो कुछ और तेरे सिवा चाहता हूँ

ताजवर नजीबाबादी

हुआ है हुक्म कि 'कैफी' को संगसार[५] करो
मसीह बैठे हैं छुप के कहाँ खुदा जाने

कैफी आज़मी

अपने अहदे-वफा[६] को भूल गए
तुम तो बिलकुल खुदा को भूल गए

मुज़्तिर खैराबादी

जिसने इस दौर[७] के इन्सान किये हैं पैदा
वो मेरा भी खुदा हो मुझे मंजूर नहीं

हफीझ जालन्धरी

कहने को यूँ जहाँ में हझारों हैं यार-दोस्त
मुश्किल के वक्त एक है परवरदिगार दोस्त

असीर

खुदा का काम है यूँ तो मरीझों को शिफा[८] देना
मुनासिब हो तो इक दिन हाथ से अपने दवा देना

अझीझ लखनवी

---

१. शून्य २. उपदेशक ३. इश्वर की कृपा के हाथ ४. वंचित ५. पत्थर मार मारके मार डालना ६. प्रेम-प्रतिज्ञा ७. काल ८. आरोग्य

जिसने बनाई बाँसुरी गीत उसीके गाऐ जा
साँस जहाँ तक आए जाए, एक ही धुन बजाए जा

आरज़ू लखनवी

बेखुदी[१] में हम तो तेरा दर[२] समझकर झुक गए
अब खुदा मालूम वो काबा था या बुतखाना था

तालिब बाग्पती

कोई उनको समझ भी ले तो फिर समझा नहीं सकता
जो इस हद पर पहुँच जाता है वो खामोश रहता है

नखशब जारचवी

उनका पता मिला तो फिर अपना पता कहाँ
अब आशना[३] कहाँ कोई, नाआशना[४] कहाँ

मुझतर मुझफ्फरपुरी

झाहिद को डेढ़ ईंट की मस्जिद पे ये गुरूर
वो भी खुदा के फजल[५] से, घर का मकां नहीं

इलाही दुनिया में और कुछ दिन अभी कयामत न आने पाये
तेरे बनाए हुए बशर[६] को, अभी मैं इन्साँ बना रहा हूँ

बिस्मिल सइदी

दलाइल[७] की तराजू में, खुदा को तौलने वाले,
मुझे इतना ही बता दे कि, बशर क्यूँ है, बशर क्या है

एक बार खुदा भी देखे उन्हें तो दर्द से वो भी चीख उठे
इन्सां के जो जुल्म इन्सां पे मैं देख के चुप रह जाता हूँ

फिराक गोरखपुरी

---

१. तन्मय होकर २. द्वार ३. मित्र ४. पराया ५. कृपा ६. मनुष्य ७. दलील

गमे जहाँ[१] से फराग[२] मिलता, तो हम खुदा से ये पूछ लेते
जहाँ के मालिक, तेरे जहाँ में, कभी हमें भी खुशी मिलेगी ?

नैयार सीमाबी

किसीने गर कहा मरता है 'मोमिन'
कहा, 'मैं क्या करूँ ? मर्जी खुदा की'

मोमिन

खुदा हम को ऐसी खुदाई[३] न दे
कि अपने सिवा कुछ दिखाई न दे

साकी तेरी महफिल में चर्चा ही नहीं मय का
इससे तो ये बेहतर था कुछ ज़िक्रे-खुदा होता

दाग़

क्या नाखुदा बगैर कोई डूबता नहीं ?
मुझको मेरे खुदा से पशेमाँ[४] न कीजिये

हफीझ जालन्धरी

सौदागरी नहीं, यह इबादत[५] खुदा की है,
ऐ बेखबर जझा[६] की तमन्ना भी छोड़ दे

इकबाल

अगर दुनिया मुखालिफ[७] है तो क्या है
हमें तो बस खुदा का आसरा है

बेदिल मुरादाबादी

खुदा की इतनी बड़ी कायनात[८] में मैंने
बस एक शख्स को माँगा, मुझे वही नहीं मिला

बशीर बद्र

---

१. दुनिया के दुःख २. फ़ुरसत ३. संसार ४. लज्जित ५. प्रार्थना ६. बदला ७ विरोधी ८. विश्व

मैकदे में अज़ां[1] सुन के रोया बहुत
इस शराबी को दिल से खुदा याद है

बशीर बद्र

खुदा ऐसे एहसास का नाम है
रहे सामने और दिखाई न दे

बशीर बद्र

मैदान में हार-जीत का यूँ फैसला हुआ
दुनिया थी उनके साथ, हमारा खुदा हुआ

जमील मलिक

रहमत[2] भी है मोहताज[3] तेरी, मेरे गुनाहों की
मेरे बगैर तू भी खुदा हो नहीं सकता

हफीज़ जालंधरी

हमने तमाम उम्र अकेले सफर किया
हम पर किसी खुदा की इनायत नहीं रही

दुष्यंत कुमार

सब कुछ खुदा से माँग लिया तुझको माँग कर
उठते नहीं है हाथ मेरे इस दुआ के बाद

आगा हश्र कश्मीरी

खुदा की देन है, जिसको नसीब हो जाये
हर एक दिल को गमे-जाँविदा[4] नहीं मिलता

असर सहबाई

इन्सान की ताकत के सिवा भी है कोई चीज
तुम खुद समझ जाओगे, खुदा भी है कोई चीज

कतील शिफाई

---

१. प्रार्थना २. कृपा ३. आश्रित ४. हमेशा के लिए दु:ख

अच्छा, यकीन नहीं है तो कश्ती डुबा के देख
इक तू ही नाखुदा नहीं जालिम, खुदा भी है

फानी बदायूनी

खुदा के हाथ है बिकना न बिकना मय का ऐ साकी
बराबर मस्जिदे-जामा[१] के हमने तो दूकाँ रख दी

रियाझ खैराबादी

गुनाह क्या सनम के नझ्झारे[२] में जाहिद[३]
खुदा ने ये जलवा[४] दिखाया तो देखा

अमतुल फातमा बेगम 'साहब'

तिफल-ए-शीरखार[५] को ज्यों-ज्यों शउर[६] हो चला
जितना खुदा के पास था, उतना ही दूर हो चला

जौक

सच है कि खुदा तक है मुहब्बत की रसाइ[७]
और गर यकीन हो तो मुहब्बत ही खुदा है

इकबाल

अय जिंदगी खुदा के लिए अब मुआफ कर
बैठी हुई है मौत मेरे इन्तज़ार में

मुनव्वर लखनवी

मैंने भी एक बनायी है दुनिया यहाँ से दूर
ऐसा भी एक जहान[८] है, जिसका खुदा हूँ मैं

अख्तर अंसारी

---

१. बड़ी मस्जिद २. प्रियतमा के दर्शनमें ३. भक्त ४. रूप ५. दूध पीता बालक ६. बुद्धिमान ७. पहुँच ८. दुनिया

मय[१] न दे, मीना[२] न दे, सुरूर[३] न दे,
जिंदगी का चाहे शरूर न दे

और कुछ दे या न दे, लेकिन
मेरे मौला[४], मुझे गुरूर[५] न दे

गुलाम रब्बानी ताबाँ

तखलीके-कायनात[६] के दिलचस्प जुर्म पर
हँसता तो होगा आप भी यजदाँ[७] कभी कभी

अदम

खुदा तुझे मेरी आगोश[८] से जुदा न करे
यह बात कहते ही धड़के है दिल खुदा न करे

बयाँ

मेरे मौला मेरी आँखो को समुन्दर दे दे
चार बुँदों से गुझारा नहीं होगा मुझसे

इशरत किरतपुरी

फुटपाथ पर पड़े थे तो खाते थे ठोकरें
मंदिर में जाके बैठ गये और खुदा हो गए

सलमान अख्तर

मिरे खुदा मुझे इतना तो मोतबर[९] कर दे
मैं जिस मकान में रहता हूँ उसको घर कर दे

इफ्तिखार आरिफ

तुम्हें देखकर हाथ फैला दिये हैं
नहीं जानता हूँ कि क्या चाहता हूँ

बहझाद लखनवी

---

१. दारु २. दारु का प्याला ३. हलका सा नशा ४. ईश्वर ५. घमंड ६. संसार का सर्जन
७. ईश्वर, खुदा ८. गोद/आलिंगन ९. विश्वसनीय

मेरी अल्लाह से इतनी दुआ है 'राशिद'
मैं जो उर्दू में वसीअत लिखूँ, बेटा पढ़ ले

राशिद आरफी

यह क्या मज़ाक फरिश्तों को आज सूझा है
खुदा के सामने ले आये हैं पिला के मुझे

रियाझ खैराबादी

खुदा से हमने अक्सर यह कहा है
तुझे शायद यकीं इसका न आये
हमारे शहर में भी इक खुदा है

पाशा रहमान

मेरा कोई भी नहीं कायनात-भर[१] में 'नदीम'
अगर खुदा भी न होता तो मैं किधर जाता

अहमद नदीम कासमी

गली में यार की ऐ 'शाद' सब मुश्ताक[२] बैठे हैं
खुदा जाने वहाँ से हुकम किसके नाम आऐगा

शाद अझीमाबादी

खुदाई तेरी है हम भी हैं अय खुदा तेरे
मुसीबतों में पुकारें किसे सिवा तेरे ?

अकबर इलाहाबादी

किया है जिसने आलम को पैदा उसको क्या कहिए ?
खिर्द[३] खामोश है और दिल ये कहता है खुदा कहिये

अकबर इलाहाबादी

१. पूरी दुनिया में २. उत्सुक ३. बुद्धि

असल अल्लाह से लगावट है
वरना मज़हब में सब बनावट है

अकबर इलाहाबादी

ऐ खुदा इश्क न करना, तू भी धोखा खायेगा
हम तो मरके तेरे पास आऐंगे, बता तू कहाँ जायेगा ?

मजनूँ

यारब, तेरी रहमत से मायूस[१] नहीं 'फानी'
लेकिन तेरी रहमत[२] की ताखीर[३] को क्या कहिए ?

फानी बदायूनी

अल्लाह का घर काबे को कहते हैं व लेकिन
देता है पता और वह मिलता है कहीं और

दाग़

कोई कन्धा तक नहीं देता हमारी नाश[४] को
हम खुदा के घर भी अपने पाँव से जायेंगे क्या ?

देखिये तो हर इक जगह है वो
ढूँढिये तो कहीं नहीं मिलता

हफीझ जौनपुरी

मेरे खुदा, मेरी परवाझ[५] पर नजर रखना
मेरे कदम मेरी अपनी जमीन पर रखना

खलील धनतेजवी

क्यूँ आसमाँ की तरफ देख कर दुआ माँगूँ
मेरा खुदा तो मेरे आसपास बैठा है

खलील धनतेजवी

---

१. निराश २. दया ३.विलम्ब ४. लाश ५. उड़ान

मेरे खुदा तुझे अब ये भी सोचना होगा
करम[१] किया कि सितम आदमी बना के मुझे

जावर फतहपुरी

किसी रइस की महफिल का जिक्र क्या है 'अमीर'
खुदा के घर भी न जायेंगे, बिन बुलाये हुए

अमीर

इश्क (प्यार)

इश्क सुनते थे जिसे हम वो यही है शायद
खुद-ब-खुद दिल में है इक शख्स समाया जाता

मौलाना हाली

असर-ए-गम[२] जरा बता देना
वो बहुत पूछते हैं क्या है इश्क

मोमिन

कहर[३] है, मौत है, कजा[४] है इश्क
सच तो यह है बुरी बला है इश्क

मोमिन

तिरे इश्क की इन्तिहा[५] चाहता हूँ
मेरी सादगी देख क्या चाहता हूँ

इकबाल

न आया हमें इश्क करना न आया
मरे उम्र भर और मरना न आया

रियाझ खैराबादी

---

१. कृपा २. दु:ख का असर ३. संकट ४. मरण ५. अंत

जिन जिनको था यह इश्क का आझार[१] मर गए
अक्सर हमारे साथ के बीमार मर गए

मीर

दिल में साजिश[२], आँख में पानी
इश्क है खेल आग पानी का

अकबर इलाहाबादी

आतिश-ए-इश्क[३] भड़कती है हवा से पहले
होंट जलते हैं मुहब्बत में हवा से पहले

फिराक गोरखपुरी

आओ अब 'आझाद' आसन पर बैठें और जपें
आत्मा भी इश्क है, परमात्मा भी इश्क है

आझाद अन्सारी

क्या खबर थी दिल-सा शाहं-शाह आखिर एक दिन
इश्क के हाथों गदाओं-का-गदा[४] हो जायगा

यगाना चंगेझी

इश्क की अझमत[५] न हरगिझ जीते जी कम कीजिये
जान दे दीजे मगर, आँखें न पुरनम[६] कीजिये

जिगर मुरादाबादी

सामने उसके न कहते, मगर अब कहते हैं
लज्जते-इश्क[७] गई, गैर के मर जाने से

इन्सान को बेइश्क सलीका नहीं आता
जीना तो बड़ी चीज है, मरना नहीं आता

असर

---

१. बीमारी २. इर्ष्या ३. प्रेमाग्नि ४. भिक्षुक ५. महत्ता ६. अश्रुपूर्ण ७. प्रेम का मजा

छाती जला करे है सोजे-दरूँ[१] बला से
एक आग-सी लगी है, क्या जानिये कि क्या है ?

मीर

इब्तिदा[२] ही में मर गये सब यार
इश्क की कौन इन्तिहा[३] लाया

मीर

इश्क क्या-क्या हमें दिखाता है
आह ! तुम भी तो एक नजर देखो

मीर

हाए रे मजबूरियाँ, महरूमियाँ,[४] नाकामियाँ
इश्क आखिर इश्क है तुम क्या करो, हम क्या करें

जिगर मुरादाबादी

इश्क ने 'गालिब' निकम्मा कर दिया
वर्ना हम भी आदमी थे कुछ काम के

गालिब

इश्क जब तक न कर चुके रुस्वा[५]
आदमी काम का नहीं होता

जिगर मुरादाबादी

अगर्चे इश्क में आफत भी है, बला भी है
निरा बुरा नहीं यह इश्क, कुछ भला भी है

यकीन

इश्क सर चढ़ के उतरता ही नहीं
सब अमल पढ़ देखे इस जिन[६] के लिये

अमरोही

---

१. दिल की आग २. आरंभ ३. अंत ४. वंचित ५. बदनाम ६.भूत-प्रेत

बचता नहीं है जो कि है बीमार इश्क का
यारब[१] किसीको भी हो आजार इश्क का

आशुफता

कुछ जुर्म नहीं इश्क, जो दुनिया से छुपायें
हमने तुम्हें चाहा है, हजारों में कहेंगे

जाँनिसार अख्तर

'अतहर', तुमने इश्क किया, कुछ तुम भी कहो, क्या हाल हुआ
कोई नया अहसास मिला, या सब जैसा अहवाल हुआ ?

अतहर नफीस

इश्क में और कुछ नहीं मिलता
सैंकडो गम नसीब होते हैं

नूह नारवी

पत्ता पत्ता, बूटा बूटा, हाल हमारा जाने हैं
जाने न जाने गुल ही न जाने, बाग तो सारा जाने है

मीर

'फर्द' की क्या खूब हालत इश्क में पहुँची है अब
जिसको जो कुछ जी में आया, मुँह पर आकर कह गया

अबुलहसन फर्द फुलवारवी

मैं परीशाँ था, परीशाँ हूँ, नई बात नहीं
आज वो भी हैं परीशाँ, खुदा खैर करे

उमर अंसारी

अल्लाह बचाये मर्ज-ए-इश्क[२] से दिल को
सुनते हैं कि यह आरजा[३] अच्छा नहीं होता

अकबर इलाहाबादी

---

१. हे ईश्वर २. प्रेमरोग ३. रोग

मकतब-ए-इश्क[१] का दस्तूर[२] निराला देखा
उसको छुट्टी न मिली जिसको सबक[३] याद हुआ

सौदा

बे-इश्क आदमी की जरा शान ही नहीं
जिसको न होवे इश्क वो इन्सान ही नहीं

रज़ी

इश्क पर जोर नहीं है ये वो आतिश 'गालिब'
कि लगाए न लगे और बुझाए न बने

गालिब

कोई समझे तो एक बात कहूँ
इश्क तौफीक[४] है, गुनाह नहीं

फिराग गोरखपुरी

क्यों हिज्र[५] के शिकवे करता है, क्यों दर्द के रोने रोता है
अब इश्क किया है तो सब्र भी कर, इसमें तो यही कुछ होता है

हफीझ जालंधरी

वो कौन थे जो इश्क को एक खेल जानकर
खेले भी और चल भी दिऐ जीत हार के

हफीझ जालंधरी

तुझको पाकर भी न कम हो सकी बेताबी-ए-दिल[६]
इतना आसान तिरे इश्क का गम था भी कहाँ ?

फिराक गोरखपुरी

इश्क दिल में रहे तो रुसवा हो
लब पे आए तो राझ हो जाए

फैझ अहमद 'फैझ'

---

१. प्रेम की पाठशाला २. रिवाज ३. पाठ ४. ईश्वर की कृपा ५. विरह ६. दिल की बेचैनी

कुछ न पाकर भी, मुतमइन[1] हैं हम
इश्क में हाथ क्या खजाने लगे

बाकी सिद्दीकी

वाकिफ है 'जोश' इश्क से अपने तमाम शहर
और यह हम जानते हैं कोई जानता नहीं

जोश मलीहाबादी

नहीं इश्क का दर्द लज्जत[2] से खाली
जिसे जौक[3] है वह मझा जानता है

मीर

इश्क को किसके दिल से लाग नहीं
कौन-सा घर है जिसमें आग नहीं ?

नासिख

कुछ तो होता है हसीनों को भी एहसासे-जमाल[4]
और कुछ इश्क भी मगरूर बना देता है

अर्शी भोपाली

न होता इश्क तो यह जहाँ कहाँ होता ?
न गुल खिलते यहाँ न गुलसिताँ होता

अनवर आगेवान

सीने से चर्खे-पीर[5] लगाये है चाँद को
कुछ इश्क मुनहसिर[6] नहीं बूढ़े जवान पर

जलील मानीकपुरी

उस मर्ज[7] को मर्जे-इश्क कहा करते हैं
न दवा होती है, जिसकी न दुआ होती है

शफक रिझवी

---

१. संतुष्ट २. स्वाद ३. प्रसन्नता ४. सौंदर्यानुभूति ५. वृद्ध आकाश ६. निर्भर ७. बीमारी

तुम भी 'मजाझ' इन्सां हो आखिर, लाख छुपाओ इश्क अपना
ये भेद मगर खुल जाऐगा, ये राज[१] मगर इफशां[२] होगा

मजाझ

इश्क करता है तो फिर इश्क की तौहीन न कर
या तो बेहोश न हो, हो तो न फिर होश में आ

आनंदनारायण मुल्ला

दीवानगी-ए-इश्क[३] के बाद आ ही गया होश
और होश भी वो होश कि दीवाना बना दे

जिगर मुरादाबादी

मरीझे-इश्क[४] पर रहमत खुदा की
मर्ज[५] बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की

मीर

इब्तदा-ए-इश्क[६] है, रोता है क्या ?
आगे-आगे देखिए, होता है क्या ?

मीर

इझहारे-इश्क उससे न करना था 'शेफता'
ये क्या किया कि दोस्त को दुश्मन बना दिया,

'शेफता'

तर्के-मुहब्बत[७] करने वालो ! कौन बड़ा जग जीत लिया
इश्क के पहले के दिन सोचो, कौन बड़ा सुख होता था

फिराक गोरखपुरी

हम तौरे-इश्क[८] से तो वाकिफ[९] नहीं है लेकिन
सीने में जैसे कोई दिल को मला करे है

मीर

---

१. रहस्य २. जाहिर ३ प्रेम का पागलपन ४. प्रेम में पागल ५. बीमारी ६. प्रेम का आरंभ
७. प्रेम का त्याग ८. प्रेमके नियम ९. जानने वाला/परिचित

नाकामी-ए-इश्क[1] या कामयाबी
दोनों को हासिल[2] खाना-खराबी[3]

हफीझ जालंधरी

क्या बला है इश्क, जीती हूँ तो बदनाम हूँ मैं
और मरती हूँ तो शोख[4] की रुसवाई[5] है

मुश्तरी लखनवी

खलिशे-इश्क[6] मिटेगी मेरे दिल से जब तक
दिल ही मीट जायेगा ऐसा नझर आता है मुझे

ताजवर नजीबाबादी

इश्क से लोग मना करते हैं
जैसे कुछ इख्तियार[7] है अपना

असर लखनवी

इश्क नाजुक मिजाज है बेहद
अक्ल का बोझ उठा नहीं सकता

अकबर इलाहाबादी

'अहमद' बता मैं क्या करूँ अब राहे-इश्क में
सर पर तो सांझ पड़ गई और पाँव थक गये

'अहमद' गुजराती

कहते हैं इश्क का अंजाम बुरा होता है
अब तो कुछ भी हो, मुहब्बत को निभाना है हमें

जफर ताबॉ

आग थे इब्तिदाए[8] इश्क में हम
हो गये खाक इन्तिहा[9] ये है

मीर

---

१. प्रणय में विफल २ परिणाम ३. घर की बरबादी ४ नटखट/चंचल ५ बदनामी
६. प्रेम पीडा ७. अधिकार ८. प्रारंभ ९. अंत

हाले-अंजामे इश्क क्या कहिए
अब तो हम भी लगे हैं पछताने

फिराक गोरखपुरी

जो राहे-इश्क में कदम रक्खें
वो नशेबो-फराझ[१] क्या जानें

दाग़

ये माना हुस्न की फितरत[२] बहुत नाजुक है ऐ 'वामिक'
मिझाजे-इश्क की लेकिन नझाकत[३] और होती है

वामिक जौनपुरी

ये माहताब[४] नहीं है कि आफताब[५] नहीं
सभी है हुस्न मगर इश्क का जवाब नहीं

मजाझ

इश्क की चोट का कुछ दिल पे असर हो तो सही
दर्द कम हो कि ज्यादा हो, मगर हो तो सही

जलाल

इश्क को मुश्क[६] ही तो कहते हैं
मेरा अहवाल पूछता क्या है

खलिश कादरी

यह इश्क नहीं आसां इतना ही समझ लीजे
इक आग का दरिया है और डूब के जाना है

जिगर मुरादाबादी

यह इश्क नहीं आसां, हमने तो यही जाना है
काजल की लकीरों को आँखों से चुराना है

सइद राही

---

१. संसार के सुखदु:ख २. स्वभाव ३. कोमलता ४. चंद्र ५. सूर्य ६. कस्तूरी

हम ही उसके इश्क के काबिल न थे,
क्यूँ किसी जालिम का शिकवा कीजिये

उम्र सारी तो कटी इश्के-बुतां में 'मोमिन'
आखिरी वक्त में क्या खाक मुसलमाँ होंगे

मोमिन

हुस्न और इश्क को जिस रोज कि इजाद[१] किया
मुझको दीवाना किया तुझको परीजाद[२] किया

अजीयत[३], मुसीबत, मलामत[४], बलायें
तेरे इश्क में हमने क्या-क्या न देखा

मीर दर्द

इश्क में हम हुए न दीवाने
कैस[५] की आबरू का पास किया

मीर

इश्क की चिंगारियों को फिर हवा देने लगे
मेरे पास आकर वो दुश्मन को दुआ देने लगे

फानी बदायूनी

इश्क की जिस पर इनायत[६] हो गई
होश जाइल[७] अकल रुख्सत[८] हो गई

जिसे इश्क का तीर कारी लगे
उसे जिंदगी क्यों न भारी लगे

वली दकनी

---

१. सर्जन २. परी जैसी सुंदर ३. कष्ट ४. डराना ५. मजनू ६. कृपा ७. नष्ट ८. विदाय

जियाँ[1] है इश्क में हम खुद भी जानते हैं मगर
मुआमला ही किया हो अगर जियाँ के लिये

शेफता

मुश्किल था कुछ तो इश्क की बाजी को जीतना
कुछ जीतने के खौफ से हारे चले गए

शकील बदायूनी

इक इश्क में जाँ को खोना है, मातम करना है और रोना है
मैं जानता हूँ जो होना है, पर क्या करूँ जब दिल आ जाए

बहजाद लखनवी

मुझको अपनी जवानी की कसम है कि ये इश्क
इक जवानी की शरारत के सिवा कुछ भी नहीं

जाँनिसार अख्तर

जझब-ए-इश्क[2] सलामत है तो ईंशा-अल्लाह
कच्चे धागे में चले आएंगे सरकार बँधे

दाग़

जख्म पे जख्म खा के जी, अपने लहू के घूंट पी,
आह न कर, लबों को सी, इश्क है दिल्लगी नहीं

एहसान दानिश

शर्मा गए, लजा गए, दामन छुड़ा गए
ऐ इश्क, मरहबा[3], वो यहाँ तक तो आ गए

जिगर मुरादाबादी

इश्क की कुछ हवा लगी जब उन्हें
कुछ उड़ा रंग, कुछ निखर भी गए

फिराक गोरखपुरी

---

१. नुकसान २. प्रेमकी भावना ३. शाबाश

सख्त काफिर[१] था जिसने पहले 'मीर'
मझहबे-इश्क इख्तियार किया

मीर

मंझिले-इश्क पे तनहा[२] पहुँचे, कोई तमन्ना साथ न थी
थक-थककर इस राह में आखिर इक-इक साथी छूट गया

फानी बदायूनी

तुम हुस्न हो, मैं इश्क हूँ, तुम जान हो, मैं जिस्म
मेरा जवाब है ना तुम्हारा जवाब है

जिगर मुरादाबादी

किसीका यूँ तो हुआ कौन उम्र भर फिर भी
ये हुस्नो-इश्क तो धोखा है सब मगर फिर भी

फिराक गोरखपुरी

इश्क की इन्तिहा[३] तो होती है
दर्द की इन्तिहा नहीं होती

शमशेर बहादुर सिंह

ये तो कहो, कभी इश्क किया है, जग में हुए हो रूसवा भी
इसके सिवा हम कुछ भी न पूछें, बाकी बात फिझूल मियाँ

इब्ने ईंशा

तुम समझते हो बिछड़ जाने से मिट जाता है इश्क
तुम को इस दरिया की गहराई का अंदाजा नहीं

खुर्शीद रिझवी

आदमीयत का तकाजा था मेरा ईज़हारे-इश्क[४]
भूल भी होती है एक इन्सां से, जाने भी दो

फिराक गोरखपुरी

---

१. नास्तिक २. एकेला ३. अंत ४. प्रेम प्रगट करना.

इश्क और इस बेवफा दुनिया से इश्क
अपनी दुनिया आप पैदा कीजिए

रूस्वा मझलूमी

इश्क कहता है कि आलम से जुदा हो जाओ
हुस्न कहता है जिधर जाओ नया आलम है

आसी गाझीपुरी

इश्क का जौके-नज्झारा[१] मुफ्त में बदनाम है
हुस्न खुद बेताब है, जलवा दिखाने के लिए

मजाझ

इश्क का मन्सब[२] लिखा जिस दिन मेरी तकदीर में
आह की नकदी[३] मिली, सहरा[४] मिला जागीर में

इश्क में खोये जाओगे, तो बात की तह भी पाओगे
कद्र हमारी कुछ जानोगे, दिल को कहीं जो लगाओगे

मीर

इश्क ही इश्क है जहाँ देखो
सारे आलम में फिर रहा है इश्क

मीर

इश्क है इक निशाते-बे पायाँ[५]
शर्त यह है कि आरझू न रहे

असर लखनवी

न हारा है इश्क और न दुनिया थकी है
दिया जल रहा है, हवा चल रही है

---

१. दर्शन का आनंद २. अधिकार ३. रुपिया पैसा ४. खाली मेदान/रण ५. कायमी सुख

मुझको कहने दो कि मैं आज भी जी सकता हूँ
इश्क नाकाम सही, ज़िंदगी नाकाम नहीं

साहिर लुधियानवी

इस इश्क के दर्द की कौन दवा बस एक वजीफा[१] है, एक दुआ
पढो मीर, फकीर के बैत[२] कबित, सुनो शेर नझीरो वली दख्नी

इब्ने ईंशा

जनाबे-इश्क करते हैं करम कुछ खास लोगों पर
हर इन्सां के मुकद्दर[३] में तो रुसवाई[४] नहीं होती

कतील शिफाई

इश्क करोगे तो कमाओगे नाम
तोहमतें[५] बँटती नहीं खैरात[६] में

कतील शिफाई

जिसे न हुस्न से मतलब, न इश्क से सरोकार
वो शख्स मुझको बहुत बदनसीब लगता है

जाँनिसार अख्तर

हम इश्क करके मुफ्त में बदनाम हो गये
वरना शुमार अपना भी था देवताओं में

जाँनिसार अख्तर

दिलो-दिमाग को रो लूँगा, आह कर लूँगा
तुम्हारे इश्क में सब कुछ तबाह कर लूँगा

अख्तर शीरानी

किसी हसीना के मासूम इश्क में 'अख्तर'
जवानी क्या है, मैं सब कुछ तबाह कर लूँगा

अख्तर शीरानी

---

१. जप करने के पाठ २. शेर ३. भाग्य ४. बदनामी ५. जूठा आरोप/आक्षेप ६. दान

सितारों से आगे जहाँ[१] और भी है
अभी इश्क के इम्तिहाँ[२] और भी है

इकबाल

इश्क क्या चीज है, ये पूछीए परवाने से
जिंदगी जिसको मयस्सर[३] हुइ जल जाने से

'साहिर' होशियारपुरी

इश्को-मुहब्बत क्या जानूँ, लेकिन इतना मैं जानूँ हूँ
अंदर ही अंदर सीने में मेरे दिल को कोई खाता है

मीर

इश्क में जाँ से गुझरते हैं गुझरनेवाले
मौत की राह नहीं देखते मरनेवाले

अमीर मीनाई

हुस्न के जल्वे माँगनेवालो
इश्क की दौलत आम नहीं है

'शेरी' भोपाली

हुस्न के भी डगमगाते हैं कदम
इश्क करता है जहाँ दाराईयाँ

जिगर मुरादाबादी

क्या इश्क ने समझा है, क्या हुस्न ने जाना है
हम खाक-नशीनों[५] की ठोकर में झमाना है

जिगर मुरादाबादी

---

१. दुनिया २. परीक्षा ३. प्राप्त ४. शासन ५. मिट्टी में बैठनेवाला

इन्सान

‘जफर’ आदमी उसको न जानियेगा,
वो हो कैसा ही साहेबे-फहमोझका[१]
जिसे ऐश[२] में यादे खुदा[३] न रही,
जिसे तैश में[४] खौफे खुदा[५] न रहा

बहादुरशाह ‘जफर’

खुदा तो मिलता है, इन्सान ही नहीं मिलता,
ये चीज वो है जो देखी कहीं-कहीं मैने

इकबाल

मत सहल[६] हमें जानो, फिरता है फलक[७] बरसों
तब खाक के पर्दे से इन्सान निकलते हैं

मीर

लम्हों[८] का भँवर चीर के इन्सान बना हूँ
एहसास हूँ मैं, वक्त के सीने में गड़ा हूँ

फख्र जमाँ

जब जब इसे सोचा है दिल थाम लिया मैंने
इन्सान के हाथों से इन्सान पे जो गुजरी

फिराक गोरखपुरी

करने को रफू कर ही लेंगे, सब दुनियावाले जख्म अपने
जो जख्म दिले-इन्सां पे लगा, उस जख्म का सीना मुश्किल है

जगन्नाथ आझाद

---

१. सूझबूझवाला २. सुख ३. प्रभु की याद ४. आवेश
५. ईश्वर का डर ६. आसान ७. आकाश ८. क्षणें

उरूजे-आदमे-खाकी से[1] अंजुम[2] सहमे जाते हैं
कि ये टूटा हुआ तारा महे-कामिल[3] न बन जाए

इकबाल

बशर[4] के दिल में न पड़ता जो आर्ज़ू का दाग़
खुदा गवाह है कि अनमोल यह नगीं होता

शाद अझीमाबादी

गुलिस्ताने-जहाँ[5] में बस वही आझाद इन्साँ है
सबा[6] की तरह जिस गुल से मिले उसको हँसा आये

शाह अझीमाबादी

आदमी आदमी से मिलता है
बात करनी तो कुछ गुनाह नहीं

आगा शायर किजिलबाश

खुदा के बन्दे तो हैं हजारों, बनों में फिरते हैं मारे-मारे
मैं उनका बन्दा बनूँगा जिनको खुदा के बन्दों से प्यार होगा

इकबाल

तलाशो-जुस्तजू की[7] सरहदें अब ख्तम होती है
खुदा मुझको नझर आने लगा इन्साने-कामिल में[8]

अलम मुझफ्फरनगरी

दुनिया को बना दिया है दोजख[9] इसने
किस मुँह से है, जन्नत का तलबगार[10] इन्साँ ?

मझहब से न इमान से खतरा है बहुत
दुनिया में न शैतान से खतरा है बहुत
सच पूछे जो मुझसे कोई 'फरहत' साहब
इन्सान को इन्सान से खतरा है बहुत

फरहत कानपुरी

---

१. मिट्टी के मानवी की प्रगति से २. सितारा ३. पूर्णिमा का चंद्र ४. मनुष्य
५. संसारउद्यान ६. ठंडी हवा ७. खोज ८. पूर्ण मानवी में ९. नरक १०. इच्छुक

बस कि दुश्वार[१] है हर काम का आसां होना
आदमी को भी मयस्सर[२] नहीं इन्सां होना

गालिब

इन्सानियत खुद अपनी निगाहों में है जलील[३]
इतनी बुलंदियों पे तो इन्सां कभी न था

जगन्नाथ आझाद

फरिश्ते से बेहतर है इन्सान बनना
मगर इसमें पडती है मेहनत जियादा

मौलाना हाली

इन्सानियत की रोशनी गुम हो गई कहाँ
साये[४] हैं आदमी के मगर आदमी कहाँ

सबा अफगानी

फरिश्तों की जरूरत क्या है, यह जन्नत नहीं वाइझ[५]
इसे मयखाना कहते हैं, यहाँ इन्सां मिलते हैं

मीर दर्द

दुनिया में बादशाह है सो है वह भी आदमी
और मुफलिसो-गदा[६] है सो है वह भी आदमी

हाली

इन्सान की बदबख्ती[७] अंदाझ से बाहर है
कमबख्त खुदा होकर बंदा नझर आता है

आझाद अंसारी

इन्सान को इन्सान से कीना[८] नहीं अच्छा
जिस सीने में कीना हो वो सीना नहीं अच्छा

नासिख

---

१. मुश्किल/कठिन २. प्राप्त ३. शरमिंदा ४. छाया ५. उपदेशक ६. निर्धन भिक्षुक ७. कमबख्ती ८. नफरत

अपने मरने पे भी कादिर[१] नहीं जीना कैसा
रास इन्सान को आया नहीं इन्सां होना

शाकिर मेरठी

इक उम्र से है मुझको उस इन्सान की तलाश
अच्छा जो मुझसे बढ़ के हो, मुझसे बुरा न हो

अहमद नदीम कासमी

जानवर, आदमी, फरिश्ता, खुदा
आदमी की हैं सेंकडों किस्में

हाली

पर फरिश्तों को दिये तूने तो क्या गम इसका
यही क्या कम है कि इन्साँ का चलन मुझको दिया

फिराक गोरखपुरी

इन्साँ को खरीदता है इन्साँ
दुनिया भी दुकान हो गई है

फिराक गोरखपुरी

मझहब[२] कोई लौटा ले और उसकी जगह दे दे
तहझीब[३] सलीके[४] की, इन्सान करीने[५] के

फिराक गोरखपुरी

हिम्मत करे इन्साँ तो क्या हो नहीं सकता ?
वो कौन सा उकदा[६] है जो वा[७] हो नहीं सकता ?

अब कहाँ इन्सां, जिसे इन्सां कहे
चलती फिरती देख लो परछाईयाँ

जिगर मुरादाबादी

---

१. शक्तिमान २. धर्म ३. संस्कृति ४. बर्ताव ५. सभ्य ६. गांठ ७. खूलना

इन्सान मुसीबत में हिंमत न अगर हारे
आसां से वह आसां है; मुश्किल से जो मुश्किल है

सफी लखनवी

इन्सानियत की बात तो इतनी है शेखजी
बदकिस्मती से आप भी इन्सान बन गये

अदम

इन्सान को बेइश्क सलीका[१] नहीं आता
जीना तो बड़ी चीज है, मरना भी नहीं आता

असर लखनवी

आदमी अबसे खुद अपना फैसला कर ले
एक कदम पे दोजख है, एक कदम पे जन्नत है

रुस्वा

कहते हो गम से परेशान हुए जाते हैं
ये नहीं कहते कि इन्सान हुए जाते हैं

जोश मलीहाबादी

सभी कुछ हो रहा है इस तरक्की के जमाने में
मगर ये क्या गजब है, आदमी इन्सान नहीं होता

खुमार बाराबंकवी

जैसा दर्द हो वैसा मंजर[२] होता है
मौसम तो इन्सान के अंदर होता है

अझीझ एझाझ

मौत ही इन्सान की दुश्मन नहीं
जिंदगी भी जान लेकर जाएगी

'जोश' मलसियानी

---

१. तमीझ २. दृश्य

यह काम नहीं आसान, इन्सान को मुश्किल है
दुनिया में भला होना, दुनिया का भला करना

गालिब

जब मिले, जिससे मिले, दिल खोलकर दिल से मिले
इससे बढ़कर और खूबी कोई इन्सान में नहीं

बेखुद देहलवी

जिनको शक हो वो कर लें और खुदाओं की तलाश,
हम तो इन्सान को दुनिया का खुदा कहते हैं

फिराक गोरखपुरी

ऐ आसमाँ तेरे खुदा का नहीं है खौफ
डरते हैं ऐ जमीं तेरे आदमी से हम

जोश

आदमियों से भरी है ये भरी दुनिया मगर
आदमी को आदमी होता नहीं है दस्तयाब[१]

फिराक गोरखपुरी

ईमान[२] तो कहता है कि इन्सां बन जा
बंदे की मदद को आ, खुदा से बाझ[३] आ

पगाना चंगेझी

इस जमाने का इन्कलाब न पूछ
रूह[४] शेतान की, शक्ल आदमी की

जिगर मुरादाबादी

अमने-आलम[५] तो मुश्किल नहीं है
आदमी, आदमी हो तो जाये

अनवर साबरी

---

१. प्राप्त होना २. धर्म ३. दूर ४. आत्मा ५. दुनिया की शांति

आदमी के पास सब कुछ है मगर
एक तनहा[१] आदमियत ही नहीं

जिगर मुरादाबादी

क्या भरोसा है जिंदगानी का
आदमी बुलबुला है पानी का

न कोई ख्वाब, न कोई खलिश, न कोई खुमार
ये आदमी तो अधूरा दिखाई देता है

जाँनिसार अख्तर

भरी दुनिया में कोई भी नज़र आता नहीं अपना
'अदीब', एक दौर[२] ऐसा भी गुज़र जाता है इन्सां पर

अदीब मालीगाँवी

तू फरिश्तों के तसव्वुर में मिरे पास न आ
मैं हूँ इन्सां, तिरी नज़रों से उतर जाउँगा

मुमताज राशिद

किसीके हम न काम आये, न कोई अपने काम आया
ताज्जुब है कि तो भी जुमरऐ-इन्साँ में[३] नाम आया

शाह शझीमाबादी

ऐसे जीने से तो है डूब के मरना बेहतर
आबरू जिसकी न हो वो कोई इन्साँ ही नहीं

कुछ और भी साँसें लेने पर मजबूर सा मैं हो जाता हूँ
जब इतने बड़े जंगल में किसी इन्सान की खुशबू आती है

कतल शिफाई

---

१. केवल/मात्र २. समय ३. मानवों का समूह

कोई अब तक ये न समझा कि इन्सान
कहाँ जाता है, आता है कहाँ से ?

इकबाल

मुझे बाद में बनाना कोई हिन्दु या मुसलमाँ
मुझे पहले एक इन्सां बड़े प्यार से बना दो

बेकल उत्साही

उल्फत (प्यार)

जिसे दीवानगी कहते हैं उल्फत[१] की नबुव्वत[२] है
गनीमत है जो सदियों में कोई दीवाना हो जाय-

सीमाब

मेरी उनकी रस्म-ए-उल्फत[३] छुट गई
मुद्दतें गुझरीं, जमाना हो गया

मुज्तर

उल्फत का जब मझा है कि दोनों हो बेकरार
दोनों तरफ हो आग बराबर लगी हुई

इस्माईल मैरठी

सच कहते हैं कि नाम मुहब्बत का बुरा है
उल्फत जता के दोस्त को दुश्मन बना लिया

जोश लखनवी

कोई भी शख्स उसका मारा हुआ न पनपा
दिल मत कहीं लगाना, उल्फत बुरी बला है

दर्द

१. प्यार २. पैगम्बरी, ३ प्यार का रिवाज

मेरे लब पर ये क्यूँ बेसाख्ता[१] आज उनका नाम आया
राहे-उल्फत में[२] शायद फिर कोई नाजुक मुकाम आया

माहिर-उल कादरी

उसको दुश्मन से जो उल्फत है तो परवाह नहीं
ऐ 'रसा' तुम भी किसी और पे मर कर देखो

रसा

उल्फत में बराबर हैं वफा[३] हो कि जफा[४] हो
हर बात में लज्जत[५] है अगर दिल में मझा हो

अमीर मीनाई

हम समझते थे कि उल्फत खेल है
यह खबर क्या थी लहू रुलवायगी

असर लखनवी

वफा करते हैं हम, फिर भी हमें तुमसे नदामत[६] है
इसे कहते हैं, उल्फत, बन्दा परवर यह मुहब्बत है

रसा

मुझमें क्या देखा कि तुम उल्फत का दम भरने लगी
मैं तो खुद अपने भी कोई काम आ सकता नहीं

साहिर लुधियानवी

न जाने क्या तुझे उल्फत थी गुल से ऐ बुलबुल
कि अपने जी से गई, पर चमन से तू न गई

जाफरअली 'हसरत'

सजा मिलती है लेकिन बेवफा इतनी नहीं मिलती
जरा-से जुर्मे-उल्फत[७] पर सताया उम्र भर तूने

आबिदा खानम

---

१. अचानक २. प्रेम के मार्गमें ३. वफादारी ४. बेवफाई ५. आनंद ६. लज्जित होने का भाव ७. प्रेम का गुनाह

बुरी है ऐ 'दाग़' राहे उल्फत, खुदा न ले जाय ऐसे रास्ते
जो तुम अपनी खैर चाहते हो, तो भूल कर दिल्लगी न करना

दाग़

और तो उल्फत न निभने का सबब[१] कोई नहीं
या बुराई आपमें है या बुराई हममें है

नूह नारवी

तर्के-उल्फत[२] को जमाना हो गया लेकिन 'शकील'
आज फिर मेरा और उनका सामना होने को है

शकील बदायूनी

होते-होते बस कम इतनी रस्म-ए-उल्फत रह गई
उनसे हमसे दूर की साहब सलामत रह गई

शफीक

अब उनका सामना होता है तो मुँह फेर लेते हैं
कहाँ की रस्म-ए-उल्फत, छोड़ दी साहब सलामत भी

नाम उल्फत का न लूँगा जब तलक है दम में दम
तूने चाहत का मझा ऐ फित्नागर[३] दिखला दिया

मोमिन

ये भी इक तमाशा है कारजारे-उल्फत[४] का
दिल किसीका होता है, बस किसीका चलता है

अफसर मेरठी

उनके आते ही मैंने दिल का किस्सा छेड़ दिया
उल्फत के आदाब[५] मुझे आते-आते आऐंगे

माहिर-उल-कादरी

---

१. कारण २. प्यार का त्याग ३. त्रास/कष्ट देनेवाला ४. प्यार का रणक्षेत्र ५. शिष्टाचार

गर्म बाजारि-ए-उल्फत है मुझीमें वर्ना,
कोई लेने का नहीं नाम-ए-वफा[१] मेरे बाद

खलील

उल्फत भी है क्या चीज, शिकायत की कोई बात
उठ्ठी भी अगर दिल से तो आई न जबाँ तक

शग्ल जयपुरी

उल्फत भी अजब शै है जो दर्द वही दरमाँ[२]
पानी पे नहीं गिरता जलता हुआ परवाना

आरज़ू लखनवी

बड़ी दिलचस्प गफलत हो गई है
अचानक उनसे उल्फत हो गई है

अदम

जब तक गमे-उल्फत का उन्सुर[३] न मिला होगा
इन्सान के पहलू में दिल बन न सका होगा

सीमाब

कोई किस तरह राझे-उल्फत छुपाये
निगाहें मिलीं और कदम डगमगाए

नखशब जारचवी

बस इतनी दाद देना बाद मेरे मेरी उल्फत की
कि याद आऊँ तो अपने आपको तुम प्यार कर लेना

ताजवर नझीबाबादी

सितम ही करना, जफा[४] ही करना, निगाहे-उल्फत[५] कभी न करना
तुम्हें कसम है हमारे सर की, हमारे हक[६] में कभी न करना

दाग़

---

१. वफादारीका नाम २. इलाज ३. पंचतत्त्व ४. जुल्म ५. प्यार भरी नजर ६. स्वत्व

अब तो खुल जायेगा शायद तिरी उल्फत का भरम
अहले दिल[१] जुरअते-इझहार[२] तक आ पहुँचे हैं

कतील शिफाई

वो अहद[३] अहद ही क्या है, जिसे निभाओ भी
हमारे वादा-ए-उल्फत[४] को भूल जाओ भी

मुस्तफा जैदी

तुझे घाटा न होने देंगे हम कारोबारे-उल्फत में[५]
हम अपने सर, तेरा ऐ दोस्त, हर नुकसान लेते हैं

फिराक गोरखपुरी

राझे-उल्फत[६] छुपा के देख लिया,
दिल बहुत कुछ जला के देख लिया

और क्या देखने को बाकी है
आपसे दिल लगा के देख लिया

फैझ अहमद फैझ

अपना दीवाना बना दे मुझको
कुछ तो उल्फत की सजा दे मुझको

सई कैस

वो तो कहिए आपकी उल्फत में दिल बहला रहा
वर्ना दुनिया चार दिन भी रहने के काबिल न थी

मंजर लखनवी

उल्फत की नयी मंझिल को चला तू बाँहें डाल के बाँहों में
दिल तोड़ने वाले देख के चल, हम भी तो पड़े हैं राहों में

कतील शिफाई

---

१. दिल के लायक २. अभिव्यक्ति की धृष्टता ३. वचन ४. प्रणय वचन ५. प्रेम के व्यापारमें प्यार का रहस्य

यह भी है तमाशा उल्फत का, जो बात है वो नादानी की
मंजूर नहीं है रब्त[1] जिन्हें, रब्त उनसे बढ़ाया जाता है

वहशत कलकतवी

ये तो मुमकिन नहीं हर इक बनाये ताझमहल
मगर हर दिल में इक मुमताझ महल रहती है

फलक

लाख चाहत को छिपाये कोई, पर छुपती नहीं
प्यार की आँख और उल्फत की नझर छुपती नहीं

जफर

खूब पहचान लो 'असरार'[2] हूँ मैं
जिन्से-उल्फत[3] का तलबगार[4] हूँ मैं

मजाझ

यूँ तो अफसाना-ए-उल्फत[5] था अझल[6] से रंगी
हमने कुछ और भी रंगीन बनाना चाहा

मजाझ

एतबार (विश्वास)

आपका एतबार कौन करे
रोझ का इन्तज़ार कौन करे

दाग़

मान लेता हूँ तेरे वादे को
भूल जाता हूँ मैं कि तू है वही

जलील मानिकपुरी

---

१. सम्बन्ध २. असरार उलहक(मजाज का नाम) ३. प्रेम नाम की चीज ४. इच्छुक
५. प्यार की कहानी ६. आदिकाल

वादे का एतबार तो ऐ यार, है मगर
क्या एतबार जिंदगी-ए-मुस्तआर[१] का

जलील

आने की खबर है उसे लेकिन
आता नहीं एतबार दिलको

जुरअत

सच है मेरी बात का क्या एतबार
सच कहूँगा झूठ मानी जाएगी

दिल शाहजहाँपुरी

कश्ति-ए-एतबार[२] तोड़ के देख
कि खुदा भी है, नाखुदा[३] ही नहीं

फानी बदायूनी

मेरी दास्ताने-गम[४] को वो गलत समझ रहे हैं
कुछ उन्हींकी बात बनती अगर एतबार होता

साकिब लखनवी

आप कहते हैं बारबार नहीं
आपकी हाँ का एतबार नहीं

'रविश' सिद्दीकी

वादा न दिलाओ याद उनका
नादिम[५] हूँ खुद एतबार कर के

'बाकी' सिद्दीकी

एतबार-ए-इश्क की खानाखराबी देखिए
गैर ने की आह लेकिन वो खफा मुझ पर हुआ

गालिब

---

१. उधार मांगा हुआ जीवन २. विश्वास की नौका ३. नाविक ४. दु:ख की कहानी
५. लज्जित

तेरे वादे पे जिए हम तो ये जान झूठ जाना
कि खुशी से मर न जाते अगर एतबार होता

गालिब

उसे किसीकी मुहब्बत का एतबार नहीं
उसे जमाने ने शायद बहुत सताया है

बशीर बद्र

जादू है या तिलिस्म[१] तुम्हारी जुबान में
तुम झूठ कह रहे थे, मुझे एतबार था

बेखुद देहलवी

न जाने कौन सी मंझिल पे आ पहुँचा है प्यार अपना
न हमको एतबार अपना, न उनको एतबार अपना

कतील शिफाई

तमाम काम अधूरे पड़े रहे मेरे
मैं जिंदगी पे बहुत एतबार करता था

वाली आसी

किया जो तुमने अपने दिल से पूछो
हमारा एतबार आए न आए

अली सिकंदरवज्द

वादा किया था फिर भी न आये मझार[२] पर
हमने तो जान दी थी, इसी एतबार पर

अझीझ लखनवी

उनकी हर बात पे खुदा जाने
क्यूँ मूझे एतबार है अब तक

---

१. चमत्कार २. कब्र

दर्दे दिल क्या बयाँ करूँ 'रश्की'
उसको कब एतबार आता है

मुहम्मद अली खाँ रश्की

जो तुम्हारी तरह तुमसे कोई झूठे वादे करता
तुम्हीं मुन्सिफी से कह दो, तुम्हें एतबार होता ?

दाग़

'जलाल', अहदे-जवानी[१] है, दोगे दिल सौ बार
अभी की तौबा नहीं एतबार के काबिल[२]

जलाल

अब और किसका कीजिये दुनिया में एतबार
दिल सा रफीक[३] वक्त पे आँखें बदल गया

फरोझ रामपुरी

हमारे पास भी कहने को हैं बहुत बातें
मगर कहे का हमारे जो एतबार आए

जावेद वशिष्ट

मुफलिसी[४] सब बहार खोती है
मर्द का एतबार खोती है

वली दफनी

हर चन्द एतबार में धोके भी हैं, मगर
ये तो नहीं किसीपे भरोसा किया न जाए

जाँनिसार अख्तर

किस बात पर तेरी मैं करूँ एतबार हाय !
इकरार[५] इक तरफ है तो इन्कार इक तरफ

कायम चान्दपुरी

---

१. युवावस्था २. योग्य ३. साथी ४. निर्धनता ५. स्वीकृति

आप जो कुछ करार करते हैं
कहिये, हम एतबार करते हैं

कायम चान्दपुरी

लिया जो ख्वाब में बोसा तो यार जाग उठा
तमाम उम्र का हम एतबार खो बैठे

अमीर मीनाई

तेरे वादे पर सितमगर अभी और सब्र करते
अगर अपनी जिंदगी का हमें एतबार होता

दाग़

बार-बार एतबार करते हैं
तजरुबा[१] एक बार करते हैं

बेगम अख्तर सिद्दीकी

तुम अपने कौल, तुम अपने करार याद करो
और उन पे फिर मेरा वो एतबार याद करो

बिस्मिल सईदी

हजार बार रखा उसने हाथ सीने पर
कि मेरे दम के निकलने का एतबार न था

जावेद लखनवी

एहसान (उपकार)

धूप सह लेना है अच्छा, बारे-ऐहसान[२] कौन उठाये
छाँव एक गिरती हुई दीवार है मेरे लिये

आरज़ू लखनवी

---

१. अनुभव २. उपकार का बोज

जिसने कुछ एहसान किया, एक बोझ हम पर रख दिया
सर से तिनका क्या उतारा, सर पे छप्पर रख दिया

जलाल

दिल लेके मुफ्त, कहते हैं कुछ काम का नहीं
उल्टी शिकायतें हुई, एहसान तो गया

दाग़

एहसान नाखुदा[१] का उठाए मिरी बला
किश्ती[२] खुदा पे छोड़ दूँ, लंगर को तोड़ दूँ

जौक

कुछ हमींको नहीं एहसान उठाने का दिमाग
वो तो जब आते हैं, मायल-ब-करम[३] आते हैं

फैझ अहमद फैझ

एक एहसान रह गया, सर पर तुम्हारी तेग[४] का
वर्ना जो कुछ मुश्किलें थीं आज आसाँ हो गयीं

मुज्तर मुझफ्फरपुरी

आप अगर अपना गला काट के मर जाते 'रिन्द'
सर पे क्यूँ खंजरे-जल्लाद[५] का एहसान होता

रिन्द

निगहे-कहर[६] खास हम पर है
ये तो एहसान हुआ, सितम न हुआ

फानी बदायूनी

कर के एहसान जताता जो फिरे दुनिया को
ऐसे कमजर्फ[७] के एहसान से डर लगता है

अर्शद ईटावी

---

१. नाविक २. नौका ३. कृपा करने को तत्पर ४. तलवार ५. जल्लाद की तलवार ६. क्रोधपूर्ण दृष्टि ७. तुच्छ

भला हुआ कि उड़ा दी सबा[1] ने खाक मेरी
तेरा तो सर पे न एहसान ऐ झमीन लिया

शाद अझीमाबादी

चार दागों पे न एहसान जताओ इतना
कौन-से बख्श दिये तुमने खजाने हम को ?

बेखुद देहलवी

गैर की बज़्म से आये थे अयादत[2] के लिऐ
याद है, याद है, वो आप का एहसाँ मुझको

बेखुद देहलवी

लाया है कोई साथ, न ले जायगा कोई
दौलत हो और आदते-अहसाँ न हो, तो क्या ?

नझम तबा तबाई

रहम पर गैर के जीना कैसा ?
जिंदगी का यह करीना कैसा ?

असर लखनवी

एहसान ले न हिम्मते-मर्दाना छोड़कर
रस्ता भी चल तो सब्झ-ए-बेगाना[3] छोड़कर

नझम तबा तबाई

किया कत्ल और जान-बख्शी भी की
'हसन' उसने एहसान दुबारा किया

मीर गुलाम 'हसन'

मुझसे कहता है यह एहसान जताकर जालिम
'हम सिवा तेरे किसी पर भी सितम करते हैं ?'

दाग़

१. ठंडी हवा २. बीमार का हाल पूछना ३. हरी भरी घास

मुहसिनों को[१] खुदा समझते हैं
हम पर अहसान सोच कर करना

प्रवीण अटक

कफन

दे दुपट्टा तू अपना मलमल का
नातवाँ[२] हूँ, कफन भी हो हलका

नासिख

शहीद-ए-नाझ[३] हूँ उस गुलबदन[४] का
गुलाबी रंग हो मेरे कफन का

सबक इबरत[५] का ले नादान बालों की सफेदी से
कफन ओढ़ा है जीते जी निगारे-जिन्दगानी ने

हसरत[६] उसकी जगह थी खाबीदा[७]
'मीर' का खोलकर कफन देखा

मीर

कहीं शादी, कहीं गम गरज दुनिया दुरंगी है
पहनता है कफन कोई, कोई कपड़े बदलता है

डाल दे साया अपने आँचल का
नातवाँ हूँ कफन भी हो हल्का

नसीम

खींच ले जाये न चादर ही समझ कर कोई
मैं 'खलील' आज कफन ओढ़ के सो जाता हूँ

खलील धनतेजवी

---

१. उपकार करने वाले २. कमजोर ३. प्रेमिका के नाझ नखरे पर प्राण न्यौछावर करने वाला ४. फूल जैसे नाजुक बदन वाली ५. मानसिक दु:ख ६. कामना ७. सुषुप्त

अब आया ध्यान ऐ आरामे-जाँ[१] इस नामुरादी में
कफन देना तुम्हें भूले थे हम असबाबे-शादी में

मीर

कब्र

आराम से हूँ कब्र के अन्दर जो बन्द हूँ
मैं भी तो आदमी हूँ फरागत[२] पसंद हूँ

शाद अझीमाबादी

शुक्रिया ऐ कब्र तक पहुँचानेवालों शुक्रिया
अब अकेले ही चले जाऐंगे इस मंजिल से हम

चकबस्त

खुदा जाने ये कैसी रहगुजर[३] है किसकी तुरबत[४] है
वो जब गुजरे इधर से गिर पड़े दो फूल दामन से

रियाझ खैराबादी

बाद मरने के मिरी कब्र पर आया वो 'मीर'
याद आई मिरे ईसा को दवा मेरे बाद

मीर

जमा हुए हैं कुछ हसीं गिर्द मेरे मझार[५] के
फूल कहाँ से खिल गए दिन तो न थे बहार के

आरझू लखनवी

दिखाकर नक्श-ए-कदम[६] कह रही है कब्र मेरी
अभी गया है कोई पायमाल करके मुझे

---

१. दिल को शांति देने वाली २. मुक्ति ३. रास्ता ४. समाधि ५. कबर ६. कदम के निशान

चले भी आओ यह है कब्र-ए-फानी[१] देखते जाओ
तुम अपने मरने वालों की निशानी देखते जाओ

फानी बदायूनी

रास्ता छोड़ दिया उसने इधर का 'आसी'
क्यों बनी रहगुजरे-यार में[२] तुरबत दिल की

आसी गाझीपुरी

कातिल का नाम लिख दिया क्यों मेरी कब्र पर
लेते हैं राहगीर भी बोसे मझार के

सीमाब अकबराबादी

कब्र में भी तो मर कर पहुँचा हूँ
रास कोई सफर नहीं मुझको

अहसन मारहरवी

न सही कब्र में आकर मुझे राहत न सही
तेरे चक्कर से तो ए गर्दिशे-दौराँ[३], निकला

अहसन मारहरवी

जिनके महलों में हजारों रंग के फानूस थे,
झाड़ उनकी कब्र पर है और निशाँ कुछ भी नहीं

बयाँ

गुबार उठता है यह कहता हुआ गोरेगरीबाँ से[४]
जहाँ में एक दिन सब का यही अंजाम होना है

आरझू लखनवी

उनसे इझहारे-मुहब्बत जो कोई करता है
दूर से उसको दिखा देते हैं तुरबत[५] मेरी

जलील मानिकपुरी

---

१. फानी की समाधि २. यार के मार्गमें ३. आपत्ति का चक्कर ४. कब्रस्तान में से ५. कब्र

गोर[१] किस दिल जलेकी है यह फलक[२]
शोला[३] एक सुबह याँ से उठता है-

मीर

सुना जाता है शहरे इश्क के गिर्द
मझारें ही मझारें हो गई हैं

मीर

अदम[४] के तारीक[५] रस्ते में कोई मुसाफिर न राह भूले
मैं शम्मे-हस्ती[६] बुझा के अपनी चिरागे-तुरबत[७] जला रहा हूँ

बिस्मिल सईदी

तुरबते 'हादी'[८] दिखा के, सबसे कहता है वो शोख
ये वो सोता है, जिसे बरसों से नींद आई न थी

हादी रोहतकी

कब्र में रखकर न ठहरा कोई दोस्त
मैं नये घर में अकेला रह गया

अनीस

तुम गुल-से गाल कब्र पे रखते तो बात थीं
क्या फायदा जो फूलों का अम्बार कर दिया

गनी

हँस कब्र पे मेरी खिलखिलाकर
यह फूल चढ़ा कभी तो आकर

ख्वाजा मीर दर्द

चढ़ाओ फूल मेरी कब्र पर जो आये हो
कि अब जमाना गया तेवरी चढ़ाने का

दाग़

---

१. कब्र २. आकाश ३. चिनगारी ४. परलोक के ५. अंधेरा ६. जीवनरुपी दीपक
७. मजार का दीपक ८. हादी की कब्र

यह कहने को मुझे जालिम सरे-मझार आया -
'मेरे बगैर तुझे किस तरह करार आया ?'

दाग़

पाँव लटकाये हुऐ कब्र में बैठे है 'जिगर'
देर चलने में नहीं, सुबह चले, शाम चले

जिगर मुरादाबादी

बादे-फना[१] फिजूल है नामो-निशाँ की फिक्र
जब हम नहीं रहे तो रहेगा मझार क्या ?

चकबस्त

ये जमीं पे जिनका था दबदबा, कि बुलंद अर्श[२] पे नाम था
उन्हें यों फलक[३] ने मिटा दिया कि मझार तक का निशाँ नहीं

चकबस्त

पये-फातिहा[४] कोई आये क्यों, कोई चार फूल चढ़ाऐ क्यों
कोई आके शम्आ जलाऐं क्यों, मैं तो बेकसी का मझार हूँ

बहादूर शाह 'जफर'

न तो मैं किसी का हबीब[५] हुं, न तो मैं किसी का रकीब[६] हूँ
जो बिगड़ गया वो नसीब हूँ, जो उजड़ गया वो दयार[७] हूँ

बहादुर शाह 'जफर'

मेरी लहद[८] पे पतिंगों[९] का खून होता है
हुजूर शमा न लाया करें जलाने को

कमर जलालवी

---

१. मृत्यु के बाद २. आकाश ३. आकाश ४. मृत व्यक्ति की कब्र पर आके प्रार्थना करना ५. मित्र ६. दुश्मन ७. जगह/प्रदेश ८. कब्र ९. तितलियाँ

दबा के कब्र में सब चल दिये दुआ न सलाम
जरा सी देर में क्या हो गया जमाने को

कमर जलालवी

अपनी गली में मुझको न कर दफन बादेकत्ल[१]
मेरे पते से खल्क[२] को क्यों तेरा घर मिले ?

गालिब

न रोता है किसीके हाल पर, कोई न हँसता है
बड़े आराम से सोते हैं सब गोर-ए-गरीबाँमें[३]

सफदर मिर्झापुरी

दौड़े तलाश-ए-दौलत-ए-दुनिया में[४] जो हरीस[५]
आखिर को थक के गोर-ऐ-गरीबाँ में सो गऐ

अमीर मीनाई

अब उनकी कब्र पे जलता नहीं दिया कोई
कि जिनकी दहर[६] में रौशन बहुत हवेली थी

माहिर रतलामी

गझल ही कह ली सुनाने को हश्र[७] में 'सीमाब'
पड़े-पड़े यूँ ही तनहा लहद[८] में क्या करते ?

सीमाब अकबराबादी

गुल की तो है सब सिफत[९] मुझमें
बस ये है कि कब्र पर खिला हूँ

अहमद नदीम कासमी

---

१. कत्ल के बाद २. दुनिया ३. गरीबों की कब्र ४. दुनियाके धन की शोध में ५. लालची ६. युग ७. कयामत ८. कब्र ९. गुण

बड़े चैन से कब्र में सो रहा हूँ
नया आसमाँ है, निराली जमीं है

आगा शायर

कब्रों के मनाझिर ने[१] करवट कभी न बदली
अन्दर वही आबादी, बाहर वही वीराना

नूह नारवी

गये सख्ती के दिन, सोये लेहद[२] में पाँव फैला के
ये राहत[३] बादे-मुर्दन[४] जिन्दगानी भर से बेहतर है

सफीर बिलगरामी

मेहरबाँ, ये मझारे 'फानी' है
आपका जाँनिसार[५] था, न रहा

फानी बदायूनी

दिन को एक नूर[६] बरसता है मेरी तुर्बत पर
रात को चादरे-महताब[७] तनी होती है

हफीझ जौनपुरी

भरे हैं आँख में आँसू, उदास बैठे हो
ये किस गरीब की तुर्बत के पास बैठे हो ?

तअश्शुक

शम-ए-मजार[८] थी, न कोई सोगवार[९] था
तुम जिसपे रो रहे थे, ये किसका मजार था ?

बेखुद देहलवी

---

१. दृश्य २. कब्र ३. आराम ४. मृत्यु के बाद ५. जान न्योछावर करने वाला ६. ज्योति ७. चांदनी रूप चद्दर ८. कब्र का दीपक ९. शोक करने वाला

कहीं भी जायें, कहाँ आसमाँ नहीं मिलता ?
लेहद ही एक जगह है जहाँ नहीं मिलता

रियाझ खैराबादी

रौशनी जिनसे हुई दुनिया में उनकी कब्र पर
आज इतना भी नहीं जाकर कोई रख दे चिराग

'हाफिझ'

दफना दिया गया मुझे चाँदी की कब्र में
मैं जिसको चाहती थी, वो लड़का गरीब था

हिना तैमुरी

तुमने मेरी मझार पर आके मुस्कुरा दिया
बिजली कड़क के गिर पड़ी सारा कफन जला दिया

लहद तक आपकी ताझीम[१] कर दी
अब आगे आपके आमाल जानें

अकबर इलाहाबादी

जिस पर अहबाब[२] बहुत रोये, फक्त इतना था
घर को वीरान किया, कब्र को आबाद किया

चकबस्त

छोड़कर जाना न था, जाना पड़ा
कब्र में सोना पड़ेगा बेवजह

चिनु मोदी 'इर्शाद'

अब वो मर्कद पे[३] सर-ए-शाम[४] ही आ जाते हैं
हमने सोकर भी नसीब को जगा रक्खा है

अर्श मल्सियानी

१. आदर २. दोस्त ३. कब्र पर ४. शाम होते ही

कयामत (प्रलय)

तुम कि बैठे हुऐ एक आफत हो
उठ खड़े हो तो क्या कयामत हो !

शाह हातिम

मैं तो समझा था कयामत हो गई
खैर, फिर साहब-सलामत हो गई

हसरत मोहानी

जाते हुए कहते हो कयामत को मिलेंगे
क्या खूब कयामत का है गोया कोई दिन और ?

गालिब

मिलाकर आपसे नजरें मुसीबत देख ली मैंने
कयामत से ही कुछ पहले कयामत देख ली मैंने

सलमा जमीर

न मरते हैं, न नींद आती है, न वो सूरत बिसरती है
यह जीते जागते हम पर कयामत सब गुझरती है

ख्वाजा मीर दर्द

दूर से जल्वा-ए-कामत[१] ही सही
कुछ तो दिखलाओ कयामत ही सही

अनवर अली यास

हश्र[२] में इन्साफ होगा बस यही सुनते रहे
कुछ यहाँ होता रहा है, कुछ वहाँ हो जाएगा

आगा शायर किजिल बाश

---

१. खूबसूरती का कद २. कयामत

उनका आना हश्र में कुछ कम न था
और जब पलटे कयामत ढा गये

फिराक गोरखपुरी

मुझे जन्नत में वह सनम न मिला
हश्र और एक बार होना था

मोमिन

दोस्त करते हैं मलामत[१], गैर करते हैं गिला
क्या कयामत है मुझीको सब बुरा कहने को है

मोमिन

वो मुँह क्या दिखायेंगे महशर में मुझको
जो आँखें अभी से चुराये हुए हैं

नकाब

हजार हश्र में पुरसिश[२] हुई मगर मैंने
न दिल के दाग़ दिखाये न उनका नाम लिया

हश्र के दिन तो मिलोगे, यह किया मैंने सवाल,
सोचकर देर में जालिम ने कहा – 'मुश्किल है'

दाग़

ता[३] कयामत किसी तरह न बुझे
आग ऐसी लगा गया कोई

दाग़

अभी से सोच-समझ लो, नहीं तो हश्र के दिन
मेरे सवाल का तुमसे जवाब हो कि न हो

हफीज जौनपुरी

---

१. धिक्कार २. पूछताछ ३. तक

कयामत का सितम है यह भी दुनिया में कि मरने पर
असीरों की[१] बनाई कब्र भी सैयात[२] ने घर में

शाद अझीमाबादी

गली में यार की हो कब्र, या खराबें में[३]
हमें तो हश्र के दिन कहीं पे सो रहना

शाद अझीमाबादी

यही इल्तिजा[४] है कि ऐ खुदा, मुझे हश्र से तू मुआफ कर
वह तेरे हुजूर में आये क्या, जो किसीको मुँह न दिखा सके

जोश मलसियानी

कहते हैं वो 'जलायेंगे हम तुझको हश्र तक
दुश्मन की कब्र तेरे बराबर बनायेंगे'

दाग़

वो उठे अँगड़ाइयाँ लेते हुऐ
मैं यह समझा हश्र बरपा हो गया

साकिब लखनवी

नाम मालूम है कातिल का मगर हश्र के दिन
जानने वालों से कहता हूँ, मुझे याद नहीं

साकिब लखनवी

हश्र में मैकदे वालों, जो खुदा ने चाहा,
यही जलसा, यही सागर, यही मीना[५] होगा

रियाझ खैराबादी

हश्र के दिन वो गुनहगार न बख्शा जाये
जिसने देखा तेरी आँखों का पशेमाँ[६] होना

जिगर

---

१. कैदियों की २. शिकारी ३. खंडहर में ४. प्रार्थना ५. शराब का प्याला ६. लज्जित

इलाही क्यों नहीं आती कयामत माजरा क्या है ?
हमारे सामने पहलू में वो गैरों के बैठे हैं

दाग़

कयामत भी होगी तो मेरी बला से
मुझे दादखाही[१] की ताकत कहाँ हैं ?

मोहम्मद यार खाकसर

हाय क्या मुसीबत है, हाय क्या कयामत है
हम ही खा गए धोका, हम चले थे समझाने

जोहरा बानो 'निगाह'

हम आप कयामत से गुझर क्यों नहीं जाते
जीने की शिकायत है तो मर क्यों नही जाते

महबूब खिजाँ

महशर[२] में इत्तफाक[३] से आया न ज़हन[४] में
वरना तमाम उम्र तेरा नाम याद था

अब्दुल हमीद अदम

हम हश्र में गए थे, मगर कुछ न पूछिये
वो जान-बूझकर वहाँ अनजान बन गये

अदम

नज़आ[५] का वक्त है, बैठे रहिये
आप उठ्ठे तो कयामत होगी

सफी लखनवी

वो दुनिया थी जहाँ तुम रोक लेते थे जबाँ मेरी
यह मशहर है यहाँ सुननी पड़ेगी दास्ताँ मेरी

आनंद नारायण मुल्ला

---

१. न्याय माँगना २. कयामत ३. संयोग ४. समझ ५. मरने के समय साँस तूटना

महशर में इक सवाल किया था करीम[१] ने
मुझसे वहाँ भी आपकी तारीफ हो गई

अदम

हमें मालूम है, हमसे सुनो, महशर में क्या होगा
सब उसको देखते होंगे, वो हमको देखता होगा

जिगर मुरादाबादी

हश्र में भी खुसरवाना-शान से[२] जाएँगे हम
और अगर पुरसिश[३] न होगी तो पलट आऐंगे हम

जोश मलिहाबादी

माना कि हर कदम पे कयामत है फिर भी 'जोश'
बनता नहीं किसीसे मोहब्बत किए बगैर

जोश मलीहाबादी

सूरत तेरी दिखा के कहूँगा रोजे-हश्र[४]
आँखों का कुछ गुनाह, न दिल का कुसूर था

अमीर मीनाई

घबरा रहे थे क्यों हश्र में इस कदर 'अमीर'
इतनी ही सी तो बात है कह दो खता हुई

अमीर मीनाई

काश उसके रूबरू न करें मुझको हश्र में
कितने मेरे सवाल हैं, जिनका नहीं जवाब

मीर

---

१. खुदा २. बादशाही ठाठ के साथ ३. स्वागत ४. कयामत के दिन

कश्ती–नाखुदा–तूफान

उनको क्या, तूफाँ उठा कर जो किनारे हो गये
नाखुदा की मुश्किलें तो नाखुदा से पूछिये

शहरयार

जरा दरिया की तह तक तू पहुँच जाने की हिम्मत कर
तो फिर ऐ डूबने वाले, किनारा ही किनारा है

माहिर–उल–कादरी

होते हैं बड़े किस्मत के धनी, जो ये सदमें[१] सह जाते हैं
तूफाने–हवादस[२] में वरना अच्छे अच्छे बह जाते हैं

निगार

कागजी नाव थी मझधार में दम तोड़ गई
पास पतवार भी थी दूर, किनारे भी न थे

वज़ीर आगा

ले चल, हाँ, मझधार में ले चल, साहिल–साहिल[३] क्या जाना ?
मेरी कुछ परवाह न कर, मैं खूगर[४] हूँ तुफानों का

हफीझ जालन्धरी

दरिया की जिन्दगी पर सदके[५] हजार जानें
मुझको नहीं गवारा साहिल की मौत मरना

जिगर मुरादाबादी

साहिल[६] के सुकूँ[७] से किसे इन्कार है लेकिन
तूफान से लड़ने में मझा और ही कुछ है

आले अहमद सुरूर

---

१. आघात २. दुर्घटनाओं का तुफान ३. किनारे–किनारे ४. अभ्यस्त ५. न्यौच्छावर
६. किनारा ७. चैन

ये कहना हमने ही तूफाँ में डाल दी कश्ती
कसूर अपना है दरिया को क्या बुरा कहना ?

आलमताब तिश्ना

कश्तियाँ टूट गयी हैं सारी
अब लिये फिरता है दरिया हमको

बाकी सिद्दीकी

मुसाफिरों में अभी तल्खियाँ[१] पुरानी हैं
सफर नया है मगर कश्तियाँ पुरानी हैं

सैयद सिब्ते अली सबा

हम तो डूबो कर कश्ती को, खुद ही पार लगायेंगे
तूफाँ से गर बच निकले, साहिल से जा टकरायेंगे

माहिर उल कादरी

कश्ती चला रहा है, मगर किस अदा के साथ
हम भी न डूब जायें कहीं नाखुदा के साथ

अदम

उसे तूफान की शिद्दत[२] से क्या आजुर्दगी[३] होगी
खुदा का नाम लेकर जिसने कश्ती छोड़ दी होगी

माहिर उल कादरी

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

हरिवंशराय बच्चन

खुदा पर छोड़ दी मैंने, खुदा को नाखुदा[४] समझा
खुदा ने छोड़ दी मुझ पर न जाने मुझको क्या समझा ?

फुगाँ

---

१. कटुता २. उग्रता ३. पीड़ा ४. नाविक

'फानी', सफीना[१] अब भी न डूबे तो क्या करे ?
तूफान को न देख, सितमे-नाखुदा[२] को देख

फानी बदायूनी

जितना मल्लाह[३] का डर है मुझको
उतना तूफान का डर नहीं है

जफर ईकबाल

जहाँ तक हो सके हम पर सितम ढाये चले जाओ
समन्दर में हमें तूफाँ से घबराना नहीं आता

अदम

अल्लाह किसका नाम है, मल्लाह किसका नाम
तूफान किसका नाम है, कश्ती में आ के देख

कैफ भोपाली

गर दे गया दगा हमें तूफान भी 'कतील'
साहिल पे कश्तियों को डूबोया करेंगे हम

कतील शिफाई

वक्त का 'ईर्शाद' यह सैलाब[४] है
कश्ती, माझी कोई बच सकते नहीं,

चिनु मोदी 'ईर्शाद'

खेलना जब उनको तूफानों से आता ही न था
फिर वो कश्ती के हमारी नाखुदा क्यों बन गये ?

अफसर मेरठी

उन्हें ठहरे समुन्दर ने डुबोया
जिन्हें तूफाँ का अंदाजा बहुत था

डो. मंजूर अहमद मंजूर

---

१. नौका २. नाविक का जुल्म ३. नाविक ४. जलप्रलय

इसको कहते हैं किस्मत की नाकामियाँ
पहले कश्ती गई, फिर किनारा गया

नाझाँ

सहारा क्यों लिया था नाखुदा का
खुदा भी क्यों करे इम्दाद[१] मेरी ?

हफीझ जालंधरी

इक तुम हो कि कश्ती को तूफाँ में डुबो बैठे
इक हम हैं कि तूफाँ को कश्ती में डुबोते हैं

सागर निझामी

मुझे ऐ नाखुदा, आखिर किसीको मुँह दिखाना है
बहाना करके तनहा पार उतर जाना नहीं आता

यगाना चंगेजी

जिन्दगी दरियाए-बेहासिल[२] है और किश्ती खराब
मैं तो घबराकर दुआ करता हूँ तूफाँ के लिए

सीमाब अकबराबादी

खुदा और नाखुदा[३] मिलकर डूबो दें यह तो मुमकिन है
मेरी वजहे-तबाही[४] सिर्फ तूफाँ हो नहीं सकता

सीमाब अकबराबादी

नाखुदा को मैं खुदा उस वक्त भी समझा किया
जब मुझे खुद नाखुदा ने जेरे-तूफाँ[५] कर दिया

अलम मुझफ्फरनगरी

---

१. सहायता २. विफलताओं का सिलसिला ३. नाविक ४. बर्बादी का कारण
५. तुफान के भँवर में

तेरी मरझी पे छोड़ दूँ किस तरह तूफान में किश्ती ?
तुझे ऐ नाखुदा, नावाकिफे-साहिल[१] समझता हूँ
अलम मुजफ्फरनगरी

तवज्जह[२] सर्फ[३] करता वाकई गर नाखुदा अपनी
तो क्यों साहिल से टकरा करके किश्ती डूबती अपनी ?
अलम मुझफ्फरनगरी

नाखुदा डूब चुका, नाव है गर्के-तूफाँ[४]
हाय ! किस वक्त मुझे यादे-खुदा आती है
अलम मुझफ्फरनगरी

अँधेरी रात, तुफाने तलातुम[५], नाखुदा गाफिल
यह आलम है तो फिर किश्ती, सरे-मौजे-रवाँ[६] कब तक
अलम मुझफ्फरनगरी

हम डूबने वाले, मौजों की तौहीन[७] गवारा[८] क्या करते ?
किश्ती का सहारा क्यों लेते, साहिल की तमन्ना क्या करते ?
माहिर-उल-कादरी

तूफान-ए-हवादिस[९] से डराता है हमें क्या ?
हम लोग तो अकसर तह-ए-गिर्दाब[१०] रहे हैं
जाँनिसार अख्तर

तूफाँ से खेलना अगर इन्सान सीख ले
मौजों से आप उभरें किनारे नये-नये
असर लखनवी

---

१ किनारों से अनजान २. ध्यान ३. देना ४ तुफानमें फँसा हुआ ५. बड़ी बड़ी लहरें ६. लहरों पर बहती हुई ७. अपमान ८. सह्य ९. दुर्घटनाओंका तुफान १०. भँवर के नीचे

मुझे रोकेगा तू ऐ नाखुदा क्या गर्क[१] होने से
कि जिनको डूबना है डूब जाते हैं सफीनों में[२]

इकबाल

आने वाले किसी तूफान का रोना रोकर
नाखुदा ने मुझे साहिल पे डूबोना चाहा

हफीझ जालंधरी

सहारा न देती अगर मौजे-तूफाँ[३]
डुबो ही दिया था हमें नाखुदा ने

मकीन अहसन कलीम

दरिया को अपनी मौज की तुगियानियों[४] से काम
कश्ती किसी की पार हो या दरमियाँ रहे

हाली

किनारों से मुझे ऐ नाखुदाओं, दूर ही रखना
वहाँ लेकर चलो, तूफां जहाँ से उठने वाला है

अली जलीली

ऐ मौजे-बला[५], उनको भी जरा, दो चार थपेड़े हलके से
कुछ लोग अभी तक साहिल से, तूफां का नझारा करते हैं

मुईन हसन झज्बी

तुम्हें मौजों से डर है, और मेरा तजुरबा ये है
कि मैं साहिल पे मौजों का सहारा ले के पहुँचा हूँ

शहीद अमीपुरी

मेरे डूब जाने का बाइस[६] न पूछो
किनारे से टकरा गया था सफीना[७]

हफीझ जालंधरी

---

१. डूबने से २. नाव में ३. तुफानी लहरें ४. उफान, जोश ५. आपत्ति ६. कारण ७. नाव

जमाने भर से निराली है आपकी मंतिक[1]
नदी को पार किया किसने उलटी कश्ती में ?

शिकेब जलाली

तूने कहा न था कि मैं कश्ती पे बोझ हूँ
आँखों को अब न ढाँप मुझे डूबते भी देख

शिकेब जलाली

मैंने हाथों को ही पतवार बनाया वरना
एक टूटी हुई किश्ती मेरे किस काम की थी ?

परवीन शाकिर

किनारे आज कश्ती लग रही है
मुझे हर चीज अच्छी लग रही है

अनवर शउर

जहाँ सफीने किनारों पे डूब जाते हो
तलाश ऐसे किनारों की क्या करे कोई

नैरंग सरहदी

किश्तियाँ सबकी किनारे पे पहुँच जाती हैं
नाखुदा जिनका नहीं, उनका खुदा होता है

जौक

तुम्हीं तो हो जिसे कहती है नाखुदा दुनिया
बचा सको तो बचा लो कि डूबता हूँ मैं

मजाझ

मुझे आज साहिल पे रोने भी दो
कि तूफान में मुस्कुराना भी है

मजाझ

---

१. नियमों का शास्त्र

कसम (शपथ)

जब कहा मैंने कसम खाओ तो बोले हँसकर
गर कसम है चीज खाने की तो खा ली जाऐगी

रार्बट गार्डनर

खातिर[१] से या लिहाज[२] से मैं मान तो गया
झूठी कसम से आपका ईमान तो गया

दाग़

खुदा की कसम उसने खायी जो आज
कसम है खुदा की मझा आ गया

दाग़

जानता हूँ कि 'असद' वादे हैं उसके झूठे
कुछ अजब लुत्फ है रुक-रुक के कसम खाने में

गालिब

आप खुद ही सोचिये मैं हूँ उन्हें कितना अज़ीज़[३]
वो खुदा को छोड़कर मेरी कसम खाने लगे

शकील बदायूनी

अम्न[४] की जब कभी ईंसाँ ने कसम खाई है
लबे-इब्लीस पे[५] हलकी सी हँसी आई है

आनंद नारायण मुल्ला

हाँ, हाँ जरुर वादे का ईफा[६] करोगे तुम
बस, बस कसम न खाओ, मुझे एतबार है

---

१. आदर २. शील-संकोच ३. प्रिय ४. शांति ५. शैतान के होठों पर ६. वचनपूर्ति

हाथ टूटें, मैंने जो छेड़ी हों जुल्फें आपकी
आपके सर की कसम, दस्ते-सबा[१] थी, मैं न था

रसा देहलवी

बुतों को[२] कौल[३] देता हूँ वफा का
कसम अपने खुदा की खा रहा हूँ

हफीझ जालंधरी

जहर मिलता ही नहीं मुझको सितमगर, वर्ना
क्या कसम है तिरे मिलने की कि खा भी न सकूँ

गालिब

बहुत बढ़-चढ़ के दावे चौदहवीं का चाँद करता है
तुम्हें मेरी कसम उठना, जरा तुम भी सँवर जाना

अहसन मारहरवी

अब न चाहोगे किसी और को तसलीम[४] मगर
फायदा क्या है मेरे सिर की कसम खाने से ?

नसीर आरझू

तुम्हारी नींद में डूबी हुई नज़र की कसम
हमें यह जिद है कि जागो भी और जगाओ भी

मुस्तफा जैदी

हाँ, 'असर' सच है कि सब वादे हैं उसके झूठे
कुछ अजब लुत्फ है रुक-रुक के कसम खाने का

असर लखनवी

खुदा के वास्ते झूठी न खाईये कस्में
मुझे यकीन हुआ, मुझको एतबार आया

दाग

---

१. ठंडी हवा का हाथ २. सुंदर औरतों को ३. वचन ४. कबूल

मुझको ले जाकर कहा नासेह[१] ने उनके रुबरु
आपके सर की कसम, यह आपका दीवाना है

दाग़

कसम जनाजे पे आने की मेरे खाते हैं 'गालिब'
हमेशा खाते थे मेरी जान की कसम आगे

गालिब

कारवाँ (काफिला)

मैं अकेला ही चला था जानिबे[२] मंझिल मगर
लोग साथ आते गये और कारवाँ बनता गया

मजरुह सुल्तानपुरी

फिर मैं आया हूँ तेरे पास ऐ अमीरे-कारवाँ[३]
छोड़ आया था जहाँ तू, वो मेरी मंझिल न थी

सीमाब अकबराबादी

अँधेरी रात, थकी हिम्मतें, गिरां[४] मंझिल
सलामती की दुआ माँग कारवाँ के लिए

निहाल सेवहारवी

सफर करते हुए मंझिल-ब-मंझिल[५] जा रहे हैं हम
मुझे ये सारी दुनिया कारवाँ मालूम होती है

तिलोकचंद महरुम

वही कारवाँ, वही रस्ते, वही जिंदगी के मरहले[६]
मगर अपने-अपने मकाम पर, कभी तुम नहीं, कभी हम नहीं

शकील बदायूनी

---

१. उपदेशक २. तरफ ३. काफिले का सरदार ४. मुश्किल ५. मंजिल के साथ ६. पड़ाव

उठा कदम, कदम उठा 'शकील' देख सामने
वो उड़ रही है गर्द[१] सी, वो जा रहा है कारवाँ

शकील बदायूनी

न परवा की हमारी कारवाँ ने जब तो फिर हम भी
बिछड़ कर कारवाँ से क्यूँ तलाशे-कारवाँ करते

वहशत कलकतवी

इस तरफ से गुजरे हैं काफिले-बहारों के
आज तक सुलगते हैं जख्म रहगुजारों के[२]

मजरुह सुल्तानपुरी

जंगलों में सर पटकता जो मुसाफिर मर गया
अब उसे आवाझ देता कारवाँ आया तो क्या ?

जोश मलीहाबादी

इन्हीं जर्रों[३] से होंगे कल नये कुछ कारवाँ पैदा
जो जर्रे आज उड़ते हैं गुबारे-कारवाँ[४] हो कर

शफक टौंकी

अब जिस तरफ से चाहे गुजर जाए कारवाँ
वीरानियाँ[५] तो अब मेरे दिल में उतर गयीं

कैफी आझमी

मैं था जर्रा कारवाँ के साथ मंझिल तक गया
चाँद सूरज राह में आते रहे जाते रहे

बेकल उत्साही

कारवाँ अज्म[६] का रोके से कहीं रुकता है
लाख तुम राह में दीवार उठाते जाओ

मोहसिन भोपाली

---

१. धूल २. मार्ग का ३. अणु ४. काफले की धूल ५. उज्जड़पना ६. दृढ निश्चय

ऐ काफिले वालों, तुम इतना भी नहीं समझे
लूटा तुम्हें रहजन[1]ने, रहबर[2] के इशारे पर

तरन्नुम कानपुरी

किसी राहरौ[3] को खबर यह न होगी
कि इन्सान तनहा[4] भी इक कारवाँ है

निझाम रामपुरी

मेरी तकदीर में मंझिल नहीं है
गुबारे-कारवाँ है और मैं हूँ

मुईनअहसन जज्बी

हम कारवाँ के साथ हैं, लेकिन हैं इस तरह,
जैसे बिछड़ गये हों, किसी कारवाँ से हम

जरा ठहरो, हमें भी साथ ले लो कारवाँ वालों
अगर तुमसे न पहचानी गई मंझिल तो क्या होगा ?

मजरूह सुलतानपुरी

काफिले या मिट गए या बढ़ गए
अब गुबारे-राह[5] भी उठता नहीं

फिराक गोरखपुरी

मैं सो रहा था किसी याद के शबिस्ताँ[6] में
जगा के छोड़ गये काफिले सेहर[7] के मुझे

नासिर काझिमी

हजार गर्दिशे[8] शामो-सेहर से गुजरे हैं
वो काफले जो तेरी रहगुजर से गुजरे हैं

सूफी तबस्सुम

---

१. लुटारा २. पथ दर्शक ३. मुसाफिर ४. एकेला ५. रास्ते की धूल ६. शयन कक्ष
७. सुबह ८. दिन-रात का चक्कर

बफैजे-मसलहत[१] ऐसा भी होता है जमाने में
कि रहजन[२] को अमीरे-कारवाँ[३] कहना ही पड़ता है

जगन्नाथ आझाद

जरा इतना तो फर्मा दे कि मंझिल की तमन्ना में
भटकते हम फिरेंगे ऐ अमीरे-कारवाँ कब तक ?

फना कानपुरी

कारवाँ बढता रहा, मैं गर्द में दबता रहा,
क्या कहूँ ? कैसे कहूँ ? गाफिल रहा, सोता रहा

डॉ. विनय वाईकर

'मजरूह' काफिले की मेरे दास्ताँ ये है
रहबर ने मिल के लूट लिया राहजन के साथ

मजरुह सुल्तानपुरी

खुदा बुरा करे इस नींद का यह कैसी नींद ?
खुली कब आँख कि जब कारवाँ रवाना हुआ

शाद अझीमाबादी

मुझे क्यों छोड़ जाता बेसहारे दश्ते-गुरबत में[४]
जरूरत कुछ अगर महसूस करता कारवाँ मेरी

अलम मुजफ्फरनगरी

थके-माँदे भी मंझिल पर पहुँच जायें ब-आसानी[५]
कोई तदबीर ऐसी ऐ अमीरे-कारवाँ, कर लें

अलम मुझफ्फरनगरी

जहाँ भी थक के कोई कारवाँ ठहरता है
वहीं से एक नया कारवाँ चले है मियाँ

जाँनिसार अख्तर

---

१. दुनियादारी के कारण २. लुटेरा ३. काफिले का सरदार ४. प्रवास के मार्ग में ५. सरलता से

दरख्त[1] राह बतायें हिला-हिला कर हाथ
कि काफिले से मुसाफिर बिछड़ गया है कोई

शिकेब जलाली

याद आगाझ-ए-मुहब्बत[2] की दिलों से न गई
काफिले घर से बहुत दूर न होने पाऐ

फिराक गोरखपुरी

किसे खबर कि सदा किस तरफ से आऐगी
कहाँ से आके उठायेगा काफिला मुझको

वझीर आगा

कारवाँ के चलने से, कारवाँ के रुकने तक
मंझिलें नहीं यारो, रास्ते बदलते हैं

'सहबा' लखनवी

किस्सा (कहानी)

खैर इन बातों में क्या रक्खा है, किस्सा खत्म कर
मैं तुझे हमदर्द समझा था, ये मेरी भूल थी

रशीद 'अफरोज'

वही एक किस्सा जमाने को मिरा याद रहा
वही एक बात, जिसे आज पुरानी कह लो

खलीलुर्रहमान आझमी

करवटें क्यूँ बदल रहे हैं हुजूर
अभी आगाज[3] है कहानी का

असर लखनवी

१. वृक्ष २. प्यार का प्रारंभ ३. शुरुआत

इक बार उसने मुझको देखा था मुस्कुराकर
इतनी सी है हकीकत, बाकी कहानियाँ हैं

मेलाराम 'वफा'

कहानी दर्द की कल पर उठा रखो 'ताबाँ'
थकी हुई है बहुत रात, सो गई होगी

गुलाम रब्बानी 'ताबाँ'

मेरे रोने का जिसमें किस्सा है
उम्र का बेहतरीन हिस्सा है

जोश मलिहाबादी

वो दिन गुजरे कि जब ये जिंदगानी इक कहानी थी
मुझे अब हर कहानी जिंदगी मालूम होती है

'निसार' इटावी

कहते हैं सुन के मेरी सरगुजश्त[१] वो बेरहम
ये कौन जिक्र है, जाने भी दो, हुआ सो हुआ

सौदा

दास्ताने-दिल[२] नहीं है, आप सुनिए तो सही
हम जफाए-आसमाँ[३] का माजरा[४] कहने को है

जमाना बड़े गौर से सुन रहा था,
हमीं सो गये दास्ताँ कहते-कहते

साकिब लखनवी

कहानी मेरी रू-दाद-ए-जहाँ[५] मालूम होती है
जो सुनता है उसी की दास्ताँ मालूम होती है

सीमाब अकबराबादी

---

१. कहानी २. दिल की कहानी ३. आकाश का जुल्म ४. हाल ५. दुनिया की कथा

किसे जाकर सुनायें दास्ताँ अपनी तबाही की
जहाँ में तो किसीसे भी नहीं है दोस्ती अपनी

कुछ यही कोहकनो[१] कैस[२] पे गुजरी होगी
मिलती जुलती है कहानी मेरे अफसाने से

जहीर देहलवी

कहने को लफ्झ दो हैं उम्मीद और हसरत
इनमें निहाँ मगर इक दुनिया की दास्ताँ है

सीमाब अकबराबादी

जवानी क्या हुई, एक रात की कहानी हुई,
बदन पुराना हुआ, रूह भी पुरानी हुई

'अलीम'

आखिर उसकी सूखी लकड़ी एक चिता के काम आई
हरे-भरे किस्से सुनते थे जिस पीपल के बारे में

प्रेमनाथ कक्कर

शाम भी थी धुआँ-धुआँ, हुस्न भी था उदास-उदास
दिल को कोई कहानियाँ याद सी आ के रह गई

फिराक गोरखपुरी

आगाज़[३] तो होता है, अंजाम नहीं होता
जब मेरी कहानी में वो नाम नहीं होता

मीनाकुमारी

वो चाँद है तो अक्स[४] भी पानी में आयेगा
किरदार[५] खुद उभर के कहानी में आयेगा

इकबाल साजिद

---

१. फरहाद २. मजनू ३. आरंभ ४. प्रतिबिंब ५. कार्य

कही किसीसे न रुदादे-ज़िंदगी[1] मैंने
गुजार देने की शय[2] थी, गुजार दी मैंने

हकीम मखमूर

अगले वक्तों की सभी बातें कहानी हो गई
सुबहें बेमंजर[3] हुई, आँखें सुहानी हो गई

हकीम 'मन्जूर'

सुनी हिकायते-हस्ती[4] तो दरमियाँ[5] से सुनी
न इब्तिदा[6] की खबर है न इन्तिहा[7] मालूम

शाद अझीमाबादी

अभी से क्यों छलक आये तुम्हारी आँख में आँसू
अभी छेड़ी कहाँ है दास्ताने-ज़िंदगी मैंने ?

असर लखनवी

ये उज्लते-बेजा[8] खूब रही,
रुकिये तो सही, सुनिये तो सही

कुछ दिल की कहानी और भी है
कुछ गम के फसाने और भी है

ये कैसी कहानी है किस्सासरा[9]
न अंजाम[10] है और न आगाज[11] है

अदम

वो किस्सागो[12] भी 'जफर' दिलफिगार[13] ही निकला
सुनाई उसने भी जख्मों की दास्ताँ मुझको

जफर गोरखपुरी

---

१. जीवन का किस्सा २. वस्तु ३. दृश्यहीन ४. जीवन की कहानी ५. बीच में ६. आदि ७. अन्त ८. अनुचित जल्दी ९. कथाकार १०. अंत ११. शुरुआत १२. कथाकार १३. जख्मी दिलवाला

दास्ताने-शबे-गम[१] किस्सा-ऐ-तुलानी[२] है
मुख्तसर[३] ये है कि तूने मुझे बर्बाद किया

जज्बी

मालूम नहीं किससे कहानी मेरी सुन ली
भाता ही नहीं अब उन्हें अफसाना किसीका

साइल देहलवी

चौंक पड़ते हैं जिक्रे 'फानी' से
नींद उचटती है इस कहानी से

फानी बदायूनी

दिल के किस्से कहाँ नहीं होते ?
हाँ, वो सबसे बयाँ नहीं होते

साकिब लखनवी

वक्त थोड़ा और यह भी तै नहीं
किस जगह से कीजिये किस्सा शुरु

आरजू लखनवी

'सौदा' खुदा के वास्ते कर किस्सा मुख्तसर[४]
मेरी तो नींद उड़ गयी तेरे फसाने से

सौदा

मेरी रुस्वाई[५] और गैरों के ताने, उनकी खामोशी
यही दो चार बातें और क्या है दास्ताँ मेरी

हर तरफ छा गये पैगामे-मुहब्बत[६] बन कर
मुझसे अच्छी रही किस्मत मेरे अफसानों की

जिगर मुरादाबादी

---

१. दु:ख की रात का किस्सा २. लंबी कथा ३. संक्षिप्त ४. संक्षिप्त ५. बदनामी ६. प्रेम संदेश

इक फसाना सुन गये, इक कह गये
मैं जो रोया, मुस्कुरा कर रह गये

फानी बदायूनी

सुना है फिर वो सुनने आ रहे हैं दास्ताँ मेरी
इलाही[१], आज तो रंगे-असर लाये जबाँ मेरी

अलम मुझफ्फरनगरी

दिलचस्प है सलीम, हिकायत[२] तेरी मगर
अब सो भी जा, कि यार, बहुत रात हो गई

सलीम अहमद

थोड़ी है रात और कहानी बहुत बड़ी
'हाली' निकल सकेंगे न दिल के गुबार[३] बस

हाली

आप की मेरी कहानी एक है
कहिये अब मैं क्या सुनाऊं, क्या सुनूँ ?

मयकश अकबराबादी

अब वो बातें, वो किस्से किस तरह 'जाफर' भुलाऐं
ऐसे सदमों का असर दिल पर रहेगा देर तक

जाफर शीराजी

हमने किस्सा बहुत कहा दिल का
न सुना तुमने माजरा[४] दिल का

आसीफ

अपनी मायूस उमंगों का फसाना न सुना
मेरी नाकाम मोहब्बत की कहानी मत छेड़

साहिर लुधियानवी

---

१. खुदा २. किस्सा ३. मन में दबे हुए भाव ४. घटना

शामिल थी दास्ताँ में कहानी इक और भी
वरना तवील[1] इतनी मिरी दास्ताँ न थी

वज़ीर आगा

लुटा कर हमने पत्तों के खजाने
हवाओं से सुने किस्से पुराने

वज़ीर आगा

सुन के 'फिराक' कहानी तेरी
फितरत[2] की आँखों में नमी है

फिराक गोरखपुरी

खत

यूँ मेरे खत का जवाब आया
लिफाफे में इक गुलाब आया

नुसरत बद्र

खत-ओ-किताबत[3] की सदा रस्म को जारी रखना
भूल जाना न हमें, याद हमारी रखना

खत का जवाब तक भी न दिया मेरे जनाब
ऐसा कसूर कौन-सा मुझसे हुआ जनाब

खत उनका बहुत खूब इबारत[4] बहुत अच्छी
अल्लाह करे हुस्न-ए-रकम[5] और जियादा

दाग़

---

१. लंबी २. प्रकृति ३. पत्र व्यवहार ४. प्रतीक ५. लेखन कार्य

खत पढ़ के हुआ और भी वो पेच-ओ-ताब[१] में
क्या जाने लिख दिया था उसे इज्तिराब[२] में

जौक

पढ़ के तेरा खत सुलग उठे हैं कागझ की तरह
कितनी उम्मीदें थी वा बस्ता[३] तिरी तहरीर[४] से

मुमताज राशिद

दोनों का एक हाल है यह मुद्दआ हो काश
वो ही खत उसने भेज दिया क्यूँ जवाब में

मोमिन

लिक्खा था अपने हाथों से जो तुमने एक बार
अब तक हमारे पास है वो यादगार खत

हसरत मोहानी

ले के खत उनका किया जब्त बहुत कुछ लेकिन
थरथराते हुए हाथों ने भरम खोल दिया

जिगर मुरादाबादी

गैर फिरता है लिये यूँ तिरे खत को कि अगर
कोई पूछे कि यह क्या है ? तो छुपाए न बने

गालिब

क्या-क्या फरेब[५] दिल को दिऐ इज्तिराब में
उनकी तरफ से आप लिखे खत जवाब में

दाग

नहीं भूलता 'मस्त' कहना किसीका
हमें रोज इक खत लिखा कीजिऐगा

मस्त बनारसी

---

१. कोपित २. व्याकुलता ३. सम्बद्ध ४. लिखावट ५. धोखा

उस शोख को मैं नामे में[१] अल्काब[२] क्या लिखूँ ?
मुशफिक[३] लिखूँ, शफिफ[४] लिखूँ, मेहरबाँ लिखूँ ?

रम्ज

वो भी शायद रो पड़ें वीरान कागझ देखकर
मैंने उनको आखिरी खत में लिखा कुछ भी नहीं

जहूर नझर

वाँ से आया है जवाबे-खत कोई सुनियो तो जरा
मैं नहीं हूँ आप में, मुझसे न समझा जाएगा

जुरअत

लिखा वही था कि जो था नसीब का लिक्खा
बला से, खत का जवाब उसने कुछ दिया तो सही

काबिल देहलवी

खत तो भेजा है पर अब, खौफ यही है दिल में
मैंने क्या उसको लिखा और वो क्या समझेगा ?

मजनूँ अझीमाबादी

गैर के धोके में खत ले के मिरा कासिद से
पढ़ने को पढ़ तो लिया, नाम मगर छोड़ दिया

निझाम रामपुरी

बरसों से कान पर है कलम इस उमीद पर
लिखवाऐ मुझसे खत, मिरे खत के जवाब में

दें भी जवाब खत का कि न दें क्या खबर मुझे
क्यों अपने साथ ले न गया नामाबर[५] मुझे

सफी लखनवी

---

१. खत में २. संबोधन ३. दोस्त ४. कृपालु ५. पत्रवाहक

वादे का नाम लब पे न आऐ प्यामबर[१]
कहना फकत यही कि बहुत दिन गुजर गए
जलील मानिकपुरी

मिट चले मेरी उमीदों की तरह हर्फ मगर,
आज तक तेरे खतों से तिरी खुश्बू न गई
अख्तर शीरानी

नामाबर कुछ तू जबानी भी तो कहना उनसे
मेरा मतलब है बहुत, और है थोड़ा कागज
निझाम रामपुरी

जलाये क्यों ? अगर इतने ही कीमती थे खुतूत
कुरेदते हो अबस[२] राख अब अँगीठी में
शिकेब जलाली

चिठ्ठियाँ आती रहीं, जाती रहीं
बीच में गो[३] नामाबर कोई न था
अनवर शउर

पुर्जे[४] उड़ा के खत के ये इक पुर्जा लिख दिया
लो अपने एक खत के ये सौ खत जवाब में
बिस्मिल देहलवी

सियाही आँख से लेकर ये नामा[५] तुमको लिखता हूँ
कि तुम नामा को देखो और तुम्हें देखें मेरी आँखें

मेरा खत पढ़कर बोले नामाबर[६] से जा, खुदा हाफिझ
जवाब आया मेरी किस्मत से लेकिन लाजवाब आया
शकील बदायूनी

---

१. संदेश ले जाने वाला २. व्यर्थ ३. यद्यपि ४. टुकडें ५. पत्र ६. पत्रवाहक

नहीं आता है अब करार[1] मुझे
तेरे खत का है इन्तझार मुझे

उमराव महल

लिखो सलाम, गैर के खत में गुलाम को
बन्दे का बस सलाम है, ऐसे सलाम को

मोमिन

तुम्हारे खत में नया एक सलाम किसका था ?
न था रकीब[2] तो आखिर वह नाम किसका था ?

दाग़

'दुबारा हमको कभी भूलकर न लिखना खत'
यह शर्त है मेरे खत के जवाब में दाखिल

दाग़

हाले-दिल यार को लिखूँ क्यों कर
हाथ दिल से जुदा नहीं होता

मोमिन

खत में मुझे अव्वल तो सुनाई हैं हजारों
आखिर यही लिक्खा है कि मैं कुछ नहीं कहता

दाग़

ये खत किसीको खून के आँसू रुलायेगा
कागज पे रख दिया है कलेजा निकाल के

खलील धनतेजवी

जाओ, अब तुम्हें रुस्वा[3] कोई भी कर सकता नहीं
वो तुम्हारे खत पड़े हैं फर्श पर जलते हुए

अझीझ कादरी

---

१. चैन २. दुश्मन ३. बदनाम

ख्वाब

इक ना तमाम ख्वाब मुकम्मल[१] न हो सका
आने को जिंदगी में बहुत इंकिलाब आए

अन्दलीब शादानी

आँखों में जो भर लोगे तो काँटे से चुभेंगे
ये ख्वाब तो पलकों पे सजाने के लिए हैं

जाँनिसार अख्तर

न कोई ख्वाब हमारे हैं, न ताबीरें[२] हैं
हम तो पानी पे बनाई हुई तस्वीरें हैं

कतील शिफाई

हसरतें दिल की मुजस्सम[३] नहीं होने पाती
ख्वाब बनने नहीं पाता कि बिखर जाता है

मुमताज मिर्झा

हल कर लिया मजाज[४] हकीकत के राझ को
पाई है मैंने ख्वाब की ताबीर ख्वाब में

असगर गौंडवी

मजाझ कैसा, कहाँ हकीकत, अभी तुझे कुछ खबर नहीं है
यह सब इक ख्वाब की सी हालत जो देखता है सहर नहीं है

असगर गौंडवी

हमारे पास वो ख्वाबों के आईने 'शबनम'
यह पत्थरों का जमाना है, देखते क्या हो

शबनम

---

१. पूर्ण २. स्वप्न का शुभाशुभ फल ३. साकार ४. सामर्थ्य

ख्वाब में वादा तो मुझसे कर गये हैं वो जरूर
देखिए उस ख्वाब की मिलती है अब ताबीर क्या ?

दाग़

मौजें बहम[१] हुई तो किनारा नहीं रहा,
आँखों में कोई ख्वाब दुबारा नहीं रहा

परवीन शाकिर

रात सारी किसी टूटी हुई कश्ती में कटी
आँख बिस्तर पे खुली, ख्वाब में दरिया देखा

अहमद मुश्ताक

कौन हूँ, क्यों जिन्दा हूँ, सोचता रहता हूँ
ख्वाबों की दुनिया में जागता रहता हूँ

नज़ीर कैसर

माना वो एक ख्वाब था, धोका नजर का था
उस बेवफा से रब्त[२] मगर उम्र भर का था

रशीद कैसरानी

कामयाबी के देखता हूँ ख्वाब
मेरे मालिक ! मुझे हुआ क्या है ?

अख्तर अन्सारी

हमारे ख्वाब भी बहला न पाये आज हमें
जो रो लिऐ हैं तो कुछ दिल बहल गया है मियाँ

जाँनिसार अख्तर

बदन का शहर है सूना, कहो चला आये
वो ख्वाब बन के मुझे रात भर जगाये कभी

किश्वर नाहीद

---

१. परस्पर मिलना २. सम्बन्ध

जगाने, चुटकियाँ लेने, सताने कौन आता है
यह छुपकर ख्वाब में अल्लाह जाने कौन आता है

मुझफ्फर खैराबादी

देखा जो मैंने सुबह को उठकर तो कुछ न था
शब[१] को हसीन ख्वाब में आऐ, चले गऐ

रियाझ

रहा ख्वाब में उनसे शब भर विसाल
मिरे बख्त जागे, मैं सोता रहा

अमीर मीनाई

ख्वाब में उनको किसीने रात छेड़ा है जरूर
देखते हैं गौर से मुझको बुलाकर सामने

जाइक

किसीकी याद मुझको नींद से आकर जगा देती
किसीका वस्ल[२] मेरे ख्वाब की ताबीर हो जाता

शफी रिझवी

आऐं कहाँ वो खानाखराबों के[३] घर कहाँ
याँ ख्वाब तक नहीं कि कभी आऐं ख्वाब में

बिस्मिल

ख्वाब ही में नझर आता वो शब-ए-हिज्र[४] कहीं
सो मुझे हसरत-ए-दीदार[५] ने सोने न दिया

नासिख

---

१. रात्रि २. मिलन ३. आवारों के ४. विरह की रात्रि ५. दर्शन की उम्मीद

देखकर गोरे-गरीबाँ[१] को अजल[२] याद आयी
सोने वालों ने किया खाब से बेदार[३] मुझे

अहमद सहारनपुरी

क्या कहा उसने, मुझे याद नहीं, लेकिन
इतना मालूम है ख्वाबों का भरम टूट गया

परवीन शाकिर

नींद जब ख्वाबों से प्यारी हो तो ऐसे अहद[४] में
ख्वाब देखे कौन और ख्वाबों को दे ता'बीर[५] कौन ?

परवीन शाकिर

घरौंदा एक बनाया था हमने ख्वाबों का
गिरा के खुद वो घरौंदा कहाँ चले आये

अहमद हमदानी

अपने ख्वाबों से मुहब्बत है तो 'जावेद' उठो
अपने ख्वाबों को हकीकत में बदलने के लिये

फरीद जावेद

रात ये मैंने ख्वाब में देखा तुम तन्हा हो
सारा दिन मैं भीड़ में थी और रही अकेली

फातिमा हसन

उन्हें अपना नहीं सकता, मगर इतना भी क्या कम है
कि कुछ मुद्दत हसीं[६] ख्वाबों में खो कर जी लिया मैंने

साहिर लुधियानवी

मेरे ख्वाबों के झरोकों को सजाने वाली
तेरे ख्वाबों में कहीं मेरा गुझर है कि नहीं ?

---

१. वह स्थान जहाँ मुर्दे गाड़े जाते हों २. मृत्यु ३. जागता हुआ ४. समय ५. स्वप्न फल बताना ६. खूबसूरत

पूछ कर अपनी निगाहों से बता दे मुझको
मेरी रातों के मुकद्दर[१] में सहर[२] है कि नहीं ?

साहिर लुधियानवी

गुलों की गोद में जैसे नसीम[३] आकर मचल जाये
उसी अंदाज से उन पुरखुमार[४] आँखों में खाब आया

असर लखनवी

आँखों को नींद भी तो नहीं इज्तिराब[५] में
इस पर हुस्ने-जन[६] कि वो आयेंगे ख्वाब में

नज्ञर रशीदी

ख्वाबों की गिरफ्त[७] मे हैं 'शाहिद'
जागा हुआ है न सो रहा है

शाहिद कबीर

कोई तन्वीर[८] नहीं, कोई भी ताबीर[९] नहीं
ख्वाब ही ख्वाब है इस शब[१०] में सहर[११] होने तक

ताज भोपाली

झूठ है सब तारीख[१२] हमेशा अपने को दुहराती है
अच्छा, मेरा ख्वाबे-जवानी थोड़ा सा दुहराये तो

अंदलीब शादानी

आँख मलते हुऐ देखा तो उजुबा[१३] निकले
ख्वाब में भी नहीं सोचा था कि तुम ऐसे हो

मिदहत

---

१. भाग्य २. प्रभात ३. प्रात: समीर ४. मस्त ५. बेचैनी ६. सुंदर विचार ७. पकड
८. प्रकाश ९. सपने का फलादेश १०. रात्रि ११. सुबह १२. इतिहास १३. बेहतरीन

ख्वाब कैसे होते हैं, पूछते हो क्या उनसे
भूख जिन गरीबों को रात भर सताती है

अरुण साहिबाबादी

मैंने इस खौफ से बोये नहीं ख्वाबों के दरख्त[१]
कौन जंगल में उगे पेड़ को पानी देगा

दाराब बानो वफा

टूटे हुऐ ख्वाबों की चुभन कम नहीं होती
अब रो के भी आँखों की जलन कम नहीं होती

अकबर इलाहाबादी

वो क्या गये कि नींद भी आँखों से ले गये
यानी कि ख्वाब में भी न आये तमाम रात

शमीम जयपुरी

तुम ख्वाब में भी आये तो मुँह को छुपा लिया
देखो जहाँ में पर्दानशीं और भी तो है

दाग़

बहार आने से पहले एक परीशां-ख्वाब देखा था
कि जैसे छुट रहा है फस्ले-गुल[२] में आशियाँ हमसे

अफकर मुहानी

अय बिरहमन,[३] हमारा तेरा एक है आलम
हम ख्वाब देखते हैं, तू देखता है सपना

अकबर इलाहाबादी

मिलने का वादा मुँह से तो उनके निकल गया
पूछी जगह जो मैंने, कहा हँस के 'ख्वाब में'

अमीर मीनाई

---

१. वृक्ष २. वसंत ऋतु ३. पंडित

वादे के अपने सच्चे थे, आते वो ख्वाब में
'निझाम' तुम्हीं को नींद न आई तमाम रात

निझाम रामपुरी

ख्वाबों के दरीचे[१] भी तो वीरान पड़े हैं
जबसे मिरी रातों का खुदा रूठ गया है

'कैस' रामपुरी

हमने दुनिया में आ के क्या देखा ?
देखा जो कुछ, सो ख्वाब सा देखा

बहादुर शाह 'जफर'

हर शाम हुई सुबह को एक ख्वाबे-फरामोश[२]
दुनिया यही दुनिया है तो क्या याद रहेगी

यगाना चंगेजी

ख्वाब में भी तो नजर भर के न देखा उनको
ये भी आदाबे-मुहब्बत को गवारा न हुआ

'रसा'

मैंने देखा है बहारों में चमन को जलते
है कोई ख्वाब की ताबीर[३] बताने वाला ?

अहमद फराज

क्या जाने उसे वहम है क्या मेरी तरफ से
जो ख्वाब में भी रात को तनहा नहीं आता

जौफ

अपना आप लुटाकर यूँ हम तेरी राह में बैठे हैं
जैसे कोई पतझड़ में भी देखे ख्वाब बहारों का

जमील मलिक

---

१. खिड़की २. भूला हुआ स्वप्न ३. स्वप्न का फल

क्या नजाकत[१] है आरिज[२] उनके नीले पड़ गये
हमने तो बोसा लिया था ख्वाब में तस्वीर का

रात शैतान ख्वाब में देखा
सारी सूरत जनाब की सी थी

ईंशा

अपनी आँखों के बिस्तर पर किसके लिए अब फूल चुनूँ
सपने सफर के कब लौटे हैं, कब बनती है बिगड़ी बात

एच तसव्वुर

झोंके ने तार-तार किया पौ-फटे का ख्वाब
किन पागलों के हाथ हमारी कबा[३] लगी

वजीर आगा

ख्वाब जो देखे न थे उन की सजा तो मिल गई
बारहा[४] देखा जिन्हें उन का सिला[५] मिलता नहीं

अमीक हन्फी

बिखर गया था जो कल रात किरचियों की तरह
मेरी निगाह वो टूटा सा ख्वाब माँगे है

करामत अली

ख्वाब इन आँखों से अब कोई चुरा कर ले जाए
कब्र के सूखे हुऐ फूल उठाकर ले जाए

बशीर बद्र

जिन की ताबीर[६] हैं आँसू 'शोहरत'
आज वो ख्वाबें-हसीं[७] याद नहीं

शोहरत बुखारी

---

१. कोमलता २. गाल ३. एक प्रकार का लंबा ढीला पहनावा ४. कई बार ५. पुरस्कार
६. स्वप्न फल ७. खूबसूरत सपना

ये भी इक सितम था कि ख्वाब में मुझे अपनी शक्ल दिखा गये
कभी नींद बरसों में आई थी सो वे इस तरह से जगा गये

जाफरअली 'हसरत'

मुझको न इन्तजार में नींद आये उम्र भर
आने का वादा कर गये आये जो ख्वाब में

गालिब

तुम रात वादा करके जो हमसे चले गये
फिर तब से ख्वाब में भी न आये, भले गये !

मुसहफी

मैं अपने ख्वाब से कटकर जीऊँ तो मेरे खुदा
उजाड़ दे मेरी मिट्टी को दरबदर[१] कर दे

इफ्तिखार आरिफ

ख्वाब में तुमको किसने रोका है ?
आने जाने के हैं हजार तरीके

दाग़

जिस तरह ख्वाब मेरे हो गये रेजा रेजा[२]
इस तरह से न कभी टूट के बिखरे कोई

परवीन शाकिर

पलकें भी चमक उठती हैं सोते में हमारी
आँखों को अभी ख्वाब छुपाने नहीं आते

बशीर बद्र

---

१. घर-घर २. टुकटे टुकडे

ख्वाहिश (इच्छा)

ईंसाँ की ख्वाहिशों की कोई इंतिहा[१] नहीं
दो गज जमीन भी चाहिये, दो गज कफन के बाद

कैफी आझमी

सब्ज[२] होती ही नहीं ये सरजमीं[३]
तुख्मे-ख्वाहिश[४] दिल में तू बोता है क्यों ?

मीर

चाहें तो तुमको चाहें, देखें तो तुमको देखें
ख्वाहिश दिलों की तुम हो, आँखों की आरझू तुम

मीर

तुझे बाँहों में भर लेने की ख्वाहिश यूँ उभरती है
कि मैं अपनी नजर में आप रुसवा हो-सा जाता हूँ

जाँनिसार अख्तर

दिल से रुखसत[५] हुई कोई ख्वाहिश[६]
गिरिया[७] कुछ बेसबब[८] नहीं आता

मीर

बुझाये बुझ नहीं सकती बदन की आग कभी
कि अब तो देख लिया ख्वाहिशें दबाकर भी

अनवर महमूद खालिद

मैं और तुमसे वस्ल[९] की ख्वाहिश ! खफा न हो
एक बात बेखुदी[१०] में जुबाँ से निकल गई

हिज्र शाहजहाँपुरी

---

१. अंत २. हरी ३. जमीन ४. इच्छा का बीज ५. बिदा ६. इच्छा ७. आह ८. अकारण
९. मिलन १०. बेसुधी/बेखबरी

डूब के मर जाने की ख्वाहिश जागी है तो देर न कर
मुमकिन है फिर इस दरिया में इतनी भी गहराई न हो

मुझफ्फर

हजारों ख्वाहिशें हैं दफन मुझमें
मैं जीता जागता इक मकबरा[१] हूँ

खलील धनतेजवी

मैंने कब फूल को पाने की दुआ माँगी है
सूखे पत्तों ने कभी बादे-सबा[२] माँगी है ?

खलील धनतेजवी

कत्ल किस्तों में[३] हुआ उस शख्स का
ख्वाहिशों के बीच जो पलता रहा

मुहसिन

मेरी ख्वाहिश थी कि जी भर के सँवारूँगा तुझे
जिन्दगी तुझसे मगर आज मैं शर्मिंदा हूँ

खलिश बड़ौदवी

खाक (धूल)

हमने माना कि तगाफुल[४] न करोगे लेकिन
खाक हो जायेंगे हम, तुमको खबर होने तक

गालिब

क्या पूछता है तू मेरी बरबादियों का हाल
थोड़ी सी खाक लेके हवामें उड़ा के देख

जलील मानिकपुरी

---

१. मजार २. पुरब की हवा ३. अंशों में ४. उपेक्षा

उसको क्या हक है कि वो खाके-वतन में दफन हो
जिसके दिल में अजमते-खाके-वतन कुछ भी नहीं

सीमाब अकबराबादी

सिपुर्दे खाक ही करना है मुझको
तो फिर काहे को नहलाया गया हूँ

हफीज जालंधरी

कितने मुफलिस हो गये, कितने तवंगर हो गये
खाक में जब मिल गये, दोनों बराबर हो गये

जौक

मुझे दफन करना तू जिस घड़ी, तो ये उससे कहना कि ऐ परी
वो जो तेरा आशिके-झार था, तहे-खाक[१] उसको दबा दिया

बहादुर शाह झफर

खाक में मुझको मिलाकर वो सनम कहता है
अपने अल्लाह से जाकर मेरी फरियाद करो ।

सबा लखनवी

करने गये थे उनसे तगाफुल का हम गीला
की एक ही निगाह कि बस खाक हो गये

गालिब

फितरते आदम[२] में थी अल्लाह क्या नश्वोनुमा[३]
एक मुठ्ठी खाक यूँ फैली कि दुनिया हो गई

साकिब लखनवी

यूँ अगर देखिए क्या कुछ नहीं मुश्ते-गुबार[४]
और अगर सोचिए तो खाक भी इन्साँ में नहीं

पं. दत्तात्रैय कैफी

---

१. मिट्टी के नीचे २. मानव स्वभाव ३. दिमाग ४. मुठ्ठी भर धुल

गदा नवाज[१] कोई शह-सवार[२] राह में है
बलन्द[३] आज नेहायत[४] गुबार[५] राह में है

आतिश

नसीम[६] है तेरे कूचे[७] में और सबा[८] भी है
हमारी खाक से देखो तो कुछ रहा भी है ?

सौदा

गली-गली की वो काहे को खाक छानेगा
नसीब हो गई जिसको तिरी गली ऐ दोस्त

बिस्मिल अजीमाबादी

मिट्टी का जिस्म ले के चले हो तो सोच लो
इस रास्ते में एक समंदर भी आऐगा

सलीम शाहिद

मिट्टी जो देने आये हो तो दो हँसी-खुशी
फेंको भी अब गुबार को दिल से निकाल के

अमीर मीनाई

तू जिसकी राह में रोया है उम्र भर 'नासिक'
वो सुबह राख हुई, अपनी झोली भर ले जा

निसार नासिक

निकला गुबार[९] दिल से सफाई तो हो गई
अच्छा हुआ जो खाक में तुमने मिला दिया

बर्क

---

१. भिक्षुक पर दया करने वाला २. शाही घुडसवार ३.ऊँचा ४. बहुत ५. धूल ६. प्रभात का समीर ७. गली ८. प्रात:पवन ९. मन में दबाया हुआ क्रोध, दु:ख, द्वेष आदि

आग में जिसे जलना हो, वो हिन्दू बन जाये
खाक में हो जिसे मिलना वो मुसलमाँ हो जाये

यगाना चंगेज़ी

लिखकर जमीं पे नाम हमारा मिटा दिया
उनका तो खेल, खाक में हमको मिला दिया

नवाब अख्तर महल

खाक का पुतला बना और खाक की तस्वीर है
खाक में मिल जाएगा और खाक दामनगीर[१] है

हम जानते तो इश्क न करते किसू के साथ
ले जाते दिल को खाक में इस आरज़ू के साथ

मीर तकी मीर

क्या-क्या अज़ीज दोस्त मिले मेरे खाक में
नादाँ यहाँ किसू का किसी कू भी गम हुआ ?

मीर

मिलाकर खाक में भी हाय शर्म उनकी नहीं जाती
निगाह नीची किए वो सामने मदफन[२] के बैठे हैं

अमीर मीनाई

ले गया खाक भी हमराह[३] दिल अपने 'कासिम'
शायद इस जिन्स[४] का यहाँ कोई खरीदार न था

कासिम

खाक ही अव्वल-ओ-आखिर[५] ठहरी
कर के जर्रे[६] को गुहर[७] क्या करते ?

परवीन शाकिर

---

१. दामन पकड़ने वाला २. कब्र ३. सहयात्री ४. चीझ ५. प्रथम और अंतिम
६. धूल-मिट्टी का कण ७. मोती

माटी से माटी मिले खोकर सभी निशान
किसमें कितना कौन है, कैसे हो पहचान ?

निदा फाजली

तेरे कूचे में[१] रहकर मुझको मरमिटना गवारा है
मगर दैरो-हरम[२] की खाक अब छानी नहीं जाती

जोश मलसियानी

खाके-आदम[३] ही है तमाम जमीन
पाँव को हम संभाल रखते हैं

मीर

न रख्खी मेरी खाक भी उस गली में
कदूरत[४] मुझे है निहायत[५] सबा[६] से

मीर

क्या किया है फलक[७] का मैं कि मुझे
खाक ही में मिलाये जाता है

मीर

जिस्मखाकी[८] का जहाँ परदा उठा
हम हुऐ फिर 'मीर' सब कुछ हम हुआ

मीर

नीची नझरें ऊँची अब हों या न हों
खाक में मिलना था जिसको मिल गया

जलाल

---

१. गली में २. मंदिर-मस्जिद ३. मनुष्य के शरीर की धूल ४. वैमनस्य ५. अत्यंत ६. हवा ७. आसमान ८. मिट्टी का शरीर

दुश्मनों से दोस्ती, गैरों से यारी चाहिए
खाक के पुतले बने तो खाकसारी[१] चाहिए

दाग़

दिल मुझे उस गली में ले जाकर
और भी खाक में मिला लाया

मीर

न किसीकी आँख का नूर हूँ, न किसीके दिल का करार हूँ,
जो किसीके काम न आ सके मैं वो एक मुश्त-ए-गुबार[२] हूँ

बहादुर शाह झफर

खाक आराम की ख्वाहिश हो वतन से बाहर
जब हमें चैन 'तपिश' अपने ही घर ने न दिया

अब्दुल लतीफ 'तपिश'

यूँ खाक में मिला के न अरमान[३] जाईये
गुस्से को थूक दीजिए और मान जाईये

अकबर इलाहाबादी

हर आरझू को खाक में पिन्हाँ[४] किए हुए
बैठा हूँ अपने दिल का जनाजा लिए हुए

बिस्मिल

डूबती है एक पल में किश्ती-ए-उम्र-ए-रवाँ[५]
खाक ऐसी ज़िंदगानी का भरोसा किजीए

तस्लीम

ऐ चर्ख,[६] कितने खाक से पैदा हुऐ हसीन ?
तू एक आफताब[७] को चमका के रह गया

जलील मानिकपुरी

---

१. विनम्रता २. मुठ्ठी भर धूल ३. इच्छा ४. छिपा हुआ ५. वर्तमान जीवन की नौका ६. आकाश ७. सूर्य

खाक बनती मेरे-तेरे दिल में
एक शीशा था, एक पथ्थर था

हफीझ जौनपुरी

मैं बेकरार खाक में कब तक मिला करूँ
कुछ मिलने या न मिलने का तो भी करार कर

मीर

मैं जिसको राह दिखाऊँ वही हटाये मुझे
मैं नक्श-ए-पा[१] हूँ, कोई खाक से उठाये मुझे

आरिफ अब्दुल मतीन

मैं फिर खाक को खाक पर छोड़ आई
रिझा-ए-ईलाही[२] की तकमील[३] कर दी

परवीन शाकिर

तुम फातिहा[४] भी पढ़ चुके, हम दफन भी हुए
बस, खाक में मिला चुके, चलिये, सिधारिये

आतिश

मिलाते हो उसीको खाक में जो दिल से मिलता है
मेरी जाँ चाहने वाला बड़ी मुश्किल से मिलता है

दाग़

कुछ ढेर राख के हैं, कुछ अधजली सी लकड़ी
आया था इक मुसाफिर सहरा-ए-ज़िन्दगी[५] में

जमील मझहरी

रायगाँ[६] 'हसरत' न जाएगा मिरा मुश्ते-गुबार[७]
कुछ जमीं ले जाएगी, कुछ आसमाँ ले जाएगा

हसरत

---

१. पद-चिह्न २. ईश्वर की इच्छा ३. पूरा करना ४. प्रार्थना ५. जीवन रुपी जंगल
६. व्यर्थ ७. मुट्ठी भर धूल

लड़ा के उन बुतों से आँख दुनिया में रहा जब तक
खुदा के सामने क्या खाक बन के पारसा[1] जाता

बेखुद देहलवी

मिट्टी न दी मझार[2] तलक आके उसने भी
कहते हैं लोग खाक में उसने मिला दिया

मोमिन

तू तो जिस खाक को चाहे वो बने बन्दा-ए-पाक[3]
मैं खुदा किस को बनाऊँ जो खफा तू हो जाऐ

बर्क

मिल गया होगा खाक में जूँ-अश्क[4]
तेरी आँखों से जो गिरा होगा

अमीनुद्दीन यर्की

जबीं[5] पर खाक है ये किसके दर[6] की
बलायें ले रहा हूँ अपने सर की

वो हजार दुश्मने-जाँ[7] सही, मुझे गैर फिर भी अज़ीज़[8] है
जिसे खाके-पा[9] तेरी छू गई, वो बुरा भी हो तो बुरा नहीं

जिगर मुरादाबादी

छूट जायें गम के हाथों से जो निकले दम कहीं
खाक ऐसी ज़िंदगी पर, तुम कहीं और हम कहीं

मझहर अलीझार

अय चश्मे-तर[10] न अश्क[11] बहा उनके सामने
मोती मिलाके खाक में बेआबरु[12] न हो

हसरत मोहानी

---

१. नेक २. कब्र ३. पवित्र मनुष्य ४. आँसू की तरह ५. मस्तक ६. द्वार ७. जान का दुश्मन ८. प्रिय ९. चरणों की धूल १० गीली आँखें ११. आँसू १२. बेइज्जत

तू गुम पड़ा है अपने खयालों की धूल में
मैं क्यूँ तुझे तलाश करूँ फूल-फूल में

वजीर आगा

मैं बन गया गुहर तो मिरा इसमें दोष क्या ?
बेवजह मुझको खाक में तुम रोलने लगे

वजीर आगा

तमाम राहों में बिखरे पड़े हैं उसके कदम
जमीं की धूल से वो कितना प्यार करता था

वजीर आगा

उड़ी जो गर्द[१] तो इस खाकदाँ[२] को पहचाना
खुला कि खाक से था सारा खाकदाँ आबाद

वजीर आगा

मैं हूँ वो नंगे-खल्क[३] कि कहती है मुझको खाक
इसको बना के क्यों मेरी मिट्टी खराब की

जीआई बेगम 'जिया'

खाक तासीर[४] हो मुल्लाओं के समझाने में
दिन को मस्जिद में है तो रात को मयखाने में

अकबर इलाहाबादी

आसान तुम न समझो निख्वत[५] से पाक होना
इक उम्र खोके हमने सीखा है खाक होना;

मीर हसन

न हुऐ तेरी खाकेपा[६], हमने
खाक में आपको मिला देखा

झफर

---

१. धूल २ संसार ३. दुनिया के लिऐ लज्जा का कारण ४. असर ५. अभिमान ६. पैर की मिट्टी

खाक होता न मैं तो क्या करता ?
उसके दर[१] का गुबार[२] होना था

मोमिन

बदला हुआ था रंग गुलों का तेरे बगैर
कुछ खाक-सी उड़ी हुई सारे चमन में थी

फानी बदायूनी

बादल को क्या खबर है कि बारिश की चाह में
कैसे बुलंदो-बाला[३] शजर[४] खाक हो गए

परवीन शाकिर

नाव कागज़ की गई डूब, घरौंदे बिखरे
खेल सब खत्म हुआ, खाक उड़ाई जाए

'शाहिद' माहली

मिल गया वो खाक में, जिस दिल में था अर्माने-दीद[५]
अब कोई खुर्शीद-वश,[६] बालाए-बाम[७] आया तो क्या ?

दिल शाहजहाँपुरी

मिट्टी नसीब हो न सकी, कूए-यार[८] की
आखिर उठा दिये गये, उन की गली से हम

मुज़तर मुजफ्फरपुरी

किसीके मुँह से न निकला ये मेरे दफन के वक्त
कि इन पे खाक न डालो ये हैं नहाए हुए

---

१. द्वार २. धूल ३. ऊँचे-ऊँचे ४. पेड़ ५. दर्शनाभिलाषा ६. सूर्यमुखी ७. छत पर ८. माशूक की गली

तुझे खबर है कि इक मुश्ते खाक[१] हूँ फिर भी
तू क्या समझ के हवा में उड़ा रहा है मुझे
साकी फारुकी

इत्र मिट्टी का लगाना चाहिए पोशाक में
खाक से रग्बत[२] रहे, मिलना है इक दिन खाक में
जौक

खिझाँ (पतझड)

फूला ही फला छोड़कर उठ जाऊँ चमन को
अल्लाह दिखाए मुझे आलम न खिजाँ का
रिन्द

जिन्दगी है तो खिझाँ के भी गुझर जाऐंगे दिन
फस्ल-ए-गुल[३] बीतों को अगले बरस आती है
मीर हसन

शाखों से बर्ग-ए-गुल[४] नहीं झड़ते हैं बाग में
जेवर[५] उतर रहा है उरुस-ए-बहार[६] का
अमीर मीनाई

यूँ जिन्दगी गुझार रहा हूँ तेरे बगैर
जैसे करे खिझाँ में कोई गुलसिताँ की सैर
फिराक गोरखपुरी

मेरा रुप रंग बिगड़ गया, मेरा यार मुझसे बिछड़ गया
जो चमन खिझाँ से उजड़ गया, मैं उसी की फस्ल-ए-बहार[७] हूँ
बहादुरशाह जफर

---

१. मुठ्ठीभर धूल २. प्रेम ३. वसंत ऋतु ४. फूल की पंखुडियाँ ५. गहने, अलंकार ६. वसंत रुपी दुल्हन ७. वसंत ऋतु

हिज्र[1] में जिक्रे-यार करते हैं
यूँ खिझाँ को बहार करते हैं

बेगम अख्तर सिद्दीकी

मेरी जिन्दगी पे न मुस्कुरा, मुझे जिन्दगी का अलम[2] नहीं
जिसे तेरे गम से हो वास्ता, वो खिझाँ बहार से कम नहीं

शकील बदायूनी

खिझाँ के साथ बहुत दूर मुझको जाना है
न इन्तजार कर, ऐ मौसमे-बहार मेरा

रविश सिद्दीकी

हाय ! वो जिसकी उम्मीदें हों खिझाँ पर मौकूफ[3]
शाखे-गुल[4] सूख के गिर जाए तो काशाना[5] बने

अफसर मेरठी

गुँचा चटका और आ पहुँची खिझाँ
फस्ले-गुल[6] की थी फकत इतनी बिसात[7]

हाली

मौसमे-गुल में सितम हाय खिझाँ याद न कर
चन्द घड़ियाँ खुशी की इन्हें बरबाद न कर

अख्तर अन्सारी

कुछ खबर हो सकी न तेरे बगैर
कब बहार आई, कब खिझाँ आई

सफिया शमीम मलीहाबादी

खिझाँ के दौर में उस पर बहार आ जाये
तेरी निगाह को जिस पर भी प्यार आ जाये

मझहर नसीम

---

१. जुदाई २. गम ३. निर्भर ४. फूलों की डाली ५. मकान ६. फूल का मौसम ७. सामर्थ्य

खिझाँ ने खाक उड़ाई हजार गुलशन में
चमन में फूल मगर मुस्कुराये जाते हैं

सफिया मलीहाबादी

शाखे-गुल है कि लाश का सूखा हुआ हाथ
ये बहाराँ[1] है तो फिर किसको खिझाँ कहते हैं ?

हिमायत अली शायर

वो शख्स जिसको खिझाँ ले गई बहारों से
कभी चमन में शिगुफ्ता[2] गुलाब जैसा था

नसीम महमूदी

जिस चमन में कभी न आये बहार
उस चमन की खिझाँ भी प्यारी है

शकील बदायूनी

गज़ल-शेर-शायरी

शेर दरअसल है वही 'हसरत'
सुनते ही दिल में जो उतर जायें

हसरत मोहानी

हो गज़ल में शेर सब बेहतर ये मुमकिन ही नहीं
कब हुई हैं उँगलियाँ पाँचों बराबर हाथ में

मियाँदाद खाँ सय्याद

'असगर' गज़ल में चाहिये वो मौजे-ज़िन्दगी
जो हुस्तन है बूतों में, जो मस्ती शराब में

असगर गोंडवी

---

१. वसंत ऋतु २. खिला हुआ

रेख्ता के तुम्हीं उस्ताद नहीं हो ‘गालिब’
कहते हैं अगले जमाने में कोई ‘मीर’ भी था

गालिब

हुस्न माइल-ब-करम[१] हो तो गज़ल होती है
इश्क से कौलो-कसम[२] हो तो गज़ल होती है

उनवान चिश्ती

न हुआ पर न हुआ ‘मीर’ का अंदाज नसीब
‘जौक’ यारों ने बहुत जोर गज़ल में मारा

जौक

मुझको शायर न कहो ‘मीर’ कि साहब मैंने
रंजो-गम[३] कितने किये जमा तो दीवान[४] किया

मीर

मेरा भी तारीखे-अदब[५] में नाम कहीं आयेगा ‘जहीर’
फन[६] की कसौटी पर जाँचा है जदीद[७] अशआर का रंग

जहीर गाजीपुरी

सावन तो मन-बगिया से बिन बरसे बीत गया
रस में डूबे नग्मे की अब तुम बरसात करो

कतील शिफाई

मुझसे करते हैं ‘कतील’ इसलिऐ कुछ लोग हसद[८]
क्यों मिरे शेर हैं मकबूल[९] हसीनाओं में

कतील शिफाई

---

१. कृपा के साथ आसक्त २. प्रतिज्ञा और शपथ ३. दुःख दर्द ४. गझलों का संग्रह
५. साहित्य का इतिहास ६. कला ७. नया ८ ईर्ष्या ९. लोकप्रिय

इश्क छुपे और मुश्क[१] छुपे और जोबन तक छुप जाये
सच्चा बोल और झूटी कविता कभी नहीं छुप पाये

जलील-उद्दीन आली

एक-इक शेर पे छिन जाते हैं
कितने दर्दों के खजानें हमसे

जलील-उद्दीन आली

मेरे शेरों में रहते हैं तेरे बिन
सारे मिसरे जुदा-जुदा जैसे

जमील-उद्दीन आली

नींद भी रुठ गयी ख्वाब भी रंजीदा[२] हो गये
रात भर तुझको गज़ल कह के सँवारा मैंने

नियाझ बदायूनी

मेरे चेहरे पे गज़ल लिखती रहीं
शेर कहती हुई आँखे उसकी

परवीन शाकिर

मेरे सुखन[३] की दाद भी उसको ही दीजिये
वह जिसकी आरझू मुझे शायर बना गयी

सहबा अखतर

बर्बाद हुई फन[४] में एक उम्र 'कतील' अपनी
मिलते हैं कहाँ हम से फनकार[५] लगन वाले

कतील

'कतील' से कोई कितना ही इख्तलाफ[६] करे
जवाँ गज़ल का वो पहुँचा हुआ वली तो है

कतील

---

१. कस्तूरी २. नाराज ३. शायरी ४. कला ५. कलाकार ६. मतभेद

'कतील' अपनी जबाँ काबू में रखना
सुखन[१] से आदमी पहचाना जाए

कतील

हम पर दु:ख का परबत टूटा तब हमने दो चार कहे
उस पे भला क्या बीती होगी जिसने शेर हजार कहे

दुष्यंत कुमार

कह दो मीरो-गालिब से शेर हम भी कहते हैं
वो सदी तुम्हारी थी, ये सदी हमारी है

मंज़र भोपाली

शे'र लोगों के बहुत याद हैं औरों के लिये
तू मिले तो मैं तुझे शे'र सुनाऊँ अपने

अनवर मसुद

पूछता हूँ सबसे 'अफझल' कोई बतलाता नहीं
बेबसी की मौत मरते हैं सुखनवर[२] किसलिए ?

अफझल मिन्हास

हाँ, मुझ पे फैझ-ए-मीर-ओ-फिराक-ओ-नदीम[३] है
लेकिन तू हमसुखन[४] मुझे इतनी हवा न दे

असलम अंसारी

इधर से गुजरा था मुल्के-सुखन[५] का शहझादा
कोई न जान सका, साझो-रख्त[६] ऐसा था

शिकेब जलाली

---

१. शायरी, कविता २. शायर, कवि ३. कवि मीर, फिराक और नदीम की कृपा
४. साथ-साथ शायरी करने वाले ५. शायरी का देश ६. सामान

गुनगुनाया कतील उसको मैंने
उसमें अब भी ग़ज़ल का मज़ा है

कतील शिफाई

शेर कहने को तो हमने भी कहे हैं 'नूरी'
ये जो खामोश-सा बैठा है सुखनवर[१] है यही

कर्रार नूरी

तुम हो शायर, मेरी जान जीते रहो
शेर कहते रहो, झहर पीते रहो

फरीद जावेद

इतना ही 'फना' हम तो मफहूमे-गझल[२] समझे
शायद कि जिंदगी खुद अशआर[३] में ढल जाऐ

फना कानपुरी

दुनिया ने तजुर्बात[४]-ओ-हवादिस[५] की शक्ल में
जो कुछ मुझे दिया है, वो लौटा रहा हूँ मैं

साहिर लुधियानवी

'शकील' तफसीरे-शेर[६] अपनी जो पूछते हो तो है बस इतनी
जो नाला[७] सीने में घूट रहा था, वो नग्मा बनकर निकल रहा है

शकील बदायूनी

दुनिया ने जर[८] के वास्ते, क्या कुछ नहीं किया ?
और हमने शायरी के सिवा कुछ नहीं किया

इकबाल साजिद

---

१. शायर २. गझल का अर्थ ३. शेर का बहुवचन ४. अनुभव ५. दुर्घटना ६. शेर की व्याख्या ७ आर्तनाद ८. धन-दौलत

आधी-आधी रात तक सड़कों के चक्कर काटिए
शायरी भी एक सझा है, जिंदगी भर काटिए

निसार नासिक

कोई फूल धूप की पत्तियों में हरे रिबन से बँधा हुआ
वो गझल का लहजा नया नया, न कहा हुआ, न सुना हुआ

बशीर बद्र

खूँ भरे जाम उँडेलता हूँ मैं
टीस और दर्द झेलता हूँ मैं
तुम समझते हो शे'र कहता हूँ
अपने जख्मों से खेलता हूँ मैं

अख्तर अंसारी

ये शायरी नहीं है, तमन्ना की कब्र पर
तामीर[१] एक ताजमहल कर रहा हूँ मैं

अख्तर अंसारी

जिसने पैदा किये हसीं, उसने
क्या दिलावेझ[२] शायरी की है

नरेशकुमार 'शाद'

अशआर मेरे यूँ तो जमाने के लिये हैं
कुछ शे'र फकत उनको सुनाने के लिये हैं

जाँनिसार अख्तर

मैं 'शकील' दिल का हूँ तर्जुमा[३] कि मुहब्बतों का हूँ राझदाँ[४]
मुझे फख्र[५] है मेरी शायरी मेरी जिन्दगी से जुदा नहीं

शकील बदायूनी

---

१. मकान बनाना २. मनोहर, सुंदर ३. अनुवाद ४. रहस्य जानने वाला ५. गौरव

अब तुमसे रुखसत[1] होता हूँ, आओ संभालो साझे-गझल
नये तराने छेड़ो, मेरे नग्मों को नींद आती है

फिराक गोरखपुरी

साफ सुन लो मेरे अशआर के झेरो-बम[2] में
दिले-गेती[3] के धड़कने की सदा आती है

फिराक गोरखपुरी

ऐ 'फिराक' अब मुशाईरा है शुरू
देर थी आप ही के आने की

फिराक गोरखपुरी

शेरे-अकबर में कोई कश्फो-करामात[4] नहीं
दिल पे गुझरी हुई है और कोई बात नहीं

अकबर इलाहाबादी

अगर पलक पे है मोती तो ये नहीं काफी
हुनर भी चाहिऐ अल्फाझ में[5] पिरोने का

जावेद अख्तर

जहन[6] की शाखों पर अशआर आ जाते हैं
जब तेरी यादों का मौसम आता है

जावेद अख्तर

मैंने जब भी कागज पर शायरी उतारी है
यूँ लगा कि आँधी की आरती उतारी है

खलील धनतेजवी

मुझे नहीं किसी उस्लूबे-शायरी[7] की तलाश
तेरी निगाह का जादू मेरे सुखन में रहे

मजरुह सुलतानपुरी

---

१. बिदा, २. ऊंच-नीच ३. धरती का हृदय ४. चमत्कार ५. शब्दो में ६. बुद्धि
७. शायरी की शैली

'नझमी' गझल कहें भी तो क्योंकर कि इन दिनों
अपना तो काफिया ही बड़ा तंग है, मियाँ

कामरान नझमी

मुझको पढना हो तो मेरे शेरों को पढ़ लो यारो
मेरे हर इक शेर में यारो जीवन की अक्कासी[१] है

बिस्मिल नकशबंदी

वो नया शेर जो अब तक न कहा है मैंने
दोस्त, अकसर तेरी आँखों से सुना है मैंने

जफर गोरखपुरी

सिर्फ शायर देखता है कहकहों[२] की अस्लियत
हर किसीके पास तो ऐसी नझर होगी नहीं

दुष्यंत कुमार

एक शायर था कि जागा रातभर
सारे अहमक[३] सो गये आराम से

हसन नईम

खामुशी से हजार गम सहना
कितना दुश्वार है गझल कहना

ये खास रंग हमेशा से तेरा हिस्सा है
'रियाझ' जानते हैं हम तुझे तगझ्झुल[४] में

शायरी खूने-जिगर का है लबालब सागर
किसी कमझर्फ[५] की तफरीह[६] का सामाँ तो नहीं

शाद अझीमाबादी

---

१. चित्रकारी २. अट्टहास ३. मूर्ख ४. गझल का अंतरंग ५. थोड़ा कमीना ६. दिल्लगी

गझल में बंदिशे-अल्फाझ ही नहीं सब कुछ
जिगर का खून भी चाहिये, असर के लिये

'सीमाब' लफ्झ[१] लफ्झ उतरता है अर्श[२] से
मेरी बयाझे-शेर[३], खुदा की किताब है

सीमाब अकबराबादी

हैं और भी दुनिया में सुखनवर[४] बहुत अच्छे
कहते हैं कि 'गालिब' का है अंदाजे-बयाँ और

गालिब

शायरी क्या है, दिली जझ्बात[५] का इजहार[६] है
दिल अगर बेकार है तो शायरी बेकार है

सफी

दिल में कुछ चुभती हुई तकरीर[७] होनी चाहिए
नाला[८] कैसा ? बात में तासीर[९] होनी चाहिए

बेखुद देहलवी

सैंकडों में बस, इक दो शायर
गहरी नदियों की प्यास होते हैं

सूर्यभानु गुप्त

कुछ दिलखराश[१०] शेर कहे और चल बसा
बस जिंदगी में इतनी ही फुर्सत मिली मुझे

बाकर मेहदी

हमने सब शे'र में सँवारे थे
हमसे जितने सुखन[११] तुम्हारे थे

फैझ अहमद 'फैझ'

---

१. शब्द २. आकाश ३. शेर की लेखन बही ४. कवि ५. आवेश ६. झाहिर करना
७. बातचीत ८. रोनाधोना ९. असर १०. हृदय विदारक ११. बातें

मेरा हर शेर है 'अख्तर' मेरी जिन्दा तस्वीर
देखने वाले ने हर लफ्ज़[१] में देखा है मुझे

अख्तर शीरानी

शेर है दर असल 'माहिर' तर्जुमाने-वारिदात[२]
दिल पे जो गुजरे वही मन्ज़ूम[३] होना चाहिये

माहिरुल कादरी

जो हैं अहले सुखन[४] 'हातिम' उन्हें मरने से क्या दहशत
मसीहा की तरह जीये कयामत तक सुखन[५] उनके

शेख झहुरउद्दीन 'हातिम'

न जाना और कुछ ऐ 'जोश', हमने शेर कह-कहकर
यही जाना कि अपने ऐब को भी इक हुनर जाना

जोश मलसियानी

जाने क्या गुझरी कि फरज़ाने[६] भी दीवाने हुऐ
मैं तो शायर था, खुद अपनी आग में जलता रहा

जमील मलिक

इश्क ने उसको सीखा दी शायरी
अब तो अच्छी फिक्रे 'हसरत' हो गई

हसरत मोहानी

शेर हर रंग में कहना है तेरा काम 'हफीझ'
आज हम मान गये, मान गये, मान गये

हफीझ जौनपुरी

---

१. शब्द २. दिल पर गुझरी घटनाओं का वर्णन करने वाला ३. छन्दोबद्ध ४. कथन के स्वामी ५. शायरी ६. बुद्धिमान

जिसने गमों की गोद में पाई हो पररवरिश[1]
वह गमफरोझ शेर न लिक्खे तो क्या करे ?
अख्तर अन्सारी

हम से पूछो कि गझल क्या है, गझल का फन क्या ?
चन्द लफझों में कोई आग छुपा दी जाए
जाँनिसार अख्तर

हमारी कद्र करो ऐ सुखन[2] के मतवालो
गझल को कल न मिलेंगे मिझाजदाँ[3] हमसे
जाँनिसार अख्तर

वो 'मीर' की गझल हो कि 'गालिब' की शायरी
नग्मे तमाम साझ-ए-रग-ए-जाँ[4] से आये हैं
जाँनिसार अख्तर

कब और ग़ज़ल कहता मैं इस जमीं में लेकिन
परदे में मुझे अपना अहवाल सुनाना था
मीर

जो देखे उसे वह खो जाए, खो जाए तो शायर हो जाए
उसका अंदाज़ है गीतों सा, उसकी आवाज़ ग़ज़ल जैसी
कतील शिफाई

गुनाह

वो है मोख्तार[5] सजा दे कि जझा[6] दे 'फानी'
दो घड़ी होश में आने के गुनहगार हैं हम
क फानी बदायूनी

१. पालन-पोषण २. कविता ३. तासीर जानने वाला ४. प्राण-धमनी का वाद्ययंत्र ५. आझाद ६. इनाम

गुनहगार की हालत है रहम[१] के काबिल[२]
गरीब कश्मकशे[३] जब्रो-एख्तियार[४] में है

फानी बदायूनी

बात क्या चाहिए जब मुफ्त की हुज्जत[५] ठहरी
इस गुनाह पर मुझे मारा, कि गुनहगार न था

दाग़

सौ जान से हो जाऊँगा राझी मैं सजा पर
पहले वो मुझे अपना गुनहगार तो कर लें

अकबर ईलाहाबादी

क्या कहा मैंने कि झिड़की का सझावार हुआ
बात क्या मुँह से निकाली कि गुनहगार हुआ

नकी

यूँ जिंदगी गुझार रहा हूँ तेरे बगैर
जैसे कोई गुनाह किए जा रहा हूँ मैं

जिगर मुरादाबादी

गुनाह गिन के मैं क्यों अपने दिल को छोटा करूँ ?
सुना है तेरे करम का कोई हिसाब नहीं

यगाना चंगेझी

वो कौन हैं जिन्हें तौबा की मिल गई फुरसत
हमें गुनाह भी करने को जिंदगी कम है

आनंद नारायण मुल्ला

गुनाहों पर वही इन्सान को मजबूर करती है
जो इक बेनाम-सी फानी-सी लज्जत[६] है गुनाहों में

सीमाब अकबराबादी

---

१. दया २. योग्य ३. खींचतान ४. विवशता, अधिकार ५. विवाद ६. आनन्द

नकाब उलट दिया मूसाने तूर[१] पर उनका
अगर गुनाह सलीके से हो गुनाह नहीं

सीमाब अकबराबादी

मुमकिन है फरिश्तों से कोई सहबा[२] हुआ हो
मैं इतना गुनहगार कभी हो नहीं सकता

अर्श मलसियानी

क्यों गिने जाते हैं गुनाह मेरे
अनगिनत का शुमार[३] क्या मानी ?

जोश मलसियानी

मेरे सिवा नझर आये न कोई दोजख में
किसी का जुर्म हो मालिक ! मुझे सजा देना

रियाझ खैराबादी

चाहा तुम्हें, खता हुई, फरमाईए मुआफ
होता है आदमी ही से आखिर गुनाह भी

हैरत

क्या अब न होगी मेरी तरफ को निगाह भी
आखिर कोई खता भी है, कोई गुनाह भी

हैरत

गुनहगार हूँ इकरार[४] है, गुनाहों का
सजा दे, यह सरे महशर[५], हिसाब क्या मानी ?

असर लखनवी

---

१. शाम देश का एक पर्वत–इसी पर्वत पर हझरत मूसा को ईश्वर के दर्शनकी एक झलक दिखाई पडी थी २. भूलचूक ३. गिनती ४. कबूल ५. कयामत

आता है दाग़े-हसरते-दिल का[१] शुमार याद
मुझसे मिरे गुनह का हिसाब ऐ खुदा न माँग

गालिब

गुनहगार के दिल से न बच के चल जाहिद
कहीं कहीं तिरी जन्नत भी पाई जाती है

जिगर मुरादाबादी

मुझ-से गुनहगार को क्या-क्या अता[२] किया
ऐ 'दाग़' क्या ही शान है परवरदिगार की

'दाग़'

'हमदम' मिरे गुनाहों को बख्शेगा वो करीम
महशर[३] में रट लगाऊँगा जब या गफ़ूर[४] की

हमदम

बोसा तलब किया था फकत और कुछ नहीं
मैं अपनी बात कहके गुनहगार हो गया

हिदायत

बैठे बैठे आया है मुझे गुनाहों का खयाल
आज शायद तेरी रहमत[५]ने किया याद मुझे

ऐहसान दानिश

नाकर्दा[६] गुनाहों की भी हसरत[७] की मिले दाद
यारब[८] ! अगर इन करदा[९] गुनाहों की सजा है

गालिब

तो क्या हमीं हैं गुनहगार, हुस्ने यार नहीं ?
लगावटों का गुनाहों में क्या शुमार[१०] नहीं ?

यगाना चंगेझी

---

१. दिल की कामनाओं के दाग़ों का २. प्रदान ३. कयामत ४. क्षमा करने वाला ५. कृपा
६. जो किया न हो ७. अभिलाषा ८. हे ईश्वर ९. किये हुए १०. गिनती

क्यों बख्श दिया मुझ-से गुनहगार को मौला[१]
मुंसिफ[२] तो किसीसे रिआयत नहीं करता

कतील शिफाई

तमाम उम्र वफा के गुनाहगार रहे
ये और बात कि हम आदमी तो अच्छे थे

अहमद नदीम कासमी

क्या-क्या न किया खुदा ने जन्नत में जतन
आदम[३] ने मगर गुनाह कर के छोड़ा

जोश मलीहाबादी

फरिश्ते[४] हश्र[५] में पूछेंगे पाकबाजों[६] से
गुनाह क्यों न किये, क्या खुदा गफूर[७] न था ?

यह तो कहिये इस खता की क्या सजा ?
मैं जो कह दूँ 'आप पर मरता हूँ मैं'

दाग़

गुनहगारों में शामिल हैं, गुनाहों से नहीं वाकिफ
सजा को जानते हैं हम, खुदा जाने खता[८] क्या है ?

चकबस्त

'मजरुह' लिख रहे हैं वो अहले-वफा का नाम
हम भी खड़े हुए हैं गुनहगार की तरह

मजरुह सुलतानपुरी

'आर्झू' जाम लो झिझक कैसी
पी लो और दहशते-गुनाह[९] गई

आरझू लखनवी

---

१. खुदा २. न्यायकर्ता ३. मनुष्य ४. देवता ५. कयामत ६. सद्चरित्रवालों ७. क्षमा करने वाला ८. गुनाह ९. गुनाह का डर

राझी हो तो राझी हो, खफा हो तो खफा हो
हम कोई गुनहगार हैं ? तुम कोई खुदा हो ?

लज्जत कभी थी, अब तो मुसीबत-सी हो गई
मुझको गुनाह करने की आदत सी हो गई

बेखुद देहलवी

रहते थे कभी जिनके दिल में हम जान से भी प्यारों की तरह
बैंठे हैं उन्ही के कूचे[१] में हम आज गुनहगारों की तरह

मजरुह सुलतानपुरी

फिर उसकी शाने-करीमी[२] के हौसले देखे
गुनहगार ये कह दे गुनहगार हूँ मैं

अमीर मीनाई

हम हैं और साया[३] तिरे कूचे की दीवारों का
काम जन्नत में है क्या हम-से गुनहगारों का

जौक

हमारे चेहरे से लिल्लाह[४] कफन न सरकाओ
गुनहगार को रहने दो मुँह छिपाये हुऐ

अमीर मीनाई

ऊँचे-ऊँचे मुजरिमों[५] की पूछ होगी हश्र[६] में
कौन पूछेगा मुझे मैं किन गुनहगारो में हूँ ?

अपनी नझरों में गुनहगार न होते क्यों कर
दिल ही दुश्मन है मुखलिफ[७] के गवाहों[८] की तरह

सुदर्शन फाकिर

---

१. गली २. उदारता की भव्यता ३. छाया ४. खुदा के लिए ५. अपराधी ६. कयामत
७. विरुद्ध ८. साक्षी

हाँ, आप को देखा था मुहब्बत से हमींने
जी, सारे जमाने के गुनहगार हमीं हैं

एहसान दानिश

दुनिया से ले चला तो है तू हसरतों का बोझ
काफी नहीं है सर पे गुनाहों का बार[१] क्या ?

चकबस्त

मय छीन कर किसी से जो पीते तो थी खता
जब दाम दे के पी तो गुनह क्या किसी का था ?

महसूस हो भी जाए तो होता नहीं बयाँ
नाजुक सा एक फर्क है गुनाह-ओ-सबाब[२] में

शहरयार

गुनाह कोई न करते, शराब ही पीते
ये क्या किया कि गुनह तो किये, शराब न पी

रियाझ खैराबादी

गुनाह करने की मुझमें भी ताब[३] थी लेकिन
ये और बात है मेरा झमीर[४] जिंदा था

मसउद आतिश

खटका लगा न हो तो मझा क्या गुनाह का
लज्जत[५] ही और होती है चोरी के माल में

यगाना चंगेझी

सबसे बढ़कर ही मिले उसके गुनाहों के सबूत
अपने दिल में जो सदा खौफे-खुदा[६] रखता था

खलील धनतेजवी

---

१. बोझ २. पाप और पुण्य ३. शक्ति ४. अंत:करण ५. मझा ६. खुदा का डर

कब मैं कहता हूँ कि तेरा मैं गुनहगार न था
लेकिन इतनी तो अकूबत[1] का सजावार[2] न था

कायम

ऐब[3] जो हाफिज-ओ खय्याम में था
हाँ कुछ उसका भी गुनहगार हूँ मैं

मजाझ

गुफ्तगू (बातचीत)

उनकी आवाझ आ रही थी दिल के पास
देर तक कुछ गुफ्तगू करते रहे

फानी बदायूनी

शबे-वस्ल[4] की क्या कहूँ दास्ताँ
जबाँ थक गई, गुफ्तगू रह गई

दाग़

पहरों रहती थी गुफ्तगू जिनसे
उनसे अब बात भी नहीं होती

सीमाब

वो भी दिलगिरिफ्ता[5] है, अपनी क्या कहूँ नासेह[6]
मुझसे गुफ्तगू करके उनसे गुफ्तगू करना

शकील बदायूनी

मत पूछो यह कि रात कटी क्यों कर तुम बगैर
इस गुफ्तगू से फायदा ? प्यारे गुझर गई

सौदा

---

१. यातना २. सजा के पात्र ३. दोष ४. मिलन की रात ५. उदास ६. उपदेशक

हर एक बात पे कहते हो तुम कि तू क्या है ?
तुम्हीं कहो कि ये अंदाज़-ए-गुफ्तगू[१] क्या है ?

गालिब

‘निगार’ अपना फसाना कहें तो किससे कहें ?
जो कोई हमझबाँ[२] मिलता तो गुफ्तगू करते

निगार

वो एक बात जो मौजू-ए-गुफ्तगू[३] बनती
मिले जो आप तो कमबख्त याद ही न रही

रझा नकवी

रातों को कर रही हूँ सितारों से गुफ्तगू
मुझसे मिरे जुनूँ[४] की हिकायत[५] न पूछिए

शायरा

गुलो-गुँचा[६] असल में हैं, तिरी गुफ्तगू की शक्लें
कभी खुल के बात कह दी, कभी कर दिया इशारा

सलाम संदेलवी

हुई है हझरते-नासेह[७] से गुफ्तगू जिस शब[८]
वो शब जरुर सरे-कूए-यार[९] गुजरी है

फैझ अहमद ‘फैझ’

है खबर गर्म कि फिरता है गुरेझा[१०] नासेह
गुफ्तगू आज सरे कूए-बुताँ[११] ठहरी है

‘फैज’

---

१. बातचीत का ढंग २. बोलने या सम्मति देने में साथ देने वाला ३. बातचीत के लिए उचित विषय ४. उन्माद ५. किस्सा ६. फूल और कली ७. उपदेशक ८. रात ९. प्रिय की गली १०. भागता ११. सुंदरियों की गली में

किसी तरह तो बयाने-हर्फ़े-आरज़ू[1] करते
जो लब मिले थे तो आँखों से गुफ्तगू करते

अहमद फराज़

शब की तनहाई में अब तो अकसर
गुफ्तगू तुझसे रहा करती है

परवीन शाकिर

कफन को बाँधे हुए सर से आए हैं, वर्ना
हम और आप इस तरह गुफ्तगू करते ?

अज़ीज़ लखनवी

जवाब हज़रते-नासेह को हम भी कुछ देते
जो गुफ्तगू के तरीके से गुफ्तगू करते

अज़ीज़ लखनवी

गुफ्तगू तुझसे करेंगी मेरी गज़लें सुबह-व-शाम
तेरी खिल्वत में मेरी तनहाईयाँ रह जायेंगी

हसन नईम

घर

बड़ा करम है ये मुझ पर अभी यहाँ से न जाव
बहुत उदास है ये घर अभी यहाँ से न जाव

फिराक गोरखपुरी

कटते-कटते रातें होतीं होते-होते सबेरा होता
रात-की-रात कभी मेरा घर तेरा रैन-बसेरा होता

फिराक गोरखपुरी

१. मन की इच्छाओं का बयान

तुम तो फरमाते हो घर जाएँगे
हमको कह दो कि हम किधर जाएँ ?

तन्हा

दरवेश[१] कोई आए तो आराम से रहे
तेरे फकीर का घर, इतना बड़ा भी हो

बशीर बद्र

कहते हो तुम न घर मेरे आया करे कोई
पर दिल न रह सके तो भला क्या करे कोई

शहज़ादी झेबुन्निसा

कोई वीरानी सी वीरानी है
दश्त[२] को देख के घर याद आया

गालिब

याद आया मुझे घर देख के दश्त
दश्त को देख के घर याद आया

चंबेली 'यासमन'

मुबारिक हो यह घर गैरों को, तुम को, पासबानों को[३]
हमारा क्या इजारा है, निकाला तुमने हम निकले

दाग़

हमेशा ताजा-दम उसके मुहल्ले तक पहुँचता हूँ
थकन उस वक्त होती है, वो जब घर पर नहीं मिलता

कतील शिफाई

हर घर पे है आवाज, हर इक दर पे है दस्तक
बैठा हूँ कि मुझको भी सदा[४] दे कोई आकर

अदीम हाशमी

---

१. फकीर २. जंगल ३. पहरेदारों को ४. आवाज

चैन था 'खालिद' तो घर की चार दीवारी में था
रेस्तराओं में अबस[१] क्या ढूँढ़ता रहता हूँ मैं

अनवर महमूद खालिद

पता अब तक नहीं बदला हमारा
वही घर है, वही कस्बा हमारा

अहमद मुश्ताक

वो घर तो जल भी चुका जिसमें तुम ही तुम थे कभी
अब उसकी राख से दुनिया नयी बसाएँ हम

अहमद हमदानी

मुझे सँभाल, मिरा हाथ थाम कर ले जा
थका हुआ हूँ कई दिन का, मुझको घर ले जा

निसार नासिक

नगरी-नगरी फिरा मुसाफिर, घर का रस्ता भूल गया
क्या है तेरा, क्या है मेरा, अपना पराया भूल गया

मीराजी

आपने यह क्या कहा, घर जाएँ, रुख्सत दीजिये
आपका घर तो मेरी आँखों में, मेरे दिल में है

कैसर देहलवी

लहद[२] में शाना[३] हिलाकर यह मौत कहती है
ले अब तो चौंक मुसाफिर कि अपने घर आया

शाद अज़ीमाबादी

निकली यह कह के आलमे-पीरी में[४] तन से रुह
'बस अब हमारे रहने के काबिल[५] यह घर नहीं'

शाद अज़ीमाबादी

---

१. व्यर्थ २ कब्र ३. कन्धा ४. बूढ़ापे में ५ उचित

मेहमाँ सराए[1] तन से चली रुह कह के हाय !
‘इस घर में अब न आयेंगे गर ‘शाद’ नाम है’

शाद अझीमाबादी

सलामत रहे दिल में घर करने वाले
इस उजड़े मकाँ में बसर करने वाले

यगाना चंगेझी

उजड़ा और ऐसी शान से उजड़ा मेरा चमन
यह भी पता नहीं कि बनाया था घर कहाँ ?

सीमाब अकबराबादी

या रहें इसमें अपने घर की तरह
या मेरे दिल में आप घर न करें

अर्श मलसियानी

मेरे गम की उन्हें किसने खबर की ?
गई क्यों घर से बाहर बात घर की ?

नातिक गुलावटी

गैर के घर हैं वो मेहमान, बड़ी मुश्किल है
जान जाने के हैं सामान, बड़ी मुश्किल है

नसीम भरतपुरी

उग रहा है दरो दीवार पर सब्झा[2] ‘गालिब’
हम बयाबाँ[3] में हैं और घर में बहार आयी है

गालिब

घर टपकता है और उस पर घर में वो मेहमान हैं
पानी-पानी हो रही है आबरु बरसात में

फना कानपुरी

१. मुसाफिर खाना २. हरियाली ३. जंगल

कौन इस घर की देखभाल करे
रोज एक चीज टूट जाती है

जान ऐलिया

चाहतों भरे कमरे दिल खुले खुले आँगन
अब तो ढूँढ़े पे भी ऐसे घर नहीं मिलते

रउफ खलिश

सबका खुशी से फासला एक कदम है
हर घर में बस एक ही कमरा कम है

जावेद अख्तर

है खबर गर्म उनके आने की
आज ही घर में बोरिया[१] न हुआ

गालिब

चन्द तस्वीरे-बुतां[२] चन्द हसीनों के खुतूत[३]
बाद मरने के मेरे घर से ये सामाँ निकला

गालिब

घर का सारा रास्ता इस सरखुशी[४] में कट गया
इससे अगले मोड़ कोई, हमसफर होने को है

परवीन शाकिर

लोग टूट जाते हैं एक घर बनाने में
तुम तरस नहीं खाते बस्तियाँ जलाने में

बशीर बद्र

अँधेरे माँगने आये थे रोशनी की भीक
हम अपना घर न जलाते तो और क्या करते ?

नज़ीर बनारसी

---

१. ताड़ के पत्तों की चटाई २. सुन्दरियों के चित्र ३. पत्र ४. हलका नशा

शाम होती है तो सब घर की तरफ जाते हैं
जितने दरिया हैं समन्दर की तरफ जाते हैं

अंजुम रुमानी

मैं समन्दर था, मगर वीराँ था सहरा की तरह
मेरे घर तक चल के आता, इतना प्यासा कौन था ?

खालिद अहमद

अब भला छोड़ के घर क्या करते ?
शाम के वक्त सफर क्या करते ?

परवीन शाकिर

मुहब्बत, अदावत, वफा,[१] बेरुखी[२]
किराये के घर थे बदलते रहे.

बशीर बद्र

मिरे घर में कदम रंजा किया तो सरफराझी[३] की
नवाजिश है[४], करम है, मेहरबानी है, इनायत[५] है

मेह्र लखनवी

वो आऐं घर में हमारे, खुदा की कुदरत है
कभी हम उनको कभी अपने घर को देखते हैं

गालिब

रौनक थी दिल में जब तईं[६] बसते थे दिलबराँ[७]
अब क्या रहा है उठ गए सब इस मकां के लोग

मीर

वो आ भी जाऐ तो उसको कहाँ बिठाऊँगा ?
मैं अपने घर में तो रहता हूँ, बेघरों की तरह

वकील अख्तर

---

१. 'निर्वाह' २. उपेक्षा ३. प्रतिष्ठा ४. कृपा ५. दया ६. तक ७. दिलबर

आए और ठहरे नहीं तुम तो शिकायत कैसी
इक खुले दर के सिवा और मेरे घरमें क्या था ?

ऐस-ऐ-रझ्झाक

अब तक न खबर थी मुझे उजड़े हुए घर की
तुम आए तो घर बे-सरो-सामाँ[१] नझर आया

जोश मलिहाबादी

घर के दरो-दीवार को ऊँचा न करो
इतना गहरा मेरी आवाझ से पर्दा न करो

जवैर रिझवी

गएँ हैं जबसे वो, अपने भी आए, गैर भी आए
सब आए भी, गए भी, घर की वीरानी नहीं जाती

नातिक गुलावटी

तेरा घर छिन गया तो क्या हुआ ऐ शहद की मक्खी
शराफत का तो दुनिया में यही इनाम मिलता है

अदम

रफ्ता-रफ्ता वही बन जायेगा घर का मालिक
कारे-दुश्वार[२] है मेहमान को घर में रखना

जान काश्मिरी

घर जला कर ही रौशनी कर ले
हर गली कूचे में अँधेरा है

झिया फतेहाबादी

मैंने जहेझ[३] जमआ किया घर को बेच कर
बच्ची को घर मिला तो मेरा घर चला गया

झिया अंसारी

---

१. जरुरी वस्तुओं का अभाव २. मुश्किल कार्य ३. दहेज

दर-ब-दर[१] ठोकरें खाईं तो ये मालूम हुआ
घर किसे कहते हैं, क्या चीझ है बेघर होना
सलीम अहमद

हर आने-जाने वाले को करना पड़ा सलाम
ता उम्र[२] अपने घर में, मैं दरबान ही रहा
झफर गोरखपुरी

इक बार चूम लूँ दरो-दीवार तो चलूँ
जैसा भी है, ये मेरा पुराना मकान है
इकबाल अशहर

फिर गये आप मेरे कूचे[३] से
दो कदम पर गरीबखाना[४] था
असर अझीमाबादी

कुछ बताओ तो आखिर क्या जवाब दूँ उसको
इक सवाल करता है, रोज मुझसे घर मेरा
गुलाम रब्बानी 'ताबाँ'

उस घर में किसे देते हो अब जा के सदाएँ
वो हारे-थके लोग तो अब सो भी चुके हैं
सबा अकरम

जी ढूँढ़ता है घर कोई दोनों जहाँ से दूर
इस आपकी जमीं से अलग, आस्माँ से दूर
फानी बदायूनी

आग भी उन घरों को लगती है
जिन घरों में चिराग जलते हैं
इकबाल सफीपुरी

---

१. घर घर २. सारी उम्र ३. गली ४. मकान

कुछ इस तरह से गुझारी है जिंदगी जैसे
तमाम उम्र किसी दूसरे के घर में रहा

अहमद फराझ

घर से निकले हो तुम काँच के पैकर[१] लेकर
लोग बैठे हैं मगर राह में पत्थर लेकर

बिस्मिल थानेसरी

ये और बात कि अब वो यहाँ नहीं रहता
मगर ये उसका बसाया हुआ मकान तो है

अकील शादाब

जिसे रौनक तेरे कदमों ने देकर छीन ली रौनक
वो लाख आबाद हो उस घर की वीरानी नहीं जाती

जिगर मुरादाबादी

अब तेरे ताल्लुक[२] से हमें याद है इतना
इक रात को मेहमान रहे थे तिरे घर हम

जाँनिसार अख्तर

मैं सोचता था वतन जा के पड़ा रहूँगा कभी
मगर फसाद[३] में वो घर भी जल गया है मियाँ

जाँनिसार अख्तर

बारहा[४] इस घर का बँटवारा हुआ है आज तक
अपने हिस्से में सदा दुःख के खजाने आए हैं

बशीर बद्र

वो घरौंदें तिरे बचपन में भी ढा देती थी
अब तो वो खेल की बातें भी नहीं, घर न बना

अब्दुल गनी 'मुसहिफ'

---

१. आवरण २. संबंध, लगाव ३. झगड़ा ४. कई बार

'अदा' मैं नकहते-गुल[१] भी न थी, सबा[२] भी न थी
कि मेहमाँ-सी रहूँ और अपने घर में रहूँ

अदा जाफरी

आज वह शायद मेरे घर में रात गये तक आयें
भोर समय से छत पर अपनी बोल रहा है काग

पाशा रहमान

हमारे घर में यूँ तो क्या नहीं है
बस इतना है कोई रहता नहीं है

तहसीन सरबरी

घरों पे नाम थे, नामों के साथ ओहदे थे
बहुत तलाश किया, कोई आदमी न मिला

बशीर बद्र

तुम राह में चुपचाप खड़े हो गये हो
किस-किस को बताओगे कि घर क्यों नहीं जाते ?

अमीर आगा कझलबाश

जो घर बनाओ तो इक पेड़ भी लगा लेना
परिन्दे[३] सारे मुहल्ले में चहचहाऐंगे

डॉ. के.के.रिषी

वो आके मेरे गाँव से वापस भी जा चुका
मैं थी कि अपने घर को सजाने में रह गई

अंजुम रहबर

वो अचानक मेरे घर तक पहुँचा
रास्ता भूल गया हो जैसे

मसूदा हयात

---

१. फूल की सुगंध २. ठंडी हवा ३. पक्षी

बे-दरो-दीवार[1]-सा इक घर बनाया चाहिये
कोई हमसाया[2] न हो और पासबाँ[3] कोई न हो

गालिब

हो गये बरसों कि आँखों की खटक जाती नहीं
जब कोई तिनका उड़ा, घर अपना याद आया मुझे

साकिब लखनवी

इन्हीं पत्थरों पे चल कर अगर आ सको तो आओ
मेरे घर के रास्ते में कहीं कहकशाँ[4] नहीं है

मुस्तफा झैदी

बे-सबब[5] लोग बदलते नहीं मस्कन[6] अपना
तुमने जलते हुऐ देखा है नशेमन[7] अपना

मुहसिन भोपाली

बाझारों में फिरते-फिरते दिन भर बीत गया
काश[8] ! हमारा भी घर होता, घर जाते हम भी

अनवर शउर

काश ! हो जाती मुलाकात आप से
इत्तिफाकन[9] रात घर कोई न था

अनवर शउर

नाम लेकर कभी हमको भी पुकारे कोई
घर का दरवाजा किसी रोज तो खोलें हम भी

कर्रार नूरी

---

१. द्वार और दीवार बिना २. पड़ौसी ३. पहरेदार ४. आकाशगंगा ५. अकारण ६. रहने का स्थान, घर ७. घोंसला ८. ईश्वर करे, ऐसा हो जाय ९. संयोग से

अब इस घर की आबादी मेहमानों पर है
कोई आ जाये तो वक्त गुझर जाता है

झेहरा निगाह

खुद अपने ही घर में हैं इस तरह आज आए हुए
कि जैसे घर में किसीके हो हम बुलाए हुए

करार नूरी

शोल-ए इश्क ! लगा आग न दिल में मेरे
यह तो अल्लाह का घर है, किसी दुश्मन का नहीं

ईशरत महल बेगम

अपने ही घर के हुए दरवाजे बंद
वहम था सबसे निभा सकता हूँ मैं

रझ्झाक अर्शद

कितनी यादें लिपट के रोती हैं
जब कोई शख्स घर बदलता है

महमूद ईश्की

न दुनिया में निभी अपनी, न रास आया अदम[१] हमको
कभी इस घर से निकले हैं, कभी उस घर से निकले हैं

चाँद

कोइ सैफो[२] हो या मीरा हो कि परवीन उसे
रास आता ही नहीं चाँद नगर में रहना

परवीन शाकिर

---

१. मृत्युलोक, अमरत्व २. छह सौ ईसा पूर्व की यूनानी कवयित्री

पत्तों से छन के आयी है आँगन में चाँदनी
जैसे किसी खुशी में खुशी की कमी रही

अदा जाफरी

हमने तो दोनों को देखा, दोनों ही बेदर्द कठोर
धरती वाला, अम्बर वाला, पहला चाँद और दूजा चाँद

इब्ने ईंशा

चाँद के पास क्या खिला तारा
बन गया सारा आसमान रकीब[१]

परवीन शाकिर

कभी सपने में आकर प्यार कर जाए तो कर जाए
वर्ना वो अभी तक चाँद के आँगन में रहता है

सईद अहमद अख्तर

नहीं मुहताज जेवर[२] का जिसे खूबी खुदा देवे
कि आखिर बदनुमाँ[३] लगता है देखो चाँद को गहना[४]

फूल, गुल, शम्शोकमर[५] सारे ही थे
पर हमें उनमें तुम्ही भाये बहुत

मीर

तुम चौदहवीं का चाँद हो तो अपने वास्ते
क्या फायदा, किसीको किसीके कमाल से

अमीर मीनाई

कल चौदहवीं का चाँद था, शब भर रहा चर्चा तेरा
कुछ ने कहा ये चाँद है, कुछ ने कहा चेहरा तेरा

हसरत मोहानी

---

१. प्रतिद्वंद्वी २. आभूषण ३. कुरुप, भद्दा ४. ग्रहण लगना ५. चाँद-सूर्य

ठहर सकी न अगर चाँदनी तो क्या गम है
यही बहुत है कि तू याद आ गया मुझको

वज़ीर आगा

ये किस हिसाब से की तूने रौशनी तकसीम[१]
सितारे मुझको मिले, माहताब उसका था

वज़ीर आगा

कोई बात करनी है चाँद से, किसी शाखसार[२] की ओट में
मुझे रास्ते में यहीं कहीं किसी कुंज-ए-गुल[३] में उतार दो

एतबार साजीद

अल्लाह ने दी है जो तुम्हें चाँद-सी सूरत
रौशन भी करो जाके सियहखाना[४] किसीका

अकबर इलाहाबादी

कैसे लिखूँ मैं चाँद के किस्से, कैसे लिखूँ मैं फूल की बात
रेत उड़ाए गर्म हवा तो कैसे मैं बरसात लिखूँ

जावेद अख्तर

तुम्हारे हुस्न की तश्बीह[५] चाँद से क्या है
वो सिर्फ दूर से प्यारा दिखाई देता है

अहसन मुरादाबादी

कल पूनम की रात है प्यारे तू भी छत पर आ जाना
तेरी खातिर चाँद को भी हम यही संदेशा भेजेंगे

खलील धनतेजवी

सौ चाँद भी चमकेंगे तो क्या बात बनेगी ?
तुम आये तो इस रात की औकात बनेगी

जाँनिसार अख्तर

---

१. बाँटना २. डाली ३. फूल के एकांत में ४. अन्धकारमय स्थान ५. उपमा

चाँद के टुकड़े भी आँखों में समा सकते न थे
क्या बतायें हम तिरे दर के गदा क्यों हो गये

अली अख्तर 'अख्तर'

रुलाती है मुझे क्यूं चाँदनी रात
यही एक राझ मेरी जिन्दगी है

अन्दलीब शादानी

उनतीसवीं को रुख[१] की तेरे दीद[२] हो गई
अब चाहे चाँद हो कि न हो ईद हो गई

हर तरफ बिखरी हुई है चाँदनी ही चाँदनी
जैसे वो खुद साथ हैं, उनकी जवानी साथ है

मखदूम मोहिउद्दीन

हमें तो शामे-गम[३] में काटनी है जिन्दगी अपनी
जहाँ वो हैं, वहीं ए चाँद ले जा चाँदनी अपनी

शेरी भोपाली

ऐ 'हश्र' देखना तो, ये है चौदहवीं का चाँद
या आसमाँ के हाथ में तस्वीर यार की

आगा हश्र कश्मीरी

साकी ! हूँ तीस रोज[४] से मुश्ताक[५] दीद का
दिखला दे जामे-मय[६] में मुझे चाँद ईद का

आतिश

आनेवाले आ, कहाँ तक इन्तझार ?
चाँद डूबा, तारे भी कजला गये

असर लखनवी

---

१. मुख २. दर्शन ३. शोक की संध्या ४. दिन ५. उत्सुक ६. शराब का प्याला

चाँद सितारों से क्या पूछुँ, कब दिन मेरे फिरते हैं ?
वो तो बेचारे खुद हैं भिकारी, डेरे-डेरे फिरते हैं

सय्यद आबिद अली

फूलों से लिपटती है मगर कितनी हया से
ये चाँदनी शायद तिरे आँचल से छनी है

कतील शिफाई

ढल गया चाँद, गई रात, चलो सो जाऐं
हो चुकी उनसे मुलाकात, चलो सो जाऐं

कतील शिफाई

मेरे घर की छत के उपर सूरज आया, चाँद भी उतरा
छत के नीचे के कमरों की जैसी थी औकात[१] वही है

अमीक हन्फी

तारीकियाँ[२] कबूल हैं लेकिन कभी-कभी
आँगन में मेरे चाँद भी उतरा करे कोई

खालिद शरीफ

चाँद में कैसे नजर आये तिरी सूरत मुझे
आँधियों से आसमाँ का रंग मैला हो गया

अगर मिरा है तो उतरे कभी मिरे घर में
वो चाँद बन के न यूँ दूर से लुभाये मुझे

आरिफ अब्दुल मतीन

चाँद को हमने भी गौर से देखा ही नहीं
उससे कहिये कि कभी दिन के उजालों में मिले

राहत ईंदोरी

---

१. स्थिति २. अंधकार

जब सँवर कर मेरा महबूबे-नझर[1] बैठ गया
चाँद शरमा के घटाओं में उधर बैठ गया

झफर कलीम

महेतमाम[2] अभी कौन छत पे आया था
कि जिसके आगे तेरी रौशनी भी माँद[3] हुई

परवीन शाकिर

चाँद होता है एक ही नभ में
देखिए तो ये दूसरा क्या है ?

उदयभानु हंस

आ मेरे चाँद रौशनी कम है,
बात बनती नहीं सितारों से

रझा बिजनौरी

झख्म

बिछड़ा है जो इक बार तो मिलते नहीं देखा
इस झख्म को हमने कभी सिलते नहीं देखा

परवीन शाकिर

नजर लगे न कहीं उनके दस्तो-बाजू को[4]
ये लोग क्यों मेरे झख्मे-जिगर को देखते हैं

गालिब

मुझसे बिछड़ा था वो पहले भी मगर
अब के ये झख्म नया है जैसे

परवीन शाकिर

१. प्यारा २. पूर्ण चाँद ३. धुंधली ४. बाँह और हाथ को

ऐसे भी झख्म थे कि छुपाते फिरे हैं हम
दरपेश[1] था किसीके करम का मामला

परवीन शाकिर

क्यों किसी और को दुख-दर्द सुनाऊँ अपने
अपनी आँखों से भी मैं झख्म छुपाऊँ अपने

अनवर मसुद

इक जरा-सी भूल पे हमको इतना तो बदनाम न कर
हमने अपने घाव छिपा कर तेरे काज सँवारे हैं

जमील मालिक

दिल के झख्म का रंग तो शायद आँखों में भर आये
रुह के झख्मों की गहराई कैसे दिखाएँ तुम्हें ?

जहूर नजर

जुदाईयों के जख्म दर्द-ए-जिन्दगी[2] ने भर दिये
तुझे भी नींद आ गई, मुझे भी सब्र[3] आ गया

नासिर काझमी

दफन हूँ एहसास की सदियों पुरानी कब्र में
ज़िन्दगी एक झख्म है और झख्म भी ताझा नहीं

मुजफ्फर वारसी

मुझे झख्म ही मिले हैं, मैं जहाँ-जहाँ गया हूँ
कभी दुश्मनी के बदले, कभी दोस्ती के बदले

अनवर फर्रुखाबादी

हमको अग्यार[4] से गिला कैसा
झख्म खाये हैं हमने यारों से

साहिर होशियारपुरी

---

१. सामने २. जीवन की पीड़ा ३. धैर्य ४. पराया

जिनके हाथों से हमें झख्में-निहाँ[1] पहुँचे हैं
वो भी कहते हैं कि झख्मो को छुपाये रखिये

तारिक बदायूनी

कौन समझेगा मेरे दर्द को आह !
रुह का झख्म किसने देखा है ?

अख्तर अन्सारी

और भी झख्म हुऐ जाते हैं गहरे दिल के
हम तो समझे थे तुम्हें चारागरी[2] आवे है

जाँनिसार अख्तर

दिल के झख्मों को न रो, दोस्त का एहसान समझ
वरना वो दस्ते-हिनाई[3] नहीं देता कुछ भी

अहमद फराझ

रहने दो ये पंदो-नसीहत[4], हम भी 'फराझ' से वाकिफ हैं
जिसने खुद सौ झख्म सहे हों, उसको क्या समझाओगे ?

अहमद फराझ

कितने दर्द चमक उठते हैं फुर्कत[5] के सन्नाटे में
रात-रात भर जाग के हमने खुद ये झख्म लगाऐ थे

नूर बिजनौरी

चारसाझो[6], भूल जाऊँगा उसे
अब सुनाओ झख्म कितना रह गया

हमीद अल्मास

---

१. छिपे हुऐ झख्म २. चिकित्सा कार्य ३. महेंदी वाले हाथ ४. सलाह-सूचन की बातें
५. जुदाई ६. उपचारकों

ढूँढ़ते फिरते हैं, झख्मों का मुदावा[१] निकले
इस भरे शहर में कोई तो मसीहा[२] निकले

अब्दुल जमील मलिक

उसी तरह से हर इक झख्म खुशनुमा[३] लगे
वो आए तो मुझे अब भी हरा-भरा देखे

परवीन शाकिर

ये झख्म है उन दिनों की यादें
जब आपसे दोस्ती बढ़ी थी

अहमद फराझ

ये मोजझा[४] भी मुहब्बत कभी दिखाए मुझे
कि संग[५] तुझ पे गिरे और झख्म आए मुझे

कतील शिफाई

ये जिन्दगी है, यहाँ रंज से भी क्या हासिल
हमें तो देखो कि हम झख्म झख्म हँसते हैं

अहमद हमदानी

'मुसहफी' हम तो समझे थे कि होगा कोई झख्म
तेरे दिल में तो बहुत काम रफू का निकला

मुसहफी

झख्म का लगना हमें करार था, फिर उसके बाद
झख्म का रिसना भी क्या और जख्म का भरना भी क्या ?

वझीर आगा

---

१. इलाज २. बीमारों को जीवन देने वाले ३. जो देखने में अच्छा लगे ४. चमत्कार ५. पत्थर

यूँ-ही-सा था कोई जिसने मुझे मिटा डाला
न कोई नूर का पुतला न कोई झोहरा-झबीं[१]
फिराक गोरखपुरी

इनायत[२] की, करम की, लुत्फ[३] की आखिर कोई हद है
कोई करता रहेगा चारा-ए-झख्मे जिगर[४] कब तक
फिराक गोरखपुरी

और क्या इससे ज्यादा कोई नर्मी बरतूँ
दिल के झख्मों को छुआ है तेरे गालों की तरह
जाँनिसार अख्तर

झख्म वो दिल पे लगा है कि दिखाए न बने
और चाहें कि छुपा लें तो छुपाऐ न बने
जिगर मुरादाबादी

दर्द के फूल भी खिलते हैं, बिखर जाते हैं
झख्म कैसे भी हों कुछ रोज में भर जाते हैं
जावेद अख्तर

साफ लिख्खा हुवा है झख्मों पर
सब के सब अपने हैं, भुला ही दे
खलील धनतेजवी

चेहरे पे तू न दिल की उदासी तलाश कर
गझलों में अपने झख्म छुपाता रहा हूँ मैं
खलील धनतेजवी

सीना हो झख्म झख्म तो ढलते हैं कैसे गीत
फुर्सत अगर मिले तो कभी बाँसुरी से पूछ
जफर गोरखपुरी

---

१. चाँद-सा मुखवाली २. कृपा ३. मझा ४. दिल के घाव का उपचार

था जिनके पास झख्म का मरहम कहाँ गये
जो दिल को जोड़ते थे वो मेमार[१] क्या हुए ?

मुईन हसन जझ्बी

सबूत कुछ तो मिले अपनी ज़िन्दगी का मुझे
नमक ही झख्म पे ऐ मेहरबाँ रखता चल

झियाउल अंजुम

यकीं न आये तो इक बार पूछ कर देखो
जो हँस रहा है वो झख्मों से चूर निकलेगा

अमीर फझलबाश

कर्या-ऐ-जाँ[२] में कोई फूल खिलाने आये
वो मेरे दिल पे नया झख्म लगाने आये

परवीन शाकिर

हम तो समझे थे कि इक झख्म है भर जाएगा
क्या खबर थी कि रगे-जाँ[३] में उतर जाएगा

परवीन शाकिर

जन्नत (स्वर्ग)

हमको मालूम है जन्नत की हकीकत लेकिन
दिल के खुश रखने को 'गालिब' यह खयाल अच्छा है

गालिब

न जाऊँगा कभी जन्नत में, मैं न जाऊँगा
अगर न होगा वो नकशा तुम्हारे घर का सा

मोमिन

---

१. मकान बनाने वाला २. प्रियतम का गाँव ३. ज़िन्दगी की रग

दुनिया में जानता हूँ जन्नत मुझे मिली
राहत अगर जरा सी मुसीबत में मिल गई

दाग़

तेरा मिलना, तेरा नहीं मिलना
और जन्नत है क्या, जहन्नुम क्या ?

जिगर

सुनते हैं जो बहिश्त[१] की तारीफ सब दुरुस्त,
लेकिन खुदा करे वो तेरी जल्वागाह[२] हो

गालिब

बस इसी धुन में रहा, मर के मिलेगी जन्नत
तुम को ऐ शैख, न जीने का करीना[३] आया

अर्श मलसियानी

पी लेंगे जरा शैख तो कुछ गर्म रहेंगे
ठंडा कहीं न कर दे ये जन्नत की हवाएँ

वही जन्नत है जहाँ चैन मिले, दिल बहले
जिस पे दिल आए वही हूर[४] है ईन्सां के लिऐ

ये जन्नत मुबारक रहे जाहिदों को
कि मैं आपका सामना चाहता हूँ

ईकबाल

जाय है जी नेजात[५] के गम में
ऐसी जन्नत गई जहन्नम में

मीर

---

१. स्वर्ग २. निवासस्थान ३. तरीका ४. अप्सरा ५. निर्वाण

हुआ है चार सजदों[१] पर यह दावा जाहिदों तुमको
खुदा ने क्या तुम्हारे हाथ जन्नत बेच डाली है ?

दाग़

ये माना राहतें सारी मयस्सर[२] है वहाँ लेकिन
न हो जब हाजरी तेरी तो जन्नत भी जहन्नम है

सूफी बाणकोटी

पी शौक से वाईझ अरे, क्या बात है डर की
दोझख तेरे कब्जे में है, जन्नत तेरे घर की

शकील बदायूनी

मुझे बहिश्त से इन्कार की मजाल कहाँ ?
मगर जमीं पे महसूस ये कमी तो करुँ

जिसमें लाखों बरस की हूरें हो
ऐसी जन्नत को क्या करे कोई

दाग़

सजदे करूँ, सवाल करूँ, इल्तजा[३] करूँ
यूँ दे तो कायनात[४] मेरे काम की नहीं

वो खुदा अता करे तो जहन्नुम भी है बहिश्त
माँगी हुई निझात[५] मेरे काम की नहीं

जोश

सैयाद तेरा घर मुझे जन्नत सही मगर
जन्नत से भी सिवा मुझे राहत चमन में थी

नूर तकी 'नूर'

---

१. प्रणाम २. प्राप्त ३. प्रार्थना ४. सम्पत्ति ५. स्वर्ग

क्या जगह कूचा-ए-महबूब[१] है, सुब्हान अल्लाह
कोई काबा, कोई जन्नत, कोई गुलशन[२] समझा

'आतश'

खुदा शाहिद[३], बुरा कहता नहीं जन्नत को मैं लेकिन
मझा कुछ और ही है, मैं-कशी[४] का बादाखाने में

शाद अझीमाबादी

मैखाने[५] में मझार[२६] हमारा अगर बना
दुनिया यही कहेगी कि जन्नत में घर बना

रियाझ खैराबादी

तेरा गुलशन वो गुलशन, जिस पे जन्नत की फझा सदके
मेरा खिरमन[७] वह खिरमन, जिस पर अंगारे बरसते हैं

आझाद अन्सारी

जन्नत इक चीज है सही लेकिन
हश्र[८] तक इन्तझार क्या मानी ?

जोश मलसियानी

गम रहा उनका जो दोझख[९] में पड़े जलते हैं
मेरे खुश होने का जन्नत में भी सामाँ न हुआ

दत्तात्रय 'कैफी'

अब मैं समझा मुराद जन्नत से
आप जिस राह से गुझर जायें

असर लखनवी

---

१. प्रिय की गली, २. बाग ३. गवाह ४. शराब पीना ५. मधुशाला ६. कब्र ७. खलिहान ८. कयामत ९. नरक

जिसने लाखों को मुफ्त शाही[1] दे दी
क्या हमसे बहिश्त[2] की वह कीमत लेगा ?

आसी उल्दनी

तुझे ये नाझ कि जन्नत की भीक माँगूंगा
मुझे ये जिद कि तकाझा[3] मेरा उसूल[4] नहीं

मन्झूर अहमद

निकलना खुल्द[5] से आदम[6] का सुनते आये थे लेकिन
बहुत बे-आबरु हो कर तेरे कूचे[7] से हम निकले

गालिब

कुर्बां[8] हो जिसके हुस्न पे सौ जन्नतें 'कतील'
नझरों के सामने वो नझ्झारा[9] है इन दिनों

कतील शिफाई

बहुत सैर की बागे-जन्नत की हमने, मगर कुछ मझा ज़िन्दगी का न देखा
किसी दिल में दर्दे-मोहब्बत न पाया, किसी दिल में दागे-तमन्ना न देखा

जोश मलिहाबादी

क्यों न फिर्दोस[10] को दोझख[11] में मिला लें यारब[12]
सैर के वास्ते थोड़ी-सी जगह और सही

गालिब

शब[13] को मय खूब-सी पी, सुबह को तौबा कर ली
रिन्द[14] के रिन्द रहे, हाथ से जन्नत न गई

जलाल

---

१. बादशाहत २. जन्नत ३. तगादा ४. सिद्धान्त ५. जन्नत ६. पैगम्बर ७. गली ८. भेंट
९. दृश्य १०. जन्नत ११. नर्क १२. खुदा १३. रात्रि १४. शराबी

दोझख-ओ-जन्नत हैं अब मेरी नझर के सामने
घर रकीबों ने बनाया उनके घर के सामने

नसीम

इल्म[१] में भी सुरुर[२] है लेकिन
यह वह जन्नत है जिसमें हूर नहीं

ईकबाल

ऐ शैख, अगर खुल्द[३] की तारीफ यही है
मैं इस का तलबगार[४] कभी हो नहीं सकता

जोश मलसियानी

जन्नत में न मय है, न मुहब्बत, न जवानी
किस चीझ पे ईंसाँ बसर-औकात[५] करेंगे ?

अदम

खाना-पीना कुछ भी नहीं रक्खा है, प्यारे ?
जन्नत है और कोई बंदोबस्त नहीं

चिनु मोदी 'ईर्शाद'

जनाझा (अर्थी)

कहा मैंने मरता हूँ तुम पर तो बोले
निकलते न देखा जनाझा किसी का

जनाझे पर मेरे वो हँसकर यह बोले
ये लौटेंगे कब तक, कहाँ जा रहे हैं ?

---

१. ज्ञान २. आनंद, हलका नशा ३. स्वर्ग ४. चाहने वाला ५. समय व्यतीत करना

घर से निकलो तो सही, आँख से देखो तो सही
अकरिबा[१] आएँ हैं आशिक का जनाझा ले कर

दाग

खबर उनको हुई होगी अजब क्या गर चले आएँ
जनाझा ले चलो सू-ऐ-मझार[२] आहिस्ता-आहिस्ता

चल साथ कि हसरते-दिल-ए मरहूम[३] से निकले
आशिक का जनाझा है जरा धूम से निकले

फिदवी अझीमाबादी

जनाझे वालों, न चुपके कदम बढ़ाये चलो
उसीका कूचा[४] है, टुक करते हाय-हाय चलो

सोझ

वह घबराकर जनाझा देखने बाहर निकल आये
किसीने कह दिया मय्यत[५] जवाँ मालूम होती है

आये जो मेरी लाश पे वो तंज[६] से बोले
'अब हम हैं खफा तुमसे कि तुम हमसे खफा हो ?'

अमीर मीनाई

गम नहीं लिक्खूँ क्या मैं गम को, जश्न[७] लिखूँ क्या मातम[८] को
जो देखे हैं मैंने जनाझे क्या उनको बारात लिखूँ ?

जावेद अख्तर

काँधे पे उठाये हुए हस्ती का जनाझा
हम खानाबदोशों[९] की तरह धूम रहे हैं

अझीझ वारसी

---

१. सम्बन्धी २. कब्र की ओर ३. मृत हृदय की आकांक्षा ४. गली ५. लाश ६. व्यंग
७. त्योहार ८. शोक, सोग ९. घर का सामान लेकर भटकने वाले

ज़माना

कुछ तमाशा है, खेल है, क्या है
इक ज़माने को कत्ल कर बैठे

मौलाबख्श 'कल्क'

जहाँसे साथ ज़माने को लेके चलना था
वहीं पे छोड़ गई गर्दिशे-ज़माना[१] हमें

मोहसिन ऐहसान

जिनके आँगन में अमीरी का शजर[२] लगता है
उनका हर ऐब[३] ज़माने को हुनर लगता है

अंजुम रहबर

'अख्तर' यह गम के दिन भी गुझर जायेंगे यूँ ही
जैसे वो राहतों के ज़माने गुझर गये

अख्तर अंसारी

अँधेरे में थे जब तलक ज़माना साझगार[४] था
चिराग क्या जला दिया, हवा ही और हो गई

परवीन शाकिर

ज़माना देख चुका है, परख चुका है उसे
'कतील' जान से जाए पर ईल्तजा[५] न करे

कतील शिफाई

कोई तो फैझ[६] है, कोई तो बात है उसमें
किसीको दोस्त यूँ ही कब ज़माना रखता है

अंजुम रुमानी

---

१. संसार का चक्कर २. पेड़ ३. दोष ४. अनुकूल ५. निवेदन ६. दानशीलता, भलाई

अब न तुम वो रहे, न हम वो रहे
इत्तिफाकात[1] है ज़माने के

फिराक गोरखपुरी

ज़माने में सौ इन्किलाबात आये
मगर हम तो हर हाल में मुस्कुराये

अझीझ वारसी

तुम्हारे बस में अगर हो तो भूल जाओ मुझे
तुम्हें भुलाने में शायद मुझे ज़माना लगे

कैसर उल जाफरी

बच्चे दाना[2] हैं, ज़माने की खबर रखते हैं
बूढ़े कहते हैं कि बच्चों को पता ही क्या है

रियाझ मजीद

बुलबुल कहाँ, बहार कहाँ, बागबाँ कहाँ
वो दिन गुझर गये, वो ज़माना गुझर गया

सबा लखनवी

'हसन' मत याद कर उन सुहबतों को
सदा इक-सा नहीं रहता ज़माना

मीर हसन

ऐ 'शाद' जिनके साथ ज़माना बसर किया
अल्लाह ! अब वही मुझे पहचानते नहीं

शाद अझीमाबादी

क्या ज़माना था, कैसे दुश्मन थे ?
रात भर सुलह और दिन भर जंग

यगाना चंगेझी

---

१. आकस्मिक घटनायें २. बुद्धिमान

ज़माना साझियों[१] से बन्दा परवर ! हमको नफरत है
भरी महफिल में मुँह पर साफ कह देने की आदत है
जोश मलसियानी

किसका खयाल, कौन सी मंझिल नझर में है
सदियाँ गुझर गई कि ज़माना सफर में है
जिगर

हझार बार ज़माना इधरसे गुझरा है
नई नई सी है कुछ तेरी रहगुझर[२] फिर भी
फिराक़ गोरखपुरी

गुझरे हुए ज़माने का अब तझकिरा[३] ही क्या
अच्छा गुझर गया, बहुत अच्छा गुझर गया
हफीझ जालंधरी

मेरी उनकी रस्म-ए-उलफत[४] छुट गई
मुद्दतें गुझरी, ज़माना हो गया

न दो कदम भी ज़माना चला हमारे साथ
हमींको साथ में चलना पड़ा ज़माने के
कदीर रखनवी

मैं चुप बैठा हूँ और यह मालूम होता है
कि जैसे इक ज़माना कह रहा है दास्ताँ मेरी
आसी उलदनी

'मीर' साहब ज़माना नाजुक है
दोनों हाथों से थामिए दस्तार[५]
मीर

---

१. जमाने के साथ मेलजोल रखने वाले २. रास्ता ३. जिक्र, चर्चा ४. प्यार की रीति ५. पगडी

ज़माना साझियों[1] से मैं हमेशा दूर रहता हूँ
मुझे हर शख्स के दिल में उतर जाना नहीं आता
'बिस्मिल'

कायल खुदा का यूँ तो है, सारा ज़माना 'जोश'
कितना है एहतेरामे-खुदा[2] कुछ न पुछिए
जोश मलसियानी

तसकीन मुसीबत में देने को, यूँ तो ज़माना आता है
ऐसा भी कोई आता है जिसे, बिगड़ी को बनाना आता है
अलम मुझफ्फरनगरी

जब भी चाहेंगे ज़माने को बदल डालेंगे
सिर्फ कहने के लिए बात बड़ी है यारो
जाँनिसार अख्तर

सुनी एक भी बात तुमने न मेरी
सुनीं मैंने सारे ज़माने की बातें
अमीर

गुजर गया जो ज़माना उसे भूला ही दो
जो नक्श[3] बन नहीं सकता, उसे मिटा ही दो
अमजद इस्लाम

खिरामे नाझ[4] और उनका खिरामे नाझ ! क्या कहना ?
ज़माना ठोकरें खाता हुआ महसूस होता है
कतील शिफाई

---

१. जमाने के साथ मेलजोल रखने वाले २. ईश्वर में विश्वास ३. जो चित्रित किया हो
४. इठलाती हुई चाल

वो एक शख़्स कि मिलकर गया है मुझसे अभी
उस एक शख़्स को देखे हुए ज़माना हुआ

असर लखनवी

अब मुझको है करार[1] तो सबको करार है
दिल क्या ठहर गया कि ज़माना ठहर गया

सीमाब अकबराबादी

इसको नाकदरि-ए-आलम[2] का सिला कहते हैं
न रहे हम तो ज़माने ने बहुत याद किया

झफा[3] के नाम पे तुम क्यों सँभल के बैठ गये
तुम्हारी बात नहीं, बात है ज़माने की

मजरुह सुलतानपुरी

हमको मिटा सके ये ज़माने में दम नहीं
हमसे ज़माना खुद है, ज़माने से हम नहीं

जिगर

तब्लो[4] अलम[5] न पास हैं अपने, न मुल्को-माल[6]
हमसे खिलाफ होके करेगा ज़माना क्या ?

आतिश

नया ज़माना, नयी रौशनी, नये दस्तूर
कदीम[7] रस्मो-रिवाझ[8]-ए-कुहन[9] से भाग चलो

---

१. चैन २. दुनिया की बेकद्री ३. जुल्म ४. बड़ा ढोल ५. ध्वजा ६. राज्य और संपत्ति
७. पुराना ८. रीति रिवाज ९. पुराना

जहाँ चोट खाना, वहीं मुस्कुराना
मगर इस अदा से कि रो दे ज़माना

वामिक जौनपुरी

अपना ज़माना आप बनाते हैं अहले-दिल[१]
हम वो नहीं कि जिसको ज़माना बना गया

जिगर मुरादाबादी

ज़माने में उसने बड़ी बात कर ली
खुद अपने से जिसने मुलाकात कर ली

शेरी भोपाली

एक महरुम[२] चले 'मीर' हमीं आलम[३] से
वर्ना आलम को ज़माने ने दिया क्या क्या कुछ ?

मीर

मेरी खुशी तो मेरे गमों का लिबास है
लेकिन ज़माना इतना कहाँ गम-शनास[४] है ?

जब मैं था उदास तो दुनिया थी मुतमईन[५]
अब मैं हूँ मुतमईन तो ज़माना उदास है

आनंद नारायण 'मुल्ला'

किस-किसको बतायेंगे जुदाई का सबब[६] हम
तू मुझसे खफा है तो ज़माने के लिये आ

अहमद फराज़

ज़माने में भले हों आप गाफिल
ज़माना आप से गाफिल नहीं है

मुईन हसन जज़्बी

---

१. दिल वाले २. वंचित ३. संसार से ४. दु:खों का जानने वाला ५. संतुष्ट ६. कारण

ज़माने पे हँसे कोई कि रोये
जो होना है सो होता जा रहा है

जिगर

तुम क्या गये कि सारा ज़माना चला गया
वो रात दिन नहीं है, वो शामो-सहर[१] नहीं

मुहम्मद दीन तासीर

गले मिलकर वो रुख्सत[२] हो रहे हैं
मोहब्बत का ज़माना आ रहा है

जिगर मुरादाबादी

ज़माना हँस रहा है और मैं रो भी नहीं सकता
ये हालत ! किस कदर मजबूरियों की जिन्दगानी है

सेहर रामपुरी

ज़माना है कि गुझरा जा रहा है
ये दरिया है कि बहता जा रहा है

जलील मानिकपुरी

मुझे ज़माना बुरा कह रहा है, कहने दो
गरज[३] है तुमसे, ज़माने की तुमने खूब कही

जलील मानिकपुरी

दोस्त बन कर भी नहीं साथ निभाने वाला
वह अंदाझ है जालिम का ज़माने वाला

अहमद फराझ

क्यूँ ज़माने को दें 'फराझ' इल्जाम[४]
वो नहीं है तो बे-वफा[५] हैं हम

अहमद फराझ

---

१. सुबह और शाम २. बिदा ३. मतलब ४. दोष ५. दगाबाज

हम निकम्मे हुऐ ज़माने के
काम ऐसा सिखा दिया तूने

दाग़ देहलवी

अब न तुम वो रहे, न हम वो रहे
इत्तिफाकात है ज़माने के

फिराक

कभू करते थे मेहरबानी भी,
आह ! वो भी कोई ज़माना था

असर

ज़माना ही बुरा है, दूर क्यों जाओ, हमें देखो
जवाँ है और कोई वलवला[१] बाकी नहीं दिल में

जोश मलिहाबादी

और भी दु:ख हैं ज़माने में मुहब्बत के सिवा
राहतें और भी हैं वस्ल[२] की राहत के सिवा

फैझ अहमद 'फैझ'

हवादिस[३] से बचना बड़ी बुझदिली[४] है
ज़माने का हर गम उठाता चला जा

नज्मा तसदुक

ज़माने से आगे तो बढ़िये 'मजाझ'
ज़माने को आगे बढ़ाना भी है

मजाझ

---

१. उत्साह २. मिलन ३. दुर्घटना ४. कायरता

जवानी

कदम डगमगाऐ, नझर बहकी बहकी
जवानी का आलम है, सरशारियाँ[१] हैं

जिगर मुरादाबादी

जिक्र जब छिड़ गया कयामत का
बात पहुँची तेरी जवानी तक

फानी बदायूनी

मुँह फेर के यूँ गई जवानी
याद आ गया रुठना किसीका

जलील मानिकपुरी

अहदे-जवानी[२] रो रो काटा, पीरी[३] में ली आँखें मूँद
यानी रात थे बहुत जागे, सुबह हुई आराम किया

मीर

हाय जवानी, क्या क्या कहिये, शोर सरों में रखते थे
अब क्या है, वो अहद[४] गया, वो मौसम वो हंगाम[५] गया

मीर

ऐ हम-नफस[६], न पूछ जवानी का माजरा[७]
मौजे-नसीम[८] थी, इधर आई, उधर गई

तिलकचंद 'महरुम'

जी लिये चार दिन जवानी में
जवानी उम्र भर नहीं होती

---

१. मदमत्त २. युवावस्था ३. बुढ़ापा ४. ज़माना ५. समय ६. दोस्त ७. हकीकत
८. प्रात: समीर

इधर आँख झपकी, उधर ढल गई
जवानी भी इक धूप थी दोपहर की

ईबरत

मुझे कसम है मेरी दुःख भरी जवानी की
मैं खुश हूँ, मेरी मुहब्बत के फूल ठुकरा दो

साहिर लुधियानवी

हमारी उम्र से कुछ रोज घटते जाते हैं
कसम हुझूर न खाया करें जवानी की

मुहम्मद काझिम जावेद

कहा गुँचे[1] से मुरझाकर यह गुल ने
'हमेशा कब रहा जोबन किसीका'

दाग़

कहानी कहने वाले हाय ! क्यों जिकरे जवानी[2] है ?
जवानी की कहानी क्या ? जवानी खुद कहानी है

सीमाब अकबराबादी

छेड़ी जो मैंने तेरी जवानी की दास्ताँ
तारे, शराब, फूल, सुबू[3] मुस्कुरा दिये

नज्मा तसदुक

हया नहीं ज़माने की आँख में बाकी
खुदा करे कि जवानी तेरी रहे बेदाग़

ईकबाल

जो जाकर न आये वह जवानी देखी
जो आकर न जाये वह बुढ़ापा देखा

१. कली २. जवानी की चर्चा ३. मदिरा-घट

वो कुछ मुस्कुराना, वो कुछ झेंप जाना
जवानी अदाऐं सिखाती है क्या-क्या

बेखुद देहलवी

है जवानी खुद जवानी का सिंगार
सादगी गहना है इस सिन[१] के लिए

अमीर मीनाई

किस तरह जवानी में चलूँ राह पे नासेह
ये उम्र ही ऐसी है कि सुझाई नहीं देता

आगा शायर किज़िलबाश

लुत्फ[२] के दो एक दिन तफरीह[३] की इक आध रात
ऐ जवानी थी तेरी ले-दे के इतनी कायनात[४]

जोश मलिहाबादी

जवानी को बचा सकते तो हैं हर दाग़ से वाईझ[५]
मगर ऐसी जवानी को जवानी कौन कहता है ?

गले मिलने के इन काफिर हसीनों के यही दिन हैं
जवानी जब गले मिलती हो आकर के लड़कपन से

रियाझ खैराबादी

कुछ जवानी है अभी, कुछ है लड़कपन उनका
दो दगाबाझों के कब्ज़े में है जोबन उनका

मुनीर शिकोहाबादी

क्या कहिए किस तरह से जवानी गुझर गई
बदनाम करने आई थी बदनाम कर गई

दाग़

---

१. उम्र २. आनंद ३. खुशी ४. सृष्टि ५. उपदेशक

अहद-ए-पीरी में जवानी की उमंग
आह किस वक्त में क्या याद आया

इक अदा मस्ताना सर से पाँव तक छाई हुई
उफ तेरी काफिर जवानी जोश पर आई हुई

दाग़

मुअत्तर[1] साँस, चेहरा रश्के-गुल[2], मस्ती-भरी आँखें
जवानी है कि इक सैलाब-ए-रंगो-बू[3] की धारा है

ऐहसान दानिश

उम्र की जान जवानी में जवानी की है जाँ
बारह से बीस तक जो है वो साल अच्छा है

अमीर मीनाई

कहने लगते हैं जवानी की कहानी जो कभी
पहले हम देर तलक बैठ के रो लेते हैं

शाद अज़ीमाबादी

यही जब मिट गई, मरने से बदतर जिन्दगानी है
बशर[4] के वास्ते जो कुछ है दुनिया में जवानी है

बेखुद देहलवी

रहती है कब बहार-ए-जवानी[5] तमाम उम्र
मानिन्द-ए-बू-ए-गुल[6] इधर आई उधर गई

दाग़

हर तरफ फैली हुई है, चाँदनी ही चाँदनी
जैसे वो खुद साथ है, उनकी जवानी साथ है

मशदूम

---

१. सुगंधित २. फूल के लिए ईर्ष्या का कारण ३. रंग और सुगंध की बाढ़ ४. मनुष्य
५. यौवन की वसंत ६. फूल की सुगंध की तरह

क्या चाल यह निकाली होकर जवान तुमने
अब जब चलो हो दिल को ठोकर लगा करे है

मीर

कहते हैं उम्रे-रफता[१] कभी लौटती नहीं
जा मयकदे[२] से मेरी जवानी उठा के ला

अदम

जवानी ख्वाब की-सी बात है दुनिया-ए-फानी में
मगर यह बात किसको याद रहती है जवानी में

सीमाब अकबराबादी

बला है, कहर[३] है, आफत है, फितना[४] है, कयामत[५] है
हसीनों की जवानी को जवानी कौन कहता है ?

अर्श मलसियानी

घटा, सब्झा[६], सितारे, फूल सब अपनी जगह बरहक[७]
तेरी काफिर[८] जवानी, फिर तेरी काफिर जवानी है

माहिर-उल-कादरी

जवानी की जो मैं तारीफ करता हूँ तो कहते हैं
जवानी आज आई है, कयामत हूँ मैं बचपन से

मीर नासिर अली

गले में बाहें डाले चैन से सोना जवानी में
कहाँ मुम्किन फिर ऐसा ख्वाब देखूँ जिन्दगानी में

यगाना चंगेझी

---

१. बीती हुई आयु २. मैखाना, मधुशाला ३. आफत ४. उपद्रव करने वाला ५. प्रलय
६. हरियाली ७. उचित ८. बेदर्द

गलतफहमियों में जवानी गुझारी
कभी वो न समझे, कभी हम न समझे

सबा अकबराबादी

यूँ उठा करती है सावन की घटा
जैसे उठती हो जवानी झूम के

सीमाब अकबराबादी

क्या बताऊँ कि खुदा जाने जवानी क्या थी ?
जागते-जागते एक ख्वाब मगर देखा था

नसीम भरतपुरी

यह नौजवानी, यह नामुरादी[१]
छाई है मुँह पर यह मुर्दनी[२] क्या !

यगाना चंगेझी

बच जाय जवानी में जो दुनिया की हवा से
होता है फरिश्ता कोई, इन्साँ नहीं होता

रियाझ खैराबादी

बन जो कुछ बन सके जवानी में
रात तो थोड़ी है, बहुत है स्वाँग

मीर

पारसाई[३] और जवानी क्यूँ के हो
एक जगह आग पानी क्यूँ के हो

एकरंग

फिर आयेगा वो मुझसे बिछड़ने के वास्ते
बचपन का दौर फिर से जवानी में आयेगा

ईकबाल साजिद

---

१. बद किस्मती २. मृत्यु के समय होनेवाला चेहरे का विकार ३. सदाचार

कितनी जादूगर है जवानी
मिट्टी पर सोने का पानी

महबूब खिजाँ

कुछ ठंडी साँसें होती हैं, अश्कों में[1] रवानी[2] होती है
पूछे तो कोई मेरे दिल से क्या चीझ जवानी होती है

रामसरनलाल राही

देर-पा[3] है किस कदर 'साकिब' हसीनों का शबाब
उम्र भर अपनी जवानी की कसम खाते रहे

साकिब लखनवी

रात भी, नींद भी, कहानी भी
हाय ! क्या चीझ है जवानी भी !

फिराक गोरखपुरी

ज़िंदगी

ज़िंदगी का साझ[4] भी क्या साझ है
बज रहा है और बेआवाझ है

हयात अमरोही

ज़िंदगी ज़िंदादिली का नाम है
मुर्दा दिल खाक जिया करते हैं

नासिख

---

१ आँसू में २. प्रवाह ३. देर तक ठहरने वाला ४. वाद्य

चला जाता हूँ हँसता-खेलता मौज-ए-हवादिस[1] से
अगर आसानियाँ हों ज़िंदगी दुश्वार[2] हो जाए

असगर गाँडवी

न समझने की है यह बात, न समझाने की
ज़िंदगी उचटी हुई नींद है दीवाने की

फिराक गोरखपुरी

जबाँ खामोश आँखों में नमी[3] है
यही बस दास्तान-ए-ज़िंदगी[4] है

आजाद

ज़िंदगी की दूसरी करवट है मौत
ज़िंदगी करवट बदल कर रह गई

फानी बदायूनी

मौत से कब्ल[5] ज़िंदगी कैसी,
जी रहा हूँ, अभी खुशी कैसी

जोश मलिहाबादी

ज़िंदगी और ज़िंदगी की यादगार
पर्दा और पर्दे पे कुछ परछाईयाँ

असर लखनवी

न मसर्रत[6] से है, न गम से है
ज़िंदगी कशमकश[7] के दम से है

अदम

---

१. दुर्घटना क्रम २. मुश्किल ३. गीलापन ४. जिंदगी की कहानी ५. पहले
६. आनंददायक ७. खींचा-तानी

ज़िंदगी तेरे लिए मैंने बहुत रक्स[1] किया
अब यह हसरत है कि कभी तुझको नचा के देखूँ

नाझ

गुजरती है बशर की ज़िंदगी किन-किन खयालों में
जो ऐसा हो तो ऐसा हो, जो ऐसा हो तो ऐसा हो

नूह नारवी

ज़िंदगी मेरी थी लेकिन अब तो
तेरे कहने में रहा करती है

परवीन शाकिर

ये भी शायद ज़िंदगी की एक अदा है, दोस्तो
जिसको साथी मिल गया वो और तनहा हो गया

अफजल मिन्हास

एक पत्थर ज़िंदगी ने ताक कर मारा मुझे
चोट वो खायी कि सारा जिस्म दुहरा हो गया

अफजल मिन्हास

खुश्क[2] बातों में कहाँ है शैख कैफे ज़िंदगी
वह तो पीकर ही मिलेगा, जो मज़ा पीने में है

अर्श मल्सियानी

कल के बारे में ज्यादा सोचना अच्छा नहीं
चाय के कप से लबों का फासला है ज़िंदगी

विजय बाते

मौत का भी इलाज हो शायद
ज़िंदगी का कोई इलाज नहीं

फिराक गोरखपुरी

---

१. नृत्य २. सूखी

ज़िंदगी धूप छाँव है ऐ दोस्त,
गम से उक्ता के मुस्कुरा लेंगे

हैरत

ज़िंदगी की मैं हकीकत क्या कहूँ
रास मुजको आ गई परछाईयाँ

साजन पेशावरी

खत्म होगा न ज़िंदगी का सफर
मौत बस रास्ता बदलती है

साहिल

फिक्र-ए-दुनिया[१] और तुम्हारी याद में
एक मेरी ज़िंदगी भी बँट गई

सहर

अरे ओ ज़िंदगी पर रोने वालों कुछ खबर भी है
यही है ज़िंदगी तो ज़िंदगी देखी नहीं जाती

'शिफा'

'फानी' की ज़िंदगी भी क्या ज़िंदगी थी या रब
मौत और ज़िंदगी में कुछ फर्क चाहिए था

फानी बदायूनी

वो कहते हैं - 'मैं ज़िन्दगानी हूँ तेरी'
यह सच है तो इसका भरोसा नहीं है

आसी गाझीपुरी

कम से कम मौत से ऐसी मुझे उम्मीद न थी
ज़िंदगी तूने तो धोके पे दिया है धोका

फिराक गोरखपुरी

१. दुनिया की चिंता

मेरे ख़ुदा मुझे थोड़ी सी ज़िंदगी दे दे
उदास मेरे जनाझे से जा रहा है कोई

कमर

जब से सुना है मरने का नाम ज़िंदगी है
सर से कफन लपेटे कातिल को ढूँढ़ते हैं

आगा हश्र कश्मीरी

मेरी ज़िंदगानी का सौदा गराँ[१] है
घटे तो जियाँ[२] है, बढ़े तो जियाँ है

शाद अझीमाबादी

ज़िंदगी खुद क्या है 'फानी' यह तो क्या कहिये मगर
मौत कहते हैं जिसे वो ज़िंदगी का होश है

फानी बदायूनी

मुबारक ज़िंदगी के वास्ते दुनिया को मर मिटना
हमें मोत में भी ज़िंदगी मालूम होती है

जिगर मुरादाबादी

यही ज़िंदगी मुसीबत, यही ज़िंदगी मसर्रत[३]
यही ज़िंदगी हकीकत, यही ज़िंदगी फसाना

मुईन हसन जजबी

बहुत पहले से इन कदमों की आहट जान लेते हैं
तुझे ए ज़िंदगी हम दूर से पहचान लेते हैं

फिराक कोरखपुरी

ज़िंदगी भर की अजीयत[४] है यह जीना यारब
एक दो दिन की मुसीबत हो तो यह भी सह लें

अख़्तर अन्सारी

---

१. महँगा २. घाटा ३. खुशी ४. कष्ट

यह भी मुमकिन नहीं कि मर जाऐं
ज़िंदगी हाय कितनी जालिम है

अख्तर अन्सारी

क्या कहें इक दम[1] को क्या-क्या ज़िंदगी भर चाहिए
रहने को घर चाहिए, घर के लिए, जर चाहिए

मफतून

ज़िंदगी मौत बन गई लेकिन
मौत का फैसला नही होता

सनम

अब भी इक उम्र पे जीने का न अन्दाझ आया
ज़िंदगी छोड़ दे पीछा मेरा मैं बाझ आया

शाद अझीमाबादी

मौत ही इन्सान की दुश्मन नहीं
ज़िंदगी भी जान लेकर जायेगी

जोश मलिहाबादी

ज़िंदगी है अपने कब्झे में न अपने बस में मौत
आदमी मजबूर है और किस कदर मजबूर है

उम्मीद उमेठवी

न देखने की तरह हमने ज़िंदगी देखी
चराग बुझने लगा जब, तो रौशनी देखी

असर लखनवी

किसीके काम न आये तो आदमी क्या है ?
जो अपनी फिक्र में गुजरे वो ज़िंदगी क्या है ?

असर लखनवी

---

१. श्वास

तुम नहीं पास कोई पास नहीं
अब मुझे ज़िंदगी की आस नहीं

जिगर बरेलवी

हज़ार ऐश की सुबहें निसार हैं जिस पर
मेरी हयात में[१] ऐसी भी इक शबे-गम[२] है

मुहम्मद 'असर'

वाक़या[३] यह दोनों आलम में रहेगा यादगार
ज़िंदगानी मैंने हासिल की है मर जाने के बाद

अलम मुझफ्फरनगरी

ज़िंदगी इक हसीन धोका है
हमने सोचा है, हमने समझा है

अख्तर अन्सारी

ज़िंदगी तनहा सफर की रात है
अपने-अपने हौसले की बात है

जाँनिसार अख्तर

कौन-सा झोंका बुझा देगा किसे मालूम है
ज़िंदगी इक शम्मा-ए-रौशन[४] है हवा के सामने

आझाद

मता-ए-ज़िंदगी[५] के देने वाले ! ये तो समझा दे
कि इतना बोझ सर पे रख के ले जाना कहाँ होगा

आसी उल्दनी

---

१. जिंदगी में २. दु:ख की रात ३. घटना ४. सुलगती मोमबत्ती ५. जीवन रुपी दौलत

इस दौर में ज़िंदगी बशर[१] की
बीमार की रात हो गई है

फिराक

जब तक जिये, बिखरते रहे, टूटते रहे
हम साँस-साँस कर्ज़ की सूरत अदा हुए

निदा फाज़ली

मरना तो एक बार हुआ सहल भी मगर
जीना जिसे कहें कभी आसाँ न हो सका

नुशूर वाहिदी

उम्र भर रेंगते रहने की सजा है जीना
एक-दो दिन की अज़ीयत[२] हो तो कोई सह ले

साहिर लुधियानवी

हम तो बढ़ा रहे थे ताल्लुक[३] हयात[४] से
पर ज़िंदगी ने बात को क्या मुख्तसर[५] किया

अदम

जिन्दा हूँ इस तरह कि गमे-ज़िंदगी नहीं
जलता हुआ दिया हूँ, मगर रौशनी नहीं

बहज़ाद लखनवी

ज़िंदगी ये तो नहीं, तुझको सँवारा ही न हो
कुछ न कुछ हमने तिरा कर्ज़ उतारा ही न हो

जाँनिसार अख्तर

ज़िंदगी ! तुझको भुलाया है बहुत दिन हमने
वक्त ख्वाबों में गँवाया है बहुत दिन हमने

जाँनिसार अख्तर

---

१. मनुष्य २. पीड़ा ३. संबंध ४. जिंदगी ५. संक्षिप्त

हज़ार बार घड़ी भर में मीर मरते हैं
उन्होंने ज़िंदगी का ढब नया निकाला है

मीर

मुसलसल[१] मुसीबत, सरासर तबाही
मेरी ज़िंदगी अरे तौबा-तौबा

हरिचन्द अख्तर

जो छुपाने की थी वो बात बता दी मुझको
ज़िंदगी तूने बहुत सख्त सजा दी मुझको

सलमान अख्तर

ज़िंदगी ! अपनी कड़ी अब मुझे मिलती सी लगे
कोई इक बात किसी पिछले जनम की सी लगे

'तल्ख'

जो और कुछ नहीं तो कोई ताझा दर्द ही मिले
मैं एक ही तरह की ज़िंदगी से तंग आ गया

'नासिर' काझमी

कच्ची गागर फूट न जाए, नाजुक शीशा तूट न जाए
जीवन की पगडंडी पर चलता हूँ, ये एहसास लिए

'रिफअत' सरोश

ज़िंदगानी जिसको कहते हैं फरामोशी[२] है ये
ख्वाब है, गफलत है, सरमस्ती[३] है, बेहोशी है ये

ईकबाल

मुख्तसर[४] ये है हमारी ज़िंदगी
इक सुकूने-दिल[५] की खातिर उम्र भर तड़पा किए

शमीम करहानी

---

१. लगातार २. विस्मृति ३. मतवालापन ४. संक्षिप्त ५. मन की शांति

ये और बात है कि तअर्रुफ[१] न हो सका
मैं ज़िंदगी के साथ बहुत दूर तक गया
खुर्शीद अहमद 'जामी'

ऐश से क्यों खुश हुए, क्यों गम से घबराया किए
ज़िंदगी क्या जाने क्या थी और क्या समझा किए
मुईन हसन जझबी

एक मुअम्मा[२] है, समझने का, न समझाने का
ज़िंदगी काहे को है, ख्वाब है दीवाने का
फानी बदायूनी

ज़िंदगी यादे दोस्त है, यानी
ज़िंदगी है तो गम में गुज़रेगी
फानी

अजल[३] तो मुफ्त में बदनाम है जमाने में
कुछ उनसे पूछ जिन्हें ज़िंदगी ने मारा है
फैझ अहमद फैझ

मेरी तरह से कोई है, जो ज़िंदगी अपनी
तुम्हारी याद के नाम इंतिसाब[४] कर देगा
परवीन शाकिर

ज़िंदगी क्या जाने क्यों महसूस होता है मुझे
तुझसे पहले भी हो जैसे झहर यह चक्खा हुआ
सहबा अख्तर

१. पहचान २. पहेली ३. मौत ४. समर्पण

इस ज़िंदगी में अक्सर ऐसे भी दौर[१] आए
दिल खून रो रहा था और मैंने गीत गाए

महेशचंद्र नक्श

कहीं से ढूँढ़ के ला दे हमें भी ए गुले-तर[२]
वो ज़िंदगी जो गुझर जाये मुस्कराने में

आसी उलदनी

गर ज़िंदगी में मिल गए फिर इत्तफाक से[३]
पूछेंगे अपना हाल तेरी बेबसी[४] से हम

साहिर लुधियानवी

मैंने पूछा जो ज़िंदगी क्या है ?
हाथ से गिर के जाम टूट गया

मैं तो बस ज़िंदगी से डरता हूँ
मौत तो एक बार मारेगी

गुलझार

खामोश ज़िंदगी जो बसर कर रहे हैं हम
गहरे समंदरों में सफर कर रहे हैं हम

रईस अमरोहवी

बेच डाला हमने कल अपना झमीर[५]
ज़िंदगी का आखिरी जेवर[६] गया

राजेश रेड्डी

वो ज़िंदगी के कड़े कोस ! याद आता है
तिरी निगाहे करम का घना-घना साया

फिराक

---

१. दिनों का फेर २. तरो ताझा फूल ३. संयोग से ४. लाचारी ५. विवेक ६. गहना

सफर में कौन किसका ज़िंदगी भर साथ देता है
बिछड़ते सब हैं लेकिन कोई यूँ पागल नहीं होता

अख़्तर वामिक

गनीमत जान जीना आदमी का
भरोसा कुछ नहीं इस ज़िंदगी का

मीर अब्दुलहई

उजड़ी उजड़ी हर एक आस लगे
ज़िंदगी राम का बनवास लगे

जाँनिसार अख़्तर

लोग मरने के लिये ज़हर पिया करते हैं
ज़िंदगी तेरे लिये ज़हर पिया है मैंने

खलीलुर्रहमान आझमी

अजब तरह से गुझारी है ज़िंदगी हमने
जहाँ में रह के न कारे-जहाँ[१] को पहचाना

वझीर आगा

शामें किसीको माँगती हैं आज भी 'फिराक'
गो ज़िंदगी में यूँ मुझे कोई कमी नहीं

फिराक गोरखपुरी

ज़िंदगी जब्र-ऐ-मुसलसल[२] की तरह काटी है
जाने किस जुर्म की पाई है सझा, याद नहीं

सागर सिद्दीकी

बहारें लुटा दी, जवानी लुटा दी
तुम्हारे लिये ज़िंदगानी लुटा दी

जलील मानिकपुरी

---

१. सांसारिक कार्यकलाप २. लगातार सितम

ज़िंदगी है या कोई तूफान है
हम तो इस जीने के हाथों मर चले

ख्वाजा मीर दर्द

उम्र कटने को कटी पर क्या ही खारी में[१] कटी
दिन कटा फरियाद में और रात जारी में[२] कटी

अमीन मुर्शिदाबादी

कभी तो इन्सान ज़िन्दगी की करेगा इज़्ज़त
ये एक उम्मीद आज भी दिल में पल रही है

जावेद अख्तर

औरों का तजुरुबा[३] जो कुछ हो मगर हम तो 'फिराक'
तल्खी-ए-जीस्त[४] को जीने का मज़ा कहते हैं

फिराक गोरखपुरी

ज़िंदगी तूने मुझे कब्र से कम दी है जमीं
पाँव फैलाऊँ तो दीवार में सर लगता है

बशीर बद्र

तल्खियाँ[५], तनहाईयाँ[६], मायूसियाँ[७], नाकामियाँ[८]
बेमज़ा है ज़िंदगी, फिर भी जिये जाता हूँ मैं

जिया फत्तेहाबादी

ज़िंदगानी तवील[९] थी लेकिन
मौत के इंतज़ार में गुज़री

झरीना सानी

---

१. जिल्लत में २. रोने में ३. अनुभव ४. ज़िन्दगी की कटुता ५. कड़वाहट ६. एकलता ७. निराशा ८. असफलता ९. लंबी

ज़िंदगी नाम था जिसका, उसे खो बैठे हैं हम
अब उमीदों की फकत जल्वागरी[१] बाकी है

चकबस्त

किसे फिक्रे-आसाईशे-ज़िदगी[२] है
जरा सी रही है, बहुत कट गई है

सीमाब अकबराबादी

ज़िदगी तुझसे दूर रह कर मैं
काट लूँगी जिलावतन की तरह

परवीन शाकिर

मुफलिसी, फिक्र और बीमारी
आज की ज़िंदगी है एक जिहाद[३]

ईरफान हैदरी

मेरा तजुरबा[४] है कि इस ज़िंदगी में
परेशानियाँ ही परेशानियाँ हैं

हफीझ जालंधरी

किताबे-ज़िंदगी का हर वरक[५] इस तरह बिखरा है
खिझाँ में[६] जिस तरह शाखों से पत्ते टूट जाते हैं

मलका नसीम

मौत क्या ? एक लफ्झे-बेमानी[७]
जिसको मारा हयात[८] ने मारा

जिगर मुरादाबादी

---

१. तड़क भड़क २. ज़िंदगी के सुख की चिंता ३. युद्ध ४. अनुभव ५. पुस्तक का पन्ना
६. पतझड़ में ७. शब्द जिसका कोई अर्थ न हो ८. ज़िंदगी

कहीं सुबह हो गई, तो कहीं शाम हो गई
तेरे बगैर ज़िंदगी नाकाम[१] हो गई

वफा मेरठी

उधार माँग के लाये थे ज़िंदगी शायद
हुआ है सूद[२] चुकाने में वक्त सर्फ[३] मेरा

कैसर उल जाफरी

आप ही का ये फैझ[४] है वरना
ज़िंदगी इस कदर उदास न थी

शाद अझीमाबादी

आरझू भी, हसरत[५] भी, दर्द भी, मसर्रत[६] भी
सैंकडों हैं हंगामें[७], ज़िंदगी मगर तन्हा

ईकबाल सफीपुरी

कितनी लतीफ, कितनी हसीं, कितनी मुख्तसर[८]
इक नौ-शिगुफ्ता[९] फूल की नकहत[१०] है ज़िंदगी

शकील बदायूनी

मौत से बदतर नझर आई मुझे
ज़िंदगी को ज़िंदगी समझा था मैं

अर्श मल्सियानी

ज़िंदगी को सँभालकर रखिये
ज़िंदगी मौत की अमानत है

बिस्मिल सईदी

---

१. असफल २. ब्याज ३. खर्च ४. उपकार ५. इच्छा ६. खुशी ७. तूफान ८. अल्प ९. नया खिला हुआ १०. खुशबू

तंग आ चूके हैं कश्मकशे[१] ज़िंदगी से हम
ठुकरा न दे जहाँ को कहीं बेदिली से हम

साहिर लुधियानवी

ज़िंदगी खारज़ार[२] में गुज़री
जुस्तजू-ए-बहार[३] में गुज़री

झरीना सानी

इब्तिदा[४] से ज़िंदगी का तो यही दस्तूर है
कैसे मिलती हमको मोहलत मुस्कुराने के लिये

दिलदार

मुद्दत हुई है दर्द का दमा[५] किये हुए
एहसासे-ज़िंदगी को गुलिस्ताँ[६] किये हुए

अदम

वो आये हैं पशेमाँ[७] लाश पर अब
तुझे अय ज़िंदगी लाऊँ कहाँ से ?

मोमिन

मुसीबत और लंबी ज़िदगानी
बुजुर्गों की दुआ ने मार डाला

मुज़्तर खैराबादी

साथ भी छोड़ा तो कब, जब सब बुरे दिन कट गये
ज़िंदगी तूने यहाँ आकर दिया धोखा मुझे

नातिक गुलावटी

---

१. खींचा-तानी २. कँटीली जगह ३. वसंत की खोज ४. शुरुआत ५. इलाज ६. बाग
७. लज्जित

दुनियाने दाग़दार[१] बना दी है ज़िंदगी
कोना जरा सा मैला जो चादर का हो गया

शहाब मुरादाबादी

ज़िंदगी एक हादसा[२] है, और ऐसा हादसा
मौत से भी खत्म जिसका सिलसिला[३] होता नहीं

जिगर मुरादाबादी

ज़िंदगी इक आँसुओं का जाम था
पी गये कुछ और कुछ छलका गये

मजाझ लखनवी

बताना जरा रास्ता मयकदे का
मैं गुझरी हुई ज़िंदगी ढूँढ़ता हूँ

खुमार बाराबंकवी

हिचकियों पर हो रहा है ज़िंदगी का राग खत्म
झटके देकर तार ज़ोड़े जा रहे हैं साझ के

नातिक गुलावटी

मौत जब तक नझर नहीं आती
ज़िंदगी राह पर नहीं आती

जिगर मुरादाबादी

ज़िंदगी बैठी थी अपने हुस्न पर फूली हुई
मौत ने आते ही सारा रंग फीका कर दिया

हरिचन्द अख्तर

वक्त की लहरों से टकराते हुए बढ़ जाईये
फेर कर मुँह, ज़िंदगी का सामना मुमकिन नहीं

अहसान बिन दानिश

---

१. जिस पर धब्बा लगा हो २. दुर्घटना ३. क्रम

पाल ले इक रोग नादाँ ज़िंदगी के वास्ते
वरना सेहत के सहारे ज़िंदगी कटती नहीं

फिराक गोरखपुरी

नहीं ये ज़िंदगी एक दो कदम की
पड़ा है राह में सहरा का सहरा

जाफर शीराझी

अपनी वजहे-बरबादी सुनिये तो मज़े की है
ज़िंदगी से यूँ खेले, जैसे दूसरे की है

जावेद अख्तर

अपने तारीक[१] मकानों से तो बाहर झाँको
ज़िंदगी शमा लिये दर पे खड़ी है यारो

जाँनिसार अख्तर

आप आए ज़िंदगी में ज़िंदगी अच्छी लगी
आप जब रुखसत हुए तो मौत ही अच्छी लगी

कमर जलालाबादी

अपने माझी[२] को न रो ऐ दिल, कि हुस्ने-ज़िंदगी
तेरे माझी में नहीं है, तेरे मुस्तकबिल[३] में है

कुमार नरेश शाद

कुछ ईस कदर है गमे-ज़िंदगी से दिल मानूस[४]
खिझाँ[५] गई तो बहारों में दिल नहीं लगता

जिगर

---

१. अंधकारपूर्ण २. बीता समय ३. आने वाला समय ४. परिचित ५. पतझड़

तू जहाँ जायेगी मायूस[१] पलट आयेगी
ज़िंदगी कोई तेरा पूछने वाला ही नहीं

वाली आसी

तस्लीम[२] चीरादस्ती-ए-जौरे खिजाँ[३] मगर
वीरां नहीं है फिर भी गुलिस्ताने-ज़िंदगी

गोपाल मित्तल

इबादतों[४] के लिये फुर्सतें हैं लोगों को
हमें गुनाह भी करने को ज़िंदगी कम है

बिस्मिल सईदी

ज़िंदगी जब्र[५] है और जब्र के आसार नहीं
हाय ! इस कैद को ज़ंज़ीर भी दरकार नहीं

तमन्ना आबरु की हो अगर गुलझारे-हस्ती[६] में
तो काँटों में उलझ कर ज़िंदगी जीने की खू[७] कर ले

ईकबाल

बहुत कुछ हो चुकी है ज़िंदगी में खामियाँ पैदा
जरुरत है नये सर से हो फिर, बझमे-जहाँ पैदा

मैं बताउं फर्क नासेह[८] जो है मुझमें और तुझमें
मेरी ज़िंदगी तलातुम[९] तेरी ज़िंदगी किनारा

शकील बदायूनी

ज़िंदगी एक फकीर की चादर
जब ढके पाँव हमने, सर निकला

---

१. निराश २. हामी ३. पतझड़ के जुल्म मंजूर ४. बंदगी ५. अत्याचार ६. जिंदगी का बाग ७. आदत ८. उपदेशक ९. नदी या समुद्र की बड़ी-बड़ी तरंगे

की नहीं उम्र भर खता जिसने
उसने तौहीने-ज़िंदगी[1] की है

नरेशकुमार शाद

तू मेरी ज़िंदगी से भी कतरा के चल दिया
तुझको तो मेरी मौत पे भी इख्तियार था

पाई है बागे-जहाँ[2] में हमने गुल की ज़िंदगी
रंग बन कर आए हैं बू[3] बन के उड़ जायेंगे हम

आरज़ू लखनवी

ज़हर मिलता रहा, ज़हर पीते रहे, यूँ ही मरते रहे, यूँ ही जीते रहे
ज़िंदगी भी हमें आजमाती रही, और हम भी उसे आजमाते रहे

तुम हमारी ज़िंदगी, पर ज़िंदगी की क्या उम्मीद ?
तुम हमारी जान लेकिन क्या भरोसा जान का ?

जौक

जितनी बढ़ती है, उतनी घटती है
ज़िंदगी आप ही आप कटती है

ख्वाजा मीर दर्द

किस तरह तुमको बना लूँ मैं शरीके-ज़िंदगी[4] ?
मैं तो अपनी ज़िंदगी का बार[5] उठा सकता नहीं

साहिर लुधियानवी

---

१. जिंदगी की बेइज्जती २. दुनिया का बाग ४. खुशबू ८. जीवन का हिस्सेदार ५. बोझ

तेरे दीदार की क्या खाक तमन्ना होगी
ज़िंदगी भर तेरी तस्वीर से बातें की है

बलबीर सिंह 'रंग'

'फानी' की ज़िंदगी भी क्या ज़िंदगी थी यारब[१]
मौत और ज़िंदगी में कुछ फर्क चाहिए था

फानी बदायूनी

झुल्फ (बालों की लट)

झुल्फों वालों, ये अन्धेर
दोहरे दोहरे काले नाग

आझाद अंसारी

बिखेर दें जो वो झुल्फों को अपने मुखड़े पर
तो मारे शर्म के आई हुई घटा फिर जाये

मुसहफी

तुम्हारी झुल्फ खुद दिल माँग लेगी
ये चोटी किस लिए पीछे पड़ी है

नसीम भरतपुरी

चोरी कहीं खुले न नसीमे-बहार[२] की
खुश्बू उड़ा के लाई है गेसूए-यार[३] की

आगा हश्र काश्मीरी

---

१. हे खुदा २. वसंत समीर ३. प्रितयमा की लट

गई थी कह के कि लाएगी झुल्फें यार की बू[1]
फिरी, तो बादे-सबा[2] का दिमाग भी न मिला

जलाल

किसने भीगी हुई झुल्फों से ये झटका पानी
झूम के आई घटा, टूट के बरसा पानी

आरझू

नसीमे सुबह[3] बूए गुल से क्या इतराती फिरती है
जरा सूँघे शमीमे झुल्फ[4], खुश्बू इसको कहते हैं

अकबर ईलाहाबादी

शमीमे-तुर्रए-गेसूए-यार[5] लाया हूँ
मैं अपने साथ चमन की बहार लाया हूँ

ईब्राहिम नज्म नदवी

ये भीनी-भीनी सी मस्त खुश्बू, ये हल्की-हल्की सी दिलनशीं[6] बू
यहीं कहीं तेरी झुल्फ के पास कोई परवाना जल रहा है

अदम

वो झुल्फें दोश[7] पर बिखरी हुई हैं
जहाने-आरझू[8] थर्रा रहा है

जिगर मुरादाबादी

न जिया तेरी चश्म[9] का मारा
न तेरी झुल्फ का बँधा छूटा

सौदा

---

१. खुश्बू २. पूर्व से आने वाली हवा ३. सुबह की हवा ४. लट की खुश्बू ५. प्रेयसी की लटों की खुश्बू ६. मोहक ७. कंधा ८. ख्वाहिशों की दुनिया ९. आँख

मैं सोचता हूँ जमाने का हाल क्या होगा
अगर ये उलझी हुई झुल्फ तूने सुलझाई

अहमद राही

इजाझत हो तो मैं तस्दीक[१] कर लूँ तेरी झुल्फों से
सुना है ज़िंदगी इक खूबसूरत दाम[२] है साकी

अदम

बिखरी हुई वो झुल्फ इशारे में कह गई
मैं भी शरीक हूँ तेरे हाल-ए-तबाह[३] में

जलील मानिकपुरी

सुब्ह दम झुल्फें न यूँ बिखराईए
लोग धोका खा रहे हैं शाम का

शरर बलियाबी

पूछा जो उनसे चाँद निकलता है किस तरह
झुल्फों को रुख पे डाल कर झटका दिया कि यूँ

आरझू लखनवी

यह कहकर सितमगर ने झुल्फों को झटका
बहुत दिन से दुनिया परीशाँ नहीं है

इधर तुमने झुल्फें हवा में बिखेरीं
उधर घिर के काली घटा छा गई

अब तक इन आँखों के आगे वो बाल घनेरे फिरते हैं
इक दिन उसने नैन मिलाके शर्मा के, मुख मोड़ा था

'आबिद'

---

१. तय करना २. जाल ३. बरबादी की स्थिति

देखने में तो भली मालूम होती है मगर
साँप बन जाती है उसकी झुल्फ बल खाने के बाद

'आझम'

गेसू रुख पर हवा से हिलते हैं
चलिए अब दोनों वक्त मिलते हैं

मिर्झा शौक लखनवी

ए दोस्त, तेरी झुल्फे-परीशाँ[१] की खैर हो
मेरी तबाहियों का न इतना खयाल कर

अदम

भला क्यों कर न हो रातों को नींदे बेकरार उसकी
कभी लहरा चुकी हो जिसपे झुल्फे-मुश्कवार[२] उसकी

अख्तर शीरानी

मिरी जवानी के गर्म लम्हों पे डाल दे गेसुओं का साया
ये दोपहर कुछ तो मोतदिल[३] हो, तमाम माहौल जल रहा है

अदम

ज़िंदगी की गर्म रातों में किसे आती थी नींद
इत्तिफाकन आपकी झुल्फें परीशाँ हो गईं

अदम

अभी 'अदम' क्या यकीन आए कि चाँदनी रात हो गई है
वो झुल्फ बिखरी तो दिन ढलेगा, वो चाँद निकला तो रात होगी

अदम

हम हुए, तुम हुए कि 'मीर' हुए
उसकी झुल्फों के सब असीर[४] हुए

मीर

---

१. बिखरे केशों की २. सुगंधित केश-राशि ३. संतुलित ४. कैदी

वो शामे-वस्ल[१] दुश्मन झुल्फ सुलझाते हैं रुक-रुक कर
उन्हें याद आ गई क्या गुत्थियाँ मेरे मुकद्दर[२] की ?

फानी बदायूनी

काफिर[३] गेसू वालों की रात बसर यूँ होती है
हुस्न हिफाझत करता है और जवानी सोती है

सागर निझामी

मैं न कहता था कि सुलझा लो ये झुल्फें-मुंतशिर[४]
अब तुम्हीं देखो ज़माना कितना उलझा जाए है

सलाम मछलीशहरी

उस झुल्फ का क्या कहना जो दोश[५] पे लहराई
सिमटी तो बनी नागिन, फैली तो घटा छाई

शफीक जौनपुरी

नींद उसकी है, दिमाग उसका है, रातें उसकी हैं
तेरी झुल्फें जिसके बाजू[६] पर परीशाँ हो गईं

गालिब

कहें न तुमसे तो फिर और जा के किससे कहें ?
सियाह[७] झुल्फ के सायों, बड़ी उदास है रात

फिराक गोरखपुरी

सावन तेरी झुल्फों से घटा माँग के लाया
बिजली ने चुराई है तड़प तेरी नजर से

शकील बदायूनी

हँस पड़े आप तो बिजली चमकी
बाल खोले तो घटा लौट गई

अमीर मीनाई

---

१. मिलन की शाम २. भाग्य ३. बेदर्द ४. बिखरे केश ५. कंधा ६. बाँह ७. काला

घर से हर वक्त निकल आते हो खोले हुए बाल
शाम देखो न मेरी जान सबेरा देखो

हसरत मोहानी

उलझा है पाँव यार का झुल्फे-दराझ[1] में
लो आप अपने दाम[2] में सैयाद[3] आ गया

मोमिन

चाँद से रुखसार[4] पे लहरा के आने दीजिए
कीजिए अँधेरा झुल्फों को परीशाँ छोड़कर

आतिश

बिखरे जो हसीं झुल्फ, बिखर जाने दो
इस वक्त को कुछ और सँवर जाने दो

हरिचन्द अख्तर

निकहते-खुल्दे-बरीं[5] फैल गई कोसों तक
वो नहाकर जो सूखाने लगे गेसू[6] अपना

शाद अझीमाबादी

वह जब तक कि झुल्फें सँवारा किया
खड़ा उस पे मैं जान वारा किया

मीर गुलाम 'हसन'

बड़े गुस्ताख[7] हैं, झुककर तेरा मुँह चुम लेते हैं
बहुत सा तूने जालिम गेसुओं को[8] सर चढ़ाया है

---

१. लंबे केश २. जाल ३. शिकारी ४. गाल ५. जन्नत जैसी सुगंध ६. बाल ७. अशिष्ट ८. बालों की लटों को

बिखरा के गेसू चाँद से चेहरे पे कहते हैं
लो, देख लो यह नक्श: है लैल-ओ-निहार[१] का

तस्कीन

देख कर आए हैं क्या आरिझ-ओ-गेसू[२] उनके
लोग हैरान परीशान चले आते हैं

नसीम

कौन खोलेगा तिरे दिल की गिरह[३] मेरे बाद
कौन सुलझाएगा उलझा हुआ गेसू तेरा

शाद अझीमाबादी

इस कदर झुल्फों को अपने सँवारे थे सनम
झुल्फ जो अब कयामत ढा गई तो क्या करुँ ?

अनवर आगेवान

जुस्तजू (तलाश, खोज)

अपनी ही खबर नहीं है हमको
बेकार किसी की जुस्तजू[४] है

जगमोहननाथ रैना शौक

हमें खुदा के सिवा कुछ नझर नहीं आता
निकल गए हैं बहुत दूर, जुस्तजू से हम

रियाझ खैराबादी

हौसला ये है कि हम ढूँढ़ निकालेंगे उन्हें,
और मालूम हमें नामों-निशां कुछ भी नहीं

शम्स अझीमाबादी

---

१. रात और दिन २. गाल और बाल ३. गाँठ ४. खोज, अन्वेषण

कल तक उसकी तलाश थी लेकिन
आज है अपनी जुस्तजू मुझको

दाग़

उसे ढूँढ़ते 'मीर' खोए गए
कोई देखे इस जुस्तजू की तरफ

मीर

दिल को होना था जुस्तजू में खराब
पास थी वरना मंझिले मकसूद[1]

मुईन हसन जझ्बी

पहले हस्ती[2] की जुस्तजू है जरूर
फिर जो गुम हो तो जुस्तजू न करे

असगर गोंडवी

पर्दा जब उठ गया है, देखा यही है अक्सर
अपनी ही आरझू में अपनी जुस्तजू की

जिगर मुरादाबादी

है जुस्तजू कि खूब[3] से खूबतर[4] कहाँ
अब ठहरती है देखिए जाकर नझर कहाँ

हाली

हुए जलील[5] तो इज़्ज़त की जुस्तजू क्या है
किया जो इश्क तो फिर पास-ए-आबरु[6] क्या है

तहसीन

गजब है जुस्तजू-ए-दिल का यह अंजाम हो जाना
कि मंज़िल दूर हो और रास्ते में शाम हो जाए

शेरी भोपाली

---

१. लक्ष्य २. अस्तित्व ३. उत्तम ४. उत्तम से बेहतर ५. अपमानित ६. सम्मान का विचार

इसी तलाशो तजस्सुम[१] में खो गया हूँ मैं
अगर नहीं हूँ तो क्योंकर, जो हूँ तो क्या हूँ मैं

जिगर मुरादाबादी

तेरा जमाल[२] है, तेरा खयाल है, तू है
मुझे ये फुर्सते-काविश[३] कहाँ कि क्या हूँ मैं

असगर गोंडवी

खुदा ही जाने 'यगाना' मैं कौन हूँ, क्या हूँ
खुद अपनी जात पे शक दिल में आये हैं क्या-क्या

यगाना चंगेझी

न कुछ फना[४] की खबर है न है बका[५] मालूम
बस एक बेखबरी है, सो वो भी क्या मालूम

असगर गोंडवी

जहाँ अफसानए हस्ती[६] में है उलझा हुआ 'अख्तर'
हकीकत पर्दए-असरार[७] में गुम होती जाती है

अली अख्तर

मंझिल की जुस्तजू से पहले किसे खबर थी
रस्तों के पेच[८] होंगे और रहनुमा[९] न होगा

आझाद अंसारी

नहीं मुझे जुस्तजू-ए-मंझिल[१०] कि खुद है मंझिल मेरी तलब में[११]
कोई तो मुझको बुला रहा है, किसी तरफ को तो जा रहा हूँ

वहशत कलकतवी

---

१. खोज २. सौंदर्य ३. तलाश का अवकाश ४. विनाश ५. अस्तित्व ६. अस्तित्व की कथा ७. भेदों का पर्दा ८. चक्कर ९. पथ प्रदर्शक १०. लक्ष्य की खोज ११. खोज में

जमाने में उसने बड़ी बात कर ली
खुद अपने से जिसने मुलाकात कर ली

शेरी भोपाली

अपने मन में डूब कर पा सुरागे-ज़िंदगी[१]
तू अगर मेरा नहीं बनता, न बन, अपना तो बन

इकबाल

ढूँढ़ता फिरता हूँ अय 'इकबाल' अपने आप को
आप ही गोया[२] मुसाफिर, आप ही मंझिल हूँ मैं

इकबाल

फर्श ता अर्श[३] कोई नामो-निशाँ मिल न सका
मैं जिसे ढूँढ़ रहा था, मेरे अंदर निकला

अहसान बिन दानिश

जो मौका मिल गया तो खिज्र से[४] यह बात पूछेंगे
जिसे हो जुस्तजू अपनी वो बेचारा किधर जाए

जोश मलिहाबादी

तलाशो-जुस्तजू की सरहदें जब खत्म होती है
खुदा मुझको नझर आने लगा इन्साने-कामिल[५] में

अलम

ज़िंदगी की राहतें मिलती नहीं, मिलती नहीं
ज़िंदगी का झहर पीकर जुस्तजू में घूमिये

मजीद अमजद

---

१. जीवन का रहस्य २. याने ३. झमीन से आसमाँ तक ४. एक पैगम्बर जो भूले भटकों के मार्गदर्शक हैं ५. पूर्ण मानवी

सुनो, यहाँ से मेरे दोस्तों इजाज़त दो
मुझे तलाश में अपनी रवाना होना है

रउफ 'खैर'

हम तुझसे किस हवस[१] की फलक[२] जुस्तजू करें
दिल ही नहीं रहा है जो कुछ आरझू करें

ख्वाजा मीर 'दर्द'

उठाए जा के कहाँ लुत्फे-जुस्तजू[३] कोई
जगह वो कौन सी है, तू जहाँ नहीं होता

अझीझ लखनवी

गो[४] मैं हूँ तुझसे दूर, तिरी आर्झू तो है
तेरा पता मिले, न मिले, जुस्तजू तो है

वहशत कलकतवी

फलक[५] ने भूल-भूलैयों में डाल रखा था
हम उनको ढूँढ़ते या अपनी जुस्तजू करते

यास यगाना चंगेझी

है जुस्तजू अगर उसको, इधर भी आयेगा
निकल पड़ा है तो फिर, मेरे घर भी आयेगा

इफ्तिखार नसीम

बहुत ढूँढ़ा उसे फिर भी न पाया
अगर पाया, पता अपना न रहा

गालिब

१. कामना २. आकाश ३. खोज का आनंद ४. यद्यपि ५. आकाश

तुझको पा लेने में यह बेताब[1] कैफियत[2] कहाँ ?
ज़िंदगी वह है जो तेरी जुस्तजू में कट गई

अफसर मेरठी

नहीं नहीं हमें अब तेरी जुस्तजू भी नहीं
तुझे भी भूल गये हम तेरी ख़ुशी के लिए

झेहरा निगाह

इक उम्र जुस्तजू में गुजारी तो ये खुला
वो मेरे पास था, मैं जिसे ढूँढ़ता रहा

रशीद कैसरानी

आह किसकी जुस्तजू आवारा[3] रखती है तुझे
राह तू, रहरौ[4] भी तू, रहबर भी तू, मंझिल भी तू

इकबाल

तुझे ढूँढ़ता हूँ तेरी जुस्तजू है
मझा है कि खुद गुम हुआ चाहता हूँ

मजाझ

तकदीर और तदबीर (भाग्य और पुरुषार्थ)

तदबीर से किस्मत की बुराई नहीं जाती
बिगड़ी हुई तकदीर बनाई नहीं जाती

दाग़

१. बेचैन २. हाल ३. व्यर्थ भटकने वाला ४. यात्री

देख 'फानी' वो तेरी तदबीर[१] की मैयत[२] न हो
एक जनाझा[३] जा रहा है दोश[४] पर तकदीर के

फानी बदायूनी

नसीब जब मिरा अच्छा था तकदीर अच्छी थी
मिरी हर बात अच्छी थी, हर इक तदबीर अच्छी थी

जफर

जिनको मिल जाएं हसीन चाँद सी सूरत वाले
ऐसे भी होंगे चमकती हुई किस्मत वाले

मकतून

नादान गुमाँ तकदीर पे क्या तकदीर बिगड़ती बनती है
जा रख दे सर उस दर पे जहाँ तकदीर बिगड़ती बनती है

वस्ल[५] की बनती हैं इन बातों से तदबीरें कहीं ?
आरझूओं से फिरा करती हैं तकदीरे कहीं ?

हसरत मुहानी

खुदा तौफीक[६] देता है जिन्हें वो यह समझते हैं
कि खुद अपने ही हाथों से बना करती हैं तकदीरें

अफसर मेरठी

मिट नहीं सकता मिटाने से लिखा तकदीर का
बस नहीं चलता है कुछ तकदीर पर तदबीर का

इज्जतो-शोहरत सभी कुछ मुझको हासिल है 'फिराक'
दोस्त भी मिलने को मिल सकता है किस्मत चाहिए

फिराक गोरखपुरी

---

१. युक्ति २. मृत्यु ३. अर्थी ४. कंधा ५. मिलन ६. शक्ति

मैं तो समझा था कि लौट आते हैं जाने वाले
तूने जाकर तो जुदाई मेरी किस्मत कर दी

अहमद नदीम कासमी

सब कुछ दे के हँस दी और फिर कहने लगी तकदीर
कभी न होगी पूरी तेरे दिल की एक उमंग

शबनम शकील

क्या इसलिए तकदीर ने चुनवाए थे तिनके
बन जाए नशेमन तो कोई आग लगा दे

मिलते ही किसीके खो गये हम
जागे जो नसीब[१], सो गये हम

तपिश लाहोरी

मुखालिफ[२] बख्त[३] हो तो काम बन-बन कर बिगड़ता है
सफीना[४] जा पड़ा मझधार में टकरा के साहिल[५] से

बिस्मिल आरवी

वाये[६] किस्मत ! वो भी कहते हैं बुरा
हम बुरे सबसे हुए जिनके लिये

अमीर मीनाई

शिकायत क्या तेरी ऐ बागबाँ किस्मत की खूबी है
उसी डाली को काटा जिस पे मेरा आशियाना था

बेताब अझीमाबादी

पस्त हिम्मत[७] रोते रहते हैं सदा तकदीर को
साहबे हिम्मत[८] हमेशा करते हैं तदबीर को

राझी

---

१. भाग्य २. विरुद्ध ३. भाग्य ४. नौका ५. किनारा ६. दु:ख, चिन्ता, कष्ट वगैरह का सूचक अव्यय ७. हिम्मत हारा हुआ ८. हिम्मत रखने वाला

मैं कहता था इन्सान की तकदीर नहीं तो कुछ भी नहीं
हिम्मत बढ़कर बोल उठी - तदबीर नहीं तो कुछ भी नहीं
तालिब बनारसी

नहीं चलता किसीका बस करें गो[१] लाख तदबीरें
वही बात आएगी आगे जो किस्मत में लिखी होगी
'शाह'

जिसमें कोशिश हो सो उसका काम बिगड़ता है वही
दुश्मनी है मेरी तकदीर को तदबीर के साथ
बेखुद देहलवी

लाख तदबीर करे कोई तो क्या होता है
वही होता है जो मंझूरे-खुदा होता है

किस्मत की खूबी देखिए, टूटी कहाँ कमंद[२]
दो चार हाथ जब कि लबे-बाम[३] रह गया
'कायम' चाँदपुरी

किस्मत में जो लिखा है वह आएगा आप से
फैलाइये न हाथ, न दामन पसारिए
आतिश

हाँ, हाँ मगर ऐ दोस्त, तू तदबीर किये जा
यह भी तेरी तकदीर के दफतर में लिखा है
पं.दत्तात्रय 'कैफी'

उलट जाती हैं तदबीरें, पलट जाती हैं तकदीरें
अगर ढूँढ़े नई दुनिया तो इन्सां पा ही जाता है
फिराक गोरखपुरी

---

१. यद्यपि २. रस्सी ३. अटारी का किनारा

जिनका सदियों से अँधेरा ही मुकद्दर[1] ठहरा
उनके आँगन में भी इक दीप जला दे कोई
खलील धनतेजवी

मेरी किस्मत से खेलने वाले
मुझको किस्मत से बेखबर कर दे
फैझ अहमद फैझ

हमसफर[2] छोड़ गये मुझको तो क्या ?
साथ मेरे मेरी तकदीर तो है
शकील बदायूनी

होते हैं बड़े किस्मत के धनी जो ये सदमें सह जाते हैं
तूफाने-हवादिस[3] में वरना अच्छे-अच्छे बह जाते हैं
अंजुम रिझवानी

तकदीर देखिये तो नहीं बूँद भी नसीब
और प्यास देखिये तो समंदर की प्यास है
अझीझ कैसी

उदू[4] भी, वाए किस्मत[5], बझमे-मातम[6] में है साथ उनके
हमारे फूलों में कम्बख्त इक कांटा भी शामिल है
अमीर मीनाई

कैसे पाया था तुझे, फिर किस तरह खोया तुझे
मुझ सा मुंकिर[7] भी तो काईल[8] हो गया तकदीर का
अहमद फराझ

---

१. भाग्य, किस्मत २. मित्र ३. दुर्घटना का तूफान ४. दुश्मन ५. हाय रे भाग्य ६. शोक सभा ७. इन्कार करने वाला ८. मानने पर मजबूर

किस्मत से ही लाचार हूँ ऐ ‘जौक’ वगर्ना
हर फन[१] में हूँ ताक[२], मुझे क्या नहीं आता ?

जौक

अक्ल से क्या पूछता आफत को सर पर देखकर
वह तो खुद चकरा गई, किस्मत का चक्कर देखकर

जोश मलसियानी

अपनी तकदीर को रोते रहें साहिल वाले[३]
जिनको आना था वो मँझधार तक आ पहुँचे हैं

कतील शिफाई

इसे मैं नसीब जानूँ कि बशर[४] की खुद फरेबी[५]
कोई भर रहा है दामन, कोई खाक छानता है

कतील शिफाई

अपने हाथों की लकीरों में बसा ले मुझको
मैं हूँ तेरा तो नसीब, अपना बना ले मुझको

कतील शिफाई

हम भी मौजूद थे तकदीर के दरवाझे पर
लोग दौलत पे गिरे, हमने वतन माँग लिया

कतील शिफाई

खींच ली खुद ही लकीरें हमने अपने हाथ पर
किसको फुर्सत थी कि हाथों का मुकद्दर[६] देखते ?

गुलाम जीलानी असगर

---

१. कला २. होशियार ३. किनारे वाले ४. मानव ५. आत्म प्रवंचना ६. भाग्य

आके पत्थर तो मिरे सहन[१] में दो चार गिरे
जितने उस पेड़ के फल थे पस-ए-दीवार[२] गिरे

शकेब जलाली

दिल के बहलाने की तदबीर तो है
तू नहीं है, तेरी तसवीर तो है

एक पत्थर की भी तकदीर सँवर सकती है
शर्त ये है कि सलीके से तराशा जाये

मंजूर नदीम

कितना है बदनसीब 'झफर' दफ्न के लिये
दो गज़ ज़मीन भी न मिली कू-ए-यार[३] में

बहादुरशाह झफर

हम ख्वाब में वहाँ पहुँचे, तदबीर इसे कहते हैं
वो नींद से चौंक उठ्ठे, तकदीर इसे कहते हैं

मेरी बिगड़ी को भी या रब[४], बना देगा तो जानूँगा
बनाने को बनाया आस्माँ तूने, झमीं तूने

जोश मलसियानी

यह तेरी किस्मत ने काँटे बो दिये, ऐ अन्दलीब[५]
बेतरह उलझा हुआ है तेरा दामन फूल में

जोश मलसियानी

दिल में है दर्द, दाग़ कलेजे में, लब पे आह
'साईल' को जो नसीब से मिलता गया, लिया

साइल देहलवी

---

१. आँगन २. दीवार के पीछे ३. यार की गली ४. खुदा ५. बुलबुल

मिलना न मिलना यह तो मुकद्दर[१] की बात है
तुम खुश रहो, रहो मेरे प्यारे, जहाँ कहीं

आगा शायर किज़िलबाश

वो करते हैं सब छुपकर, तदबीर इसे कहते हैं
हम धर लिये जाते हैं, तकदीर इसे कहते हैं

अमजद हैदराबादी

तुम्हारे दर से तो खाली कोई गया ही नहीं
हमें भी अपना मुकद्दर सँवार लेने दो

जमील मलिक

परवाने कर चुके थे सर-अंजामे-खुदकशी[२]
फानूस आड़े आ गया, तकदीर देखना

यगाना चंगेझी

बुरी सरिश्त[३] न बदली जगह बदलने से
चमन में आके भी काँटा गुलाब हो न सका

आरझू लखनवी

उनके घर में चाँद और तारे, अपने घर में आग
अपनी-अपनी किस्मत प्यारे, अपना-अपना भाग

पाशा रहमान

'कतील' अपना मुकद्दर[४] गम से बेगाना[५] अगर होता
तो फिर अपने पराए हमसे पहचाने कहाँ जाते ?

कतील शिफाई

मेरी किस्मत ही में लिखी थी तबाही ऐ दोस्त
है शिकायत मुझे अपने की, न बेगाने की

अझीज वारिसी

---

१. किस्मत २. आत्महत्या का प्रयत्न ३. भाग्य ४. किस्मत ५. पराया

मेरा सर और तेरा दर[1]
धन मेरी किस्मत, धन मेरे भाग,

आझाद अंसारी

तुम मेरी बात बनाने का इरादा तो करो
इसके आगे मेरी तकदीर बने या न बने

अदीब मालीगाँवी

यावरी[2] देखिये नसीबों की
दोस्त भी हो गये मेरे दुश्मन

मीर दर्द

नतीजा एक ही निकला कि थी किस्मत में नाकामी
कभी कुछ कह के पछताये, कभी चुप रह के पछताये

आरझू लखनवी

यह मुमकिन है कि लिक्खी हो कलम ने फतह आखिर में
जो हैं अहबाबे-हिम्मत[3], गम नहीं करते शिकस्तों[4] में

शाद अझीमाबादी

ओ वादा-फरामोश[5] किधर भूला पड़ा आज
तकदीर हमारी, जो यह सूरत नझर आई

रौशन

ऐ कातिब-ए-तकदीर[6] मुझे इतना बता दे
क्यूँ मुझसे खफा है तू, क्या मैंने किया है ?

आरझू लखनवी

गर नहीं तेरे मुकद्दर में खुशी तो गम न कर
शाद[7] हो इस बात पर यहाँ हर कोई नाशाद[8] है

वझीर आगा

---

१. द्वार २. करिश्मा ३. हिम्मत के धनी ४. हार ५. वादा भूलने वाला ६. भाग्य लिखने वाला ७. प्रसन्न ८. खिन्न

तनहाई (ऐकलता)

अनजाने लोगों को हर सू[१] चलता-फिरता देख रहा हूँ
कैसी भीड़ है फिर भी खुद को कबसे तन्हा देख रहा हूँ
असरार जैदी

दिल की तनहाई का मुझको खुद भी अंदाजा नहीं
ये एक ऐसा घर है जिसका कोई दरवाजा नहीं
कतील शिफाई

बेचैन 'कतील' उन बिन इक हम ही नहीं तनहा
उनको भी जरुरत है, हम चाहने वालों की
कतील शिफाई

तुम नहीं, गम नहीं, शराब नहीं
ऐसी तनहाई का जवाब नहीं
सइद राही

हाय 'कतील' इस तनहाई में क्या सूझी है मौसम को
जिस दिन से वह पास नहीं, उस दिन से बादल छाए हैं
कतील शिफाई

आज तनहा हूँ तो कितना अजनबी माहौल है
एक भी रास्ते ने तेरे शहर में रोका नहीं
अमजद इस्लाम अमजद

कभी-कभी तनहाई में यूं लगता है
जैसे किसीका हाथ है मेरे शानों पर[२]
नझीर कैसर

---

१. चारों तरफ २. कंधों पर

जब पास न था कोई, तू पास रही मेरे
अल्लाह तुझे रख्खे खुश, ऐ मेरी तनहाई

हाफिझ अनवर कामटवी

तुमने तो थक के दश्त[१] में खेमे[२] लगा दिये
तनहा कटे किसीका सफर तुमको इससे क्या ?

परवीन शाकिर

शजर उदास है, चिड़ियों के चहचहे गुमसुम
कि तेरे बाद ये तनहा सी ज़िंदगानी है

कहा मैंने तनहाई में बात सुन लो
कहा हँस के तुमको तो सौदा हुआ है

नसीम देहलवी

इसी दिल की किस्मत में तन्हाइयाँ थीं
कभी जिसने अपना पराया न जाना

फिराक गोरखपुरी

तनहाई के अब दिन हैं, तनहाई की अब रातें
अब होने लगीं उनसे खलवत[३] में मुलाकातें

जौहर

गौर से सुनकर तेरी तन्हाइयों की दास्ताँ
सर झुकाकर देर तक, जानिए, सोचा किए

नझीर बनारसी

यूँ तो तनहाई में घबराये बहुत
मिल के लोगों से भी पछताये बहुत

वकील अख्तर

१. जंगल २. तंबू ३. एकांत

न मिट सकेंगी ये तनहाइयाँ मगर ऐ दोस्त
जो तू भी हो तो तबीयत जरा बहल जाए

मजरूह सुल्तानपुरी

यादों के दरीचों[1] से तुझे जब भी पुकारा
तन्हाई के टूटे हुए पत्थर निकल आये

आदिल मन्सूरी

जो थोड़ी देर न आता खयाले-तन्हाई
तुम्हारे शहर की हद से निकल गये होते

जमील नज़र

अँधेरे ले गया साया भी छीन कर मेरा
निगल लिया मुझे तन्हाईयों के सहरा ने

सहबा अख्तर

काँप उठती हूँ मैं यह सोच के तन्हाइ में
मेरे चेहरे पर तेरा नाम न पढ़ ले कोई

परवीन शाकिर

तनहाई में तो फूल भी चुभता है आँख में
तेरे बगैर गोशा-ए-गुलझार[2] क्या करूँ

अनवर शउर

सारी दुनिया हमें पहचानती है
कोई हम-सा भी न तन्हा होगा

अहमद नदीम कासमी

---

१. खिड़की २. बाग का ऐकांत

तुम से बिछड़ कर जिंदा है
जान ! बहुत शर्मिंदा है

इफ्तिखार आरिफ

जिनकी नझदीकी में हमने काट दी तनहाईयाँ
ढूँढ़ते हैं उनसे मिलने का बहाना आजकल

बलबीरसिंह रंग

तेरे जलवों ने[१] मुझे घेर लिया है ऐ दोस्त
अब तो तनहाई के लमहें[२] भी हसीं होते हैं

सीमाब अकबराबादी

''कह, 'निझाम' अब क्या तेरे जी में है, कह दे मुझसे
हाय ! पूछे वो कभी मुझसे यह तनहा होकर

निझाम रामपुरी

रात भर चाँद की ठंड़क में सुलगता है बदन
कोई तनहाई के दोजख से निकाले मुझको

मुहसिन ऐहसान

देखिये तो है कारवाँ, वर्ना
हर मुसाफिर सफर में तनहा है

जमील नझर

बारिश में क्या तन्हा भीगना लड़की !
उसे बुला, जिसकी चाहत में तेरा तन-मन भीगा है

परवीन शाकिर

---

१. रुप की शोभा ने २. क्षण

मुर्गे-दिल[१] तेरी जुदाई में पड़ा तड़पे है
उसको क्या हुकम है, आझाद करूँ या न करूँ ?

आझाद मुर्शिदाबादी

जुदा किसीसे किसीका गरज हबीब[२] न हो
ये दाग़ वो है कि दुश्मन को भी नसीब न हो

नझीर अकबराबादी

अकेला सुबह तक तड़पा मरीजे-शामे-तनहाई[३]
न वो आये, न चैन आया, न मौत आई, न नींद आई

सिदक जायसी

बेखबर अन्जुमने-नाझ[४] में सोने वाले !
रात भर तुझको पुकारा मेरी तनहाई ने

आसी उलदनी

यूँ तो कटी हैं सैकडों रातें फिराक[५] की
लेकिन कुछ आज शाम से नकशा ही और है

शोहरत बुखारी

कोई अफसाना छेड़ तनहाई
रात कटती नहीं जुदाई की

फिराक गोरखपुरी

कोई आये शबे-तनहाई में
तेरी बातों में लगा दे मुझको

सइद कैस

---

१. दिल का पंछी २. मित्र ३. वियोग की शाम का रोगी ४. नाझ की महफिल ५. वियोग

आ, मेरे काटे अब नहीं कटतीं
बेवफा ! तेरे हिज्र की घड़ियाँ

असर लखनवी

शायद उसने मुझको तन्हा देख लिया है
दु:ख ने मेरे घर का रास्ता देख लिया है

परवीन शाकिर

तमन्ना

अभी ज़िंदा हूँ लेकिन सोचता रहता हूँ खिलवत[१] में
कि अब तक किस तमन्ना के सहारे जी लिया मैंने

साहिर लुधियानवी

हर इक दाग़े-तमन्ना को कलेजे से लगाता हूँ
कि घर आई हुई दौलत को ठुकराया नहीं जाता

मखमुर देहलवी

जो तमन्ना दिल में थी वो दिल में घुट कर रह गई
उसने पूछा भी नहीं, हमने बताया भी नहीं

सिराझ लखनवी

तमन्नाओं में उलझाया गया हूँ
खिलौने दे के बहलाया गया हूँ

शाद अझीमाबादी

१. एकांत

जब तक मिले न थे तो जुदाई का था मलाल[१]
अब ये मलाल है कि तमन्ना निकल गई

जौफ

मिल गया था सुकूँ[२] निगाहों को
की तमन्ना तो अश्क भर आए

ज़ोहरा निगाह

कितनी मुद्दत गुजरी, उनसे रब्ते-तमन्ना[३] टूट चुका
सामने अब भी आते हैं जब, धक से जी हो जाता है

गुलाम रब्बानी ताबाँ

पहले कुछ और थे अरमान मरीझे-गम[४] के
अब तो बस एक तमन्ना है कि आराम न हो

अंदलीब शादानी

तर्के-दुनिया भी करुँ, तर्के-तमन्ना[५] भी करूँ
तौबा-तौबा यह मुसीबत मुझे मंजूर नहीं

जोश मलसियानी

उनसे हम तर्के-तगाफुल[६] का तकाजा न करें
इसका मतलब है कि जीने की तमन्ना न करें

जोश मलसियानी

मेरी यह ज़िन्दगी है कि मरना पड़ा मुझे
इक और ज़िन्दगी की तमन्ना लिये हुए

हफीझ जालंधरी

---

१. दु:ख २. चैन ३. प्यार का संबंध ४. गम के बीमार ५. तमन्ना का त्याग ६. उपेक्षा के त्याग का

है कामयाब वही इस जहाने-फानी[१] में
जो बेनियाजे-तमन्ना[२] है ज़िन्दगानी में

अलम मुझफ्फरनगरी

कहते हैं कि उम्मीद पे जीता है ज़माना
वो क्या करे, जिसको कोई उम्मीद नहीं है

आसी उल्दनी

तुम जो पूछो कि तमन्ना क्या है
मैं ये सोचूँ, मुझे कहना क्या है

मुश्फिक ख्वाजा

ज़िंदगी आ तुझे कातिल के हवाले कर दूँ
मुझसे अब खूने-तमन्ना[३] नहीं देखा जाता

शकील बदायूनी

कमबख्त कभी जी से गुजरने नहीं देती
जीने की तमन्ना मुझे मरने नहीं देती

नूह नारवी

लिपट जाओ आकर गले से हमारे
यही है तमन्ना, यही मुद्दआ है

हसन

अब किसके आगे दस्त-ए-तमन्ना[४] करें दराज[५]
वो हाथ सो गया है सरहाने धरे धरे

मेहर

---

१. नाशवंत दुनिया २. तमन्ना की जिसे कामना न हो ३. ख्वाहिशों का कत्ल
४. इच्छारुपी हाथ ५. फैलाना

अगर कुछ थी तो बस यह थी तमन्ना आखिरी अपनी
कि तुम साहिल[1] पे होते और कश्ती[2] डूबती अपनी

हसरतें दिल की मुझसे रो भी चुकीं देर हुई
आप अब पूछते हैं, मेरी तमन्ना क्या है ?

असर लखनवी

इस जगह लाई है अब तेरी तमन्ना मुझको
देख सकता हूँ मैं दुनिया को, न दुनिया मुझको

कदीर लखनवी

कब हमने गुलिस्ताँ चाहा था, कब हमने बहारें माँगी थीं
एक गुल की तमन्ना थी हमको, वो भी तो चमन में पा न सके

परवीन फना सैयद

मैं तुमसे क्या कहूँ दिल की तमन्ना
तुम्हारा दिल भी कुछ कहता तो होगा

हसन आबिद

सिवा इसके कोई तमन्ना नहीं है
फकत आपको देखना चाहते हैं

नीता चाँद

नज़अ[3] में उसने इस अंदाज से देखा मुझको
मरते-मरते हुई जीने की तमन्ना मुझको

सालिक

---

१. किनारा २. नौका ३. मरते समय साँस तोड़ना

अब तमन्ना तो कोई दिल में नहीं
मगर इक इज्तिराब[१] बाकी है

असर सहबाई

कहते हैं जीते हैं उम्मीद पे लोग
हमको जीने की भी उम्मीद नहीं

ग़ालिब

जिनसे कोई उम्मीद न थी उनसे क्या उम्मीद ?
जिनसे उम्मीद थी वो दगा दे गये मुझे

हफीझ जालन्धरी

तमन्ना है यही 'अख्तर' कि खामोशी से जल जाऊँ
मुजस्सिम इश्क[२] बन जाउँ, मैं शम्मा बन के जल जाऊँ

'अख्तर' बेगम कुरैशी

एक कूजे में समा जाएगा दरिया क्यों कर
किस तरह रख के लिफाफे में तमन्ना भेजूँ ?

अदा जाफरी

तेरे दिल की तमन्ना भी करूँ तो किस भरोसे पर
मैं खुद दरगाह[३] में तेरी ये तोहफा[४] ला नहीं सकता

गोपाल मित्तल

नझर आती नहीं दिल में तमन्ना कोई
बाद मुद्दत के तमन्ना मेरी बर[५] आयी है

हाली

पी लिया करते हैं जीने की तमन्ना में कभी
डगमगाना भी जरुरी है सँभलने के लिए

वामिक जौनपुरी

---

१. बेचैनी २. साकार प्रेम ३. मजार ४. सौगात ५. पूर्ण

हम तुम मिले न थे तो जुदाई का था मलाल[१]
अब ये मलाल है कि तमन्ना निकल गई

जलील मानिकपुरी

तर्के-तमन्ना से ये सच है, यासो[२] अलम[३] से छूटे हम
शौक[४] का कारोबार नहीं तो खाली खाली लगता है

अब घर भी नहीं, घर की तमन्ना भी नहीं है
मुद्दत हुई, सोचा था कि घर जाएँगे एक दिन

'साकी' फारूकी

उनकी याद, उनकी तमन्ना, उनका गम
कट रही है ज़िन्दगी आराम से

शकील बदायूनी

हम अहले गम[५] की तमन्ना ही क्या, निगाह तेरी
न हो तो खैर, अगर हो सके तो अच्छा है

फिराक गोरखपुरी

नाकामे-तमन्ना-दिल[६] इस सोच में रहता है
यूँ होता तो क्या होता, यूँ होता तो क्या होता ?

चिराग हसन हसरत

---

१. दु:ख २. निराशा ३. दु:ख ४. लालसा ५. शोक वाले ६. कामनाओं में असफल दिल

यासो-उम्मीद[1] से काम न निकला
दिल की तमन्ना दिल में रही
तर्के-तमन्ना[2] कर न सके,
इझहारे-तमन्ना[3] हो न सका

फानी बदायूनी

जब कश्ती साबितो-सालिम[4] थी साहिल[5] की तमन्ना किसको थी
अब ऐसी शिकस्ता[6] कश्ती पर साहिल की तमन्ना कौन करे ?

मोईन हसन जझबी

एक बार सुनी थी सो मेरे दिल में है मौजूद
ऐ जाने-तमन्ना[7] तेरी तकरीर[8] अभी तक

हसरत मोहानी

न पूछ आह दुनिया तिरी अंजुमन से
तमन्नाए क्या-क्या लिए जा रही हूँ

शायरा:

उम्मीद वक्त का सबसे बड़ा सहारा है
जो हौसला हो तो मौजों में भी किनारा है

सबा अफघानी

निगाहे-शौक[9] थी शायद निगाहे आखिरी[10] अपनी
कि उनके जाते ही नब्जे-तमन्ना[11] छुट गयी अपनी

माहिर-उल कादरी

---

१. आशा-निराशा २. कामना का त्याग ३. इच्छा का बयान ४. पूर्ण साबूत ५. तट ६. टूटी हुई ७. तमन्नाओं का प्राण ८. भाषण ९. इच्छापूर्ण नज़र १०. आखिरि दृष्टि ११. लालसाओं की नाड़ी

वो भी है एक मुकामे-इश्क जहाँ
हर तमन्ना गुनाह होती है

जिगर मुरादाबादी

अब न वो हैं न वो तू है न वो माजी[1] है 'फराज'
जैसे दो शख्स तमन्ना के सराबों में[2] मिले

अहमद फराझ

ना-मुरादी[3] का ये आलम है कि अब याद नहीं
तू भी शामिल था कभी मेरी तमन्नाओं में

अहमद फराझ

अजल[4] ने मुँह पे मुँह रखकर दमे-आखिर[5] कहा मुझसे
'इधर तो देख, आँखें खोल, मैं तेरी तमन्ना हूँ'

बेखुद देहलवी

हमारी ही तमन्ना क्यों करो तुम ?
तुम्हारी ही तमन्ना क्यों करे हम ?

जोन इलिया

आईना टूट के बिखरा है तमन्नाओं का
किरचियाँ चुनते हुए उम्र गुझर जायेगी

सलाहुद्दीन नदीम

अब तो यह तमन्ना है किसीको भी न देखूँ
सूरत जो दिखा दी है तो ले जाओ नज़र भी

असगर गोण्डवी

---

१. भूतकाल २. मृगतृष्णा में ३. दुर्भाग्य ४. मृत्यु ५. आखिरी साँस

तर्के-उम्मीद[1] बस की बात नहीं
वरना उम्मीद कब बर आती[2] है ?

कुछ मुझे जुरअत[3] हुई कुछ उनकी आँखें झुक गईं
होते-होते यूँ ही इझहारे-तमन्ना[4] हो गई
'हफीझ' होशयारपुरी

तमन्ना दर्दे-दिल की हो तो कर खिदमत फकीरों की
नहीं मिलता ये गौहर[5] बादशाहों के खज़ानों में
ईकबाल

अब तो इस राह से वो शख्स गुजरता भी नहीं
अब किस उम्मीद पे दरवाजे से झाँके कोई
परवीन शाकिर

तबस्सुम (स्मित)

गुल उनका तबस्सुम[6] चुराने लगे हैं
सबा[7] उनका पैगाम[8] लाने लगी है
बेगम नैयर

मुद्दत के बाद एक तबस्सुम मिला हमें
वो भी कुछ ऐसा तल्ख[9] कि आँसू निकल पड़े
अदम

---

१. तमन्ना का त्याग २. पूर्ण होना ३. हिम्मत ४. तमन्ना जाहिर होना ५. मोती
६. मुस्कुराहट ७. प्रभात के समय चलने वाली पूरब की हवा ८. संदेश ९. कडुवा

यूँ देख के मुझको मुस्कुराना
फिर तुमको मैं बेखबर कहूँगा

निझाम रामपुरी

ये उदास उदास चेहरा, ये हसीं हसीं तबस्सुम
तेरी अंजुमन में शायद कोई आईना नहीं है

शकील बदायूनी

तबस्सुम उनके लब पर एक दिन वक्ते-अताब[१] आया
उसी दिन से हमारी ज़िंदगी में इन्किलाब[२] आया

नातिक लखनवी

हाय वो तेरे तबस्सुम की अदा वक्ते-सहर[३]
सुबह को तारों ने अपनी जान तक कर दी निसार[४]

मुइनहसन जज्बी

तुम तो निगाह फेर के नाझ[५] से मुस्कुरा दिए
शीश-ए-आरझू[६] मगर टूट के क्या से क्या हुआ

असर सहबाई

सबब खुला ये हमें, उनके मुँह छिपाने का
उड़ा न ले कोई अंदाज मुस्कुराने का

दाग़

हर मुसीबत का दिया एक तबस्सुम से जवाब
इस तरह गर्दिशे-दौरां को रुलाया मैंने

फानी बदायूनी

---

१. आवेश के समय २. परिवर्तन ३. प्रात:काल ४. निछावर ५. गर्व ६. इच्छाओं का शीशा

आखिरी टीस आजमाने को
जी तो चाहा था मुस्कुराने को

अदा जाफरी

मैं कभी न मुस्कुराता जो मुझे ये इल्म[१] होता
कि हजार गम मिलेंगे मुझे इक खुशी से पहले

फैयाझ हाश्मी

किसी मासूम बच्चे के तबस्सुम में उतर आओ
तो शायद ये समझ पाओ, खुदा ऐसा भी होता है

जफर गोरखपुरी

हौसले फिर बढ़ गये, टूटा हुआ दिल जुड़ गया
उफ यह जालिम मुस्कुरा देना खफा होने के बाद

आरझू लखनवी

वो तो कुछ मुस्कुरा के हो गये चुप
एक उलझन में पड़ गया हूँ मैं

आरझू लखनवी

इक तबस्सुम, इक नजर, इक हर्फ,[२] कुछ कम तो नहीं
कौन देता है किसीके दिल की कीमत इस कदर ?

जाँनिसार अख्तर

खुद उनकी आँखों से आँसू निकल पड़े आखिर
वो अपने एक तबस्सुम का बोझ उठा न सके

खामोश गाजीपुरी

यूँ मुस्कुराए जान सी कलियों में पड़ गई
यूँ लब-कुशा[३] हुए कि गुलिस्ताँ बना दिया

असगर गोंडवी

१. ज्ञान २. शब्द ३. होठ खोले

मुस्कुराने का यही अंदाज था
जब कली चटकी तो वो याद आ गये

क्या पूछते हो हमसे तबस्सुम की लज्जतें[१]
हमको तो मुस्कुराए जमाना गुझर गया
आरिफ-उल-कादिरी

मेरा जो हाल हो सो हो, बर्के-नजर[२] गिराए जा
मैं यूँ ही नालाकश[३] रहूँ, तू यूँ ही मुस्कुराए जा
जिगर मुरादाबादी

हमने एक हसरते-तबस्सुम को
कितने आँसू पिला के पाला है
अदीब

हाथ में ले जामे-मय[४] उसने जो मुस्कुरा दिया
अक्ल को सर्द कर दिया, रूह को जगमगा दिया
असगर गोंडवी

घर से मस्जिद बहुद दूर है, चलो यूँ कर लें
किसी रोते हुए बच्चे को हँसाया जाए
निदा फाजली

जिस तरह आप मुस्कुराते हैं
ऐसे कोई कली नहीं खिलती
मुनव्वर लखनवी

सितम भी करता है, उसका सिला[५] भी देता है
कि मेरे हाल पे वह मुस्कुरा भी देता है
मुश्फिक ख्वाजा

---

१. खुशी २. नज़रों की बिजली ३. आर्तनाद ४. शराब का प्याला ५. बदला

तूने खुद अपने तबस्सुम से जगाया है जिन्हें
उन तमन्नाओं का इजहार[१] करूँ या न करूँ ?

साहिर लुधियानवी

फूलों की बहार और सितारों की जवानी
हर चीज तेरे मस्त तबस्सुम पे लुटा दी

नजमा तसद्दुक

ये कौन ज़ेरे ज़मीं[२] इसको गुदगुदाता है
कि मुस्कुराती हुई हर कली निकलती है

आगा शायर देहलवी

अपने चेहरे पे तबस्सुम के उजाले रखना
सारे गम दिल में सँभाले रखना

आ गया कुछ याद, दिल भर आया, आँसू गिर पड़े
हम न रोये थे तुम्हारे मुस्कुराने के लिए

दाग़

अजब हौसला हमने गुँचों का देखा
तबस्सुम पे सारी जवानी लूटा दी

जलील मानिकपुरी

बिजलियों ने सीख ली उनके तबस्सुम की अदा
रंग जुल्फों का चुरा लाई घटा बरसात की

सबा अफगानी

उसने जब मुस्करा के देख लिया
तम्कनत[३] रह गई धरी की धरी

सिकंदर अली वज्द

१. प्रकट करना २. धरती के नीचे ३. गर्व, घमंड

बेहतर तो यही है हँसता रह, तू कोह[१] है, खुद को काह[२] न कर
यह बन न पड़े तो कम से कम, खामोश ही रह, आह न कर

जोश

एक तबस्सुम में किया खल्क[३] को सारी तस्खीर[४]
मुस्कुराना है तेरा या कि कोई अफसूँ[५] है

जियाउद्दीन 'जिया'

गजब वो देखना नीची नजर से
सितम वो मुस्कुराना मुँह फिरा कर

निझाम शाह रामपुरी

गुजर रहा है इधर से तो मुस्कुराता जा
चिरागे-मजलिसे-रूहानियाँ[६] जलाता जा

जोश मलिहाबादी

ये तो ठीक है कि तेरी जफा[७] भी है एक अता[८] मेरे वास्ते
मेरी हसरतों की[९] कसम तुझे, कभी मुस्कुरा के भी देख ले

आनंद नारायण 'मुल्ला'

लो तबस्सुम भी शरीके-निगाहे-नाझ[१०] हुआ
आज कुछ और बढ़ा दी गई कीमत मेरी

फानी बदायूनी

औरों को कम मुझीको ताज्जुब बहुत हुआ
आया है गर लबों पे तबस्सुम कभी कभी

---

१. पहाड़ २. तिनका ३. दुनिया ४. मुग्ध ५. जादू ६. कल्पनानगर के निवासियों की सभा के दीपक ७. जुल्म ८. देन ९. तमन्नाओं की १०. नाझभरी दृष्टि में शामिल

अरे ओ पूछने वाले सबब[१] मेरे न हँसने का
मुझे रोना भी अब मुद्दत हुई आता है मुश्किल से

जोश मलिहाबादी

समझे न थे कि एक दिन ऐसा भी आएगा
हँसने पे अपने आप ही रोया करेंगे हम

उमीद उमेठवी

इतना रोया हूँ गमे-दोस्त जरा सा हँस कर
मुस्कुराते हुए लम्हात[२] से जी डरता है

नईम हसन

तुम्हारे लब हैं बागे-हुस्न[३] के फूल
तबस्सुम उनकी नाजुक पंखुरी है

अमीर मीनाई

हमारा तुम्हारा अजब हाल है
नज़र मिल गई, मुस्कुराने लगे

करीम फज़ली

सुकूँ[४] मिला न तबस्सुम मुझे कभी दम भर
तमाम उम्र मेरे साथ हादसात[५] चले

तबस्सुम

एक ऐसा भी वक्त होता है
मुस्कुराहट भी आह होती है

जिगर

आपसे हमको रंज ही कैसा
मुस्करा दीजिए सफाई से

जोश

---

१. वजह २. क्षण ३. खूबसूरती का बाग ४. शांति ५. दुर्घटनाऐं

मुलाकात की कौन-सी है यह सूरत
न तुम मुस्कराये, न हम मुस्कराये

बाकी

जान लेनी थी साफ कह देते
क्या जरूरत थी मुस्कराने की

अनवर

दिल में तूफान हो गया बरपा[१]
तुमने जब मुस्करा के देख लिया

साजन पेशावरी

शामिल नहीं हैं जिसमें तेरी मुस्कराहटें
वो ज़िंदगी किसी भी जहन्नुम से कम नहीं

बस एक लतीफ[२] तबस्सुम, बस एक हसीन नजर
मरीजे-दिल[३] की ये हालत सम्हल तो सकती है

सलाम मछली शहरी

एक पर्दा है गमों का जिसे कहते हैं खुशी
हम तबस्सुम में नेहाँ[४]-अश्के-रवाँ[५] देखते हैं

अख्तर शिरानी

अब और इसके सिवा चाहते हो क्या 'मुल्ला'
ये कम है, उसने तुम्हें मुस्कुरा के देख लिया

आनंद नारायण 'मुल्ला'

नमक भरकर मेरे जख्मों में तुम क्या मुस्कुराते हो
मेरे जख्मों को देखो, मुस्कुराना इसको कहते हैं

बेखुद देहलवी

---

१. पैदा २. कोमल ३. दिल का रोगी ४. छिपा हुआ ५. बहते आँसू

कहा मैंने गुल को है कितना सबात[1]
कली ने ये सुन कर तबस्सुम किया

मीर

मेरे लबों का तबस्सुम तो सबने देख लिया
जो दिल पे बीत रही है वो कोई क्या जाने ?

ईकबाल शफीपुरी

वो आप अपनी नजर में समाए जाते हैं
सँवरते जाते हैं और मुस्कुराए जाते हैं

मुज्तर मुझफ्फरपुरी

दो चार लफ्ज कह के मैं खामोश हो गया
वो मुस्करा के बोले, बहुत बोलते हो तुम

अहमद 'बर्क'

एक हल्का-सा तबस्सुम एक गहरा सा खुमार
हाये वो आँखें कि तारे देखते हों कोई ख्वाब

जाँनिसार अख्तर

जबसे मेरी आँखों में तेरी जल्वागरी[2] है
दुनिया मेरे नजदीक तबस्सुम से भरी है

जिगर मुरादाबादी

मोमीनो, लाख जन्नतें कुरबाँ
एक बच्चे की मुस्कुराहट पर

फिराक गोरखपुरी

हँसते हुए फूलों पे नजर है, मगर इनमें
हम तेरे तबस्सुम की अदा ढूँढ़ रहे हैं

जमन्ना जलाली

---

१. स्थिरता २. रूप की शोभा

कुछ हो लेकिन ये मेरी आदत है
जब वो आएँ तो मुस्कुरा देना

जोश मलिहाबादी

तसल्ली (दिलासा, आश्वासन)

ये तो नहीं कहता कि सचमुच हो इन्साफ
झूठी भी तसल्ली हो तो जीता ही रहूँ मैं

सौदा

जाओ भी, अब न दो मुझे झूठी तसल्लियाँ
मर जाएँगे तड़प के तुम्हारी बला से हम

हफीझ जौनपुरी

यूँ तसल्ली दे रहे हैं हम दिले-बीमार को
जिस तरह थामे कोई गिरती हुई दीवार को

कतील शिफाई

कुंजे-तनहाई में देता हूँ दिलासे क्या-क्या
दिले-बेताब को मैं, और दिले-बेताब मुझे

जौफ

देते क्या-क्या हैं दिलासे शबे-फुर्कत में[१] बहम[२]
दिले-बीमार को मैं और दिले-बीमार मुझे

मुहम्मद हुसैन आझाद

१. विरह की रात में २. परस्पर

तसल्ली खाक हो वादों से उनकी चितवनें उनकी
इशारों से ये कहती हैं कि देखो यूँ मुकरते हैं

अमीर मीनाई

जिन्हें उसने लिक्खा है हर्फ़े-तसल्ली[१]
वो कमबख्त बरसों तड़पते रहे हैं

दाग़

तितली (पतंगा)

मेरी गिरिफ्त[२] में आकर निकल गयी तितली
परों के रंग मगर रह गये हैं चुटकी में

शिकेब जलाली

आज भी शायद कोई फूलों का तोहफा[३] भेज दे
तितलियाँ मँडला रही हैं काँच के गुलदान पर

शिकेब जलाली

काँटों में घिरे फूल को चूम आएगी लेकिन
तितली के परों को कभी छिलते नहीं देखा

परवीन शाकिर

कोई कागज न था लिफाफे में
सिर्फ तितली का एक पर निकला

बशीर बद्र

धूप में शजर चमके
तितलियों के पर चमके

१. दिलासे का शब्द २. पकड़ ३. सौग़ात

दर्द

जो मेरे दर्द को सुनकर भी न रोया होगा
मुझसे ज्यादा वो मेरा हाल समझता होगा
झफर गोरखपुरी

वो क्या है और हकीकत में क्या लगे मुझे
कि उसका दर्द भी तो दिलरुबा[१] लगे है मुझे
शहवार बेगम

एक तो दर्द मिला उस पे यह शाहाना मिझाज
हम गरीबों को भी क्या तोहफे दिये जाते हैं
यास यगाना चंगेझी

सुन चुके जब दास्ताने-दर्द तो कहने लगे
'और भी इसके सिवा कुछ आप फरमायेंगे क्या ?'
अलम मुझफ्फरनगरी

उस जुल्म पे कुर्बां लाख करम[२], उस लुत्फ[३] पे सदके[४] लाख सितम
उस दर्द के काबिल हम ठहरे, जिस दर्द के काबिल कोई नहीं
बासित भोपाली

मुद्दतें[५] दर्द की लौ कम तो नहीं कर सकतीं
जख्म भर जाएँ मगर दाग़ तो रह जाता है
अहमद फराझ

दर्द, वो आग कि बुझती नहीं, जलती भी नहीं
याद, वो झख्म कि भरता नहीं, रिसता भी नहीं
अहमद राही

---

१. प्रियपात्र २. कृपा ३. मझा ४. निछावर ५. अवधि

जिगर में दर्द तो है, दिल में इज्तिराब[१] तो है
तुम्हारे गम में मेरी ज़िंदगी खराब तो है

नसीर आरज़ू

अगर न दर्द मेरी रुह में उतर जाता
मैं जैसा बेखबर आया था, बेखबर जाता

अहमद नदीम कासमी

कोई सुख-चैन का नग्मा[२], कोई दुःख दर्द का गीत
रात कट जायेगी, कुछ सुन लो, सुना लो यारो

फरीद जावेद

'जिगर' मैंने छुपाया लाख अपना दर्दे-गम लेकिन
बयाँ कर दीं मेरी सूरत ने सब कैफियतें[३] दिल की

जिगर मुरादाबादी

ये हमीं हैं कि तेरा दर्द छुपा कर दिल में
काम दुनिया के बदस्तूर[४] किये जाते हैं

सबा मुरादाबादी

दिलेनादाँ तुझे हुआ क्या है ?
आखिर इस दर्द की दवा क्या है ?

ग़ालिब

आदत के बाद दर्द भी देने लगा है लुत्फ[५]
हँस हँस के आह आह किये जा रहा हूँ मैं

आरज़ू लखनवी

इस कुर्ब से[६] तो दर्दे-फिराक[७] और बढ़ गया,
'घर जब बना लिया तेरे दर पे कहे बगैर'

फिराक गोरखपुरी

---

१. व्याकुलता २. गीत ३. स्थितियाँ ४. नियमानुसार ५. मझा ६. सामीप्य से
७. विरह का दर्द

दर्द-ए-दिल की उन्हें खबर क्या हो
जानता कौन है पराई चोट

फानी

बीमार-ए-गम है, दूर से आये हैं सुन के नाम
कहते हैं दर्द-ए-दिल की दवा क्या है तुम्हारे पास

हसरत मोहानी

हमसे पूछो वो कहाँ है और किस मस्कन[१] में है
दर्द की बेताबियों में[२] कल्ब[३] की धड़कन में है

जिगर मुरादाबादी

दर्द मिन्नत-कशे-दवा[४] न हुआ
मैं न अच्छा हुआ, बुरा न हुआ

ग़ालिब

बीते हुए दिनों की हलावत[५] कहां से लायें
एक मीठे-मीठे दर्द की राहत कहाँ से लायें

मुईन हसन जझ्बी

जिसको भी चाहा उसे शिद्दत से चाहा है 'फराझ'
सिलसिला टूटा नहीं है दर्द की झंझीर का

अहमद 'फराझ'

अभी कमसिन[६] हैं, ज़िदें भी हैं निराली उनकी
इस पे मचले हैं कि हम दर्दे-जिगर देखेंगे

फसाहन

हर इक दर्द को अपना जानें, हर एक गम को अपनाएँ
ख्वाह[७] किसी की दौलत-ए-गम हो[८] दिल को मालामाल करें

ताबिश देहलवी

---

१. घर २. बेचैनियों में ३. हृदय ४. दवा का आभारी ५. मिठास ५. कम उम्र का
७. चाहे ८. कष्ट की सम्पत्ति

पहले इक दर्द दिल में रहता था
अब तो वो दर्द भी कहाँ है मियाँ ?

फिराक गोरखपुरी

वह कौन है कि गमों से नवाझता[१] है मुझे
गमों को सहने का फिर हौसला भी देता है

मुश्फिक ख्वाजा

एक किरन भी तो नहीं गम की अँधेरी रात में
कोई जुगनू, कोई आँसू, कोई तारा, कुछ तो हो

सलीम वाहिद

गाना इसे समझकर खुश हो न सुनने वाले
दु:खते हुए दिलों की फरियाद-ए-सदा[२] है

इकबाल

दिल दिया, दर्द दिया, दर्द में लझ्झत दी है
मेरे अल्लाह ने क्या-क्या मुझे दौलत दी है

बेखुद बदायूनी

हमने गझल का कर्झ चुकाना चाहा तो ये राझ खुला
दुनिया भर का दर्द खुद अपने दिल पे उठाना पड़ता है

खलील धनतेजवी

सीने में दर्द तेरा, गम दिल में पालते हैं
हम क्या बतायें, कैसे खुद को सँभालते हैं

आमीन ई. झीणा

लोग कहते हैं कि यह दर्द बुरा है
मगर 'अन्वर' को इसमें खुदा मिला है

अनवर आगेवान

---

१. कृपा करना २. फरियाद की आवाझ

दर्द का मेरे यकीं[1] आप करें या न करें
अर्ज़ इतनी है कि इस राज़[2] का चर्चा न करें

मुईन हसन जज़्बी

कहते हो कि हम दर्द किसीका नहीं सुनते
मैंने तो रकीबों से[3] सुना और ही कुछ है

अमीर मीनाई

कौन हमारा दर्द बटाए, कौन हमारा थामें हाथ
उनके नगर में जगमग जगमग, अपने देश में रात ही रात

जमील मलिक

तारीकियाँ[4] चमक गईं आवाज़े-दर्द से
मेरी गज़ल से रात की ज़ुल्फें[5] सँवर गईं

फिराक गोरखपुरी

दर्द-मन्दों से[6] तुम्हीं दूर फिरा करते हो
पूछने वरना सभी आते हैं बीमार के पास

मीर

तबीबों से क्या मैं पूछूँ इलाज-ए-दर्द-ए-दिल
मरज़ जब ज़िंदगी हो तो फिर उसकी दवा क्या है

अकबर ईलाहाबादी

ऐ दर्द ये चुटकियाँ कहाँ तक
उठ और जिगर के पार हो जा

फानी बदायूनी

दर्द-ए-दिल का नहीं होता है मसीहा से इलाज
'मुसहफी' यह भी अजब तरह की बीमारी है

मुसहफी

---

१. विश्वास २. रहस्य ३. दुश्मन ४. अँधेरा ५. लटें ६. पीडितों से

आने वाली है क्या बला सर पर
आज फिर दिल में दर्द है कम कम

जोश मलिहाबादी

अपने दिल से कहता हूँ कि अब तो दर्द कुछ कम है
मेरा दिल मुझसे कहता है कि अक्सर यों भी होता है

आसी उल्दनी

सुकून जबसे है खतरा यह दिल को है हरदम
कहीं वो पूछ न बैठें कि दर्द क्यों कम है

हकीम नातिक

इस दर्द का इलाज अजल[१] के सिवा भी है
क्यों चारासाझ[२] तुझको उम्मीद-ए-शिफा[३] भी है

फानी बदायूनी

दर्द सीने में जरा जागा तो आँखें खुल गईं
दिल में कुछ चोटें उभर आईं तो आँसू आ गये

शायर अमरोही

अंजाम हो तो उससे कोई दर्द-ए-दिल कहे
जो जानता है, मैं उसे आगाह[४] क्या करुँ ?

तासीर[५] दर्द-ए-दिल में यारब[६] कहाँ की भर दी
उसने भी आखिर आज चुपके से आह कर दी

असर लखनवी

बहुत इलाज किया दर्द-ए-इश्क का लेकिन
वही मआल हुआ जो मआल होना था

आसी उल्दनी

---

१. मौत २. वैद्य ३. आरोग्य की आशा ४. वाकिफ ५. असर ६. हे ईश्वर

यह दर्द-ए-इश्क है, मेरा नहीं इलाज तबीब
हज़ार कोई दवायें करें, हुआ सो हुआ

अब्दुल हई 'ताबाँ'

किससे जाकर माँगते दर्द-ए-मुहब्बत की दवा
चारागर अब खुद ही बेचारे नज़र आने लगे

शकील बदायूनी

कौन से ज़ख्म का खुला टाँका
आज फिर दिल में दर्द होता है

जियाउद्दीन 'ज़िया'

बड़ा है दर्द का रिश्ता, यह दिल गरीब सही
तुम्हारे नाम पे आयेंगे गमगुसार[१] चले

फैज़ अहमद 'फैज़'

फिर वही दर्द है दिल में, वही तन्हाई है
ज़िंदगी मौत के पहलू[२] में सिमट आई है

सैलानी

ज़िंदगी दर्द है इस दर्द का दरमाँ क्या है
मुझको फुरसत ही कहाँ है कि यह सब कुछ सोचूँ

जियाउद्दीन 'ज़िया'

इक जवानी क्या गई सौ दर्द पैदा हो गए
तू ही ऐ पीरी[३] बता हम क्या थे और क्या हो गये

अनीस

काबे में हम गये, न गया इन बुतों का इश्क
इस दर्द की खुदा के भी घर में, दवा नहीं

यकीन

---

१. हमदर्द २. तरफ ३. बुढ़ापा

मैं रो रो कर कहने लगा दर्द-ए-दिल
वो मुँह फेर कर मुस्कराने लगे

शकील बदायूनी

मेरी मासूम मुहब्बत की हकीकत मत पूछ
दर्द की लहर है अहसास के पैमाने में

अदम

थी यों तो शबे-हिज्र[१] मगर पहली रात को
वो दर्द उठा 'फिराक' कि मैं मुस्कुरा दिया

फिराक गोरखपुरी

खंजर चले किसी पे तड़पते हैं हम 'अमीर'
सारे जहाँ का दर्द हमारे जिगर में है

अमीर मीनाई

मुस्कुराहट, दर्द, लहजा, सादगी
बेचकर मैं सारे जेवर[२] खा गया

वाकिफ रायबरेलवी

इशरते-कतरा[३] है दरिया में फना हो जाना
दर्द का हद से गुझरना है दवा हो जाना

ग़ालिब

दर्द सा उठ के न रह जाये कहीं दिल के करीब
मेरी कश्ती[४] न कहीं गर्क[५] हो साहिल[६] के करीब

हादी मछली शहरी

इश्क की इन्तिहा[७] तो होती है
दर्द की इन्तिहा नहीं होती

शमशेर बहादुर सिंह

---

१. विरह की रात्रि २. गहना ३. बूँद की सार्थकता ४. नाव ५. डूबना ६. किनारा. ७. अंत

चश्म[१] पुरनम[२], झुल्फ भी बिखरी हुई, चेहरा उदास
तेरी सूरत से तुझे, दर्द-आश्ना[३] समझे थे हम

कुछ तेरा दर्द चाट गया मेरा बदन
कुछ ज़िंदगी ने पी लिया अंदर तलक मुझे

अतीक ताबिश

अब ये भी नहीं ठीक कि हर दर्द मिटा दें
कुछ दर्द कलेजे से लगाने के लिए हैं

जाँनिसार अख्तर

मुद्दत से किसी दर्द का तोहफा[४] नहीं आया
क्या गर्दिशे-अय्याम[५] हमें भूल गई है

सैयद फझलुल मतीन

थी खटक दर्द की पहले से मिरे दिल में मगर
तुम मिरे पास से उठे कि कियामत आई

अमीर मीनाई

इतनी अर्झां[६] तो न थी दर्द की दौलत पहले
जिस तरफ जाइए झख्मों के लगे हैं बाझार

अहमद नदीम कासमी

इक हूक[७] सी दिल में उठती है, इक दर्द जिगर में होता है
मैं रात को उठ कर रोता हूँ, जब सारा आलम[८] सोता है

मीर

---

१. आँख २. गीली, भीगी ३. हमदर्द ४. सौगात ५. समय का चक्र ६. सस्ती ७. डर ८. संसार

धोका न खाओ चारागरो[१] वाकिआत से[२]
पहलू में दिल नहीं है, तो क्या दर्द भी नहीं

आसी उल्दनी

बड़े अजीब हैं ये दर्दे-गम के रिश्ते भी
कि जिसको देखिए, अपना दिखाई देता है

खुर्शीद अहमद 'जामी'

दर्दे-दिल कहने की ताकत थी कभी
और अब सुनने की भी ताकत नहीं

शम्सुद्दीन 'शम्स'

मैं अपने दिल से कहता हूँ कि अब तो दर्द कुछ कम है
मेरा दिल मुझसे कहता है कि अकसर यूँ भी होता है

आसी उल्दनी

कब ठहरेगा दर्द-ए-दिल, कब रात बसर होगी
सुनते थे वो आएँगे, सुनते थे सहर[३] होगी

मैं वो साफ ही न कह दूँ, जो है फर्क मुझमें, तुझमें
तेरा दर्द दर्दे-तनहा[४], मेरा गम गमे-झमाना[५]

जिगर मुरादाबादी

झख्म गहरे नहीं थे जब दिल के, दर्द में इस कदर मिठास न थी
आप ही का ये फैझ[६] है वर्ना, झिंदगी इस कदर उदास न थी

नरेशकुमार शाद

उसे तो अपने गुलदस्ते की रौनक से ही मकसद[७] है,
कहाँ गुलचीं को फुरसत है कि दर्दे-गुलसिताँ[८] समझे

नीरज जैन

---

१. उपचारकों २. घटनाओं से ३. सुबह ४. एकलता का दुःख ५. सांसारिक पीड़ा
६. उपकार ७. कामना ८. गुलशन का दर्द

‘ताबाँ’ किसीसे इश्क हमारा छिपा नहीं
आती है बू-ए-दर्द हमारे सुखन[1] के बीच
मीर अब्दुल हई ‘ताबाँ’

आज तो दर्दे-हिज्र[2] भी कम है
आज तो कोई आया होता
फिराक गोरखपुरी

कोई ये पूछ ले दर्दे नेहाँ[3] से
तुझे दिल ढूँढ़ लाया हे कहाँ से
जलाल

ऐसा न हो ये दर्द बने दर्दे-ला-दवा[4]
ऐसा न हो कि तुम भी मुदावा[5] न कर सको
सूफी तबस्सुम

कुछ ऐसी भी गुजरी हैं तेरे हिज्र में रातें
दिल दर्द से खाली हो मगर नींद न आये
फिराक गोरखपुरी

अरे, खिले हुऐ फूलों के तोड़ने वाले
चमन में कोई नहीं दर्द-आशनाये-बहार[6]
अझीझ लखनवी

पहुँचा न आह दर्द को मेरे कोई तबीब
यारब[7], अजब तरह का कुछ आजार[8] है मुझे
वृंदावन शकिम

---

१. कविता २. वियोग का दु:ख ३. छिपा हुआ ४. असाध्य रोग ५. इलाज ६. वसंत के दु:ख को समझने वाला ७. हे ईश्वर ८. बीमारी

न दर्दे-मुहब्बत, न जोशे जवानी
यह जन्नत[1] है ! तो हाय ! दुनिया-ए-फानी[2]
हफीझ जालंधरी

जो मुमकिन हो जगह दिल में न दे दर्दे-मुहब्बत को
घड़ीभर की खलीश[3], फिर उम्र भर मालूम होती है
सीमाब अकबराबादी

कलियों के अंग-अंग में मीठा-सा दर्द है
बीमार नकहतों को[4] जरा गुदगुदाईए
अदम

अगर दर्द-ए-मुहब्बत से न इन्साँ आशना[5] होता
न मरने का अलम[6] होता, न जीने का मझा होता
चकबस्त

बर्गे-हिना[7] पे लिखेंगे हम दर्दे-दिल की बात
शायद कि रफ्ता-रफ्ता लगे गुलबदन[8] के हाथ
अकबर ईलाहाबादी

बीता दीद-उमीद[9] का मौसम खाक उड़ती है आँखों में
कब भेजोगे दर्द का बादल, कब बरखा बरसाओगे
फैझ अहमद फैझ

जो दर्द से वाकिफ है, वो खूब समझते हैं
राहत में तुझे खोया, तकलीफ में पाया है
असर लखनवी

---

१. स्वर्ग २. नश्वर दुनिया ३. पीडा ४. सुगंधो को ५. परिचित ६. दु:ख ७. महेंदी का पत्ता ८. परम सुंदर ९. दर्शन की आश

उन मरीजों में मेरे ईसाने रक्खा है मुझे
जिन के हक में दर्द अच्छा है, दवा अच्छी नहीं

हफीझ जौनपुरी

कभी तो चाहने वालों से मश्वरा कर लो
हमारे दर्द का एहसास भी जरा कर लो

अनवर आगेवान

मेरी बर्बादियों का हमनशीनों[१]
तुम्हें क्या खुद मुझे भी गम नहीं है

मजाझ

दर्द से वाकिफ[२] न थे, गम से शनासाई[३] न थी
हाय ! क्या दिन थे, तबीयत जब कहीं आयी न थी

जलील मानिकपुरी

कहाँ कम हुआ दर्द 'ईर्शाद' का
नझरिया बदलने से राहत हुई

चिनु मोदी 'ईर्शाद'

दामन (पालव)

मुझ को पामाल कर गया है अभी
ये जो दामन[४] उठाये जाता है

मुसहफी

१. दोस्तों २. परिचित ३. परिचय ४. पल्ला

यूँ तो हर दर पे लहकते नज़र आए दामन
खींचते नाझ से जिसको वह दामन न मिला

अख़्तर शीरानी

शायद वो झमाना तुम्हें अब न याद हो
दामन को मिरे थाम लिया था तुमने

कादरी

नझर बचा के गुझर जाऐं मुझसे वो लेकिन
मिरे खयाल से दामन बचा नहीं सकते

अरशद सिद्दीकी

मेरे दामन से लिपटना आप शायद भूल जाऐं
मुझको अब तक आपका दामन छुड़ाना याद है

नख़्शब जार्चवी

हाथ डाला मैंने दामन पर तो बोले नाझ से
मेरा दामन छोड़िए, अपना गरेबाँ[१] फाडिए

अमीर मीनाई

कितना कहा था उससे कि दामन समेट ले
अब वो भी मेरे साथ परेशानियों में है

मुम्ताझ राशिद

कब लौटा है बहता पानी, बिछड़ा साजन, रुठा दोस्त
हमने उसको अपना जाना जब तक हाथ में दामाँ था

इब्ने-ईंशा

शफक[२], धनुक, महताब[३], घटाऐं, तारे, नग्में[४], बिजली, फूल
उस दामन में क्या-क्या कुछ है, वो दामन हाथ में आए तो !

अंदलीब शादानी

---

१. कुरते में गले का भाग २. आकाश की लालिमा ३. चाँद ४. गीत

वही हम थे न छोड़ा तार तक अपने गरेबाँ का
वही हम हैं कि अब टुकड़े लिए दामन के फिरते हैं

रियाझ खैराबादी

हाये उस चार गिरह[1] कपड़े की किस्मत 'ग़ालिब'
जिसकी किस्मत में हो आशिक का गिरेबाँ होना

ग़ालिब

सौ बार तेरा दामन हाथों में मेरे आया
जब आँख खुली देखा अपना ही गिरेबाँ था

असगर गोंडवी

इरशाद[2] हो तो मैं इसे आँखों पे फेर लूँ
भीगा हुआ है आप का दामन शराब से

दामन जो छू लिया है किसी गुल-ए-झार[3] का
मिलता नहीं दिमाग नसीमे-बहार[4] का

अमीर मीनाई

गिरते-गिरते उनका दामन थाम ले
गिरनेवाले लगझिशों[5] से काम ले

मैकश ईलाहाबादी

बाद एक उम्र के मयखाने में आये हैं 'रियाझ'
आप बैठे हैं बचाए हुए दामन कैसा

रियाझ खैराबादी

पानी तो अब मिलेगा नहीं रेगझार[6] में
मौका है खूब, देख लो दामन निचोड़ कर

मोहम्मद 'अलवी'

---

१. गाँठ २. हुकम, आज्ञा ३. फूल जैसा कपोल वाला ४. वसंत का प्रात:समीर
५. फिसलने की क्रिया ६. रैतीले क्षेत्र में

इस दिल के दरीदा[१] दामन को, देखो तो सही, सोचो तो सही
जिस झोली में सौ छेद हुए, उस झोली का फैलाना क्या

ईब्ने ईन्शा

ज़िंदगी में अभी खुशियाँ भी हैं, रानाई[२] भी
ज़िंदगी से अभी दामन न छुड़ा, मान भी जा

'शहरयार'

लोग तो दामन सी लेते हैं
जैसे हो जी लेते हैं
'आबिद' हम दीवाने हैं जो
बाल बिखेरे फिरते हैं

सैयद आबीदअली

बैठे हुए देते हैं वो दामन से हवाएँ
अल्लाह करे, हम न कभी होश में आएँ

नूह नारवी

बड़ी मिन्नतों से[३] आकर वो मुझे मना रहे हैं
मैं बचा रहा हूँ दामन मेरा इंतिकाम[४] देखा ?

शकील बदायूनी

मेरा दामन बहुत साफ है
कोई तुहमत[५] लगा दीजिये

राझ ईलाहाबादी

हमसे दामन छुड़ा के जानेवाले
जा-जा गर तू नहीं, तेरी याद सही

अमजद हैदराबादी

---

१. फटा हुआ २. सुंदरता ३. प्रार्थनाओं से ४. प्रतिशोध ५. अपराध

दामन उस यूसुफ[1] का आया पूरजे होकर हाथ में
उड़ गई सोने की चिड़िया रह गये पर हाथ में

आरज़ू लखनवी

दैरो-हरम[2] भी कूच-ए-जाना में[3] आये थे
पर शुक्र है कि बढ़ गये दामन बचा के हम

असगर गोंडवी

गुल[4] का क्या जिक्र कि ऐ दोस्त मेरे दामन पर
एक मुद्दत से किसी खार[5] का एहसां भी नहीं

मन्ज़ूर हुसैन

हाथ निकले अपने दोनों काम के
दिल को थामा उनका दामन थाम के

दाग़

अब कहिये तो उनसे क्या कहिये, कुछ याद नहीं, सब भूल गये
दामन तो यह कह कर थामा था - 'कुछ आपसे हम को कहना है'

अर्शी भोपाली

उसके दामन में भी जख्मों के सिवा कुछ न मिला
हमने जिस शख्स को समझा था मसीहा सब का

खलिश बड़ौदवी

---

१. हझरत याकूब के पुत्र जो बहुत ही खूबसूरत थे । मिस्र की जुलेखा उन पर आसक्त हो गई थी । इन्होंने बहुत दिनों तक मिस्र पर राज किया था । २. मन्दिर, मस्जिद ३. प्रिया की गली के मार्ग में ४. फूल ५. काँटा

काँटों से गुजर जाता हूँ दामन को बचाकर
फूलों की सियासत[1] से मैं बेगाना नहीं हूँ

शकील बदायूनी

क्या हुआ मैंने अगर हाथ बढ़ाना चाहा
आपने खुद ही तो दामन न बचाना चाहा

मजाझ

दीया–चिराग

अब हवाऐं खुदा करेंगी रोशनी का फैसला
जिस दिये में जान होगी वो दीया रह जाएगा

महशर बदायूनी

कुछ बातें, कुछ रातें, कुछ बरसातें अपना सर्माया[2]
माजी[3] के अँधियारे में ये जलते दीप हमारे हैं

जमील मलिक

बुझते हुए चराग भी हैं, काम के 'असर'
शम्माऐं नई उन्हीं से जलाते चले चलो

असर लखनवी

देखूँ तेरे हाथों को तो लगता है तेरे हाथ
मंदिर में फकत दीप जलाने के लिऐ है

जाँनिसार अख्तर

---

१. राजनीति २. पूँजी ३. अतीत

हमने हर गाम[१] पे सजदों[२] के जलाये हैं चिराग
अब तिरी राहगुजर[३], राहगुजर लगती है

जाँनिसार अख्तर

न मेरी राह में तारे, न मेरे पास चिराग
वो मेरे साथ सफर अख्तियार[४] क्यों करते ?

जुहूर नज़र

दीये जलाए उमीदों के दिल के गिर्द[५] बहुत
किसी तरफ से न इस घर में रौशनी आई

अर्श मलसियानी

एक रात आपने उमीद पे क्या रखा है
आज तक हमने चिरागों को जला रखा है

शाज़ तमकनत

'अनीस' दम का भरोसा नहीं, ठहर जाओ
कहाँ चिराग लिए सामने हवा के चले

अनीस

तूने सदा आस के मुझमें जलाए दीये
मेरी सियाह[६] रात में तूने उजाले किए

कतील शिफाई

सोचता हूँ कि बुझा दूँ मैं ये कमरे का दीया
अपने साये को भी क्यों साथ जगाऊँ अपने

अनवर मस्‌उद

ये कहना हार न मानी कभी अँधेरे से
बुझे चिराग तो दिल को जला लिया कहना

आलमताब तिश्ना

---

१. कदम २. प्रणाम ३. मार्ग ४. शुरू ५. चारों ओर ६. काली

चाँद की आखिरी रातों में बहुत लाझिम है
एक मिट्टी का दीया राहगुजर में रहना

परवीन शाकिर

उसने सारे शहर के गुल कर दिये इक–इक चिराग
फिर भी सीने का मेरे सूरज चमकता रह गया

पाशा रहमान

दिल एक और हजार आजमाइशें गम की
दीया जला तो था लेकिन हवा की जद[१] पर था

मुश्फिक ख्वाजा

जब तक दीये में तेल रहा रौशनी रही
खूने–जिगर[२] निसार[३] किया और जल बुझे

सहबा अख्तर

सर झुकाये तेरे कूचे से गुझर आये मगर
जो दीये हमको जलाने थे जला तो आये

अहमद हमदानी

भुला भी दे उसे जो बात हो गई प्यारे
नये चिराग जला, रात हो गई प्यारे

हबीब जालिब

दीया खामोश है लेकिन किसीका दिल तो जलता है
चले आओ जहाँ तक रौशनी मालूम होती है

नुशूर वाहिदी

आया है हमको हाथ यह मजमूँ[४] चराग से
रौशनी उसीका नाम रहे जो जलाये दिल

असौर

---

१. चोट, लक्ष्य २. हृदय का रक्त ३. निछावर ४. एक विषय

तिरे चिराग अलग हों, मिरे चराग अलग
मगर उजाला तो फिर भी जुदा नहीं होता

वसीम बरेलवी

चिराग घर का हो, महफिल का हो, कि मंदिर का
हवा के पास कोई मसलहत[१] नहीं होती

वसीम बरेलवी

कहाँ तो तय था चिरागाँ हर एक घर के लिए
कहाँ चिराग मयस्सर[२] नहीं शहर के लिए

दुष्यंत कुमार

दीये अगर वो तिरे शहर के बुझा देते
सितारे हम भी कहीं से तुझे मँगा देते

वज़ीर आगा

चिराग इक दिन अल्लादीन का बनेगा
अभी वो जलता बुझता इक दीया है

वज़ीर आगा

तू एक था मेरे अशआर में हजार हुआ
इस इक चराग से कितने चराग जल उट्ठे

फिराक गोरखपुरी

मत कह शबेविसाल[३] कि ठंडा न कर चिराग
जालिम ! जला है मेरी तरह उम्र भर चिराग

मोमिन

शबे विसाल है गुल कर दो इन चिरागों को
खुशी की बज़्म में क्या काम जलने वालों का ?

दाग़

---

१. अप्रकट शुभ हेतु २. प्राप्त ३. मिलन की रात्रि

तमाम उम्र मेरा दम इसी धुएँ में घुटा
वो इक चराग था, मैंने उसे बुझाया है

बशीर बद्र

चिराग बन के जले हैं तुम्हारी महफिल में
वो जिनके घर में कभी रौशनी नहीं होती

नरेशकुमार शाद

हवा घरों में कहाँ इतनी तेज चलती है
उसे तो सिर्फ हमारा दीया बुझाना था

सागर आझमी

सूरज को रौशनी से अदावत जरूर है
इसने किसी चराग को जलने नहीं दिया

अंजुम बाराबंकवी

उन चरागों में तेल ही कम था
क्यूँ गिला फिर हमें हवा से रहे ?

जावेद अख्तर

एक चिंगारी कहीं से ढूँढ़ लाओ दोस्तों
इस दीये में तेल से भीगी हुई बाती तो है

दुष्यन्त कुमार

जलता कब तक वो इक दीया आखिर
तेज थी वक्त की हवा आखिर

मोहसिन जैदी

जिस दिये की रौशनी में हमने लिक्खी थी तुम्हें
उस दिये ने ही जला डाली तुम्हारी चिट्ठियाँ

कुँअर बेचैन

दीप से दीप जलाओ तो कोई बात बने
गीत पर गीत सुनाओ तो कोई बात बने

रशीद कैसरानी

मंदिरों के दीपक तो कोई भी जला देगा
आँधियों के दर पे हमें इक दीया जलाना है

रंजना अग्रवाल

यूँ ही काम दुनिया का चलता रहा है
दीये से दीया यूँ ही जलता रहा है

हाली

ये चिरागे-अंजुमन[१] तो हैं बस एक शब[२] के मेहमाँ
तू जला वो शमा ऐ दिल जो बुझे कभी न जल के

खुमार बारहबंकवी

यों आये वो रात ढले
जैसे जल में जोत जले

शाद अझीमाबादी

आँसुओं से जो बुझे जाते हैं आँखों के चिराग
खूने-दिल दे के उन्हें फिर से जलाना होगा

अली सरदार जाफरी

हमने उन तुंद[३] हवाओं में जलाये हैं चिराग
जिन हवाओं ने उलट दी है बिसातें[४] अकसर

जाँनिसार अख्तर

मसरफ[५] के बगैर जल रहा हूँ
मैं सूने मकान का दीया हूँ

हमीद अल्मास

---

१. महफिल का दिया २. रात्रि ३. तूफानी ४. जमीन ५. उपयोगिता

राहों में एक साथ ये क्यों जल उठे चिराग
शायद तेरा खयाल मेरा हमसफर हुआ

मुजतर अकबराबादी

वो कह गए थे कि आएँगे हम चिराग जले
तमाम रात चिरागों से अपने दाग़ जले

नासिख

बुझ रहे हैं एक-एक कर के अकीदों के[१] दीये
इस अँधेरे का भी लेकिन सामना करना तो है

साहिर लुधियानवी

शबे-विसाल है, रौशन करो चिरागों को
खुशी की बज़्म है, जलने दो जलने वालों को

कैफी आझमी

जो कभी जलाया था
वह दीया बुझाना है

चिनु मोदी 'इर्शाद'

दिल

शाम होते ही चरागों को बुझा देता हूँ
दिल ही काफी है तेरी याद में जलने के लिये

मजरूह सुलतानपुरी

---

१. यकीन के

कितने हसीन लोग थे, जो मिल के इक बार
आँखों में जज़्ब[१] हो गये, दिल में समा गये

अदम

सख्त तारीक[२] है दिल की दुनिया
ऐसे आलम में अगर तू चमके

अहमद फराज़

की जमाने ने जफा, तुमसे जफा भी न हुई
दिल इस अंदाज से तोड़ा कि सदा भी न हुई

कैफी आझमी

जला है जिस्म[३] जहाँ दिल भी जल गया होगा
कुरेदते हो जो अब राख जुस्तजू[४] क्या है

गालिब

आप के कदमों के नीचे दिल है
एक जरा आप को जहमत[५] होगी

सिराज लखनवी

दिल ही तो है न संग-ओ-खिश्त[६] दर्द से भर न आए क्यों
रोऐंगे हम हजार बार, कोई हमें सताए क्यों ?

ग़ालिब

दुनिया की बलाओं को जब जमा किया मैंने
धुँधली-सी मुझे दिल की तस्वीर नझर आई

फानी बदायूनी

अभी कमसिन[७] हो रहने दो कहीं खो दोगे दिल मेरा
तुम्हारे ही लिए रक्खा है ले लेना जवाँ हो कर

---

१. आकर्षण २. अँधेरी ३ शरीर ४. तलाश ५. कष्ट ६. ईंट और पत्थर ७. कम उम्र का

दिल परेशान हुआ जाता है
और सामान हुआ जाता है

दाग़

खराब क्यों कर न हो शहरे-दिल की आबादी
हमेशा लूटने वाला ही इस दयार[१] में आये

जुरअत

किसीने फिर मेरे दिल का दीया जला तो दिया
ये और बात है पहले सी रौशनी न रही

हँसी है उनको हर सूरत से दिल काबू में कर लेना
बिगड़ कर, मुस्कुरा कर, गर्म होकर, महरबाँ होकर

हफीज जौनपुरी

हज़ार गम सही दिल में खुशी मगर यह है
हमारे होठों पर माँगी हुई हँसी तो नहीं

कृष्ण बिहारी नूर

अगर दिल सलामत रहेगा तो 'आसी'
बहुत मिल रहेंगे दग़ा देने वाले

आसी उलदनी

कब निकलता है कोई, दिल में उतर जाने के बाद
इस गली के दूसरी जानिब[२] कोई रस्ता नहीं

खुर्शिद रिझवी

सबक ऐसा पढ़ा दिया तूने
दिल से सब कुछ भूला दिया तूने

दाग़

---

१. देश २. ओर

जितने मुँह हैं उतनी बातें, दिल का पता क्या खाक चले
जिसने दिल की चोरी की है, एक उसीका नाम नहीं

फानी बदायूनी

इलाजे-दर्दे-दिल[१] तुम से मसीहा[२] हो नहीं सकता
तुम अच्छा कर नहीं सकते, मैं अच्छा हो नहीं सकता

मुझतर खैराबादी

वो दिल ही क्या तेरे मिलने की जो दुआ न करे
मैं तुझे भूल के जिंदा रहूँ, खुदा न करे

कतील शिफाई

दिल की गहराइयों का राझ किसीसे न कहो
आज जो दोस्त है, दुश्मन कभी हो सकता है

डॉ. सलाम सन्देलवी

जिगर किसीका जले, दिल जले, दिमाग जले
वो कह गऐं हैं आऐंगे हम चराग जले

यकरंग

शीशा टूटे गुल मच जाये
दिल टूटे आवाझ न आये

हफीझ मेरठी

मैं हूँ, दिल है, तनहाई है
तुम भी जो होते तो अच्छा होता

फिराक गोरखपुरी

हर एक के लिए न खुला रख इसे 'कतील'
ये दिल है एक घर, इसे बाझार मत बना

कतील शिफाई

१. दिल के दर्द का उपचार २. ईसा मसिह

खामोशी से मुसीबत और भी संगीन होती है
तड़प ऐ दिल तड़पने से जरा तसकीन[१] होती है
शाद अझीमाबादी

जिसका दिल मुर्झा चुका हो ऐ सबा[२], उसके लिए
फस्ले-गुल[३] आई तो क्या, अब्रे-बहार[४] आया तो क्या ?
शाद अझीमाबादी

मुझे दिल की खता पर 'यास', शरमाना नहीं आता
पराया जुर्म अपने नाम लिखवाना नहीं आता
यगाना चंगेझी 'यास'

कीमया-ए-दिल[५] क्या है, खाक है, मगर कैसी ?
लीजिए तो महँगी है, बेचिए तो सस्ती है
यगाना चंगेझी

हमने किस्सा बहुत कहा दिल का
न सुना तुमने माजरा[६] दिल का
आसिफ

कम होगी जब चिरागे-मुहब्बत की रौशनी
दिल को जला-जला कर उजाला करेंगे हम
बेदिल

---

१. तसल्ली २. ठंड़ी हवा ३. वसंत ऋतु ४. बारिश का मौसम ५. दिल का रसायन ६. घटना

दिल को कल तक चैन था हासिल,
आज क्या हो गया, खुदा जाने

जोश मलसियानी

कोई यह पूछ ले दर्द-ए-निहाँ से[१]
तुझे दिल ढुँढ़ लाया है कहाँ से

जलाल

दिल खुदा जाने किसके पास रहा
इन दिनों जी बहुत उदास रहा

मीर हसन

खुलता किसी पे क्यों मेरे दिल का मुआमला
शेरों के इन्तखाब[२] ने रुस्वा[३] किया मुझे

ग़ालिब

दिल क्या मिलाओगे कि हमें हो गया यकीन
तुमसे तो खाक में भी मिलाया न जायगा

दाग़

हम तो क्या भूलते उन्हें 'हसरत'
दिल से वो भी हमें भूला न सके

हसरत मोहानी

दिल में आते हुए शरमाते हैं
अपने जलवों में[४] छुपे जाते हैं

फानी बदायूनी

दिल के कहने पे चलूँ, अकल का कहना न करूँ
मैं इसी सोचमें हूँ, क्या करूँ और क्या न करूँ

वहशत कलकतवी

---

१. छिपे हुए गम से २. चुनाव ३. बदनाम ४. रुप की शोभा में

ऐसे दो दिल भी कम मिले होंगे
न कशाकश[१] हुई, न जीत न हार

यगाना चंगेझी

दिल को क्या-क्या सकून[२] होता है
जब कोई आसरा नहीं होता

जिगर मुरादाबादी

दिल की बाझी है जान की बाझी
दिल लगाना कोई मजाक नहीं

फरहत कानपुरी

तुम पास नहीं हो तो अजब हाल है दिल का
यूँ जैसे मैं कुछ रख के कहीं भूल गई हूँ

अदा जाफरी

दिल दे तो इस मिझाज का परवरदिगार दे
जो रंज की घड़ी भी खुशी में गुजार दे

दाग़

अच्छा है दिल के पास रहे पासबाने अक्ल[३]
लेकिन कभी-कभी इसे तनहा[४] भी छोड़ दे

ईकबाल

दैरो-हरम[५] में बहस रही दिल कहाँ रहे
आखिर ये तय हुआ कि ये बेखानुमाँ[६] रहे

नातिक लखनवी

---

१. खींचा-तानी २.शांति ३ बुद्धि का पहरेदार ४. अकेला ५. मंदिर और मस्जिद
६. गृहविहीन

दिल, की जिसकी खाना वीरानी[1] का तुम को गम नहीं
क्या बतायें हम तुम्हें, इस घर में कौन आबाद था
साकिब लखनवी

लाखों में इन्तखाब[2] के काबिल बना दिया
जिस दिल को तुमने देख लिया, दिल बना दिया
जिगर मुरादाबादी

दिल तो सब को तेरी सरकार से मिल जाते हैं
दर्द जब तक न मिले, दिल नहीं होने पाते
फानी बदायूनी

आने वाली है क्या बला सर पर
आज फिर दिल में दर्द है कम कम
जोश मलिहाबादी

मैंने ही कुछ न समझा, मेरी ही थीं खताऐं[3]
वो दिल की धड़कनों से देते रहे सदाऐं[4]
माहिरुल कादरी

आप कहें तो गुलशन है
वरना दिल इक मदफन[5] है
अहमद जफर

अजनबी शहर की गलियों में 'अदा'
दिल कहाँ, लोग ही मिलते होंगे
अदा जाफरी

कोई आहट, कोई आवाझ, कोई चाप नहीं
दिल की गलियाँ बड़ी सुनसान हैं, आये कोई
परवीन शाकिर

---

१. घर उजड़ जाना २. चुनने योग्य ३. अपराध ४. आवाझ ५. दफन किया हुआ

असर से जिसके निखरती है जिंदगी 'जावेद'
वो चोट दिल ने तुम्हारे अभी सही भी नहीं

फरीद जावेद

आओ, आपस मे समझ लें, गैर काहे को सुने
तुम कहो दिल से हमारे कुछ, तुम्हारे दिल से हम

नसीम देहलवी

दिल की बात लबों पर लाकर, अब तक हम दु:ख सहते हैं
हमने सुना था इस बस्ती में दिल वालें भी रहते हैं

हबीब 'जालिब'

दिल में रखो किसीको, दिल में रहो किसीके
सीखो अभी तरीके कुछ रोज दिलबरी के

रसा देहलवी

इसका रोना नहीं क्यों तुमने किया दिल बर्बाद
इसका गम है कि बहुत देर में बर्बाद किया

जोश मलिहाबादी

दिल के फफोले जल उठे सीने के दाग़ से
इस घर को आग लग गई, घर के चिराग से

ताहीर अजमेरी

मेरा दिल किसने लिया, नाम बताऊँ किसका
मैं हूँ या आप हैं घर में, कोई आया न गया

इम्दादअली बहर

दिल बुझा शमए[१] कायनात[२] गई
जिंदगी की उजाली रात गई

आनंद नारायण मुल्ला

---

१. दीपक २. सृष्टि

ले गया छीन के कौन आज तेरा सब्रोकरार[1]
बेकरारी तुझे ऐ दिल, कभी ऐसी तो न थी

बहादुरशाह जफर

कुछ ठहरती नहीं कि क्या होगी
इस दिले-बेकरार[2] की सूरत

शाह मुबारक आरज़ू

कासिद[3] आया है वहाँ से, तू जरा थम तो सही
बात तो करने दे उससे दिले-बेताब[4] मुझे

तस्कीन

झुटपुटा वक्त है, बहता हुआ दरिया ठहरा
सुबह से शाम हुई, दिल न हमारा ठहरा

आगा हज्जो शरफ

वो दिल लेकर हमें बेदिल न समझें, उनसे कह देना
जो हैं मारे हुए नजरों के, उनकी हर नजर दिल है

सीमाब

जब्र[5] है, कहर[6] है, कयामत[7] है
दिल जो बे-इख्तियार[8] होता है

मीर

कल जहाँ से उठा लाये थे अहबाब[9] मुझे
ले चला आज वहीं फिर दिले-बेताब मुझे

जौक

---

१. धैर्य, संतोष २. व्याकुल दिल ३. पत्रवाहक ४. बेचैन दिल ५. मुसीबत ६. विपत्ति ७. आफत ८. जिसके हाथ में कोई अधिकार न हो ९. दोस्त

आबादी भी देखी है, वीरानें भी देखे हैं
जो उजड़े और फिर न बसे, दिल की निराली बस्ती है

फानी बदायूनी

या रब[१] ! ये दिल है या कोई मेहमाँ सराये[२] हैं
गम रह गया कभी, कभी आराम रह गया

ख्वाजा मीर दर्द

दिल भी तेरे ढंग सीखा है
आन[३] में कुछ है, आन में कुछ है

ख्वाजा मीर दर्द

कौन से जख्म का खुला टाँका
आज फिर दिल में दर्द होता है

जियाउद्दीन 'जिया'

वक्त की हर आवाझ 'जफर'
मेरे दिल की धड़कन है

अहमद जफर

उलटी हो गईं सब तदबीरें[४], कुछ न दवा ने काम किया
देखा, इस बीमारी-ए-दिलने आखिर काम तमाम[५] किया

मीर

रुका इतना खफा इतना हुआ था
कि आखिर खून होकर बहा दिल

मीर

न तो आहो नाला ही निकले हैं, न उठे हैं कल से सदाऐं दिल
तू खबर तो सीने में ले 'हसन' कहीं चल बसा न हो, हाय दिल

मीर हसन

---

१. हे प्रभु २. अतिथि गृह ३. क्षण ४. युक्तियाँ ५. खत्म

बहुत शोर सुनते थे पहलू[1] में दिल का
जो चीरा तो एक कतरए-खूँ[2] न निकला

आतिश

दिले-बर्बाद[3] को भी कहने वाले दिल ही कहते हैं
खिजाँ-दीदा-चमन[4] को भी चमन कहना ही पड़ता है

नझम नदवी

कोफ्त[5] से जान लब पे आई है
हमने क्या चोट दिल पे खाई है

मीर

खोटे दामों भी अगर कोई खरीददार मिले
कौन कमबख्त न अब बेच ही डाले दिल को

हफीझ जौनपुरी

किसी ने मोल न पूछा दिले-शिकस्ता[6] का
कोई खरीद के टूटा प्याला क्या करता

आतिश

बाझारे मुहब्बत में कभी करती है तकदीर
बन-बन के बिगड़ जाता है सौदा मेरे दिल का

तस्लीम

अफसोस ! दिल का हाल कोई पूछता नहीं
ये कह रहे हैं सब, तेरी सूरत बदल गई

दिलेर मारहरवी

---

१. सीना २. लहू की बुन्द ३. उजड़ा दिल ४. पतझड़ में उजड़ा हुआ बाग ५. क्लेश ६. टूटा हुआ दिल

एक तजल्ली[१], एक तबस्सुम[२], एक निगाहे-बन्दानवाज[३]
इससे ज्यादा जलवए[४] जानाँ दिल की कीमत क्या कहिए

जिगर मुरादाबादी

सुकून[५] जबसे है खतरा ये दिल को हरदम है
कहीं वो पूछ न बैठें कि दर्द क्यों कम है

हकीम नातिक

दिल को इस तरह ठहर जाने की आदत तो न थी
क्यों अजल[६], क्या मेरे नामे का[७] जवाब आता है

फानी बदायूनी

दिल को बर्बाद कर के बैठा हूँ
कुछ खुशी भी है, कुछ मलाल[८] भी है

जिगर मुरादाबादी

दिल अजब शहर था खयालों का
लूटा मारा है हुस्न वालों का

मीर

दिल वो नगर नहीं जो फिर आबाद हो सके
पछताओगे, सुनो हो, ये बस्ती उजाड़ के

मीर

दिल का उजड़ना सहल सही, बसना सहल नहीं जालिम
बस्ती बसना खेल नहीं, बसते बसते बसती है

फानी बदायूनी

होटों के पास आऐं हँसी क्या मजाल है
दिल का मुआमला है, कोई दिल्लगी नहीं

बहजाद लखनवी

---

१. झलक २. मुस्कान ३. दीनों पर रहमनजर ४.शोभा ५. शांति ६.मृत्यु ७ पत्र का ८. दुःख

अब मुझ को है करार तो सब को करार है
दिल क्या ठहर गया कि जमाना ठहर गया

सीमाब अकबराबादी

दम भर को है न चैन, न पल भर को है करार
नादान दिल बता, तुझे जाऊँ कहाँ लिए

जकी काकोरवी

क्या हँसे अब कोई और क्या रो सके
दिल ठिकाने हो तो सब कुछ हो सके

मीर हसन

और क्या जिक्र कीजै, अपने दिल की हालत का
कुछ बिगड़ती रहती है, कुछ सँवरती रहती है

एझाज सिद्दीकी

क्यों न अपना ही लहू पी कर बुझाऐं दिल की प्यास
किसे घर का भेद खोलें, किसको हम रुसवा[१] करें

खलीलुर्रहमान आझमी

किसीके जौर-ओ-सितम का तो इक बहाना था
हमारे दिल को बहर-हाल टूट जाना था

नरेशकुमार शाद

बेचैनियाँ समेट के सारे जहान की
जब कुछ न बन सका तो मेरा दिल बना दिया

जिगर मुरादाबादी

और क्या देखने को बाकी है
आप से दिल लगा के देख लिया

फैझ अहमद फैझ

---

१. बदनाम

दुनिया में फिर वो काम के काबिल[१] नहीं रहा
जिस दिल को तुमने देख लिया, दिल नहीं रहा

जामिन

अब ये जाना कि इसे कहते हैं आना दिल का
हम हँसी खेल समझते थे लगाना दिल का

अमीर

इक दिल है और तूफ़ाने-हवादिस[२] ऐ 'जिगर'
एक शीशा है कि हर पत्थर से टकराता हूँ मैं

जिगर मुरादाबादी

हमने पाला मुद्दतों पहलू[३] में हम कुछ भी नहीं
तुमने देखा इक नज़र और दिल तुम्हारा हो गया

आसी रामनगरी

यूँ दिल के तड़पने का है कुछ तो सबब[४] आखिर
या दर्द ने करवट ली या तुमने इधर देखा

जिगर मुरादाबादी

तुम ज़माने की राह से आए
वरना सीधा था रास्ता दिल का

बाकी सिद्दीकी

दिल गया रौनके-हयात[५] गई
गम गया सारी कायनात[६] गई

जिगर मुरादाबादी

पहले आती थी हाले-दिल पे हँसी
अब किसी बात पर नहीं आती

ग़ालिब

---

१. योग्य २. दुर्घटनाओं का तूफान ३. पार्श्व ४. वजह ५. ज़िंदगी की सुंदरता ६. दुनिया

दिल की बिसात[१] क्या थी निगाहे-जमाल[२] में
एक आईना था टूट गया देखभाल में

सीमाब अकबराबादी

बात बस से निकल चली है
दिल की हालत सँभल चली है

फैज़ अहमद 'फैज़'

शाद तो क्या बर्बाद करोगे
लो, दिल लो, क्या याद करोगे ?

असर लखनवी

वो दिल कि तुझको नाझ रहा जिसपे मुद्दतों
ऐ दोस्त, तेरे नाझ के काबिल है आज भी

जाँनिसार अख्तर

रात के सन्नाटे में हमने क्या-क्या धोके खाये हैं
अपना ही जब दिल धड़का, तो हम समझे वो आए हैं

कतील शिफाई

जिसने दिल को खोया, उसीको कुछ मिला
फायदा देखा इसी नुकसान में

दाग़

दिल नहीं मानता, जहाँ जाऊँ
हाय ! मैं क्या करूँ, कहाँ जाऊँ

नासिख

मेरी किस्मत में गम गर इतना था
दिल भी या रब[३] कई दिए होते

ग़ालिब

---

१. महत्त्व २. प्रेयसी की नझर में ३. ईश्वर

हमने सीने से लगाया दिल, न अपना बना सका
मुस्कुरा कर तुमने देखा, दिल तुम्हारा हो गया

जिगर मुरादाबादी

तड़पती देखता हूँ जब काई शै[1]
उठा लेता हूँ अपना दिल समझकर

तस्लीम

दिल टूटने से थोड़ी सी तकलीफ तो हुई
लेकिन तमाम उम्र को आराम हो गया

सफी लखनवी

जब भी किया इरादा मिलने का दो दिलों ने
दीवार बन गई है दुनिया की मेहरबानियाँ

दिल ने दुनिया नई बना डाली
और हमें आज तक खबर न हुई

अझीझ लखनवी

है किसका जिगर जिस पे बेदाद करोगे
लो हम तुम्हें दिल देते हैं, क्या याद करोगे ?

जुबान दिल की हकीकत को क्या बयाँ करती
किसी का हाल किसी से कहा नहीं जाता

अझीझ लखनवी

१. चीज

बात भी आपके आगे न जुबाँ से निकली
लीजिए आए थे हम सोच के क्या-क्या दिल में

वजीर अली सबा

मेरे लबों का तबस्सुम तो सबने देख लिया
जो दिल पे बीत रही है वो कोई क्या जाने ?

सबा अफगानी

दिल उमड़ आया है, 'अहसान' भर आये आँसू
जब सुना है किसी फनकार[१] ने फन[२] बेच दिया

अहसान बिन दानिश

दिल ही में नहीं रहते, आँखों में भी रहते हो
तुम दूर भी रहते हो तो दूर नहीं होते

फानी बदायूनी

रंजिश[३] ही सही दिल ही दुखाने के लिए आ
आ फिर से मुझे छोड़ के जाने के लिए आ

अहमद फराज

सब्र कहता है कि रफ्ता-रफ्ता मिट जायेगा दाग़
दिल ये कहता है कि बुझने की ये चिंगारी नहीं

मिर्झा यगाना लखनवी

कलन्दरी है कि रखता है दिल गनी[४] 'अंजुम'
कोई दुकाँ न कोई कारखाना रखता है

अंजुम रूमानी

थे खिज्र[५] भी लाखों यहाँ, ईसा भी बहुत थे
आझार जो दिल का है सो आझार चले है

अदा जाफरी

---

१. कलाकार २. कला ३. मन मुटाव ४. धनवान ५. एक पैगम्बर जो भूले-भटके लोगों को रास्ता बताते हैं

जिक्र मिरा और तेरे लब पर, याद मेरी और तेरे दिल में
झूठी आस दिलाने वाला, आग न भड़का मेरे दिल में
कतील शिफाई

डरते-डरते सोच रहा हूँ, वो मेरे हैं अब भी शायद
वरना कौन किया करता है, यूँ फेरों पर फेरे दिल में
कतील शिफाई

दिल वो बिगड़ा हुआ बच्चा है कि जो माँगेगा
गर उसी वक्त न दोगे तो मचल जायेगा
जफर ईकबाल

दिल की बाझी हार के रोये हो तो ये भी सुन रक्खो
और अभी तुम प्यार करोगे, और अभी पछताओगे
तौसीफ तबस्सुम

गुबार दिल पे बहुत आ गया है, धो लें आज
खुली फझा[१] में कहीं दूर जा के रो लें आज
फरीद जावेद

दिल में अब यूँ तिरे भूले हुए गम आते हैं
जैसे बिछड़े हुए काबे में सनम आते हैं
फैझ अहमद 'फैझ'

दुश्मनी लाख सही, खत्म न कीजे रिश्ता
दिल मिले या न मिले, हाथ मिलाते रहिये

आबाद था ये दिल तो न मेहमाँ हुआ कोई
वीरान हो गया है तो इक रास्ता बना
राही मासूम रझा

१. खुला हुआ मैदान

अभी तो दिल में हल्की सी खलिश[१] महसूस होती है
बहुत मुमकिन है कल इसका मुहब्बत नाम हो जाए

शेरी भोपाली

मुझे यह डर है दिले-जिन्दा[२] तू न मर जाये
कि जिन्दगानी इबारत[३] है तेरे जीने से

ख्वाजा मीर दर्द

आग दिल में लगी न हो जब तक
आँख अश्कों से[४] तर नहीं होती

आरज़ू लखनवी

मेरे धड़कते हुए दिल पे हाथ रख दे कोई
कि आज थोड़ी सी तस्कीन[५] चाहता हूँ मैं

अख्तर अन्सारी

तुम तो दिल माँगते हो, याँ जान तलक हाजिर है
बात ये भी है कोई, आप के फर्माने की ?

अहसन

दिल लगी दिल्लगी नहीं नासेह[६]
तेरे दिल को अभी लगी ही नहीं

दाग़

मैंने जो कभी माँगा दूर से दिल डर-डर कर
उसने धमका के कहा, 'पास तो आ, देते हैं'

दाग़

---

१. चुभन २. हँसमुख ३. मजबूत ४. आँसूओं ५. तसल्ली ६. उपदेशक

यूँ तसल्ली दे रहा हूँ मैं दिले-बीमार को
जिस तरह थामे कोई गिरती हुई दीवार को

कतील शिफाई

काबा सौ बार वो गया तो क्या ?
जिसने यहाँ एक दिल में राह न की

असगर गोंडवी

आलम में दिल का कोई खरीदार न पाया
इस जिन्स[१] का याँ हमने खरीदार न पाया

मीर

अब गुल से नजर मिलती ही नहीं, अब दिल की कली खिलती ही नहीं
ऐ फस्ल-ए-बहाराँ[२] रुखसत[३] हो, हम लुत्फ-ए-बहाराँ[४] भूल गए

मजाझ

तूम्हें जब कभी मिलें फुर्सतें, मेरे दिल से बोझ उतार दो
मैं बहुत दिनों से उदास हूँ, मुझे कोई शाम उधार दो

एतबार साजिद

महफिल की महफिल हैं गमगीं
किस किसका दिल शाद[५] करोगे ?

मुहम्मद दीन तासीर

हम तुमसे किस हविस[६] की फलक[७] जुस्तजू[८] करें ?
दिल ही नहीं रहा है जो कुछ आरझू करें

ख्वाजा मीर दर्द

जो दिल पर छोड़ गए नक्श उम्र भर के लिए
कुछ ऐसे जलवे भी मेरी नजर से गुजरे हैं

शौक

---

१. चीज २. वसंत ऋतु ३. बिदा ४. वसंत का आनंद ५. खुश ६. तृष्णा ७. आकाश ८. इच्छा

तू जल रहा है यह कहीं दुनिया न जान ले
दिल, जल तू इस तरह कि जरा भी धुआँ न हो

जाफिर

दिले-नाशाद[१] को तुमने न कभी शाद किया
भूल कर बैठे हमीं, फिर न कभी याद किया

हैदरी बेगम 'कमर'

सुबह की, मैंने करवटें ले कर
रात को दिल जो बेकरार हुआ

बादशाह महल 'आलम'

दिल की बरबादियों पे नाझाँ[२] हूँ
फतह पाकर शिकस्त खाई है

शकील बदायूनी

सदाकत[३] हो तो दिल सीने से खिंचने लगते हैं वाइज
हकीकत खुद को मनवा लेती है, मानी नहीं जाती

जिगर मुरादाबादी

इन उजड़ी हुई बस्तियों में दिल नहीं लगता
है जी में वहीं जा बसें वीराना जहाँ हो

मीर

समझकर रहमदिल तुमको, दिया था हमने दिल अपना
मगर तुम तो बला निकले, गजब निकले, सितम निकले

दाग़

रुकावट न होती तो दिल एक होता
तुम्हारा हमारा, हमारा तुम्हारा

दाग़

---

१. दु:खी दिल २. नाझ करने वाला ३. सच्चाई

दिल जो अपना हमने माँगा तो कहा
'क्या चुरा लाये तुम्हारे घर से हम ?'

दाग़

अब न दीजे 'जफर' किसीको दिल
कि जिसे देखा बेवफा देखा

बहादुर शाह 'जफर'

शाम ही से कुछ बुझा सा रहता है
दिल हुआ है चिराग मुफलिस का

मीर

अहले-जबाँ[१] तो है बहुत, कोई नहीं अहले-दिल[२]
कौन तेरी तरह, 'हफिझ' दर्द के गीत गा सके

हफिज जालंधरी

आप तो नजदीक से नजदीकतर आते गये
पहले दिल, फिर दिलरुबा[३], फिर दिल के मेहमाँ हो गये

ऐ मेरे दर्दमंद[४] दिल सुन, मेरी एक बात सुन
उसको न भूलना कभी, जिसने तुझे भूला दिया

आसी उल्दनी

चले आओ जब चाहो दिल में हमारे
न दर[५] है, न दरबान, उजड़ा मकाँ है

मुगल जान तस्नीम

तू बचाये लाख दामन, मेरा फिर भी है ये दावा
तेरे दिल में मैं ही मैं हूँ, कोई दूसरा नहीं है

शकील बदायूनी

---

१. भाषा के पंडित २. दिल वाले ३. प्रियतमा ४. दुःखी ५. द्वार

तू मुझको न भूला दिल से, मगर मेरा न हुआ, मेरा न हुआ
मैं तुझको भुला कर भी प्यारे, तेरा ही रहा, तेरा ही रहा

फिराक गोरखपुरी

दिल का क्या मोल है ? शर्मिन्दा न कीजिए मुझको
आप की चीज है, ले जाईये, कीमत कैसी ?

तालिब

दिल की बस्ती अजीब बस्ती है
लुटने वालों को तरसती है

इकबाल

दिल के जो तार तुमने छेड़े थे
उन्हीं तारों पे गा रहा हूँ मैं

फरीद जावेद

दिल में किसीके राह किये जा रहा हूँ मैं
कितना हसीं गुनाह किये जा रहा हूँ मैं

जिगर मुरादाबादी

दिलवालों की हिम्मत देखो, दिलवालों की किस्मत देखो
दिल के सहारे चल निकले थे, दिल के सहारे डूब गये

तबस्सुम

दिल है सीने में कोई आग नहीं
ये धुवाँ सा कहाँ से उठता है ?

फिराक गोरखपुरी

मेरे दिले-तबाह[१] का आलम[२] न पूछिये
इक फूल था जो खिलते ही मुर्झा के रह गया

शकील बदायूनी

---

१. बर्बाद दिल २. दशा

मेरे दिले-मायूस[१] में क्यूँ कर न हो उम्मीद
मुरझाये हुए फूल में क्या बू नहीं होती ?

अख्तर अन्सारी

कोई मेरे दिल से पूछे तेरे तीरे-नीमकश[२] को
ये खलिश कहाँ से होती जो जिगर के पार होता

ग़ालिब

दिल अभी पूरी तरह टूटा नहीं
दोस्तों की मेहरबानी चाहिये

अदम

दिल के आईने में है तस्वीरे-यार
जब जरा गर्दन झुकायी देख ले

मोमिन

सुकूने-दिल[३] के लिये मैं कहाँ-कहाँ न गई
मगर ये दिल कि सदा उसकी अंजुमन में रहा

परवीन शाकिर

दीवाना

हमें ये फिक्र उन की अंजूमन[४] किस हाल में होगी ?
उन्हें ये गम कि उन से छूट के दीवानों पे क्या गुजरी

साहिर लुधियानवी

---

१. निराश दिल २. आधा खिंचा हुआ तीर ३. मन की शांति ४. महफिल

फेंकते रहते हैं पत्थर तेरे दीवानों पर
कुछ वही लोग जो शीशे की दुकां रखते हैं

उमर अंसारी

जुनूँ[1] का दौर है, किस किसको जाऐं समझाने
इधर है अक्ल के दुश्मन, उधर है दीवाने

कतील शिफाई

किसी महफिल में भी दीवाना जाए
तिरे ही नाम से पहचाना जाए

कतील शिफाई

तूर[2] पर छेड़ा था जिसने आप को
वो मेरी दीवानगी थी, मैं न था

अदम

नया जमाना बनाने चले थे दीवाने
नई जमीन, नया आस्माँ बना न सके

जिगर मुरादाबादी

सुलगना और जीना, यह कोई जीने में जीना है
लगा दे आग अपने दिल में दीवाने, धुआँ कब तक ?

सीमाब अकबराबादी

कितने दीवाने मुहब्बत में मिटे हैं 'सीमाब'
जमा की जाय जो खाक उनकी तो वीराना बने

सीमाब अकबराबादी

तेरे दीवानों का आबादी में जी लगता नहीं
बस्तियाँ उनकी बसा करती हैं वीरानों के पास

असहन मारहरवी

---

१. पागलपन २. शाम(सीरिया)का एक पहाड़ जिस पर हझरत मूसा ने ईश्वर का जलवा देखा था

न जाने क्या हो यह दीवाना जिस जगह बैठे
खुदी[1] के नशे में कुछ अनकही न कह बैठे

यगाना चंगेझी

वो भी क्या दिन थे कि दीवाना बने फिरते थे
सुन लिया था तिरे बारे में कहीं से हमने

जाँनिसार अख्तर

ढल चुकी रात तो अब कुहर[2] भी छट जाएगी
अब भी उम्मीद की लौ कम न करो दीवानो !

अहमद फराझ

दीवाने को मत समझाओ
दीवाने कहलाओगे

मुहसिन भोपाली

मैं और तुमसे तर्के-मोहब्बत[3] की आरझू
दीवाना कर दिया है गमे-रोजगार[4] ने

साहिर लुधियानवी

किसीने कहा - तुम पे मरता है 'अख्तर'
कहा उसने - ऐसे दीवाने बहुत हैं

अख्तर

जाइये, बैठिये हुकमरानों[5] के बीच
आप क्यूँ आ गये हम दीवानों के बीच

अख्तर

जिसे दीवानगी कहते हैं उल्फत[6] की नबुव्वत[7] है
गनीमत है जो सदियों में कोई दीवाना हो जाय

सीमाब अकबराबादी

---

१. अभिमान २. कोहरा ३. प्रेम का त्याग ४. सांसारिक दुःख ५. शासक ६. प्रेम ७. पैगम्बरी

अपना दीवाना बनाया मुझे होता तूने
क्यों खेरदमन्द[१] बनाया, न बनाया होता

बहादुर शाह जफर

ये दामन[२] है, ये हैं गरेबाँ[३], आओ कोई काम करें
मौसम का मुँह तकते रहना काम नहीं दीवानों का

हफीझ जालंधरी

कोई नासेह[४] है, कोई दोस्त है, कोई गमख्वार[५]
सबने मिलकर मुझे दीवाना बना रक्खा है

आसी उल्दनी

देखता है न इमारत को न वीराने को
जिस जगह पड़ रहा, नींद आ गई दीवाने को

आसी उल्दनी

कोई ऐसा नहीं यारब[६] जो इसके दर्द को समझे
नहीं मालूम क्यों खामोश है दीवाना बरसों से

असगर गोंडवी

चल के 'बिस्मिल' की हिकायत[७] तो सुनो
कौन कहता है कि दीवाना है

बिस्मिल अझीमाबादी

कहता था कसूसे[८] कुछ तकता था कसूका मुँह
कल 'मीर' खड़ा था याँ, सच है दीवाना था

मीर

---

१. बुद्धिमान २. पल्ला ३. कुरते आदि में गले का भाग ४. उपदेशक ५. दुःख बँटाने वाला ६. हे प्रभु ७. कहानी ८. किसी से

आशिक तो था 'हवस' कहो दीवाना कब हुआ
लो उठ गया हेजाब बड़ा ही गजब हुआ

मुहम्मद तकीखाँ 'हवस'

होश में आओ जरा, तुम तो भला क्या हो 'जलाल'
अच्छे अच्छों को वो दीवाना बना देते हैं

जलाल

राह में और भी दीवानों से मिलते जुलते
पूछते पूछते हम उनके मकाँ तक पहुँचे

बेताब अझीमाबादी

मेरी दीवानगी पे हँसने वाले, पूछता हूँ मैं
अगर हो इत्तेफाक[1] ऐसा कि तू दीवाना हो जाये

अदम

होश आये भी तो क्यों कर तेरे दीवाने को
एक जाता है तो दो आते हैं समझाने को

होशियार मेरठी

दीवानावार दौड़ के कोई लिपट न जाय
आँखों में आँखें डालकर देखा न कीजिये

यगाना चंगेझी

कोई उल्फत का दीवाना, कोई मतलब का दीवाना
यह दुनिया सिर्फ दीवानों का घर मालूम होती है

सीमाब अकबराबादी

---

१. संयोग

चलो अच्छा हुआ काम आ गई दीवानगी अपनी
वरना हम जमाने भरको समझाने कहाँ जाते

कतील शिफाई

कभू रोना, कभू हँसना, कभू हैरान हो रहना
मुहब्बत क्या भले चंगे को दीवाना बनाती है

मीर

अब कया उमीद रक्खूँ ऐ हुस्न-ए-यार तुझसे
तूने तो मुस्कराकर दीवाना कर दिया

जिगर मुरादाबादी

बाग में लगता नहीं सहरा से घबराता है दिल
अब कहाँ ले जा के बैठें ऐसे दीवाने को हम

नज़ीर

किसे मजाल कहे मुझको कोई दीवाना
अगर ये तुमने कहा है, तो कोई बात नहीं

जिगर मुरादाबादी

दीवाना मैं तेरा हूँ, परी से नहीं गरज
तू हो, किसी की जल्वागरी[१] से नहीं गरज

मम्मून

मैं दीवाना हूँ मेरे पास महशर[२] में खड़े रहना
न जाने मैं कहूँ क्या और पूछे क्या खुदा मुझसे

सीमाब अकबराबादी

मर्गे-मजनू[३] पे अक्ल दंग है 'मीर'
क्या दीवाने ने मौत पायी है

मीर

---

१. रुप का प्रदर्शन २. प्रलय, कयामत ३. मजनू की मौत

हम-से दीवाने भी दुनिया ने न देखे होंगे
बेवफाई का तेरी, नाम वफा रखा है

साहिर लखनवी

दीवाना बनाना है तो दीवाना बना दे
वर्ना कहीं तकदीर तमाशा न बना दे

बहजाद लखनवी

आँखें हैं सो खीरा-खीरा[१] हैं, बातें हैं सो बहकी बहकी है
आये हैं कहाँ से आज 'असर' दीवाने से, मस्ताने से

असर लखनवी

होशो-हस्ती से तो बेगाना बनाया होता
काश तूने मुझे दीवाना बनाया होता

फानी बदायूनी

तुम जानो, तुम्हें क्या कहे हैं, क्या न कहे हैं
हमको तो जो देखे हैं, वो दीवाना कहे हैं

कलीमुद्दीन आजिझ

हर फरेबे-गमे-दुनिया[२] से खबरदार तो है
तेरा दीवाना किसी काम में हुशियार तो है

फिराक गोरखपुरी

ऐसे दीवाने का दुनिया में ठिकाना है कोई
लोग अपना जिसे समझे, न तुम्हारा समझे

फिराक

---

१. प्रकाश से भरपूर २. दुनिया का दु:ख और कपट

गझाला[1] तुम तो वाकिफ हो, कहो मजनूं के मरने की
दीवाना मर गया आखिर को, वीराने पे क्या गुजरी

राम नारायण मौजूँ

दीवाने फिर दीवाने हैं, मचल गये तो क्या होगा
झूठी-सच्ची आस दिलाकर यूँ कब तक बहलाओगे

खान अर्मां

इश्क को महझ[2] जुनूं[3] मैंने समझ रखा था,
अक्ल आई मुझे मिल के तेरे दीवाने को

जोश मल्सियानी

होशो-खिरद का[4] दामन थामे दूर तलक हम चलते गए
आई जब मंझिल, तो देखा सब दीवाने थे

करम हैदरी

खींच ले जाए जो तेरे दर तक
ऐसी दीवानगी को क्या कहिए

रविश सिद्दीकी

मेरी बातों पे दुनिया की हँसी कम होती जाती है
मेरी दीवानगी शायद मुसल्लम[5] होती जाती है

आनंद नारायण मुल्ला

हर एक सूरत हर एक तस्वीर मुबहम होती जाती है
इलाही क्या मेरी दीवानगी कम होती जाती है

जिगर मुरादाबादी

अब सबब क्या है, किसे तू ढूँढ़ता है ये बता
तुझसा दीवाना भी कोई दूसरा मिल जाएगा

'हीरा'

---

१. हिरनी २. केवल ३. उन्माद ४. होश और दिमाग का ५. संपूर्ण

अपने दीवाने को जाकर देख सहरा[१] में कभी
पाँव के छालों से अपने, खेलता मिल जाएगा
अरविन्द कुमार 'अश्क'

दोनों दीवाने हैं क्या समझेंगे आपस में अबस[२]
हमको समझाता है दिल और दिल को समझाते हैं हम
मीर हसन

इक मुअम्मा[३] है समझने का, न समझाने का
जिंदगी काहे को है ख्वाब है दीवाने का
फानी बदायूनी

खुदा जाने कहाँ है, 'असगरे-दीवाना' बरसों से
कि जिसको ढूँढ़ते हैं काबा-ओ-बुतखाना[४] बरसों से
असगर गोंडवी

जुबाँ पर जब किसीके दर्द का अफसाना[५] आता है
हमें रह रह के याद अपना दिले दीवाना आता है
सिद्दक जायसी

वस्ल में बेखुद रहे और हिज्र में बेताब हो
इस दीवाने दिल को 'रुस्वा' किस तरह समझाइए
आफताब जान रुस्वा

हिचकी का तार टूट चूका, रूह[६] अब कहाँ
झंजीर खुल के गिर पड़ी, दीवाना छूट गया
अझीझ खवी

तुम हो कि मुद्दतों में भी मेरे न हो सके
मैं हूँ कि एक बात में दीवाना हो गया
राजबलदेव 'राज'

---

१. जंगल २. व्यर्थ ३. समस्या ४. मंदिर-मस्जिद ५. कहानी ६. आत्मा

अंदाज़ बला के हैं कयामत की नज़र है
जलवे का यह आलम है कि दीवाना बना दे

शातिर देहलवी

हम तो दीवाने हैं मजनूँ की कहे जायेंगे
हैं हसीं आप तरफदारी-ए-लैला[१] कीजे

आरिफ

कोई इस फस्ल[२] में दीवाना हुआ है शायद
कि हवा हाथ में झंजीर लिये फिरती है

अैशी

मेरी दीवानगी पर होश वाले बहस फर्माऐं
मगर पहले उन्हें दीवाना बनने की जरूरत है

सीमाब अकबराबादी

हाँ, हाँ, तुम्हारे हुस्न की कोई खता[३] न थी
मैं हुस्ने इत्तफाक[४] से दीवाना हो गया

कैस[५] जंगल में अकेला है, मुझे जाने दो
खूब गुज़रेगी जो मिल बैठेंगे दीवाने दो

मियाँदाद खाँ सय्याद

उलझा है कहीं दामन, रंगी हैं कहीं काँटें
इस राह से गुज़रा है शायद कोई दीवाना

ईम्तयाझ अली खाँ 'अर्शी'

आलम तो है दीवाना 'जिगर' हुस्न की खातिर
तू अपने लिए हुस्न को दीवाना बना दे

जिगर मुरादाबादी

---

१. लैला का पक्ष २. ऋतु ३. दोष ४. संयोग ५. मजनूँ

यह बेखुदी का आलम, दीवानगी का नकशा[1]
आखिर मुझे मिटा कर क्या बात चाहता है
बेगम झरीना

इब्तदा[2] से आज तक 'नातिक' की है ये सरगुझश्त[3]
पहले चुप था फिर, हुआ दीवाना, अब बेहोश है
नातिक लखनवी

ऐ खिरदमन्दो[4], मुबारक हो तुम्हें फरझानगी[5]
हम हों और सहरा[6] हो और वहशत[7] हो और दीवानगी
शाह हातिम

मुनहसर[8] मौसमे-गुल[9] पर नहीं सौदा[10] मेरा
आ गया ज़िक्र तेरा और मैं दीवाना हुआ
जलील मानिकपुरी

जो फूल आता है गुलशन में गरीबाँ-चाक[11] आता है
बहारे-रंगो-बू[12] में खून दीवानों का शामिल है
आसी उलदनी

फिरते थे दश्त-दश्त[13] दीवाने किधर गये
ये आशिकी के हाय ज़माने किधर गये ?
शाह मुबारक आबरू

जहाँ पे चाके-गरीबाँ[14] भी चाके-दिल[15] बन जाय
गुज़र रहे हैं अब उन मंझिलों से दीवाने
ईकबाल सफीपुरी

---

१. जो अंकित किया गया हो २. आरंभ ३. जीवन चरित्र ४. ज्ञानियों ५. ज्ञान ६. जंगल ७. पागलपन ८. निर्भर ९. वसंत ऋतु १०. उन्माद ११. कुर्ते का फटा हुआ उपरी हिस्सा १२. रंग और सुगंध की बहार १३. जंगल-जंगल १४. कुर्ते का टुकड़ा १५. हृदय का टुकड़ा

हमने छानी हैं बहुत दैरो-हरम[१] की गलियाँ
कहीं पाया न ठिकाना तेरे दीवाने का

फानी बदायूनी

अल्लाह-अल्लाह हुस्न की ये परदादारी देखिए
भेद जिसने खोलना चाहा, वो दीवाना हुआ

आरज़ू लखनवी

तूने उठवा जो दिया अपनी गली से ऐ दोस्त
कोई पत्थर भी नहीं मारता दीवाने को

'कलीम'

दुआ

जान तुम पर निसार[२] करता हूँ
मैं नहीं जानता दुआ क्या है

गालिब

मर्ज़ी-ए-यार[३] के खिलाफ न हो
लोग मेरे लिए दुआ न करें

हसरत मोहानी

फकीराना आये सदा कर चले
मियाँ खुश रहो, हम दुआ कर चले

मीर

मत पूछो कि क्या माँग के रोए हैं खुदा से
यूँ समझो कि हुआ खात्मा[४] आज अपनी दुआ का

हफीज़ जौनपुरी

१. मंदिर-मिस्जद २. न्योछावर ३. प्रेयसी की इच्छा ४. अंत

कहीं रहे वो मगर खैरियत के साथ रहे
उठाये हाथ तो याद एक ही दुआ आई

परवीन शाकिर

माँगा करेंगे अब से दुआ, हिज्रे-यार[१] की
आखिर तो दुश्मनी है, दुआ को असर के साथ

मोमिन

सेहर[२] न देखनी हमको नसीब हो यारब
शबे-फिराक[३] में अपनी यही दुआ होगी

बेताब रामपुरी

मुझे ज़िंदगी की दुआ देने वाले
हँसी आ रही है तेरी सादगी पर

गोपाल मित्तल

याद आने लगे मुझको मुलाकात के लम्हे[४]
मैं उनसे बिछड़ने की दुआ माँग रहा हूँ

नाजिश प्रतापगढी

मेरे नसीब से तरसा किये दोनों
असर दुआ के लिए दुआ असर के लिऐ

अहमदी बेगम

बाकी मेरे हिस्से की अब दो ही ये बातें हैं
जीने की दुआ देना, मरने की दुआ करना

जोश मलिहाबादी

मैं ज़िंदगी की दुआ माँगने लगा हूँ बहुत
जो हो सके तो दुआओं को बेअसर कर दे

इफ्तिखार आरिफ

---

१. प्रियतम से वियोग २. सुबह ३. विरह की रात्रि ४. क्षण

फूल मुरझाते हैं अल्फाझ नहीं मुरझाते
दूर जाना है, बुझुर्गों की दुआ ले जाओ

शैदा रुमानी

खुशबू की तरह आया वो तेज़ हवाओं में
माँगा था जिसे हमने दिनरात दुआओं में

बशीर बद्र

ज़माने की, न फलक[१] की जफा[२] से डरता हूँ
मगर गरीब की इक बद दुआ से डरता हूँ

बलवन्तकुमार सागर

माँ ने सौ साल जो जीने की दुआ दी है मुझे
एक लाचार बुढ़ापे की सज़ा दी है मुझे

खलील धनतेजवी

असर दुआ का अजब काम जाके कर आया
इधर तो हाथ उठे, वो उधर नजर आया

बेताब अझीमाबादी

आखिर कोई उम्मीदे-असर[३] भी दुआ के बाद
कुछ आप भी कहेंगे, मेरी इल्तजा[४] के बाद

फानी बदायूनी

लुत्फ आ जाये जो वो बुत भी आकर सुन ले
जो दुआ हिज्र में अल्लाह से हम करते हैं

'केसर'

खुद सहे गम और यह माँगी दुआ
ऐश में गुझरे तुम्हारी ज़िंदगी

रैना सागर

---

१. आकाश २. जुल्म ३. असर की आशा ४. निवेदन

निकल जाए दुनिया में हसरत किसीकी
हमारे लिए यह दुआ कीजियेगा

मस्त बनारसी

हजारों बार जो माँगा करो तो क्या हासिल
दुआ वही है जो दिल से कभी निकलती है

दाग़

बैठें है आज हाथ उठाकर दुआ से हम
बिगड़ी बुतों[१] से, रुठ गऐं हैं खुदा से हम

हफीझ जौनपुरी

रह गया है ले देकर आसरा दुआओं का
वो भी छूट जाए गर आदमी कहाँ जाए

जमील मझहरी

उनकी नाकामी को या मैं जानता हूँ या खुदा
वो दुआ-ए-वस्ल[२] जो मैंने हजार बार की

दाग़

असर को साथ लिये कामयाब हो के फिरी
फलक[३] से मेरी दुआ मुस्तजाब[४] हो के फिरी

शफक अमादपुरी

चुपके-चुपके दिले-बेताब[५] दुआ माँगे है
ये मुझे भी नहीं मालूम कि क्या माँगे है

कमर मुरादाबादी

इक तेरी तमन्ना ने कुछ ऐसा नवाज़ा है
माँगी ही नहीं जाती अब कोई दुआ हमसे

अेझाज कामटवी

---

१. प्रेयसी २. मिलन की प्रार्थना ३. आसमान ४. स्वीकृत ५. बेचैन मन

कुछ न दे पाऐं उसे हम तो दुआ ही दे दें
वो जो अपनी भी नहीं और परायी भी नहीं

'शमशाद' अहमद

याद आए हैं उफ गुनाह क्या-क्या
हाथ उठाए हैं जब दुआ के लिए

झफी काकोरवी

बारहा[१] ये हुआ, जाकर तेरे दरवाजे तक
हम पलट आए हैं नाकाम दुआओं की तरह

मुमताझ राशिद

वो बड़े खुशनसीब हैं ऐ 'असर'
जिनके हक में दुआ करे कोई

मुनव्वर खाँ 'असर'

सब कुछ खुदा से माँग लिया, तुझको माँग कर
उठते नहीं है हाथ मिरे इस दुआ के बाद

आगा हश्र कश्मीरी

वो बड़ा रहीम-ओ-करीम[२] है, मुझे ये सिफत[३] भी अता[४] करे
तुझे भूलाने की दुआ करुँ, तो मेरी दुआ में असर न हो

जिस दर पे कभी जान की माँगी थी दुआऐं
कातिल ने उसी दर पे जमायी है निगाहें

सुरेश जैन

बे अमल को[५] दुनिया में राहतें नहीं मिलतीं
दोस्तों, दुआओं से जन्नतें नहीं मिलती

मंझर भोपाली

---

१. कई बार २. दयालु और कृपालु ३. स्वभाव, गुण ४. प्रदान ५. जो कार्य न करे

दुआ जो दिल से निकले कारगर हो
यहाँ दिल ही नहीं, दिल से दुआ क्या ?

सीमाब अकबराबादी

सुनने वाले रो दिए सुन कर मरीझे-गम का हाल
देखने वाले तरस खा कर दुआ देने लगे

साकिब लखनवी

यह जान लो कि हाथ उठाने की देर है
खाली गई न जायगी अपनी दुआ कभी

दुआऐं दीजिए बीमार के तबस्सुम को
मिझाज पुछने वालों की आबरु रख ली

अख्तर

उसीकी देन है, गम में गिला[१] नहीं करता
कबूल हो कि न हो, अब दुआ नहीं करता

नातिक गुलावटी

जो झहर पी चुका हूँ, तुम्हीं ने मुझे दिया
अब तुम तो ज़िंदगी की दुआऐं मुझे न दो

अहमद फराझ

अब्र[२] बरसे तो इनायत[३] उसकी
शाख तो सिर्फ दुआ करती है

परवीन शाकिर

हम कागझी गुलों से भी रखते नहीं है बैर
अपनी तो ये दुआ है उन्हें भी महक मिले

कतील शिफाई

---

१. शिकायत २. बादल ३. मेहरबानी

कोई चारा[१] नहीं दुआ के सिवा
कोई सुनता नहीं खुदा के सिवा

हफीझ जालंधरी

आखरी पल भी गनीमत है बहुत
तुम चले आओ, दुआ रहने दो

मझहर हमाम

उम्रे-जावेद[२] की दुआ करते
'फैझ' इतने वो कब हमारे थे

अहमद 'फैझ'

उसके लिऐ तो हाथ उठाना भी है गुनाह
जिसकी दुआ हों आप, वो फिर क्या दुआ करे ?

शाद अझीमाबादी

मौत माँगी थी खुदाई तो नहीं माँगी थी
ले दुआ कर चुके अब तर्के-दुआ[३] करते है

यास यगाना चंगेझी

अब मुझको फायदा हो दवा-ओ-दुआ से क्या ?
वो मुँह पे कह गये - 'यह मरझ[४] ला इलाज है'

आरझू लखनवी

क्या-क्या दुआऐं माँगते हैं सब मगर 'असर'
अपनी यही दुआ है, कोई मुद्दआ[५] न हो

असर लखनवी

न लुटता दिन को, तो क्यों रात को यूँ बेखबर सोता
रहा खटका न चोरी का, दुआ देता हूँ रहझन[६] को

ग़ालिब

---

१. उपाय २. चिरायु होने की ३. दुआ का त्याग ४. बीमारी ५. इच्छा ६. लुटेरा

ऐ खुदा मेरे दुश्मनों के लिये
मेरे होटों पे तू दुआ रखना

खलील धनतेजवी

हाँ 'खलील' ! ऐसे भी कुछ लोग हैं इस दुनिया में
जिनके जीने की दुआ रोज़ ये दुनिया माँगे

खलील धनतेजवी

यारब[१] मेरे दुश्मन को सदा रखना सलामत
वर्ना मेरे मरने की दुआ कौन करेगा ?

दुआ तो जाने कौन-सी थी, ज़ेहन[२] में नहीं
बस इतना याद है कि दो हथेलियाँ मिली हुई थीं
जिन में इक मेरी थी और इक तुम्हारी

परवीन शाकिर

ये तेरी बददुआऐं क्या करेंगी
जो तेरा है, वही मेरा खुदा है

खलील धनतेजवी

दुनिया

समझ तो ली है दुनिया की हकीकत
मगर अब अपना दिल बहला रहा हूँ

आसी उल्दनी

दुनिया बस इससे और ज़्यादा नहीं है कुछ
कुछ रोझ हैं गुझारने और कुछ गुझर गए

हकीम अजमलखाँ

---

१. हे ईश्वर २. बुद्धि

बहुत कुछ और भी है इस जहाँ में
ये दुनिया महझ[१] गम ही गम नहीं है

मझाज

अच्छा हुआ कि छूटी खुद मुझसे फिक्रे-दुनिया[२]
जितना खयाल करता, उतना मलाल[३] होता

आसी उल्दनी

दुनिया ने किसका राहेफना[४] में दिया है साथ
तुम भी चले चलो यूँ ही जब तक चली चले

जौक

समझता हूँ कि दुनिया में हमेशा रंज सहना है
मगर फिर क्या करूँ 'आसी' इसी दुनिया में रहना है

आसी उल्दनी

मरने की दुआऐं क्यों माँगूँ, जीने की तमन्ना कौन करे
ये दुनिया हो या वो दुनिया, अब ख्वाहिशे-दुनिया कौन करे

मुईन हसन जझ्बी

सब से हँस कर मिलने वाले हमको किसीसे बैर नहीं
दुनिया है महबूब[५] हमें और हम दुनिया के प्यारे हैं

जमिल मलिक

यूँ सब को भूला दे कि तुझे कोई न भूले
दुनिया ही में रहना है तो दुनिया से गुझर जा

फानी बदायूनी

मैं सोज़े-वफा[६] का दुनिया का पैगाम सुनाने आया हूँ
जो आग लगे तो बूझ न सके वो आग लगाने आया हूँ

सीमाब अकबराबादी

---

१. सिर्फ २. दुन्यवी चिंता ३. दुःख ४. मृत्यु मार्ग ५. प्यारी ६. वफा का कष्ट

यह दुनिया अगर मेरे काबिल नहीं है
तेरे पास या रब[१], जहाँ और भी है ?

सीमाब अकबराबादी

ज़माने की अदावत का सबब थी दोस्ती जिनकी
अब उनको दुश्मनी है हमसे, दुनिया इसको कहते हैं

बेख़ुद देहलवी

सिवा इसके दुनिया में क्या हो रहा है
कोई हँस रहा है, कोई रो रहा है

नूर नारवी

'सौदा' जहाँ[२] में आ के कोई कुछ न ले गया
जाता हूँ एक मैं दिले पूरआरज़ू[३] लिये

सौदा

न जाना कि दुनिया से जाता है कोई
बहुत देर की मेहरबाँ, आते आते

दाग़

जग सूना है तेरे बगैर, आँखों का क्या हाल हुआ
जब भी दुनिया बसती थी, अब भी दुनिया बसती है

फानी बदायूनी

'जलाल' बागे-जहाँ[४] में वो अन्दलीब[५] हूँ मैं
चमन को फूल मिले, मुझ को दाग़ भी न मिला

जलाल

एक महरुम[६] चले 'मीर' हमीं दुनिया से
वरना आलम[७] को ज़माने ने दिया क्या-क्या कुछ

मीर

---

१. खुदा २. दुनिया ३. आरज़ू से भरा हुआ दिल ४. संसार का उपवन ५. बुलबुल
६. वंचित ७. दुनिया

मानीन्दे-हुबाब[१] इस जहाँ में
क्या आये थे और क्या गये हम

मीर हसन

इस जगह लायी है अब तेरी तमन्ना मुझको
देख सकता हूँ मैं दुनिया को न दुनिया मुझको

कदीर लखनवी

दिल-शिकन[२] साबित हुआ हर आसरा मेरे लिए
कोई दुनिया में नहीं, मेरे सिवा मेरे लिए

नातिफ लखनवी

कोई सोता हो जैसे डूबती कश्ती के तख्ते पर
अगर कुछ है तो बस इतनी ही इस दुनिया की राहत है

तिलोकचंद मरहुम

हम इतनी उम्र में दुनिया से हो गये बेझार[३]
अजब है खिज्र ने[४] क्यों कर के ज़िदगानी की ?

ख्वाजा दर्द

आप-सा कोई नहीं दुनिया में
आपने यह तो सुना ही होगा

रसा

कभी किसीको मुकम्मल[५] जहाँ[६] नहीं मिलता
कभी झमीं तो कभी आसमाँ नहीं मिलता

रुह[७] को चमका खुदी[८] को तोड़ कर जीने[९] बना
दो ही तदबीरें[१०] हैं दुनिया में उभर ने के लिए

मीना काझी

---

१. बुदबुदे की तरह २. दिल तोड़ने वाला ३. दु:खी ४. एक मार्गदर्शक पैगम्बर ५. पूर्ण
६. दुनिया ७. आत्मा ८. अहंभाव ९. सीढ़ी १०. युक्तियाँ

दुनिया मेरी बला जाने महँगी है या सस्ती है
मौत मिले तो मुफ्त न लूँ, हस्ती की क्या हस्ती है ?

फानी बदायूनी

दुनिया में आदमी को मुसीबत कहाँ नहीं ?
वो कौन-सी झमीं है जहाँ आसमाँ नहीं ?

दाग़ देहलवी

दुनिया भी अजब सरा-ए-फानी[१] देखी
हर चीझ यहाँ की आनी जानी देखी

अनीस

आज भी बुरी क्या है, कल भी बुरी क्या थी
इसका नाम दुनिया है, ये बदलती रहती है

अेजाझ सिद्दीकी

दुनिया में हूँ, दुनिया का तलबगार नहीं हूँ
बाझार से गुझरा हूँ, खरीदार नहीं हूँ

अकबर ईलाहाबादी

खुद रखे गझब की दिलकशी दुनिया में है 'हसरत'
जो निकलेगा, वो देकर जान, इस महफिल से निकलेगा

'हसरत' मोहानी

है ये दुनिया एक ही अफसाना-ए-नाकामे-शौक[२]
जिसने जो चाहा अलग तजवीझ उन्वाँ[३] कर दिया

तिलोकचंद महरुम

बड़ी दौलत है दुनिया का किसी पर मेहरबाँ होना
मगर दुनिया है, ये रहेगी मेहरबाँ कब तक

जोश मलिहाबादी

---

१. नाशवंत धर्मशाला २. इच्छाओं की निष्फलता की कहानी ३. शीर्षक

दुनिया है ख्वाब, हासिले-दुनिया[१] खयाल है
इन्साँ ख्वाब देख रहा है खयाल में
सीमाब अकबराबादी

तेरी दुनिया में सब्रो-शुक्र[२] से हमने बसर कर ली
तेरी दुनिया से बढ़कर भी तेरे दोझख[३] में क्या होगा
हरिचंद अख्तर

ऐ दिल, तुझे रोना है तो जी खोल के रो ले
दुनिया से न बढ़कर कोई वीराना मिलेगा
बद्रुद्दीन वहीद

इक चीझ थी झमीर[४] जो वापस न ला सका
लौटा तो है जरूर वो दुनिया खरीद कर
कमर इकबाल

हमने चाहा था कि दुनिया से किनारा कर ले
हमने देखा तो हमीं रौनके-दुनिया[५] निकले
मुश्फिक ख्वाजा

हर हस्ती कुछ लम्हों[६] के लिये अपने गम में खो जाती है
हर रोझ थकी हारी दुनिया करवट लेकर सो जाती है
फिराक गोरखपुरी

हुआ एहसास पैदा मेरे दिल में तर्के-दुनिया का[७]
मगर कब ? जब कि दुनिया को झरुरत ही न थी मेरी
आसी उलदनी

---

१. दुनिया की प्राप्ति २. संतोष और धन्यवाद ३. नरक ४. विवेक ५. दुनिया की शोभा
६. क्षण ७. दुनिया छोड़ने का

दुनिया जिसे कहते हैं इक सादा हकीकत है
रंगीन निगाहों ने रंगीन बना डाला

जिगर मुरादाबादी

दुनिया जिसे कहते हैं, जादू का खिलौना है
मिल जाये तो मिट्टी है, खो जाये तो सोना है

निदा फाझली

कुछ तो दुनिया की इनायत[१] ने दिल तोड़ दिया
और कुछ तल्खी-ए-हालात[२] ने दिल तोड़ दिया

सुदर्शन फाकिर

हर चीझ पर बहार थी, हर शै[३] पर हुस्न था
दुनिया जवान थी मेरे अहदे-शबाब में[४]

सीमाब अकबराबादी

इसका भी एहतिसाब[५] जरुरी है ऐ 'उमर'
दुनिया को तूने क्या दिया, दुनिया से क्या लिया

उमर अंसारी

यह किसने गमकदा[६] दुनिया का नाम रखा है
हमें तो कोई यहाँ दर्दे-आश्ना[७] न मिला

साकिब लखनवी

जनाझा[८] रोक कर मेरा वो किस अंदाझ से बोले
गली हमने कही थी, तुम तो दुनिया छोड़े जाते हो

सफी लखनवी

अपना लहू, तेरी रानाई[९], तारीकी[१०] इस दुनिया की
मैंने क्या-क्या रंग चुने हैं, देखूँ क्या तसवीर बने

अहमद फराझ

---

१. कृपा २. परिस्थिति की कटुता ३. वस्तु ४. जवानी के जमाने में ५. हिसाब करना
६. दु:खमय ७. दु:ख जानने वाला ८. शब ९. सौंदर्य १०. अँधेरा

जो मेरे देखे हुए ख्वाब में ढल जाएगी
वो ही दुनिया तेरी जन्नत को भी शरमाएगी

'नदीम'

तेरे आझाद बन्दों की न ये दुनिया, न वो दुनिया
यहाँ मरने की पाबन्दी, वहाँ जीने की पाबन्दी

इकबाल

'फिराक' एक-एक से बढ़कर चारासाझे-दर्द[१] हैं लेकिन
ये दुनिया है, यहाँ हर दर्द का दर्मां[२] नहीं होता

फिराक गोरखपुरी

हमारे बाद जो दुनिया कहेगी वो भी सुन लेना
अभी तो तुम हमारी बेझबानी देखते जाओ

नातिक गुलावटी

मैं जिया भी दुनिया में और जान भी दे दी
ये खुल न सका लेकिन आपकी खुशी क्या थी

फानी बदायूनी

दिल की लगी से दुनिया में भी जीने का कब ढब आया
सामने सबके कहकहे[३] मारे, तन्हाई[४] में रो आए

कय्यूम नझर

अपने बारे में कभी तहकीक[५] करने के लिए
घर से निकला था, मगर रास्ते में दुनिया आ गई

'खयाल'

कमबख्त दिल जला है तो घर भी जला के देख
दुनिया को कुछ पता तो चले रौशनी हुई

एहसान दानिश

---

१. दर्द का उपचार करने वाले २. इलाज ३ अट्टहास ४. एकलता ५. जाँच पड़ताल

दुनिया भी उसीकी है, दुनिया को जो ठुकरा दे
जितना उसे ठुकराया, उतनी ही करीब आई

अमरनाथ

भागती फिरती थी दुनिया जब तलब करते थे हम
जब से नफरत हुई, वह बेकरार[१] आने को है

स्वामी रामतीर्थ

दुनिया मेरी निगाह में तारीक[२] हो गयी,
तुमने तो एक चिराग जलाकर बुझा दिया

आनंद नारायण मुल्ला

कहने को लफ्ज़[३] दो हैं, उम्मीद और हसरत
उनमें निहाँ मगर एक दुनिया की दास्ताँ है

सीमाब अकबराबादी

बहुत कुछ पाँव फैलाकर भी देखा 'शाद' दुनिया में
मगर आखिर जगह हमने, न दो गज़ के सिवा पायी

शाद अज़ीमाबादी

मौत उसकी है, करे जिसका ज़माना अफसोस
यूँ तो दुनिया में सभी आये हैं मरने के लिए

महमूद रामपुरी

इसी दुनिया की अकसर तल्खियोंने[४] मुझको समझाया
कि हिम्मत हो तो फिर है ज़हर भी इक चीज़ खाने की

नैयर अकबराबादी

क्या देखते ही देखते दुनिया बदल गई
वल्लाह[५]! वो ज़मीन नहीं, आसमाँ नहीं

चकबस्त

---

१. व्याकुल २. अंधकारपूर्ण ३. शब्द ४. कटुताओं ने ५. खुदा की कसम

एक तर्ज़े-तसव्वुर[1] करिश्मे[2] हैं, ब-हर-रंग[3]
ऐ दोस्त, ये दुनिया न बुरी है न भली है

जिगर मुरादाबादी

नहीं दुनिया को जब परवा हमारी
तो फिर दुनिया की परवा क्यों करें हम ?

जाँन इलिया

हमनशीनो[4] कुछ नहीं रक्खा यहाँ पर कुछ नहीं
छोड़ दो इसकी हवस[5] दुनिया के अन्दर कुछ नहीं

शबनम शकील

यह दुनिया है ऐ 'शाद', नाहक न उलझो
हर एक कुछ तो अपनी-सी आखिर कहेगा

शाद अझीमाबादी

मैं ऐ 'सीमाब'! सूरज बन के चमका हूँ अँधेरों में
न होने से मेरे महसूस दुनिया में कमी होगी

सीमाब अकबराबादी

या दुनिया हम पर हँसती थी, या हम हँसते हैं दुनिया पर
जब हम रो बैठे दुनिया को तो दुनिया हम को रोती है

नातिक गुलावटी

आह ! किसने मुझे दुनिया से मिटाना चाहा
आह ! उसने, जिसे मैं हासिले-दुनिया[6] जाना

आझाद अंसारी

चल दिये दुनिया से हम 'पाशी' सभी कुछ त्याग कर
और हमारे साथ ही इक दौर[7] पूरा हो गया

कुमार'पाशी'

---

१. कल्पना की रीत, २. जादू, ३. हर तरह, ४. मित्रो, ५. लालसा
६. दुनिया का लाभ, ७. युग

लोग इस अन्दाझ में देते हैं दुनिया की मिसाल[१]
मैं तो जैसे तझुर्बों के[२] दौर से गुझरा न था

जमील नझर

नक्शे कदम (पैरों के निशां)

जहाँ तेरा नकशे-कदम[३] देखतै हैं
खियाँबा[४], खियाँबा, इरम[५] देखते हैं

ग़ालिब

अभी इस राह से कोई गया है
कहे देती है शोखी नक्शे पा[६] की

तसकीन

खुद्दारियों[७] ने सर न झुकाने दिया 'शकील'
हसरत से उनका नक्शे-कदम देखते हैं

शकील बदायूनी

रेत पर छोड़ गया नक्श[८] हझारों अपने
किसी पागल की तरह नक्श मिटाने वाला

वझीर आगा

उस नक्शे-पा[९] के सिझदे ने क्या-क्या किया झलील[१०]
मैं कूचा-ए-रकीब[११] में भी सर के बल गया

मोमिन

---

१. उपमा, तुलना २. अनुभवों के, ३. पैरों के पदचिह्न ४. गुलशन ५. जन्नत ६. पदचिह्न ७. अहंभाव ८. चिह्न ९. पदचिह्न १०. अपमानित ११. शत्रु की गली

यही आशिकों की नमाझ है, यही दिलजलों[१] की नियाझ[२] है
जहाँ देखा यार का नक्श-ए-पा वहीं सर को अपने झुका दिया

जबीं[३] खुद-ब-खुद करने लगती है सझदा[४]
जहाँ तेरा नक्शे-कदम देखते हैं

अझल पालनपुरी

मंझिल मिली, मुराद मिली, मुद्दआ मिला,
सब कुछ मिला मुझे, जो तेरा नक्शे-पा मिला

सीमाब अकबराबादी

आओ अंदाझे-सफर[५] सबको सिखाते जायें
राह में नक्शे-कदम अपने बनाते जायें

सिकन्दर हया

नक्शे-कदम ये हैं, उसी जाने-बहार[६] के
इक पंखड़ी पड़ी है, लहद[७] पर गुलाब की

असगर गोंडवी

आपके नक्शे कदम कैसे चले ?
छोड़ते हैं कब निशाँ, अल्लामियाँ ?

चिनु मोदी 'इर्शाद'

---

१. जिसके दिल को बहुत दुःख पहुँचा हो, २. इच्छा, ३. मस्तक, ४. नमन
५. यात्रा के तौर तरीके ६. वसंत के प्राण ७. कब्र

नकाब (बुरक़ा)

मेरी हैरत की कसम, आप उठाएं तो नकाब
मेरा जिम्मा है कि जल्वे न परीशाँ होंगे

जिगर मुरादाबादी

सुना है हश्र[१] में वो बेनकाब आएँगे
इसीलिए है क्यामत[२] का इन्तझार मुझे

शकील बदायूनी

मुस्कुराकर डाल दी रुख[३] पर नकाब
मिल गया जो कुछ भी मिलना था जवाब

मुइन हसन जझ्बी

बहुत नाझ है चाँद को चाँदनी पर
उठा दो नकाबे-सनम दोस्तो

'माइल' देहलवी

है देखने वालों को समझने का इशारा
थोडी सी नकाब आज वो सरकाए हुए हैं

अर्श मल्सियानी

देखे बगैर हाल ये है इझ्तिराब[४] में
क्या जाने क्या हो पर्दा जो उठ्ठे नकाब का

'असर' लखनवी

जहाँ जहाँ हस्ती पे अँधेरा देखूँगा
वहाँ वहाँ तिरे रुख से नकाब उठा दूँगा

---

१. महा प्रलय २. महा प्रलय ३. चेहरा ४. बेचैनी

हाँ, क्या हुआ वो हौसला-ए दीद[1] अहले दिल[2]
देखो न वो नकाब उठाए हुए तो हैं

मजाझ

'अजीझ' मुँह से अपने वो नकाब तो उलटें,
करेंगे जब्र अगर दिल पे इख्तियार[3] रहा

अजीझ लखनवी

निगाहे-शौक[4] की थी बदहवासियाँ[5] वरना
हझार बार वो महफिल में बेनकाब आया

असर सहबाइ

मैं ही अपना नकाब हूँ वरना
तेरे मुँह पर कोई नकाब नहीं

फानी बदायूनी

जाने किस-किस की मौत आई है
आज रुख पर कोई नकाब नहीं

सैयद राही

देख ले बेनकाब उनको अगर
चाँद भी शर्मसार हो जाये

सलाम सिद्दीकी

चेहरे से जब नकाब उठाई है आपने
बिजली सी मेरे दिल पे गिराई है आपने

मुनव्वर खाँ 'असर'

मुख पे नकाब डालो, झमाना खराब है
खुद को झरा सम्भालो, झमाना खराब है

हैरान रामपुरी

---

१. दर्शन करने का साहस २. दिल वालों ३. अधिकार ४. देखने की प्रबल लालसा ५. विफल, बेचैन

मुनासिब[१] हो तो अब पर्दा उठा कर
हमारा शक बदल डालो यकीं में

आझाद अन्सारी

जब चाहा पर्दा उठवाया, जब चाहा पर्दा कर बैठे
ये छेड़ और एक दीवाने से, मालूम नहीं क्या कर बैठे !

नातिक लखनवी

कयामत[२] ही न हो जाए जो पर्दे से निकल आओ
तुम्हारे मुँह छुपाने में तो ये आलम[३] निकलता है

सफी लखनवी

शुक्र, पर्दे ही में उस बुत[४] को हया[५] ने रक्खा
वर्ना इमान गया ही था, खुदा ने रक्खा

जौक

खूब पर्दा है कि चिलमन[६] से लगे बैठे हैं
साफ छुपते भी नहीं सामने आते भी नहीं

दाग़

छुपने वाले, तुझे खबर भी है ?
निगाहे-शौक[७] पर्दादर[८] भी है

जलील मानिकपुरी

काम आई कुछ न पर्दानशीनी[९] हुझूर की
देख आई जा के बादे-सबा[१०] सर से पाँव तक

अमीर मीनाई

---

१. उचित २. महा प्रलय ३. दुनिया ४. माशूक ५. शर्म ६. चिक ७. देखने की प्रबल लालसा ८. पर्दा फाड़ने वाले ९. पर्दे में रहने की आदत १०. प्रभात समीर

मिरा शौक-ए-दीद आझमाकर तो देखो
जरा रुख से पर्दा उठाकर तो देखो

इनायत

अदा-शनास[१] भी थे अरसए-कयामत[२] में
समझ के आपको रुख से नकाब उठाना था

सफदर मिर्झापुरी

नकाब कहती है – 'मैं पर्दा-ए-कयामत[३] हूँ
अगर यकीं न हो, देख लो उठा के मुझे'

जलील मानिकपुरी

उठा दो जरा आँख से मेरी पर्दा
दिखा दो मुझे हासिल-ए-दर्द-ए- उल्फत

शबनम

लग न जाय तुमको अपनी ही नझर
हो सके तो खुद से पर्दा कीजिये

साकिब लखनवी

यों न पर्दा करो खुदा के लिए
देखो दुनिया तबाह होती है

जिगर मुरादाबादी

दिल में आ जाओ कि यह घर तो है पर्दे का मकां
हमने आँखे बन्द कर लीं आओ, पर्दा हो गया

बेखुद देहलवी

---

१. अदाओं को पहचानने वाले २. क्यामत का मैदान ३ प्रलय का पर्दा

पर्दे की कुछ हद भी है पर्दानशीं[१]
खुल के मिल, बस मुँह छुपाना छोड़ दे

मोमिन

पर्दा-ए-दिल तुझे छुपा लेगा
तू कभी बेनकाब आ तो सही

लिखा हुआ था यह उस महज़बीं[२] के पर्दे पर
नहीं है कोई अब ऐसा झमीं के पर्दे पर

जौक

मैंने कहा कि गैर से पर्दा नहीं हुआ
कहने लगे कि आप को फिर क्या, नहीं हुआ

उमराव मिरझा अनवर

चिरागे तूर[३] जलाओ, बड़ा अँधेरा है
जरा नकाब उठाओ, बड़ा अँधेरा है

सागर सिद्दिकी

उनकी गली में जिस दम, मेरा गया जनाझा
हसरत से देखते थे, परदा उठा-उठा कर

झाकिर देहलवी

है माह[४], कि आफताब[५] क्या है ?
देखो तो तहे-नकाब[६] क्या है ?

मुसहफी

---

१ पर्दे में रहने वाली २ चन्द्रमुखी ३. एक पहाड का नाम ४. चाँद ५. सूर्य
६. पर्दे के नीचे

हम उनकी चाल से पहचान लेंगे उनको बुर्के में
हझार अपनेको वह हम से छिपायें सर से पाँवों तक

जौक

आप परदे में छिपे बैठे हैं किस दिन के लिये ?
रूबरू अब आइये, दुनिया बड़ी मुश्किल में है

बिस्मिल इलाहाबादी

पर्दे की और कुछ वजह अहले जहाँ नहीं
दुनिया को मुँह दिखाने के काबिल नहीं रहे

शर्म में भी है तेरी परले सिरे की शोखियाँ
आँख नीची कर के बुरका रुख से ऊँचा कर दिया

किसका चेहरा 'कतील' पढ़ते हम
लोग ओढ़े हुए नकाब मिले

कतील शिफाई

बेपर्दा कल जो आई नझर चंद बीबियाँ
'अकबर' झमीं में गैरते- कौमी[१] से गड़ गया

अकबर इलाहाबादी

पर्दा उठा के मुझसे मुलाकात भी न की
रूखसत के पान भेज दिये बात भी न की

किस तरह नजर आये वो पर्दानशीं 'अमजद'
हर पर्दे के बाद और एक पर्दा नजर आता है

अमजद हैदराबादी

---

१. कौम की लज्जा

मेरी रसाई[1] से दूर है तू, मगर अभी तुझको याद होगा
कि मैंने ऐमन की वादियों[2] में उलट दिया था नकाब तेरा

सीमाब अकबराबादी

नकाब रुख से उठा दी मगर कमाल यह है
मेरी नज़र का भी पर्दा उठा गया कोई

जोश मलसियानी

उस परदानशीं से कोई किस तरह बर आए
जो ख्वाब में भी आये तो मुँह ढाँककर आये

जुरअत

जिस दिन कि उस मुँह से बुरका उठेगा, सुनियो
उस रोज से जहाँ मे खुरशीद[3] फिर न झाँका

मीर

जिस रंग में देखा उसे, वह परदानशीं है
और उस पे यह परदा है कि परदा ही नहीं है

जिगर मुरादाबादी

नकाब उनके चेहरे से सरका है शायद
बड़ी दूर तक बर्क[4] लहरा रही है

अदम

कब तक रहोगे मुँह को छुपाए नकाब में ?
कब तक रहेगा चाँद सा मुखड़ा हिजाब[5] में ?

तबस्सुम

---

१. पहुँच २. कोहे तूर जहाँ मूसा ने खुदा का जलवा देखा था ३. सूरज ४. बिजली
५. लज्जा

दोस्ती का पर्दा है बेगानगी[1]
मुँह छिपाना हमसे छोड़ा चाहिये

ग़ालिब

सरकती जाये है रुख[2] से नकाब आहिस्ता-आहिस्ता
निकलता आ रहा है आफताब[3] आहिस्ता-आहिस्ता

अमीर मीनाई

नझर - निगाह

फर्याद कर रही है, ये तरसी हुई निगाहें
देखे हुए किसीको बहुत दिन गुझर गये

'रझा' लखनवी

नझर जिसकी तरफ कर के निगाहें फेर लेते हो
कयामत तक फिर उस दिल की परेशानी नहीं जाती

आनंदनारायण'मुल्ला'

जान सी शै बिक जाती है, एक नझर के बदले में
आगे मरजी ग्राहक की है, इन दामों तो सस्ती है

'फानी' बदायूनी

तिरछी नझरों से न देखो आशिके-दिलगीर को
कैसे तीर-अंदाझ हो, सीधा तो कर लो तीर को

ख्वाजा 'वझीर' लखनवी

---

१. परायापन २. गाल ३. सूर्य

फिरती है तो फिर जाये, बदलती है तो बदले
दुनिया की नझर है, मिरी किस्मत तो नहीं है

'माहिर' लखनवी

कुछ मेरी नझर ने उठ के कहा, कुछ उन की नझरने झुक के कहा
झगड़ा जो न चुकता बरसों में तय हो गया बातों बातों में

रझा कुरैशी

दिल रख दिया है सामने लाकर खुलूस से
आगे अब इसके काम तुम्हारी नझर का है

जिगर मुरादाबादी

हर नझर कामयाब होके रही
दिल की बस्ती खराब होके रही

'फानी' बदायूनी

लो खरीदो इक नझर के मोल मुझको
अपनी कीमत में रिआयत[१] कर रहा हूँ

कतील शिफाई

क्या कह गई है उनकी नझर, कुछ न पूछिये
क्या कुछ हुआ है दिल पे असर, कुछ न पूछिये

अख्तर शीरानी

मस्ती निगाहें नाझ की कैफे-शबाब में[२]
जैसे कोई शराब मिला दे शराब में

सब्र मुख्दूमपुरी

---

१. कम करना २. यौवन का नशा

वो दुश्मनी से देखते हैं, देखते तो हैं
मैं शाद[१] हूँ, कि हूँ तो किसी की निगाह में

अमीर मीनाई

कैसा नज़ारा[२], किसका इशारा, कहाँ की बात
सब कुछ है, और कुछ नहीं, नीची निगाह में

दाग़

मुझे धोखा न देती हों कहीं तरसी हुई नज़रें
तुम्हीं हो सामने या फिर वही तस्वीरे ख्वाब[३] आई

आनंदनारायण मुल्ला

आहट आते ही निगाहों को झुका लो कि उसे
देख लोगे तो लिपटने को भी जी चाहेगा

ज़फर् ईकबाल

आदमी तो क्या फरिश्ते की नज़र
आप की सूरत से धोका खायेगी

अर्श मलसियानी

जीना भी आ गया, मुझे मरना भी आ गया
पहचानने लगा हूँ तुम्हारी नज़र को मैं

'असगर' गोन्डवी

तुमने देखा मुझे प्यार भरी नज़रों से
मैं यह समझा कि मेरी जान पे बन आई है

'सहर'

मिली जब उनसे नज़र बस रहा था एक जहाँ
हटी निगाह तो चारों तरफ थे वीराने

'मज़रूह' सुलतानपुरी

---

१. खुश २. दृश्य ३. सपने का चित्र

देखो न आँख भर के किसीकी तरफ कभी,
तुमको खबर नहीं जो तुम्हारी नज़र में है

'असर' लखनवी

नासेह को बुलाओ मेरा ईमान संभाले
फिर देख लिया उसने शरारत की नज़र से

'हफीझ' जालंधरी

सौ तीर झमाने के इक तीर-ए-नझर तेरा
अब क्या कोई समझेगा दिल किसका निशाना है

'नातिक'

कुछ लड़खड़ा गये थे कदम बझम-ए-नाझ में
उनकी नझर ने उठ के सहारा दिया मुझे

मसरुफ आलम

करना है आज हझरत-ए-नासेह का सामना
मिल जाये दो घड़ी को तुम्हारी नझर मुझे

'जिगर' मुरादाबादी

डाला है बेखुदी ने अजब राह पर मुझे
आँखें हैं और कुछ नहीं आता नझर मुझे

जिगर मुरादाबादी

मैं आईने पे भला एतबार कैसे करूँ ?
मुझे तो सिर्फ उसीकी निगाह ने देखा है

अदा जाफरी

समाया है जब से तू नझरों में मेरी
जिधर देखता हूँ, उधर तू ही तू है

नवाब नसीरुद्दीन हैदर

---

१. बीमार की खबर पूछना २. मित्र, प्रेमिका ३. चालाकी से ४. खराब हालत ५. दिखाने जैसा

फिराक को कभी इतना खामोश देखा था ?
जरुर ऐ निगाहे-नाझ[१] कोई बात हुई

फिराक गोरखपुरी

जो निगाह की थी जालिम ! तो फिर आँख क्यों चुराई ?
वही तीर क्यों न मारा जो जिगर के पार होता ?

अमीर मीनाई

निगाह की बर्छियाँ जो सह सके सीना उसीका है
हमारा आपका जीना नहीं, जीना उसीका है

शाद अझीमाबादी

तुम्हारी आँख भी कितनी हसीं मालूम होती है
कि बेसुरमा लगाए सुर्मगी[२] मालूम होती है

तमन्ना अम्मदी

ओ आँख चुराके जाने वाले
हम भी थे कभी तेरी नझर में

जलील मानिकपुरी

आप को मैंने निगाहों मे बसा रखा है
आईना छोड़िये, आईने में क्या रखा है

हिना तैमूरी

कोई खातिर[३] न मदारात[४] न तकरीबे विसाल[५]
हम तो बस चाहते हैं तेरी नझर में रहना

परवीन शाकिर

आँखों ही में रहे हो, दिल से नहीं गए हो,
हैरान हूँ, ये शोखी[६] आई तुम्हें कहाँ से

मीर

---

१. नखरीली नझर २. जिनमें सुरमा लगा हो ३. आदर ४. सत्कार ५. मिलन का सामीप्य ६. चंचलता

आँख जो कुछ देखती है, लब पे आ सकता नहीं
महवे-हैरत[१] हूँ कि दुनिया क्या से क्या हो जाएगी

ईकबाल

तेरी निगाहें - मस्त ने मख्मूर[२] कर दिया
क्या मैकदे[३] को जाऊं तुझे देखने के बाद

कितने हसीन लोग थे जो मिल के इक बार
आँखों में जझब[४] हो गये, दिल में समा गए

अदम

ले दे के अपने पास फकत एक नज़र तो है
क्यों देखें झिंदगी को किसीकी नज़र से हम

साहिर लुधियानवी

आज तक वह नज़र नहीं भूली
तुमने देखा था एक बार हमें

शाद अझीमाबादी

आओ बदले नज़र भी, मंज़र भी
एक दुनिया नई बनाएँ हम

राजकुमार सैनी

न जाने बात ये क्या है तुम्हें जिस दिन से देखा है
मेरी नज़रों में दुनिया भर हसीन मालूम होती है

असर लखनवी

ये बात, ये तबस्सुम[५], ये नाज़, ये निगाहें
आखिर तुम्हीं बताओ, क्यों कर न तुमको चाहें ?

जोश मलिहाबादी

---

१. आश्चर्यचकित ३. नशे में मस्त ३. मदिरालय ४. आकर्षण ५. मुस्कान

सौ सौ उम्मीदें बँधती है एक-एक निगाह पर
मुझको न ऐसे प्यार से देखा करे कोई

ईकबाल

करने गये थे उनसे तगाफुल[१] का हम गिला
की एक ही निगाह कि बस खाक हो गये

ग़ालिब

खून दिल का न छलक जाये मेरी आँखों से
हो न जाये कहीं इज़हार[२], खुदा खैर करे

जाँनिसार अख्तर

मस्जिद में उसने हमको आँखे दिखा के मारा
काफिर की देखो शोखी घर में खुदा के मारा

जौक

यूँ उनकी मस्त निगाहों का एहतिराम[३] किया
सुराही झुक गई, पैमानों ने सलाम किया

शादाब

तेरी आँखो का कुछ कुसूर नहीं
हाँ, मुझीको खराब होना था

जिगर मुरादाबादी

फिर न कीजिए मेरी गुस्ताख निगाही का गिला
देखिये आपने फिर प्यार से देखा मुझको

साहिर लुधियानवी

ये बारहा[४] हुआ जब घर का घर खिलाफ लगे
कभी मुझे भी तो अपनी नज़र खिलाफ लगे

झहीर गाझीपुरी

---

१. उपेक्षा २. जाहिर ३. आदर ४. बार बार

सुन के तेरा नाम आँखें खोल देता था कोई
आज तेरा नाम लेकर कोई गाफिल हो गया

फानी बदायूनी

गो हाथ में जुंबिश नहीं, आँखो में तो दम है
रहने दो अभी सागरो-मीना मेरे आगे

ग़ालिब

नज़र उसकी, ज़ुबाँ उसकी, ताज्जुब है कि इस पर भी
नज़र कुछ और कहती है, ज़बाँ कुछ और कहती है

साफ ज़ाहिर है निगाहों से, कि हम मरते हैं,
मुँह से कहते हुए ये बात, मगर डरते हैं

अख्तर अंसारी

इक निगाह करके उसने मोल लिया
बिक गये आह ! हम भी क्या सस्ते

मीर

खूबरु[१] खूब काम करते हैं
इक निगाह सू गुलाम करते हैं

वली दकनी (गुजराती)

न थी हाल की जब हमें अपनी खबर,
रहे देखते औरों के ऐबों-हुनर[२]

पड़ी अपनी बुराईयों पे जो नज़र
तो निगाह में कोई बुरा न रहा

बहादुर शाह 'झफर'

१. खूबसुरत २. गुण दोष

भटकती हैं नज़रें मेरी हर तरफ
खुदा जाने किस भेस में तू मिले

अफसर मेरठी

दरो[1] दीवार पे हसरत से नज़र करते हैं
खुश रहो अहले–वतन[2] हम तो सफर करते हैं

वाज़िद अली शाह 'अख्तर'

जिसको तीरे–निगाह[3] लगा होगा
एक दम में[4] वो मर गया होगा

शेरअली अफसोस

कुछ नहीं कहती वो निगाह, मगर
बात पहुँचती है कहाँ से कहाँ

फिराक गोरखपुरी

गरीब हम हैं, गरीबों को भी खुशी हो जाय
नज़र हुज़ूर ! इधर भी कभी कभी हो जाय

रियाझ खैराबादी

लिल्लाह[5], ये तुम देखने वालों से न पूछो
क्या चीज़ हो तुम देखने वालों की नज़र में

अफसर मेरठी

दीदार[6] की तलब[7] के तरीकों से बेखबर
दीदार की तलब है तो पहले निगाह माँग

आझाद अंसारी

पहले सौ बार इधर ऊधर देखा
जब तुझे डर के एक नज़र देखा

मीर मुहम्मद असर

---

१. द्वार २. देशवासियों ३. नयन बाण ४. क्षण भर में ५. खुदा के लिये
६. दर्शन ७. माँग

नज़र भर के जो देख सकते हैं तुझको
मैं उनकी नज़र देखना चाहता हूँ
ताजवर नजीबाबादी

पहली नज़र की कुछ तो रुदाद[१] याद होगी
मैंने भी तुमको दी थी शायद कोई निशानी
माहिरुल कादरी

दोबारा दिल में कोई इन्किलाब[२] हो न सका
तुम्हारी पहली नज़र का जवाब हो न सका
नातिक लखनवी

नज़र से उनकी पहली ही नज़र यूँ मिल गई अपनी
कि जैसे मुद्दतों से थी किसीसे दोस्ती अपनी
जिगर मुरादाबादी

करेंगे अर्ज़ भी कुछ, चैन ले जरा ऐ दिल
वो अंजुमन में हमारी तरफ नज़र तो करें
सूरज नारायण मेहर

है निगाहे-लुत्फ[३] गैरों पर, तो बन्दा जाए हैं
ये सितम ओ बेमुरव्वत[४], किससे देखा जाए हैं
मोमिन

अपने हुस्न को जरा तू मेरी नज़र से देख
दोस्त ! शशजेहात[५] में कुछ तेरे सिवा नहीं
ताजवर नजीबाबादी

फिर भी कभी निगाहे-करम[६] होगी इस तरफ ?
उम्मीद आज तक उसी पहली नज़र की है
मुनीर शिकोहाबादी

---

१. वृत्तांत २. परिवर्तन ३. प्रेमदृष्टि ४. लिहाज न होना ५. अखिल विश्व
६. दया दृष्टि

सहमी हुई थी सुबह की पहली किरन की तरह
उनकी तरफ निगाह जो पहले-पहल गई

असर लखनवी

वो आते हैं 'शकील' अब अपने दिल से हाथ धो बैठो
निगाहे-नाज़[1] की कीमत अदा करने का वक्त आया

शकील बदायूनी

फिझा[2] को जैसे कोई राग चीरता जाए
तेरी निगाह दिल में यूँ ही उतर आई

फिराक गोरखपुरी

नज़र मिला न सके हमसे वो, तो क्या गम है
कि दिल से दिल के धड़कने का सिलसिला तो मिला

आले अहमद 'सरूर'

यूँ देखती है जैसे नहीं देखती नज़र
जालिम के देखने का ये अंदाज़ देखना

शकील बदायूनी

हम पर तेरी निगाह जो पहले थी अब नहीं
सो भी कुछ दिनों में न रहे तो अजब नहीं

हसरत मोहानी

रूसवा[3] अगर न करना था आलम[4] में यूँ मुझे
ऐसी निगाहें-नाज़ से[5] देखा था क्यों मुझे ?

आफताब राय 'रुसवा'

सब लोग जिधर वो हैं उधर देख रहे हैं,
हम देखने वालों की नज़र देख रहे हैं

ग़ालिब

---

१. प्रेयसी की नखरीली नज़र २. वातावरण ३. बदनाम ४. दुनिया ५. नाजों भरी नज़र से

अदब लाख था, फिर भी उसकी तरफ
नज़र मेरी अक्सर बहकती रही

असर लखनवी

है दोस्ती तो जानिबे-दुश्मन[1] न देखना
जादू भरा हुआ है तुम्हारी निगाह में

मोमिन

फिर निगाह लौट कर नहीं आई
तुझपे कुर्बान हो गई होगी

सैफुद्दीन सैफ

देखा किये वो मस्त निगाहों से बार-बार
जब तक शराब आये, कई दौर हो गए

शाद अज़ीमाबादी

वो कब के आये भी और गये भी, नज़र में अब तक समा रहे हैं
यह चल रहे हैं, वह फिर रहे हैं, यह आ रहे हैं, वह जा रहे हैं

जिगर मुरादाबादी

दिल में समा गई है, क्यामत की शोखियाँ[2]
दो चार दिन रहा था, किसी की निगाह में

दाग़

फलक[3] ने पीस कर सुरमा बनाया
नज़र में उसकी मैं तो भी न आया

मीर

---

१. दुश्मन की तरफ २. चंचलता ३. आकाश

उसकी तर्ज़े निगाह मत पूछो
जी ही जाने है आह ! मत पूछो

मीर

कुछ तुम्हारी निगाह काफिर थी
कुछ मुझे भी खराब होना था

मज़ाझ

क्या अब न होगी मेरी तरफ को निगाह भी
आखिर कोई खता भी है, कोई गुनाह भी

हैरत

न जाने कितने दिलों के चिराग गुल कर के
तेरी निगाह सितारों को नूर देती है

आनन्द नारायण मुल्ला

शौके-विसाल[१] है यहाँ, लब पे सवाल है यहाँ
किसकी मजाल है यहाँ, हमसे नज़र मिला सके

हफीझ जालंधरी

जिसे तू देख ले इक बार मस्त नज़रों से
तमाम उम्र वो हाथों में अपने जाम न ले

सेहर भोपाली

आज भी है 'मज़ाझ' खाक-नशीं[२]
और नज़र अर्श[३] पर है, क्या कहिये

मजाझ

मेरे दु:खी सवाल का उस शाम तेरे पास
भीगी हुई नज़र के सिवा क्या जवाब था ?

वझीर आगा

---

१. मिलन की अदम्य लालसा २. धरती पर रहने वाला ३. आकाश

देखते ही देखते नझरों से ओझल हो गया
मैंने तो जी भर के भी उसको अभी देखा न था

अनवर महमूद खालिद

दुनिया को देखती रही जिसकी नझर से मैं
उस आँख में मेरे लिये पहचान भी न थी

परवीन शाकिर

खुदा जाने मेरा क्या वजन है उनकी निगाहों में
सुना है आदमी को वो नझर में तौल लेते हैं

अमीर मीनाई

नामे मेहबूब (प्रिय का नाम)

सुन के तेरा नाम आँखें खोल देता था कोई
आज तेरा नाम लेकर कोई गाफिल[१] हो गया

फानी बदायूनी

अगर मरते हुए लब[२] पर न तेरा नाम आयेगा
तो मैं मरने से बाझ आया[३], मेरे किस काम आयेगा ?

शाद अझीमाबादी

तझकिरा[४] रहता है दिल से सेहरो-शाम[५] उनका
लब पे आ जाये न भूले से कहीं नाम उनका

रविश सिद्दीकी

नहीं एक बार भी अब सुनने की ताकत दिल में
पहले सौ बार तेरा नाम लिया करता था

कुर्बान अली सालिक

---

१. बेसुध २. होंट ३. रूक जाना ४. चर्चा ५. सुबह-शाम

हमारे आगे तिरा जब किसीने नाम लिया
दिले-सितमझदा[१] को हमने थाम थाम लिया

मीर

बस इतनी बात है जिस पर हमारी जान जाती है
कि उनके जाँ निसारों में[२] हमारा नाम आता है

सफदर मुरादपुरी

नाम उसका तो मेरे दिल में नेहाँ[३] था नासेह[४]
हाय रे कमबख्त तेरे मुँह से ये क्यों कर निकला ?

दाग़

वो नाम जिसके लिए झिन्दगी गँवाई गई
न जाने क्या था ? मगर कुछ भला-भला सा था

मझहर'इमाम'

यक-ब-यक[५] ले उठा हमारा नाम
जी में क्या उसके आ गया होगा ?

ख्वाजा मीर दर्द

दख्ल है उसको बहुत कुछ मेरे तड़पाने में
वो जो लझ्झत[६] तेरे नाम को दोहराने में

असर लखनवी

न मानूँगा नसीहत[७], पर न सुनता मैं तो क्या करता
कि हर-हर बात में नासेह[८] तुम्हारा नाम लेता था

मोमिन

---

१. जुल्म से पीड़ित दिल २. प्राण देने वालों में ३. छिपा हुआ ४. उपदेशक
५. अचानक ६. आनंद ७. उपदेश ८. उपदेशक

काम उससे आ पड़ा है कि जिसका जहान[१] में
लेवे न कोई नाम सितमगर कहे बगैर

ग़ालिब

तेरे हमनाम[२] को कोई जो पुकारे है कहीं
जी धड़क जाये है मेरा, कि कहीं तू ही न हो

मीर हसन

पहले बड़ी रगबत[३] थी तिरे नाम से मुझको
अब सुन के तिरा नाम मैं कुछ सोच रहा हूँ

अदम

जाने क्या पूछा था कल शब मुझसे इक मयख्वार[४] ने
आलमे-मस्ती में लब[५] पर तेरा नाम आ गया

अदम

कभी किताबों में फूल रखना, कभी दरख्तों पे[६] नाम लिखना
हमें भी है याद आज तक वह नज़र से हर्फ-ए-सलाम[७] लिखना

हसन रिझवी

जिस नाम से तूने मुझे बचपन से पुकारा
एक उम्र गुझरने पे भी वह नाम न भूलुँ

किश्वर नाहीद

आँख बरसी है तेरे नाम पे सावन की तरह
जिस्म सुलगा है तैरी याद में इंधन की तरह

मुर्तझ बरलास

---

१. दुनिया २. समान नाम वाला ३. चाह ४. शराब पीने वाला ५. होंठ ६. पेड़ों पर
७. सलाम शब्द

जबाँ पर बेखुदी[१] में नाम उसका आ ही जाता है
अगर पूछे कोई, यह कौन है ? बतला नहीं सकता

मज़ाझ

वो बुराई से करें याद कि अच्छाई से
उनके होटों पे बहर हाल मेरा नाम तो है

खलील धनतेजवी

कभी कभी तो ये आलम रहा तेरे गम का
कि नाम भी न तेरा याद आ सका मुझको

फिराक गोरखपुरी

मिरा ही नाम झमाने ने कर दिया बदनाम
मैं जिसके नाम पे मरता हूँ उसी का नाम नहीं

रसा जालंधरी

दिल के लिए हयात[२] का पैगाम बन गई
बेताबियाँ[३] सिमट के तिरा नाम बन गई

बाकी सिद्दिकी

तुम्हारा नाम लेता था तो कुछ तस्कीन होती थी
कोई हाथों से गोया कलेजा थाम लेता था

नासरी

कोई पूछे मरने वाला कौन था, क्या नाम था ?
यह न कह देना कि मेरा आशिके-नाकाम[४] था

जब भी आता है तिरा नाम मिरे नाम के साथ
जाने क्यों लोग मिरे नाम से जल जाते हैं

कतील शिफाई

१. बेहोशी २. जिंदगी ३. बेचैनी ४. नाकामयाब प्रेमी

उस बज़्म[1] में हर एक से सब पूछते थे नाम
था लुत्फ़[2] जो कोई मेरा हमनाम[3] निकलता

मोमिन

बज़्म में पूछा तो यों अनजान हो
'मीर' इन लोगों में किसका नाम है ?

मीर

चाह का नाम जब आता है बिगड़ जाते हैं
वो तरीका तो बता दो, तुम्हें चाहे क्यों कर ?

कैस[4] का नाम न लो, ज़िक्रे-जूनुँ[5] जाने दो
देख लेना मुझे तुम मौसमे-गुल[6] आने दो

मु. रज़ाबर्क

कुछ इनायत खास होती है अयाँ
नाम ले-लेकर न कोसा कीजिए

अफसर मेरठी

छोड़ा न रश्क[7] ने कि तेरे घर का नाम लूँ
हर एक से पूछता हूँ कि जाऊँ किधर को मैं

ग़ालिब

बात जब गर्दिशे- अय्याम[8] तक आ जाती है
खुद-ब-खुद बढ़ के तिरे नाम तक आ जाती है

होश अज़ीमाबादी

---

१. महफिल २. मज़ा ३. एक सा नाम वाला ४. मजनूँ ५. उन्माद की चर्चा
६. वसंत ऋतु ७. ईर्ष्या ८. समय का चक्र

ये जुल्म देख कि तू जाने-शायरी[१] है मगर
मेरी गझल में तेरा नाम भी है जुर्मे-सुखन[२]

अहमद फराझ

क्या शाम थी कि जब तेरे आने की आस थी
अब तक जला रहै हैं, तिरे नाम के चराग

अहमद फराज़

मैं तेरा नाम इतनी बार लिखूँ
कि अपना नाम लिखना भूल जाऊँ

हामिद ईकबाल सिद्दीकी

तुम्हारा नाम लेने से मुझे सब जान जाते हैं
मैं वो खोई हुई इक चीझ हूँ, जिसका पता तुम हो

कतील शिफाई

मैं समंदर भी हूँ, मोती भी हूँ, गोताजन[३] भी
कोई भी नाम मेरा ले के बुला ले मुझको

कतील शिफाई

उँगलियों को तराश दूँ फिर भी
आदतन उसका नाम लिखेंगी

परवीन शाकिर

सस्ते दामों तो ले आते लेकिन दिल था भर आया
जाने किसका नाम खुदा था पितल के गुलदानों[४] पर

जाँनिसार अख्तर

तुम्हारा नाम किसी अजनबी के लब पर था
जरा सी बात थी, दिल को मगर लगी है बहुत

सादिक नसीम

---

१. कविता का प्राण २. बात का अपराध ३. गोताखोर ४. गुलदस्ता रखने का पात्र

हमारा नाम भी वो लेंगे लेकिन
हमारा ज़िक्र सबके बाद होगा

आनंद बख्शी

हज़ार शुक्र कि मुद्दत में यह असर आया
लिया जो नाम तेरा, दिल में तू उतर आया

शाद अज़ीमाबादी

हो गये नामे बुताँ[१] सुनते ही 'मोमिन' बेकरार
हम न कहते थे कि हज़रत पारसा[२] कहने को है

मोमिन

मुझको उनसे प्यार नहीं है, मुझको उनके नाम से क्या ?
आँखें यूँ ही भर आई थीं, होंट यूँ ही थर्राए थे

नूर बिजनौरी

कोई लेता है तेरा नाम तो रूक जाता हूँ
अब तेरा ज़िक्र भी सदियों का सफर लगता है

'राम' रियाज़

आते-जाते हर राही से पूछ रहा हूँ बरसों से
नाम हमारा लेकर तुमसे, हाल किसीने पूछा है ?

विश्वनाथ 'दर्द'

खुदा का नाम लेना चाहता हूँ
मगर मेरे खुदा का नाम क्या है ?

सबा अकबराबादी

कोशिश तो बहुत की है मगर नाम पे तेरे
चलते नहीं मेरे मालिक तस्बीह[३] के दाने

सईद अहमद अख़्तर

---

१. प्रेयसियों के नाम २. सदाचारी ३. माला

पहुँचे उसको सलाम मेरा
भूले से न ले जो नाम मेरा

हफीझ जौनपुरी

उसने आहिस्ता से 'झेहरा' कह दिया, दिल खिल ऊठा
आज से इस नाम की खुशबू में बस जायेंगे हम

झेहरा निगाह

आगाझ[१] तो होता है, अंजाम नहीं होता
जब मेरी कहानी में वो नाम नहीं होता

मीनाकुमारी

लैला का क्या नाम लिया, वह मस्त हुआ
तू अल्लाह अल्लाह करता है और मस्त नहीं ?

चिनु मोदी 'इर्शाद'

नाम जब पूछा तो उसने ये कहा,
तू मेरा शायर है, मैं तेरी गज़ल

खलील धनतेजवी

नासेह (उपदेशक)

जनाब-ए-हझरत- नासेह का वाह क्या कहना !
जो एक बात न होती तो औलिया होते

अकबर इलाहाबादी

किया करते हो तुम नसीहत[२] रात-दिन मुझको
उसे भी एक दिन तुम जा के समझाते तो क्या होता ?

रंगीन

१. आरम्भ २. उपदेश

बात नासेह से करते डरता हूँ
कि फुगाँ[१] बेअसर न हो जाय

मोमिन

नजात[२] हो गई नासेह से ऊम्र भर के लिये
उसीको भेज दिया यार की खबर के लिये

जलाल

मेरे समझाने से बेहतर है यही
हझरते नासेह उन्हें समझायें आप

मुझ्तर मुझफ्फरपुरी

जो दिल पे गुजरती है, क्या तुझको खबर नासेह
कुछ हमने कहा होता, कुछ तुमने सुना होता

मौलाना हाली

मुझे याद है अपना अंजाम[३] नासेह
मैं एक रोझ मर जाऊँगा, बस यही ना

हफीझ जालंधरी

नासेह इस तरह से समझाते हैं हमको 'आसी'
जैसे पायी ही नहीं फितरते-इन्सां[४] हमने

आसी उल्दनी

झाहिद से जब सुनो तो ज़ुबाँ पर है ज़िक्रे-हूर[५]
नीयत हुई खराब तो इमान कब रहा ?

शाह अझीमाबादी

मज़ा मिल जायेगा जीने का तुझको
किसी जालिम पे नासेह तू भी मर देख

शाद अज़ीमाबादी

---

१. रोना, चिल्लाना २. मुक्ति ३. परिणाम ४. मनुष्य की प्रकृति ५. परी की बात

जैसे दोझख की हवा खा के अभी आया है
किस कदर वाइझे-मक्कार[1] डराता है मुझे

यगाना चंगेझी

ऐ शेख, किस जगह को तेरा मुकाम समझे ?
तू कुछ ज़मीन पर है, कुछ आसमान पर है

जोश मलसियानी

आपकी ज़िदने मुझे और पिलाई हझरत
शेखजी ! इतनी नसीहत भी बुरी होती है

हुस्न बरेलवी

फरिश्तों में थी शेख साहब की गिनती
यह रिन्दों की सुहबत में इन्साँ हुए हैं

रियाझ खैराबादी

जिस काम को तू मना करेगा हमें नासेह
हम छोड़ के सौ काम वही काम करेंगे

रियाझ खैराबादी

ये वाइझ है, नहीं तकरीर[2] में रखता जवाब अपना
मगर इस शख्स की बातों में सच्चाई नहीं होती

कतील शिफाई

मिजाज़ अपना नहीं हाझिर, कहीं नासेह न आ निकले
खुदा जाने वो क्या बोले, हमारे मुँह से क्या निकले

फिदवी

नासेह, मत कर नसीहत, दिल मेरा घबराये है
मैं उसे समझूँ हूँ दुश्मन, जो मुझे समझाये है

१. धोखेबाझ उपदेशक २. वक्तृत्वता

नासेह में और हम में हैं ये तुरफा[१] सोहबतें
हम कुछ नहीं समझते, वो समझाये जाते हैं

जुरअत

समझ के और ही कुछ मर चला मैं ऐ नासेह
कहा जो तूने नहीं जान जा के आने की

मोमिन

तू भी ऐ नासेह किसी पर जान दे
हाथ ला उस्ताद ! क्यूँ कैसी कही ?

दाग़

हझरत-ए-नासेह की बातें मैं समझता ही नहीं
नासमझ है, दिल्लगी समझे हैं समझाना मेरा

नासेह की एक बात के सौ-सौ जवाब हैं
लेकिन मुझे है बात बढ़ाने से इहत्यात[२]

मुजतर मुझफ्फरपुरी

नासेहा, दिल में तू इतना तो समझ अपने कि हम
लाख नादान सही, तुझसे भी नादाँ होंगे ?

मोमिन

और बढ़ती है उस शख्स की चाहत नासेह
यह करामात[३] अजब आपकी तकरीर[४] में है

नूर बिजनौरी

हर नसीहत मैं तेरी मानूँगा ऐ नासेह, पर एक
दिलबरों के[५] देखने में जी मेरा नाचार है

मीर मुहम्मद 'हझीं'

---

१. अनोखी संगत २. सावधानी ३. चमत्कार, करिश्मा ४. वक्तृत्वता ५. प्यारों को

समझता है तू ‘दाग़’ को रिन्द[१] झाहिद
मगर रिन्द उसको वली[२] जानते है

दाग़

खुदा को पा गया वायझ मगर है,
ज़रूरत आदमी को आदमी की

फिराक गोरखपुरी

झाहिद, तुझे आदाबे मुहब्बत[३] नहीं मालूम
सर आप ही झूकता है, झूकाया नहीं जाता

देखना, देखना ये हझरते-वाइझ ही न हो
रास्ता पूछ रहा है कोई मयखाने का

शकील बदायूनी

ऐ शैख, तू चुरा के पिये, जब कभी पिये
तेरी तरह किसीकी न नीयत खराब हो

रियाझ खैराबादी

हम हाल कहे जाएँगे सुनिये कि न सुनिये
इतना ही तो याँ सोहबते-नासेह[४] का असर है

मोमिन

हुई है हझरते-नासेह से गुफ्तगू[५] जिस शब[६]
वो शब झरूर सरे-कूए-यार[७] गुझरी है

फैझ अहमद फैझ

---

१. शराबी २. संत ३. मुहब्बत के शिष्टाचार ४. उपदेशक की संगत ५. बातचीत
६. रात ७. प्रेयसी की गली

खैर, दोझख में मय मिले न मिले
शेख साहब से जाँ तो छूटेगी

'फैझ' अहमद फैझ

ज़िदगी जिस शै[1] में है शैख उसे क्यों छोड़ दूँ ?
जान तो जाएगी मेरी, आपका क्या जाएगा ?

जोश मल्सियानी

किधर से बर्क[2] चमकती है देखें ऐ वाइझ
मैं अपना जाम उठाता हूँ, तू किताब उठा

जिगर मुरादाबादी

धोके से पिला दी थी इसे भी दो घूँट
पहले से बहुत नर्म है वाइझ की जबाँ अब

रियाझ खैराबादी

कमबख्त ने शराब का ज़िक्र इस कदर किया
वाइझ के मुँह से आने लगी बू शराब की

रियाझ खैराबादी

सहर[3] के वक्त मय पीने से मुझको रोक मत नासेह
कि सिजदे[4] के लिए दिल में जरा सा सिद्क[5] लाना है

अदम

कहाँ मयखाने का दरवाजा 'ग़ालिब' और कहाँ वाइझ
पर इतना जानते हैं कल वो जाता था कि हम निकले

ग़ालिब

मेरी शराब की क्या कद्र जाने तू वाइझ
जिसे मैं पी के दुआ दूँ वो जन्नती[6] हो जाए

रियाझ खैराबादी

---

१. चीज २. बिजली ३. सुबह ४. बंदगी ५. सत्यता ६. स्वर्ग का हकदार

नासेहों को कौन समझाए न समझेगा 'फराज'
वो तो सबकी बात सुन ले और मनमानी करे

अहमद फराज

मस्जिद में बुलाता है हमें नासहे-नाफहम[१]
होता अगर कुछ होश तो मयखाने[२] न जाते ?

दाग़

खिलाफे-शरआ[३] कभी शैख थूकता भी नहीं
मगर अँधेरे-उजाले में चूकता भी नहीं

अकबर इलाहाबादी

शैख करता तो है मस्जिद में खुदा को सजदे
उस के सजदों में असर हो, ये ज़रुरी तो नहीं

खामोश देहलवी

बात उम्दा कही थी नासेह ने
हझरते दिल को नागवार[४] लगी

झरीना सानी

मान लीजे शैख जो दावा करे
इक बुझुर्गे-दीं[५] को हम झुठलायें क्या

मौलाना हाली

लुत्फे-मय[६] तुझसे क्या कहूँ झाहिद
हाय कमबख्त तूने पी ही नहीं

दाग़

---

१. मूर्ख उपदेशक २. मधुशाला ३. शास्त्र विरुद्ध ४. अप्रिय ५. धार्मिक आगेवान
६. शराब का मझा

झाहिद जरा सँभलकर ज़बाँ खोलना यहाँ
मजलिस में रिन्द[१] भी हैं, सभी पारसा[२] नहीं

काझी हमीद उद्दीन

मिलेंगे फिर न ऐसे लोग यह सोहबत गनीमत है
कहा मानो, न जाओ शैखजी रिन्दों की महफिल से

रिफअत

ये कह दो जा के वाइझ[३] से अगर समझाने आये हैं
कि हम दैरो-हरम होते हुए मयखाने आये हैं

हैरत गोंडवी

लड़ते हैं जा के बाहर ये शैख-ओ-बिरहमन
पीते हैं मयकदे में सागर बदल बदल कर

रहें न रिन्द[४] ये वाइझ के बस की बात नहीं
तमाम शहर है, दो चार दस की बात नहीं

असद मुल्तानी

सच कहा था तूने झाहिद झहरे-कातिल[५] है शराब
हम भी कहते थे यही जब तक बहार आई न थी

जलील मानिकपुरी

तुझको मस्जिद है, मुझको मैखाना
वायझा[६] ! अपनी अपनी किस्मत है

मीर

ये मस्जिद है, ये मईखाना, ताज्जुब इसपे आता है
जनाबे शैख का नक्शे-कदम[७] यूँ भी है, और यूँ भी है

साईल देहलवी

---

१. शराबी २. नेक ३. उपदेशक ४. शराबी ५. भयंकर विष ६. हे उपदेशक ७. पद चिह्न

ना-तजुर्बाकारी[१] से वाइझ की ये बातें हैं
इस रंग को क्या जाने, पूछो तो कभी पी है ?

अकबर इलाहाबादी

गर यार मय पिलाये तो फिर क्यों न पीजिये
झाहिद नहीं, मैं शैख नहीं, कुछ वली[२] नहीं

इन्शा

मुँह पे आशिक के मुहब्बत की शिकायत नासेह
बात करने का भी नादाँ न करीना आया

शाद अझीमाबादी

आ गया था जो खराबात[३] में पी लेनी थी
तुझको सोहबत का भी झाहिद न करीना आया

शाद अझीमाबादी

मैं कहाँ, वाइझ कहाँ, तौबा करो
जो न समझा खुद वो क्या समझायेगा ?

शाद अझीमाबादी

प्यार

नही जरुर कि प्यार हो एक बार 'कतील'
ये मीठा रोग कइ बार हमने पाला है

कतील शिफाई

भर-भर के पिलाता है तू प्यार का पैमाना
आबाद रहे साकी, सदियों तेरा मैखाना

कतील शिफाई

---

१. अनुभव न होना २. फकीर ३. मयखाना

मैं हूँ अपने प्यार पे कायम, अपनी रस्में वो जानें
और ही जात हसीनों की और अपना और कबीला है

कतील शिफाई

'कतील' जिसकी अदावत में एक प्यार भी था
उस आदमी को गले से लगा लिया मैंने

कतील शिफाई

प्यार बुरी शै[१] नहीं है लेकिन फिर भी 'कतील'
गली-गली तकसीम[२] न तुम अपने जज़्बात[३] करो

कतील शिफाई

तुम लाख छिपाओ सीने में एहसास हमारी चाहत का
धड़का है तुम्हारा प्यार वहाँ, आवाज़ यहाँ तक आई है

कतील शिफाई

उसका वो प्यार कि बरसात की पहली बारिश
जिसमें इन्सान लगातार नहाना चाहे

कतील शिफाई

गुनगुनाया 'कतील' उसको मैंने
उसमें अब भी गज़ल का मज़ा है

कतील शिफाई

प्यार की रंगत मैंने देखी, दर्द की रंगत देखे कौन ?
प्यार का गीत सुना है सबने, धुन थी कैसी, सोचे कौन ?

अहमद झफर

एक जहाँ की खोज में अपने प्यार की नगरी छोड़ आये
और ज़माना ये समझा, हम प्यार की बाझी हारे हैं

जमील मलिक

---

१. वस्तु २. बाँटना ३. भावनाएँ

कैसे दिन थे, कैसी रातें, कैसी बातें – घातें थीं
मन बालक है, पहले प्यार का सुन्दर सपना भूल गया

मीराजी

तमाम राहों में बिखरे पड़े हैं उसके कदम
जमीं की धूल से वो कितना प्यार करता था

वझीर आगा

हसरत है, कोई गुँचा[१] हमें प्यार से देखे
अरमाँ है, कोई फूल हमें दिल से पुकारे

हबीब जालिब

अब वो बाँहें गले का हार नहीं
दूर का प्यार कोई प्यार नहीं

हसरत मोहानी

तेरी मेरी चाहतों के नाम पर
लोग कहने को बहुत कुछ कह गए

गुलाम जीलानी

उनको आता है प्यार पर गुस्सा
मुझको गुस्से पे प्यार आता है

अमीर मीनाइ

तुम आईने में अपने लब चुम लेना
यही दूर–ओफतादा[२] का प्यार होगा

अन्दलीब शादानी

---

१. कली २. परदेसी

बर्बाद यूँ न होती मेरी ज़िन्दगी 'गोहर'
उसने भी मुझको प्यार किया, हाय क्या किया ?

'गोहर'

आखिरी साअत शबे-रुख्सत की है
आ अब तो प्यार की बातें करें !

चिराग हसन हसरत

रात भर नफरतों की शाल बुनें
सुब्ह दम हर किसीसे प्यार करें

वझीर आगा

नहीं है याद भली इतनी भी, दुआ कर 'मीर'
कि अब जो देखूँ उसे मैं बहुत न प्यार आए

मीर

प्यार करने का जो खूबाँ[१] रखते हैं हम पर गुनाह
उनसे भी तो पूछिये, तुम इतने प्यारे क्यों हुए ?

मीर

क्या है देखो हो जो इधर को तुम
और चितवन में प्यार सा है कुछ

मीर

मैं सोचता हूँ कि वो लोग जाने क्या होंगे
जिन्होंने प्यार किया और कामयाब हुए

अैन सलाम

काँटों का ताज अपनी जबीं[२] पर सजाईये
है ज़िन्दगी से प्यार तो मर कर दिखाईये

मिदहतुल अख्तर

---

१. सुंदरियाँ २ ललाट

हमारा काम ही दुश्मन से प्यार करना है
ज़माने भर को दिया दर्से-दोस्ती[१] हमने

लतीफ फहमी

तू जहाँ नाझ से कदम रख दे,
वो झमीन आसमान है प्यारे

जिगर मुरादाबादी

मेरी ज़िंदगी तो गुज़री तेरे हिज्र के सहारे
मेरी मौत को भी प्यारे कोई चाहिये बहाना

जिगर मुरादाबादी

मिलना न मिलना यह तो मुकद्दर[२] की बात है
तुम खुश रहो, रहो मेरे प्यारे, जहाँ कहीं

आगाशाइर किझिलबाश

यूँ तो एहसान हसीनों के उठाये हैं बहुत
प्यार लेकिन जो किया है तो, तुम्हीं से हमने

जाँनिसार अख्तर

जी में था ऐ हश्र ! उससे अब न बोलेंगे कभी
बेवफा जब सामने आया तो प्यार आ ही गया

आगा हश्र कश्मीरी

यूँ सबा[३] पास से गुझरती है
उसे कह दी किसीने प्यार की बात

फैझ अहमद फैझ

ये सुरत और भोली-भाली बातें
तुम्हीं बताओ प्यार आए कि न आए

अंजुम

---

१. दोस्ती का पाठ २. भाग्य ३. हवा की लहर

डरूँ मैं किस लिए गुस्से से, प्यार में क्या था ?
मैं अब खिजाँ[१] को जो रोऊँ, बहार में क्या था ?

फजले अली मुमताझ

तू भली बात से भी मेरी खफा होता है
आह ! ये चाहना ऐसा ही बुरा होता है

अब्दुल हइ ताबाँ

तुम कहो 'मीर' को चाहो सो, कि चाहे हैं तुम्हें
वर्ना हम लोग तो सब उन का अदब[२] करते हैं

मीर

झगड़ते तुझसे तो प्यारे हिजाब[३] आता है
वगरना[४] बात का तेरी जवाब आता है

अहसनुल्लाह बयान

मोतिये की बास, तारों की चमक, सरसों का रंग
दो जहाँ की लझ्झतें हैं प्यार की इक बात में

शहझाद अहमद

कल रात जो ईंधन के लिए कट के गिरा है
चिड़ियों को बड़ा प्यार था उस बूढ़े शजर[५] से

परवीन शाकिर

फूल की रंगत मैंने देखी, दर्द की रंगत देखे कौन
प्यार का गीत सुना है सब ने, धुन थी कैसी, सोचे कौन

अहमद झफर

जादूगरनी है ये प्यारे, आवाज़ों पर ध्यान न दो
पीछे मुड़कर देख लिया तो पत्थर के हो जाओगे

नूर बिजनौरी

---

१. पतझड़ २. आदर ३. शर्म ४. वर्ना, नहीं तो ५. वृक्ष

जिस तरह देखा है अब, पहले कभी देखा न था
इतनी शिद्दत से उसे मैंने कभी चाहा न था

अनवर महमूद खालिद

मेरे माथे पे तेरे प्यार का हाथ
रूह पर दस्त-ए-सबा[१] हो जैसे

परवीन शाकिर

ज़िक्र करें वो और किसी का बीच में आए मेरा नाम
उनके होठों पर है अब तक मेरे प्यार की गहरी छाप

कतील शिफाई

प्यार को सब से ऊंचा मज़हब कह तो दिया है तूने 'कतील'
लोग करें अब जाने क्या-क्या तावीलें[२]

कतील शिफाई

मुझको उनसे प्यार नहीं है, मुझको उनके नाम से क्या
आँखें यूँ ही भर आई थीं, होंठ यूँ ही थर्राए थे

नूर बिजनौरी

है नफरतें ही चखीं जिसने, कौन उससे कहे
कि भूल कर वो कभी प्यार का नशा तो करे

फारिग बुखारी

जंग का वक्त नहीं ये प्यारे
घर में आये हैं मदारात[३] करो

मुबारक आनरु

उस बेवफा के प्यार का मत रोग पालिए
जामुन की डाल पे कभी झूला न डालिए

तश्ना आलमी

१. ठंडी हवा का हाथ २. स्पष्टीकरण ३. आदर सत्कार

‘मीर’ अम्दन[१] भी कोई मरता है
जान है तो जहान है प्यारे

मीर

तुम क्या खफा[२] हुए कि ज़माना खफा हुआ
हमसे बहुत था प्यार अभी कल की बात है

‘सहर’ सीतापुरी

इस कदर प्यार से देखो न हमारी जानिब[३]
दिल अगर और मचल जाये तो मुश्किल होगी

साहिर

यह दुःख तेरा है न मेरा
हम सब की जागीर है प्यारे

फैझ अहमद ‘फैझ’

रखते हैं जो औरों के लिए प्यार का जज़्बा[४]
वो लोग कभी टूट कर बिखरा नहीं करते

प्यार के बारे में इतना नहीं सोचा जाता
उससे कह दो मेरी आँखों का सफर खत्म करे

वसीम बरेलवी

प्यार का दर्द उम्र-भर अख्तर
प्यार का चैन सिर्फ पल-दो पल

सईद अहमद अख्तर

वो मेरी राह में काँटें बिछाये है लेकिन
मैं उसको प्यार करूँ, उसपे एतबार करूँ

अहमद हमदानी

---

१. जानबूझकर २. क्रोध ३. ओर ४. जोश

अजनबी प्यार से मिलते हैं सदा
भूल जाते हैं तो अक्सर अपने

महमूद शाम

ये नफरतों की तिजारत[१] मुझे कबूल नहीं
मैं प्यार हूँ मुझे ईन्सां का प्यार लेने दो

जमील मलिक

जितना दिल प्यार करे फूलों से
उतना काँटों में उलझता जाये

जमील मलिक

किया है प्यार जिसे हमने ज़िंदगी की तरह
वो आश्ना[२] भी मिला हमसे अजनबी की तरह

कतील शिफाई

हम फिर उनके रुठ जाने पर फिदा[३] होने लगे
फिर हमें प्यार आ गया, जब वो खफा होने लगे

जलाल

तुझको खबर नहीं मगर इक सादा-लौह[४] को
बर्बाद कर दिया तेरे दो दिन के प्यार ने

साहिर लुधियानवी

जब कहा मैंने कि प्यार आता है मुझको तुम पर
हँस के कहने लगे कि और आप को आता क्या हैं ?

अकबर इलाहाबादी

दुनिया की फिक्र, दीन[५] की बातें, खुदा की याद
सब कुछ भूला दिया तेरे दो दिन के प्यार ने

अख्तर शीरानी

---

१. व्यापार २. मित्र ३. निछावर ४. सरल स्वभाव वाला ५. मझहब, धर्म

आस्तीं[१] खून में तर, प्यार जताते हो मगर
क्या गज़ब करते हो, खंजर तो छुपाओ साहब

अली सरदार जाफरी

आप इस दौर के जलते हुए गुलझारों को[२]
कम से कम प्यार की शबनम से बुझाते रहिए

कहा जो मैंने कि दिल चाहता है प्यार करूँ
तो मुस्कुरा के वो कहने लगे कि प्यार के बाद ?

अकबर ईलाहाबादी

सबपे तू महर्बान है प्यारे, कुछ हमारा भी ध्यान है प्यारे ?
हमसे जो हो सका सो कर गुज़रे, अब तेरा इम्तहान है प्यारे

जिगर मुरादाबादी

तेरे और मेरे प्यार में अक्सर सारे जज़्बात[३] मुश्तरक[४] है मगर
धूप कितनी ही मेहरबाँ हो जाये वो कभी चाँदनी नहीं होती

बशीर बद्र

तल्ख[५] बातें हमें पसंद नहीं
जो भी पूछो वो प्यार से पूछो

मैंने जो गीत तेरे प्यार की खातिर लिखे
आज उन गीतों को बाज़ार में ले आया हूँ

साहिर लुधियानवी

प्यार पर बस तो नहीं है मेरा, लेकिन फिर भी
तू बता दे कि तुझे प्यार करूँ या ना करूँ ?

साहिर लुधियानवी

---

१. बाँह २. बाग को ३. आवेश ४. जिस में किसी का साझा हो ५. कटु

आँख वीराँ, दिल परीशाँ, ज़ुल्फ बरहम[१], लब खामोश
यूँ तो वो कुछ और भी प्यारे नज़र आने लगे

शकील बदायूनी

एक चुटकी प्यार की दरकार थी
यार क्यूँ इतना हुआ नादार[२] तू ?

वज़ीर आगा

हम लोग अब तो अजनबी-से हैं, कुछ तो बताओ हाले फिराक
अब तो तुम्हीं को प्यार करे हैं, अब तो तुम्हीं से बोले हैं

फिराक गोरखपुरी

गैर का नाम जो तुम प्यार से लेते हो तो बस
एक बरछी है कि सीने में चुभो देते हो

रंगीन

कोई तो हो, जो मेरे तन को रौशनी भेजे
किसीका प्यार हवा मेरे नाम लायी हो

परवीन शाकिर

ऐ हसीं ! हम वाकिफे-आदाबे मजलिस[३] हैं मगर,
इस कदर प्यार आ गया, मुँह तेरा तकते रह गये

असर लखनवी

करम ऐसे किये हैं दोस्तों ने
कि हर दुश्मन पे प्यार आने लगा है

शाद अझीमाबादी

जब चाहा इकरार[४] किया, जब चाहा इन्कार किया
देखो हमने खुद ही से कैसा अनोखा प्यार किया

मीनाकुमारी

---

१. बिखरी हुई २. निर्धन ३. महफिल के शिष्टाचार से परिचित ४. स्वीकृति

जान उन पर निसार करता हूँ
प्यार की तरह प्यार करता हूँ

जिगर मुरादाबादी

मुद्दत हुई किसीने पुकारा था प्यार से
उस दिन से गुम्बदों[१] की तरह गूँजता हूँ मैं

खलील धनतेजवी

पयाम (संदेश)

किसीको भेज कर खत, हाये ये कैसा अज़ाब[२] आया
कि हर एक पूछता है, नामाबर आया ? जवाब आया ?

अहसन मारहरवी

कासिद कोई तुम काहे को भेजोगे मेरे पास
नामा तो वो लिक्खे कि जिसे याद हो कोई

मुसहफी

ऐसा भी कोई नामाबर[३] ! बात ये कान धर सके
सुन के यकीन कर सके, जा के उन्हें सुना सके

हफीझ जालंधरी

लिखा नामा, गया नामा, मगर क्यों दिल धड़कता है
कहीं लाता न हो कासिद मेरी तहरीर[४] के टुकड़े

शमीम तारिक

आके कासिद ने कहा जो, वही अक्सर निकला
नामाबर समझे थे हम, वो तो पयाम्बर निकला

आरझू लखनवी

---

१. गुम्बज २. मुसीबत ३. पत्रवाहक ४. लेख

बेदिल हो और कातिल हो, और अल्लाह अल्लाह करते हो ?
जल्लादों के कासिद हो और अल्लाह-अल्लाह करते हो ?

चिनु मोदी 'ईर्शाद'

हदें वो खैंच रक्खी हैं हरम[१] के पासबानों ने[२]
कि बिन मुजरिम[३] बने पैगाम भी पहुँचा नहीं सकता

मजाझ

परवाना

कौन हे बझ्म[४] के काबिल[५] वो समझ जातें हैं
सब निकाले गये, परवाने निकाले न गये

हफीझ जौनपुरी

जो दिलजले[६] हैं जानते हैं दिलजलों की कद्र
परवाने-सा कोई नहीं जलता मगर चिराग

अख्तर

ये हुस्नो-इश्क में क्या रब्त[७] है, खुदा जाने
चरागे-बझ्म को लौ दे रहे हैं परवाने

मेहदी शेखपुरी

वो बझ्म देखी है मेरी निगाह ने कि जहाँ
बगैर शम्अ भी जलते रहे हैं परवाने

तबस्सुम सूफी

---

१. अंतःपुर २. पहरेदारों ने ३. अपराधी ४. महफिल ५. योग्य ६. जिसके दिल को कष्ट पहुँचा हो ७. सम्बन्ध

गर्मिये-शम्मा[1] का अफसाना सुनाने वालों
रक्स[2] देखा नहीं तुमने अभी परवाने का

इकबाल सफीपुरी

परवाने का हाल इस महफिल में काबिले-रश्क[3] ऐ अहले-नझर[4]
इक रात ही में पैदा भी हुआ, आशिक भी हुआ और मर भी गया

अकबर ईलाहाबादी

अरे ओ जलने वाले, काश जलना ही तुझे आता
यह जलना कोई जलना है कि रह जाये धुआँ होकर

यास यगाना चंगेझी

आदमी से जो मोहब्बत में न हो थोड़ा है
इतनी सी जान पे हिम्मत है यह परवाने की

हफीझ जौनपुरी

आशिक से गर्म हो के न पूछो जलन का हाल
अफरोख्ता[5] हो शम्मा तो परवाना क्या करे ?

नसीम

कहा पतंगे ने ये दारे-शम्मा[6] पर चढ़कर
अजब मज़ा है जो मर ले किसीके सर चढ़कर

जौक

कोई परवानों को समजाओ कि मरने के सिवा
और भी चन्द मुकामाते-वफा[7] होते हैं

आबिद

---

१. शम्मा की जलन २. नृत्य ३. इर्ष्या के योग्य ४. परख रखने वाले ५. प्रज्वलित
६. शमा रुपी फाँसी ७. वफादारी बताने वाला

देख लो शमा पे जलते हुए परवानों को
ऐसे होते हैं, जो होते हैं मुब्बत वाले

जलील मानिकपुरी

जल मरा आग मुहब्बत की इसे कहते हैं
जलना देखा न गया शम्मा का परवाने से

मेलाराम 'वफा'

मुस्कराकर वो हर इक बार कहे जाते हैं
सरफरोशी[१] का सबक सीखिये परवानों से

झार अल्लामी

तुझको मालूम भी है आग ऊगलने वाले
शम्मा पर शौक से जल जाते हैं जलने वाले

झार अल्लामी

फरिश्ता (देवदूत)

तरदामनी[२] पे शैख हमारी न जाईयो
दामन निचोड़ दें तो फरिश्ते वुजू[३] करें

ख्वाजा मीर दर्द

पकड़े जाते हैं फरिश्तों के लिखे पर नाहक
आदमी कोई हमारा दम-ए-तहरीर[४] भी था ?

ग़ालिब

---

१. जान देना २. दामन का भीगा होना ३. नमाझ पढने के पूर्व हाथ-पाँव धोना
४. लिखते समय

रहे दो दो फरिश्ते साथ तो इन्साफ क्या होगा ?
किसीने कुछ लिखा होगा, किसीने कुछ लिखा होगा

हरिचन्द अख्तर

हमारी लगझिशों की[१] तुझको झाहिद कुछ खबर भी है ?
फरिश्ते थामते हैं हाथ जब हम लड़खड़ाते हैं

पेश-ए खुदा[२] चला हूँ, फरिश्ते हैं साथ-साथ
सागर लिये हुए, कोई मीना लिये हुए

हफीझ जालंधरी

तू खुद को फरिश्ता न समझ वाईझे-नादाँ[३]
दुनिया में तेरे रंग के इन्सान बहुत है

शकील बदायूनी

बहस तमाम हो गयी, शैख फरिश्ता ही सही
हम भी तो कहते हैं यही, यानी वो आदमी नहीं

नातिक गुलावटी

फानी दुनिया (नश्वर दुनिया)

कुछ तो लतीफ[४] होतीं घड़ियाँ मुसीबतों की
तुम एक दिन तो मिलते, दो दिन की ज़िंदगी में

सागर निझामी

---

१. गलतियों की २. खुदा के सामने ३. नादान उपदेशक ४. मझेदार

उम्र-ए-दराज़[१] माँग के लाए थे चार दिन
दो आरज़ू में कट गये दो इंतज़ार में

बहादुरशाह 'झफर'

किसीकी चार दिन की ज़िंदगी सौ काम आती है
किसीकी सौ बरस की ज़िंदगी से कुछ नहीं होता

जौक

किया है मिलने का वादा और वो भी पाँचवें दिन का
किसीसे सुन लिया होगा कि दुनिया चार दिन की है

क्या दिल लगाएँ गुलशन-ए-आलम में बेसबात[२]
आए हैं चार दिन के लिए इस चमन में हम

मस्त बनारसी

चार दिन की दोस्ती का इस ज़माने में रिवाझ
किस तवक्को[३] पर किसी से आशनाई[४] कीजिए

और चल फिर ले जरा तन तन के ऐ बाँके जवाँ
चार दिन के बाद फिर टेढी कमर हो जाएगी

काम अपने आ नहीं सकते तो गैरों के सही
चार दिन की ज़िंदगी में कुछ तो कर लें कार[५] हम

जो घड़ी ऐश की गुज़रे वो गनीमत जानो
ज़िन्दगानी का मेरी जान भरोसा क्या है ?

दाग़

१. लंबी आयु २. अस्थायी ३. आशा ४. दोस्ती ५. कार्य

नालाकशो[१] उठा दो आहो-फुगाँ की[२] रस्में
दो दिन की ज़िंदगी है काटो हँसी-खुशी से

शकील बदायूनी

अजल[३] से वे डरें, जीने को जो अच्छा समझते हैं
यहाँ हम चार दिन की ज़िंदगी को क्या समझते हैं ?

अकबर ईलाहाबादी

ज़िंदगी इन्साँ की है मानिन्दे[४] मुर्गे[५] खुशनवा[६]
शाख पर बैठा कोई दम चहचहाया, उड़ गया

इकबाल

अभी लेने पाये नहीं दम जहाँ में
अजल[७] का तकाज़ा हुआ चाहता है

हाली

माना कि ज़िंदगी से बहुत प्यार है मगर
कब तक रखोगे काँच का बरतन सँभाल के

खलील धनतेजवी

क्या भरोसा है ज़िंदगानी का
आदमी बुलबुला है पानी का

तर्क-ए-उमीद[८] ही से मिलेगा सुकून-ए-दिल[९]
दो दिन की ज़िंदगी पे भरोसा किया तो क्या ?

अर्श मल्सियानी

---

१. आर्तनाद करने वालों २. आहें भरने की ३. मृत्यु ४. समान ५. मुर्गा ६. खूबसूरत
७. मौत ८. आशा का त्याग ९. मन की शांति

दिल में हमारे कयामत[१] की शोखियाँ[२]
दो चार दिन रहा था किसीकी निगाह में

ऐ बुतों[३], इस चार दिन के हुस्न पर
ये मिज़ाज, इतना मिज़ाज, ऐसा मिज़ाज !

अहकर

मामुरा-ए-फना की कोताहियाँ[४] तो देखो
एक मौत का भी दिन है, दो दिन की ज़िंदगी में

सीमाब अकबराबादी

चार दिन भी न ठहरा इस सरा-ए-दहर[५] में
इक तमाशा बन गया आना मेरा जाना मेरा

आगाह अपनी मौत से कोई बशर नहीं
सामान सौ बरस के हैं पल की खबर नहीं

अकबर मैरठी

इक फुरसत-ए-गुनाह मिली वो भी चार दिन
देखे हैं हमने हौसलें परवरदिगार के

फैझ अहमद 'फैझ'

मुझसे मत जी को लगाओ कि नहीं रहने का
मैं मुसाफिर हूँ कोई दिन को चला जाऊँगा

मुहम्मद मीर सोझ

फिर वही कुंजे-कफस[६], फिर वही सैयाद[७] का घर
चार दिन और हवा बाग की खा ले बुलबुल

रिन्द

---

१. प्रलय २. चंचलता ३. प्रेयसी ४. सृष्टि की रचना करने वाले ईश्वर की खामियाँ
५. संसार रूपी सराय ६. पिंजड़े का कुंज ७. शिकारी

कैसे हैं वे कि जीते हैं सदसाल[१] हम तो 'मीर'
इस चार दिन की जीस्त में[२] बेज़ार[३] हो गए

मीर

ऊम्र फानी है तो फिर मौत से डरना कैसा ?
इक न इक रोझ ये हंगामा हुआ रक्खा है

आसी ऊल्दनी

जो बुज़दिल हैं वो पहले मौत से सौ बार मरते हैं
दिलावर एक बार इस दहरे-फानी[४] से गुज़रते हैं

तिलोकचंद महरुम

क्यों हँसी तू ऐ अजल[५]! फानी अगर समझा मुझे
एक दिन सब को फना है, क्या तुझे और क्या मुझे

सीमाब अकबराबादी

हर कोई इस मुकाम में दस रोज़
अपनी नौबत[६] बजाये जाता है

मीर

क्या ये कम है, फर्श[७] से ता-अर्श[८] हो आये 'जमील'
चार दिन की ज़िन्दगी में और क्या-कया देखते ?

जमील मलिक

अफसोस है कि उम्रे-फानी[९] ने खत्म होकर
मुझ को वही बताया, जिसको मैं जानता था

साकिब लखनवी

यह मुद्दत हस्ती की आखिर यूँ भी तो गुझर ही जायेगी
दो दिन के लिये मैं किससे कहूँ, आसान मेरी मुश्किल कर दे

नातिक गुलावटी

---

१. सौ वर्ष २. जिंदगी में ३. परेशान ४. नाशवंत दुनिया ५. मृत्यु ६. नगाड़ा
७. धरती ८. आकाश तक ९. नश्वर शरीर

फुर्सत-ए-कार[1] फकत चार घड़ी है यारो
ये न सोचो कि अभी उम्र पड़ी है यारो

जाँनिसार अख्तर

उम्रे-दो-रोज़ा[2] वाकई ख्वाबो खयाल थी
कुछ ख्वाब में गुज़र गई, बाकी खयाल में

सीमाब अकबराबादी

एक लम्हा[3] कोई जी ले तो बड़ी बात है ये
इसलिए हमने 'असर' ऊम्रे-शरर[4] माँगी थी

इज़हार असर

बस एक रात ठहरना है, क्या गिला कीजीये
मुसाफिरों को गनीमत है यह सराये[5] बहुत

शिकेब जलाली

ज़िन्दगी रैन-बसेरे के सिवा कुछ भी नहीं
ये नफस[6] उम्र के फेरे के सिवा कुछ भी नहीं

शेर अफझल जाफरी

जिसे नादान की बोली में सदी कहते हैं
वो घड़ी शाम-सबेरे के सिवा कुछ भी नहीं

शेर अफझल जाफरी

चार दिन की ये रफाकत[7] जो रफाकत भी नहीं
उम्र-भर के लिए आजार[8] हुई जाती है

साहिर लुधियानवी

---

१. कार्य का अवकाश २. दो दिन की जिन्दगी ३. क्षण ४. चिन्गारी जितनी आयु
५. यात्रीओं के ठहरने की जगह ६. साँस ७. मेल-जोल ८. बीमारी

ये माना ज़िन्दगी है चार दिन की
बहुत हसीं होते हैं यारो, चार दिन भी

फिराक गोरखपुरी

फूल और काँटें

फूल से आशिकी का हुनर सीख ले
तितलियाँ खुद रुकेंगी, सदायें[१] न दे

बशीर बद्र

कुछ फूल चुनने आए थे ऐ बागबाँ[२] मगर
कुछ दाग़ ले चले हैं तेरे गुलसिताँ[३] से हम

असर सहबाइ

गुलशन परस्त[४] हूँ मुझे गुल[५] ही नहीं अज़ीज़[६]
काँटों से भी निबाह किए जा रहा हूँ मैं

जिगर मुरादाबादी

काँटों का भी कुछ हक है आखिर
कौन छुड़ाए दामन अपना

जिगर मुरादाबादी

मेरा पयाम[७] सबा[८] मेरे गुल से कह देना
चली गई मुझे बेहोश कर के बू तेरी

तअश्शुक लखनवी

---

१. आवाझ २. माली ३. बाग, उपवन ४. उपवन का पुजारी ५. फूल ६. प्यारा
७. संदेश ८. प्रभात के समय चलने वाली पूरब की हवा

कोई इन फूलों की किस्मत देखना,
ज़िंदगी काँटों में पलकर रह गई

अर्शी भोपाली

तेरा अंदाज़े-तबस्सुम[१] है कि उनवाने-बहार[२]
जब कोई फूल खिला, मैंने तुझे याद किया

तलवे ज़ख्मी होने दे
फूलों पर मत पाँव रख

नसीम सहर

बहार आ गई मगर खिझाँ[३] रुप धार कर
गुलों पे ताज़गी नहीं, दिलों में ज़िंदगी नहीं

राधाकृष्ण सहगल

हम जान छिड़कते हैं जिस फूल की खुशबू पर
वो फूल भी काँटों के बिस्तर पे खिला होगा

माधव मधुकर

खिज़ाँ के दौर में ऐसे भी कुछ मकाम आये
गुलों पे वक्त पड़ा है तो खार[४] काम आये

राझ ईलाहाबादी

खुशबू की तरह जीना भी आसान तो नहीं
फूलों से कतरा-कतरा निचोड़ा गया मुझे

नसीम निकहत

लो हम बताएं गुँचा-ओ-गुल में[५] है फर्क क्या
इक बात है कही हुई, एक बेकही हुई

आगा शायर किझिलबाश

---

१. हँसी की अदा २. वसंत का ढंग ३. पतझड़ ४. काँटें ५. कली और फूल

हमको हालात ने इस तरह किया था यकजा[१]
जैसे गुलदान[२] में दो फूल गले मिलते हैं

शबनम रूमानी

तस्वीर मैंने माँगी थी, शोखी तो देखिये
इक फूल उसने भेज दिया है गुलाब का

अन्दलीब शादानी

आपने प्यार से मारा था जो कंकर मुझको
हो गया फूल में तब्दील[३] वो लगकर मुझको

असर करीमी

अब के हम बिछड़ें तो शायद कभी ख्वाबों में मिलें
जिस तरह सूखे हुए फूल किताबों में मिलें

अहमद फराज़

गुर ज़िंदगी के सीखे खिलती हुई कली से
लब पर है मुस्कराहट - दिल खून हो रहा है

फिराक गोरखपुरी

तमाम उम्र रहे हम तो खैर काँटों में
खुदा करे तेरा दामन गुलों से भर जाए

शमीम जयपुरी

कौन जाने कि वो किस राह-गुज़र[४] से गुज़रे
हर गुज़रगाह[५] को फूलों से सजाये रखिये

तारिक बदायूनी

बहारें ज़िंदगी की यूँ मेरी किस्मत में लिखी हैं
कि मैं जिस फूल को दामन में रख लूँ, खार हो जाये

बिस्मिल सईदी

---

१. एकत्र २. गुलदस्ता रखने का पात्र ३. परिवर्तित ४. रास्ता ५. रास्ता, मार्ग

घटा देखकर खुश हुई लड़कियाँ
छतों पर खिले फूल बरसात के

मुनीर नियाझी

तूने ये फूल जो जुल्फों में सजा रखा है
इक दीया है जो अँधेरो में जला रखा है

कतील शिफाई

गुंचों के[१] मुस्कुराने पे कहते हैं हँस के फूल
अपना करो खयाल हमारी तो कट गई

शाद अझीमाबादी

बारहा[२] तुंद[३] हवाएं चलीं, तूफां आए
लेकिन एक फूल से चिपटी हुई तितली न गिरी

मजीद अमजद

खिजाँ[४] भी जिनको न मुरझा सकेगी दीवानों
कुछ ऐसे फूल चमन में खिला गये हो तुम

वास्ता[५] न फूलों से, काम कुछ न खारों से
हम चमन में रह कर भी दूर हैं बहारों से

शबाब

लोग काँटों से बचकर चलते हैं
मैंने फूलों से ज़ख्म खाये हैं

राही

तुमने फूलों को नवाज़ा मैंने काँटों को चुना
गालेबन[६] दोनों ही थे नाआशना[७] अंजाम से

---

१. कलियों के २. अक्सर ३. तेज ४. पतझड़ ५. संबंध ६. संभवतः ७. अनजान

हमने काँटों को भी नर्मी से छुआ है लेकिन
लोग बेदर्द हैं, फूलों को मसल देते हैं

साहिर लुधियानवी

कितने काँटों की बददुआ ली है
चन्द कलियों की ज़िंदगी के लिए

शहीद फातिमा

काँटा समझ के मुझसे न दामन बचाईये
गुज़री हुई बहार की एक यादगार हूँ

मुशीर

खार की तरह मिली बागे-जहाँ में तकदीर
जिससे लिपटूँ वो छुड़ा लेता है दामन अपना

'जौहर'

कली कोई जहाँ पर खिल रही है
वहीं एक फूल भी मुर्झा रहा है

जिगर मुरादाबादी

फूलों को मैं बिछाऊँ कहाँ है मेरी बिसात
काँटें ऊठा लिये हैं मगर तेरी राह से

'शाहिद'

माना कि इस जमीं को न गुलझार कर सके
कुछ खार कम तो कर गये, गुज़रे जिधर से हम

साहिर लुधियानवी

बू-ए-गुल[१], फूलों में रहती थी, मगर रह न सकी
मैं तो काँटो में रहा, और परीशां न हुआ

साकिब लखनवी

---

१. फूल की खुशबू

इक हमीं खार थे आँखो में सभी के, सो चले,
बुलबुलो, खुश रहो तुम, इस गुल-ओ-गुलज़ार[१] के साथ

कायम चाँद्पुरी

सीख ले फूलों से गाफिल मुद्दआ-ए-झिंदगी[२]
खुद महकना ही नहीं, गुलशन को महकाना भी है

असर लखनवी

गुलों की राह से जो लोग खार तक पहुँचे,
हकीकत वही हुस्न-ए-बहार[३] तक पहुँचे

खलिश

गुलों को खिल के मुरझाना पड़ा है
तबस्सुम[४] की सज़ा कितनी बड़ी है

अदम

तबस्सुम और फिर उनके लबों पर
चमन की हर कली शरमा रही है

मीना काझी

सच्चाईयों का कोई खरीदार ही न था
शाखों पे फूल सूख गये, खार बिक गये

'अशरफ' मालवी

जो बागबाँ फूलों का वफादार नहीं है
गुलशन की हिफाज़त[५] का वो हकदार नहीं है

फीरोझ राहत

हो तुमको मुबारक ऐ माली, ये नरगिस, चम्पा और जुही
हमने तो फकत गुलशन से तेरे, इक रात की रानी माँगी थी

---

१. फूल और बाग २. झिंदगी का ऊद्देश्य ३. खूबसूरती की रौनक ४. स्मित
५. रक्षा

हर एक उनसे बचाता है अपने दामन को
चमन में रह के भी काँटो की ज़िंदगी क्या है ?

शमीम जयपुरी

अगर काँटा निकल जाए चमन से
तो फूलों का निगहबाँ[१] कौन होगा ?

सबा अफगानी

वो शाखे-गुल पे रहे या किसीकी मैयत पर
चमन के फूल तो आदी हैं मुस्कुराने को

आरज़ू लखनवी

सूँघकर कोई मसल डाले तो यह है गुल की जीस्त[२]
मौत उसके वास्ते डाली पे कुम्हलाने में है

आनंद नारायण मुल्ला

गुलों के साये में अक्सर 'रियाझ' तड़पा हूँ
करार[३] काँटों पे कुछ ऐसा पा लिया मैंने

'रियाझ'

गुल से लिपटी हुई तितली को गिराकर देखो
आँधियों, तुमने दरख्तों[४] को गिराया होगा

कैफ भोपाली

गुलों ने खारों के छेड़ने पर, सिवा खामोशी के मुँह न खोला
शरीफ[५] ऊलझें अगर किसीसे, तो फिर शराफत[६] कहाँ रहेगी ?

शाद अझीमाबादी

---

१. निगाह रखने वाला/रक्षा करने वाला २. ज़िंदगी ३. चैन ४. वृक्षों को ५. सभ्य पुरुष ६. सज्जनता

चुभे पाँवों में काँटे याद आया,
कि हमने फूल ठुकराये हैं बहुत

समीना असलम

मजनू के दिल में बेवजह खलीश[१] कैसी
काँटा कोई तलवे में लैला के चुभा होगा

कतील शिफाई

बहुत हसीन सही सोहबतें गुलों की मगर
वो ज़िंदगी है जो काँटों के दरमियाँ गुज़रे

जिगर मुरादाबादी

वो तोड़ते हैं तो कलियाँ शिगुफ्ता[२] होती हैं
वो रौंदते हैं तो सब्झा[३] निहाल होता है

अकबर ईलाहाबादी

वो खार हूँ, किसीसे ऊलझता नहीं हूँ मैं
दुश्मन की आँख में भी खटकता नहीं हूँ मैं

रसा मुस्तफाबादी

किसी महल, किसी वादी[४], किसी चमन में नहीं
वो गुल, जो दिल में महकता है, नेक काम के बाद

आनंद नारायण मुल्ला

राह में काँटे बिछे होंगे कि फूल
जिसको थी ये फिक्र बैठा ही रहा

मुहसिन

इज़्ज़त उसे मिली, जो वतन से निकल गया
वो फूल सर चढ़ा जो चमन से निकल गया

---

१. पीड़ा २. खिलना ३. हरियाली ४. जंगल

कागज़ की कतरनों को भी कहते हैं लोग फूल
रंगों का एतबार ही क्या, सूँघ के भी देख

शिकेब जलाली

हम फूल हैं, औरों के लिये लाये हैं खुशबू
अपने लिये ले दे के बस इक दाग़ मिला है

सच्चाई छिप नहीं सकती बनावट के ऊसूलों से
कि खुशबू आ नहीं सकती कागज़ के फूलों से

किसी झूठी वफा[१] से दिल को बहलाना नहीं आता
मुझे घर कागज़ी फूलों से महकाना नहीं आता

अदीम हाशमी

कुछ मेरे बाद और भी आएँगे काफिले
काँटे ये रास्ते से हटा लूँ तो चैन लूँ

तसव्वुर किरतपुरी

रोयी शबनम[२], गुल हँसा, गुँचा खिला मेरे लिए
जिससे जो कुछ हो सका, ऊसने किया मेरे लिए

उम्मीद उमेठवी

जितने भी लफ्ज़ हैं, वो महकते गुलाब हैं
लहजे के फर्क से इन्हें तलवार मत बना

कतील शिफाई

हवा की तरह वो आएँ तो फूल बन जाऊँ
चमन के रंग मेरी चुड़ियों में भर जाएँ

रेहाना रुही

---

१. वादा पूरा करना २. ओस

यूँ मेरे खत का जवाब आया
लिफाफे में इक गुलाब आया

नुसरत बद्र

अगर यह जानते चुन-चुन के हम तोड़ेंगे
तो गुल कभी न तमन्ना-ए-रंग-व-बू[१] करते

जौक

बहुत से उजले-उजले फूल लेकर
कोई तुम से मिला था, याद होगा

बशीर बद्र

तेरे बगैर बाग में फूल न खिल के हँस सके
कोई बहार की सी बात अब के बहार में नहीं

फानी बदायूनी

गुँचो से प्यार कर के ये इज़्ज़त मिली हमें
चूमे कदम बहार ने, गुज़रे जिधर से हम

शकील बदायूनी

जो सच पूछो तो दुनिया में फकत रोना ही रोना है
जिसे हम ज़िंदगी कहते हैं, काँटों का बिछौना है

अख्तर अंसारी

पामाल होते होते भी खुशबू लुटा गये
सीखा नहीं बशर[२] ने गुलों का चलन अभी

असर लखनवी

हम सरगुझश्त[३] क्या कहें अपनी कि मिस्ल-ए-खार[४]
पामाल हो गये तेरे दामन से छूट कर

बयाँ

---

१. रंग और खुशबू की ख्वाहिश २. मनुष्य ३. कहानी ४. काँटे की तरह

गुल में वो अब नहीं है जो आलम था खार का
वल्लाह[१] क्या हुआ वो ज़माना बहार का

फानी बदायूनी

खुशबू वही, वही नज़ाकत, वही है रंग
माशूक क्या है, फूल है, वो भी गुलाब का

दाग़

चमन सैयाद ने[२] सींचा यहाँ तक खूने-बुलबुल से
कि आखिर रंग बन कर फूट निकला आरिझे-गुल[३] से

चमन में गिरयए-शबनम[४] गलत सही लेकिन
सवाल ये है कि फूलों को क्यों हँसी आई ?

एहसान दानिश

जो गुल थे, कब्र ऊन्होंने सँवारी गरीब की
जो नंगे-गुल थे[५], ज़ीनते-दस्तार[६] हो गये

आनंद नारायण मुल्ला

नाझ है गुल को नझाकत ये चमन में ऐ 'जौक'
उसने देखे ही नहीं नाझ-ओ-नझाकत[७] वाले

जौक

पीछे बँधे है हाथ, मगर शर्त है सफर
किससे कहें कि पाँव का काँटा निकाल दे

ताझ भोपाली

---

१. खुदा की कसम २. शिकारी ने ३. फूल की पंखुड़ी ४. ओस का रुदन ५. फूलों का कलंक ६. पगड़ी की शोभा ७. गर्व और कोमलता

मैं तेरा बिस्तर रखूँ आबाद तू आँगन मेरा
मैं बदन भर फूल हूँ और तू दीया भर आग है

इशरत आफरीं

अगर एक फूल मुरझा भी गया तो क्या हुआ बुलबुल ?
चमन में इस कमी से क्या कयामत आई जाती है ?

रुस्वा

हाथ काँटों से कर लिये झख्मी
फूल बालों में इक सजाने को

अदा झाफरी

ऐ सबा[१], आ कि दिखायें तुझे, वो गुल, जिसने
बातों ही बातों में गुलझार[२] खिला रक्खा है

सलीम अहमद

मौसमे-गुल चमन में जो आता नहीं
कोई खामी तेरी बागबानी में है

साहिर शीरीं

मैं जिसके हाथ में कल फूल दे के आया था
उसीके हाथ का पत्थर मेरी तलाश में है

कृष्ण बिहारी नूर

जो कली सूख गई वो तो खिलेगी न कभी
बाग में फस्ले-बहार[३] आये तो क्या, जाये तो क्या ?

शाद अझीमाबादी

फूल, गुल, शम्सो-कमर[४] सारे ही थे
पर हमें उनमें तुम्हीं भाये बहुत

मीर

---

१. ठंडी हवा २. बाग ३. वसंत ऋतु ४. चाँद-सूरज

यह क्या कि सितम मुझ पे तो गैरों पे करम[१] हो
इक फूल का हो रंग कहीं और कहीं और ?

जोश मलसियानी

चुभे किसीके न दिल में इलाही[२] यह काँटा
हझार तरह की तकलीफें हैं मुहब्बत में

बेखुद देहलवी

खिली है दिल में किसीके बदन की धूप 'शिकेब'
हर-एक फूल सुनहरा दिखायी देता है

शिकेब जलाली

शाख से कटने का गम उनको बहुत था लेकिन
फूल मजबूर थे, हँसते रहे गुलदानों में

सईद अहमद अख्तर

चमन तुम से इबारत हैं, बहारें तुमसे ज़िंदा है
तुम्हारे सामने फूलों से मुरझाया नहीं जाता

मख्मूर देहलवी

इसे सैयाद ने कुछ, गुल ने कुछ, बुलबुल ने कुछ समझा
चमन में कितनी मानीखेझ[३] थी, इक खामोशी मेरी

जिगर मुरादाबादी

गुलिस्ताँ[४] में जाकर हर इक गुल को देखा
न तेरी-सी रंगत, न तेरी-सी बू[५] है

नवाब नसीरुद्दीन हैदर

---

१. कृपा भाव २. खुदा ३. अर्थपूर्ण ४. बाग ५. खुशबू

बहार अब नये गुल खिलाने लगी है
खिझाँ[१] को चमन में बुलाना पड़ेगा

बहुत गमझदा[२] दिल हैं कलियों के लेकिन
उसूलन[३] उन्हें मुस्कुराना पड़ेगा

झफर इकबाल

फूलों के इंतझार में काँटो से भी निभाईए
यानी खुशी के वास्ते गम का शऊर[४] चाहिए

साहिर होशियारपुरी

गुलों के साथ खारों को भी चुन लेते हैं दामन में
किसीकी हमको आजुर्दा-दिली[५] अच्छी नहीं लगती

शाद अझीमाबादी

इस गुलशने-हस्ती में कम खिलते हैं गुल ऐसे
दुनिया महक उट्ठेगी, तुम दिल को मसल जाना

फिराक गोरखपुरी

गुलशने-हस्ती में ये कैसा जश्ने-बहाराँ है यारो,
एक कली तब खिलती है जब लाख कली मुरझाती है

फिराक गोरखपुरी

ये फूल मुझे कोई विरासत[६] में मिले हैं
तुमने मेरा काँटों भरा बिस्तर नहीं देखा

बशीर बद्र

मैं जो काँटा हूँ तो चल मुझसे बचाकर दामन
मैं हूँ गर फूल तो जूड़े में सजा ले मुझको

कतील शिफाई

---

१. पतझड़ २. दुःखी ३. सिद्धांत के अनुसार ४. ढंग ५. बेचैनी ६. उत्तराधिकार

ऊलझ पड़ूँ किसी दामन से मैं वो खार नहीं
वो फूल हूँ जो किसीके गले का हार नहीं

चकबस्त

कली-कली को गुलिस्ताँ किये हुए वो आएँगे
वो आएँगे, कली-कली को गुलिस्तां किये हुए

अदा जाफरी

शजर[१] शजर निग्राँ[२] है, कली कली बेदार[३]
न जाने किसकी निगाहों को ढूँढ़ती है बहार

सूफी तबस्सुम

मैंने आँखो से ले लिया उसको
फूल जो दस्ते-बागबाँ[४] से गिरा

मीर खलीफ

वो मेरी तरफ बढ़ा दें गुलचीं[५]
जिन फूलों में रंग है न बू है

जिगर मुरादाबादी

फूलों से तअल्लुक[६] तो अब भी है, मगर इतना
जब ज़िक्रे[७] बहार आया, समझे कि बहार आई

फानी बदायूनी

ये हसरत रह गयी किस किस मज़े से ज़िंदगी करते
अगर होता चमन अपना, गुल अपना, बागबाँ अपना

मझहर जानेजानां

---

१. वृक्ष २. निरीक्षक ३. जाग्रत ४. माली के हाथ ५. फूल चुनने वाले ६. सम्बन्ध ७. बात

बागबाँ[१] कलियाँ हो हल्के रंग की
भेजनी है एक कमसिन[२] के लिए

अमीर मीनाई

कौन वीराने में देखेगा बहार
फूल जंगल में खिले किनके लिए ?

अमीर मीनाई

बताऊँ तुमको हूँ किस बाग का फूल
जहाँ हर गुल बजाये खुद चमन है

हाली

जो जी रहे हैं उन्हीं के लिये हर इक गम है
ज़हे-नसीब[३] कि फूलों की ज़िन्दगी कम है

शकील बदायूनी

गुलशन की फिज़ा[४] रास न आनी थी न आई
काँटों से बचा भी तो मुझे फूल चुभा था

खलील धनतेजवी

सबका अपना हक बराबर है गुलसिताँ में तो फिर
सब्दे-गुल[५] क्यों दूसरों को, पंखुड़ी हमको मिली

जलील साझ

अमीर करते हैं इज़्ज़त मेरी वो 'साईल'[६] हूँ
गुलों के पहलू में रहता हूँ ऐसा खार हूँ मैं

साईल देहलवी

---

१. माली २. अल्प वयस्क ३. धन्य भाग्य ४. शोभा ५. फूलों की टोकरी ६. भिक्षुक

आ ऐ गुले-फसुर्दा[1] लगा लूँ गले तुझे
तू भी तो मेरी तरह लुटा है शबाब में

सीमाब अकबराबादी

गुल से गुल, दस्ते[2] से दस्ता मिल गया होता
यह ज़मीं, ये आसमाँ भी हिल गया होता!

चिनु मोदी 'इर्शाद'

हाथ में आकर गुल कुछ इस तरह कुम्हलाए हैं
हमने जितने धोखे खाए हैं, वो सब याद आये हैं

अहमद नदीम कासमी

अन्दर का बाग जिसका बदल जाये दश्त में[3]
वो शख्स तेरे फूल से चेहरे को क्या करे ?

सईद अहमद अख्तर

गुलदान में सजा तो लिये शौक से 'अदा'
फूलों से बेतरह मुझे शर्मिंदगी रही

अदा जाफरी

कहता है कौन, फूल से रगबत[4] न चाहिये
काँटे से भी मगर तुझे वहशत[5] न चाहिये

जोश मलिहाबादी

खार भी होते हैं गुलशन में शरीक
सिर्फ गुल से गुलसिताँ होता नहीं

नश्तर वाझिदी

---

१. मुरझाया हुआ फूल २. फूलों का गुच्छा, गुलदस्ता ३. जंगल में. ४. प्यार ५. नफरत

हज़ारों खार, लाखों फूल, उस गुलशन में है लेकिन
न तुम-सा नाज़नीं[1] कोई न हम-सा नातवाँ[2] कोई

अमीर मीनाई

बगावत (विद्रोह)

तुममें हिम्मत है तो दुनिया से बगावत कर लो
वर्ना माँ-बाप जहाँ कहते हैं शादी कर लो

साहिर लुधियानवी

हम निकहत[3] हैं न गुल हैं कि महकते जावें
आग की तरह जिधर जावें दहकते जावें

मीर हसन

कभी फलक[4] को पड़ा दिलजलों[5] से काम नहीं
अगर न आग लगा दूँ तो 'दाग़' नाम नहीं

दाग़

एक तकरीर सिर्फ काफी है
क्या जरुरत दियासलाई की ?

विजय वाते

तोड़ सभी जब रिश्ते-नाते, जब यारने मुझसे रुखसत[6] ली
अल्फाझ[7] मेरे खामोश रहे, अश्कों ने[8] बगावत कर डाली

विनय वाइकर

१. सुंदरी २. कमजोर ३. सौरभ ४. आकाश ५. जिस के दिल को बहुत कष्ट पहुँचा हो ६. बिदा ७. शब्द ८. आँसुओं ने

बगावत जवानों का मझहब है 'सागर'
गुलामी है पीरी[१], बगावत जवानी

सागर

उठ्ठो, मेरी दुनिया के गरीबों को जगा दो
काखे-उमरा[२] के दरो-दीवार[३] हिला दो.

ईकबाल

सोचा कि रिहा हो गुलशन की हर शाख नुकीले काँटों से
पत्तों ने मुझसे नफरत की, कलियों ने बगावत कर डाली

विनय वाइकर

क्यों कर न फिर उड़ाये दुनिया हँसी हमारी
बागी है जब हमीं से खुद ज़िंदगी हमारी

उमर अंसारी

अवाम[४] दबते नहीं जब्र[५] से, मज़ालिम[६] से
अवाम चाहें तो दम भर में इन्किलाब आये

नाझिश परतापगढी

इक लपकता हुआ शोला[७] हूँ मैं
एक चलती हूई तलवार हूँ मै

मजाझ

कुछ तो तेरे मौसम ही मुझे रास कम आए
और कुछ मेरी मिट्टी में बगावत भी बहुत थी

परवीन शाकिर

---

१. बुढ़ापा २. अमीरों के महल ३. द्वार और दीवार ४. जनसाधारण ५. जुल्म
६. जुल्मी ७. अग्नि

बात

आलम-पसंद[1] हो गई जो बात तुमने की
जो चाल तुम चले वो ज़माने में चल गई

रिन्द लखनवी

राह पर उनको लगा लाए तो हैं बातों में
और घुल जाएँगे दो चार मुलाकातों में

दाग़ देहलवी

बात करनी तक तुम्हें आती न थी
ये हमारे सामने की बात है

दाग़

है कुछ ऐसी ही बात जो चुप हूँ
वर्ना क्या बात कर नहीं आती ?

ग़ालिब

जी बहुत चाहता है रोने को
है कोई बात आज होने को

मीर

मानी है मैंने सैंकड़ों बातें तमाम उम्र
आज आप एक बात मेरी मान जाईये

अमीर मीनाई

आदमी आदमी से मिलता है
बात करनी तो कुछ गुनाह नहीं

आगा शायर कज़लबाश

---

१. दुनिया में प्रिय

वे करते हैं बातें अजब चिकनी-चिकनी
यह मतलब कि चौपट हो कोई फिसल कर

अमीर मीनाई

यह जी चाहता है मेरा आज 'अफसर'
अभी और तुमसे किये जाऊँ बातें

अफसर मेरठी

लहज़े का करिश्मा है कि आवाज़ का जादू
वो बात भी कह जाए, मेरा दिल भी दुःखे ना

जाँनिसार अख्तर

हम जिसपे मर रहे हैं वो है बात ही कुछ और
आलम में तुझ से लाख सही, तू मगर कहाँ ?

हाली

वो भी चूप हैं, खामोश हूँ मैं भी
एक नाझुक सी बात आई है

आनंद नारायण मुल्ला

राह में उनसे मुलाकात हुई
जिससे डरते थे वही बात हुई

चिराग हसन हसरत

जाने न दूँगा आपको, सुनने का मैं नहीं
बातें बना के वस्ल का[१] वादा न टालिये

अमानत लखनवी

हमदम[२] न कह वो बात जो दिल को बुरी लगे
उस बेवफा से गो[३] मेरी रंजिश[४] हज़ार हैं

निझाम रामपुरी

---

१. मिलन का २. प्राण रहने तक साथ देने वाला ३. यद्यपि ४. शत्रुता

कोई तो बात है वर्ना जफाओं[1] के मारे
तुझे भुला के तेरा इंतझार क्यों करते ?

जहूर नझर

हाले-दिल उनसे कह चुके सौ बार
अब भी कहने की बात बाकी है

खुमार बाराबंकवी

इधर-उधर यूँ ही कुछ वक्त तो कट जाता था
किसीसे कहने को अब कोई बात भी न रही

निदा फाझली

शिकवे तू शौक से कर वस्ल में लेकिन ऐ दिल
बात कुछ ऐसी न बिगड़े कि बना भी न सकूँ

अमीर मीनाई

चाल एक ऐसी चली, हर शख्स सीधा हो गया
बात बस इतनी थी कि मैं थोड़ा सा तिरछा हो गया

कुमार 'पाशी'

ये बात कि सूरत के भले, दिल के बुरे हो
अल्लाह करे झूट, बहुतों से सुनी है

बशीर बद्र

दिल की बातें तूलानी[2] हैं और ये रातें फानी हैं
मैं भी कब तक बोल सकूँगा, आप भी कब तक सुनियेगा ?

सहबा अख्तर

---

१. अत्याचार २. लंबी

भोर समय तक जिसने हमको बाहम[1] ऊलझा रक्खा
वह अलबेली रेशम ऐसी बात गुज़र गयी जानाँ

परवीन शाकिर

कुछ तो कहिये कि बात क्या है 'सलाम'
आप क्यों आज इस कदर चुप है

ऐन सलाम

सामने तेरे जैसे कोई बात
याद आ-आ के भूल जाती है

फिराक गोरखपुरी

क्या कहूँ कुछ कहा नहीं जाता
हाय ! चुप भी रहा नहीं जाता

दीहम बेगम

तुमसे कुछ कहने को था, भूल गया
हाय क्या बात थी, क्या भूल गया ?

निझाम रामपुरी

बेनियाज़ी[2] से, मुदारात[3] से जी डरता है
जाने क्या बात है, हर बात से जी डरता है

हबीब अशअर

बात भी आप के आगे न ज़बाँ से निकली
लीजिये आए थे हम सोच के क्या-क्या दिल में

वझीरअली सबाँ

---

१. एक साथ २. स्वच्छंदता ३. आव भगत

कहते तो हो यूँ कहते, यूँ कहते, जो यार आता
सब कहने की बातें हैं, कुछ भी न कहा जाता

मीर

आप कुछ समझे बातों–बातों में
हाल किसका सुना दिया मैंने

निझाम रामपुरी

अब हाथ मलते हैं कि दमे–अर्झे–माजरा[१]
कहने की बात ध्यान से कैसे उतर गई ?

असर लखनवी

दिल को तो दिल से राह है, मशहूर है ये बात
कुछ भी खबर है तुमको किसी बेकरार की ?

निझाम रामपुरी

मिट गये जिसके लिए, नाम तक उसका न लिया
काश ! इस बात की उसको भी खबर हो जाती

सुलेमान अरीब

ये नहीं मालूम कि क्या बात थी
रो रहे थे मेरे हमसाए[२] बहुत

वकील अख्तर

तुम मुखातिब[३] भी हो करीब भी हो
तुमको देखूँ कि तुमसे बात करुँ ?

फिराक गोरखपुरी

न मैं बात करता अगर जानता
कि यूँ बात करने में जायेगी रात

दाग़

---

१. मन की स्थिति की अभिव्यक्ति के समय २. पड़ोसी ३. संबोधित

बात करनी मुझे मुश्किल कभी ऐसी तो न थी
जैसी अब है तेरी महफिल कभी ऐसी तो न थी

बहादुर शाह 'झफर'

अनजान तुम बने रहे ये और बात है
ऐसा तो क्या है तुमको हमारी खबर न हो

बेदिल अझीमाबादी

शेखजी, मैकदा[१] है, काबा नहीं
यहाँ तो होगी खुमार[२] की बातें

बात कम कीजिये, झहानत[३] को छुपाते रहिये
अजनबी शहर है ये, दोस्त बनाते रहिये

निदा फाजली

अब वह महकी हुई सी रात नहीं
बात क्या है कि अब वो बात नहीं

फझले अहमद करीम

उसकी फितरत[४] में नहीं, रुक के कोई बात सुने
वक्त आवाज़ है, आवाज़ को आवाज़ न दो

कल तो हँस हँस के कर रहे थे कलाम[५]
बात करने में मुझसे आर[६] है आज

नवाब बादशाह महलआलम

जाना-जाना जल्दी क्या है, इन बातों को जाने दो
ठहरो-ठहरो, दिल तो ठहरे, मुझको होश तो आने दो

आगा शायर

---

१. मयखाना २. नशा ३. प्रतिभा ४. प्रकृति, स्वभाव ५. बातचीत ६. झिझक

आप को जाते हुए देख के न संभलेगा दिल
उसको बातों में लगा लूँ तो चले जाईयेगा

रास्ते में आज उनसे मुलाकात हो गई
जी डर रहा था जिससे वही बात हो गई

उम्र का भरोसा क्या ? पल का साथ हो जाए
एक बार अकेले में उससे बात हो जाए

परवीन शाकिर

वह ऐसे 'कतील' अब याद आए, सपना जैसे कोई दुहराए
मैं आझ भी उसको चाहता हूँ, पर बात कहाँ वह कल जैसी ?

कतील शिफाई

रोने वाली बात भी हो तो लतीफा जानिए
उम्र के दिन काटने ही हैं तो हँस कर काटिए

निसार नासिक

बात करना है करो, सामने इतराओ नहीं
जो नहीं जानते, उस बात को समझाओ नहीं

माजिद ऊल बाकरी

अब कौन बात रह गई, ये बात भी गई
यानी कभी-कभी की मुलाकात भी गई

मुबारिक अझीमाबादी

यह भी एक बात है अदावत की
रोजा रख्खा, जो हमने दावत[१] की

अमीर मीनाई

दर्द क्या जिसमें कुछ न हो तासीर[२]
बात क्या जिसमें कुछ मज़ा न हुआ

मिर्झा फखरु

वो हमसे खफा हैं, हम उनसे खफा हैं
मगर बात करने को जी चाहता है

शकील बदायूनी

क्या जानिये कमबख्त ने हम पे किया सेहर[३]
जो बात थी न मानने की मान गये हम

आहिस्ता बात कर कि हवा तेज़ है बहुत
ऐसा न हो कि सारा नगर बोलने लगे

वझीर आगा

रुदादे-चमन[४] सुनता हूँ इस तरह कफस[५] में
जैसे कभी आँखो से गुलिस्ताँ नहीं देखा

असगर गोंडवी

कुछ ऐसी भी खूनक[६] रातें रही हैं
सहर[७] तक बस तेरी बातें रही हैं

कमर शेरवानी

कौन सी बात है तुममें ऐसी
इतने अच्छे क्यों लगते हो ?

मुहसिन नकवी

---

१. मिजबानी २. गुण ३. जादू ४. बाग की कैफियत ५. पिंजड़ा ६. ठंड़ी ७. सुबह

बात चाहे जो कहो, दमदार होनी चाहिए
या रहे इस पार या उस पार होनी चाहिए

शैलेन्द्र श्रीवास्तव

कुछ उनकी बातें, कुछ अपनी बातें
कटती हैं यूँ ही, अब गम की रातें

खलील-ऊल-रहमान

बुत (प्रेयसी)

ऐ बुतों, इस कदर जफा[१] हम पर
हम भी आखिर खुदा के बंदे हैं

मीर

मस्जिदों में कौन जाये वाएज़ा
अब तो इक बुत से इरादत[२] हो गई

हसरत मोहानी

जिस पे बुतखाना[३] तसदुक[४], जिस पे काबा[५] भी निसार
एक सूरत ऐसी भी सुनते हैं, बुतखाने में है

असगर गोण्डवी

मेरी फरियाद दूसरा न सुने,
तुम सुनो ऐ बुतों, खुदा न सुने

दाग़

---

१. जुल्म २. संकल्प ३. मंदिर ४. न्योछावर ५. अरब के मक्के शहर का स्थान जहाँ हज करने जाते हैं

दरवाज़े पे उस बुत के सौ बार हमें जाना
अपना तो यही काबा, अपना तो यही हज है

आगा शायर क्रिझिलबाश

दी कसम वस्ल[१] में उस बुत को खुदा की तो कहा –
'तुझको आता है खुदा याद हमारे होते ?'

बेखुद बदायूनी

कैसा बुतखाना, कहाँ का दैर, कैसी खानकाह[२]
जिस जगह सज़दा किया हमने वो काबा हो गया

पं. जगमोहननाथ रैना शौक

दावर[३] के सामने बुते-काफिर[४] को क्या कहूँ ?
दोनों की शक्ल एक है, किसको खुदा कहूँ ?

गलत हो जाते हैं[५] सब रंजोगम[६] ऐसा भी होता है
कभी उस बुत का अन्दाज़े-करम[७] ऐसा भी होता है

अख्तर मुझफ्फर पुरी

बुतों को देखकर सबने खुदा को पहचाना
खुदा के घर तो कोई बन्दा-ए-खुदा न गया

यगाना चंगेझी

पत्थर को तराश कर बनाता है वो बुत
मैं बुत को तराश कर बनाता हूँ खुदा

जोश मलिहाबादी

वफा जिससे की बेवफा हो गया
जिसे बूत बनाया खुदा हो गया

हफीझ जालंधरी

---

१. मिलन २. मठ ३. खुदा ४. निर्दय प्रिया ५. मिट जाते हैं ६. दुःख
७. दया का भाव

अब तो जाते हैं बुतकदे[१] से मीर
फिर मिलेंगे अगर खुदा लाया

मीर

दिल उस बुत पे शैदा[२] हुआ चाहता है
खुदा जाने अब क्या हुआ चाहता है

नसीर

शेख ने मस्जिद बना मिसमार[३] बुतखाना[४] किया – नासिख
तब तो एक सूरत भी थी अब साफ वीराना किया – नसीम

जिस कदर वस्ले–बुताँ[५] का तुम्हें रहता है खयाल
ऐ 'नसीम' ! उतनी कभी यादे–खुदा[६] आती है ?

नसीम

है कुछ तो बात 'मोमिन' जो छा गई खामोशी
किस बुत को दे दिया दिल, क्यों बुत–से बन गये हो ?

मोमिन

बोला वह बुत सिरहाने मेरे आ के वक्तेनज़अ[७]
'फरियाद को हमारी चले हो खुदा के पास ?'

अमीर मीनाई

काबे जाना भी तो बुतखाने से होकर जाहिद
दूर इस राह से अल्लाह का घर कुछ भी नहीं

दाग़

बुतों की झिड़कियाँ खाता हूँ अक्सर
यह मेरी आबरू है और मैं हूँ

१. मंदिर, प्रेयसी का निवास स्थान २. आशिक ३. तोड़ना, गिरा देना ४. मंदिर
५. प्रेयसी का मिलन ६. ईश्वर की याद ७. मृत्यु के समय

चल के काबे में सजदा कर 'मोमिन'
छोड़ इस बुत के आस्ताने[१] को

मोमिन

बुत बन के तुम आ बैठे, खामोश चले उठकर
कुछ बात तो की होती, कुछ हाल सुना होता

कहा उस बुत से, मरता हूँ, तो 'मोमिन'
कहा, 'मैं क्या करुँ, मर्जी खुदा की'

मोमिन

खुदाई का जलवा[२] है 'मोमिन' कि तू
गर उस बुत को देखे तो आ जाए गश[३]

मोमिन

आँखे पथरा के हो गयी हैं सुफेद
किसी बुत की जो इन्तझारी है

हैदरी बेगम 'कमर'

मैं एक शर्त पर जाहिद दो बुत दिखाता हूँ
कहीं न पूजने लगना उसे खुदा के लिए

कवी अमरोही

बुतों की गली छोड़कर कौन जाये
यहीं से है काबे को सजदा[४] हमारा

नसीम

बुतों, दीन दुनिया में काफी है मुझको
खुदा का भरोसा, सहारा तुम्हारा

दाग़

---

१. चौखट २. रौशनी ३. बेहोशी ४. बंदगी

जवाब दो कि न दो ऐ बुतों नहीं परवा
कहूँ जो कुछ वो बराए-खुदा[१] सुनो तो सही

नवाब बेगम हिजाब

दिल मेरा जिससे बहलता कोई ऐसा न मिला
बुत के बंदे मिले, अल्लाह का बंदा न मिला

अकबर इलाहाबादी

हुस्न जो देखा बुतों का तो खुदा याद आया
राह काबे की मिली है, मुझे बुतखाने से

जलील मानिकपुरी

बुतों ने लूट ली सारी खुदाई
खुदा के घर में अब रक्खा ही क्या है ?

दाग़

बुत को बुत हम कभी नहीं कहते
हम तो परवरदिगार कहते हैं

गौहर सैलानी

बोसा (चुम्मा, चुंबन)

बोसा जो रुख[२] का देते नहीं लब का दीजिये
यह है मसल[३] कि फूल नहीं पंखड़ी सही

जौक

बोसा-ए-रुखसार[४] पर तकरार रहने दीजिये
लीजिये या दीजिये इन्कार रहने दीजिये

हफीज जौनपुरी

---

१. खुदा की खातिर २. कपोल ३. लोकोक्ति ४. गाल का चुंबन

लिपटा मैं बोसा ले के तो बोले कि 'देखिये,
ये दूसरी खता है, वो पहला कसूर था'

अमीर मीनाई

ले लो बोसा अपना वापस किस लिये तकरार की
क्या कोई जागीर हमने छीन ली सरकार की ?

अफसर मेरठी

बस एक बोसा पे इतनी बहस झेबा[१] है न शायाँ[२] है
निगाहें नीची कर लो, खैर, अच्छा, ले लिया होगा

मुहम्मद काझम 'जावेद'

क्या खूब, तुमने गैर को बोसा नहीं दिया ?
बस चुप रहो, हमारे भी मुँह में जबान है

ग़ालिब

अगर इक ले लिया बोसा खता इसको नहीं कहते
मुहब्बत कहते हैं तर्के-हया[३] इस को नहीं कहते

तस्वीर देहलवी

कोई मुँह चूम लेगा इस 'नहीं' पर
शिकन[४] रह जायेगी बाकी जबीं[५] पर

रियाझ खैराबादी

एक बोसे के तलबगार[६] हैं हम
और माँगे तो गुनहगार हैं हम

झार

बोसा मुझको नहीं देते तो झिड़की ही सही
नहीं दरवाझा जो खुल सकता, तो खिड़की ही सही

इन्शा

---

१. उचित २. उपयुक्त ३. शर्म का त्याग ४. सिलवट ५. मस्तक
६. इच्छा रखने वाला

हम तो क्यों कर कहें कि बोसा दो
गर इनायत[1] करो, इनायत हो

हकीम

लजा कर, शर्म खा कर, मुस्करा कर
दिया बोसा, मगर कुछ मुँह बना कर

जौहर

ले लिया जो बोसा मैंने बन्दा परवर क्या किया ?
प्यार में लब रख दिये, प्यारे लबों पर क्या हुआ ?

रख्शाँ

बोसा देने को जो पूछा कि बिगड़ता क्या है
बोले - लेने में, कहो, आप को मिलता क्या है ?

आज बोसे उनके गिन-गिन कर लिये
दिन गिने जाते थे इस दिन के लिये

कवी अमरोही

जिस लब के गैर बोसे ले उस लब से 'शेफता'
कमबख्त गालियाँ भी नहीं मेरे वास्ते

शेफता

चूम लेने दें वो अपने लब, ये मैं कैसे कहूँ ?
वर्ना कुछ मुश्किल न था, दुश्नामे-जानाँ[2] का जवाब

नियाझ फतहपुरी

कुछ और शबे-वस्ल बेअदबी नहीं की
हाँ ! यार के रुखसार पे रुखसार तो रक्खा

मीर तकी मीर की बेटी 'बेगम'

---

१. कृपा २. प्रेयसी द्वारा दी गई गालियाँ

बंदगी

यही है ज़िंदगी अपनी, यही है बंदगी अपनी
कि उनका नाम आया, और गर्दन झुक गई अपनी

माहिरुल कादरी

बंदा परवर[१], मैं वो बंदा[२] हूँ, कि बहरे-बंदगी[३]
जिसके आगे सर झूका दूँगा, खुदा हो जायेगा

आझाद अंसारी

न बुतखाने[४] को जाते हैं, न काबे में भटकते हैं
जहाँ तुम पाँव रखते हो, वहाँ हम सर पटकते हैं

इश्क अझीमाबादी

नाराज हो खुदा तो करें बन्दगी से खुश
माशूक रुठ जाये तो क्यों कर मनाएँ हम

दाग़

बंदगी में भी वो आझाद, वो खुदबीं[५] हैं कि हम
उल्टे फिर आयें दरे-काबा[६] अगर वा[७] न हुआ

गालिब

अपनी हम बन्दगी पे भूले थे
फिर जो देखा तो वाँ खुदाई है

मुश्ताक

अपनी खू-ए-वफा[८] से डरता हूँ
आशिकी बंदगी न हो जाए

'बेखुद'

---

१. ईश्वर २. भक्त ३. भक्ति के लिये ४. मंदिर ५. अभिमानी ६. काबा का द्वार
७. खुला ८. वादा पूरा करने की आदत

उनके खयाल, उनकी तमन्ना में मस्त हूँ
मेरे लिए 'शकील' इबादत है ज़िंदगी

शकील बदायूनी

इस चाँद सी जबीं[१] पर इबादत का तल्ख बोझ
ज़ालिम खयाल कर अभी अहदे-शबाब[२] है

अदम

नहीं अपने किसी मकसद[३] से खाली कोई भी सझदा
खुदा के नाम से करता है इंसां बंदगी अपनी

बिस्मिल सईदी

अझाँ[४] हो रही है, पिला जल्द साकी
इबादत करूँ आज मखमूर[५] हो कर

शकील बदायूनी

इबादत करते हैं जो लोग जन्नत की तमन्ना में
इबादत तो नहीं है इक तरह की वो तिजारत[६] है

जोश मलिहाबादी

ये नसीब की हैं बातें, रहूँ जिसकी बंदगी में
न वो सर उठा के देखें, न वो ले सलाम मेरा

मेरा सर और तेरा दर
धन मेरी किस्मत, धन मेरे भाग

आझाद अंसारी

तेरी पहचान के लाखों अंदाज़
सर झुकाना ही इबादत तो नहीं

परवीना फना सैयद

---

१. मस्तक २. जवानी का झमाना ३. उद्देश्य ४. बाँग ५. मतवाला ६. व्यापार

ये इबादत है कि तौहीने-इबादत[1] है 'कमर'
जब कोई याद न आया तो खुदा याद आया

कमर जलालाबादी

बन्दगी का सबूत दूँ क्यों कर
इससे बेहतर है कीजिये इन्कार

यास यगाना चंगेझी

संगे-दिल[2] को बना दूँ देवता मैं
आप क्या जाने बंदगी के ढंग ?

यास यगाना चंगेझी

वो अपनी ज़िंदगी में बन्दगी क्यों लाझिमी[3] समझे
जो अपनी ज़िंदगी को इक मुसलसल[4] बन्दगी समझे

सीमाब अकबराबादी

बन्दगी ने हझार रुख बदले
जो खुदा था वही खुदा है हनूझ[5]

सीमाब अकबराबादी

इबरते-बन्दगी-ओ-नाचारी[6]
कोई बन्दानवाज़[7] क्या जाने ?

जिगर मुरादाबादी

वो जिसकी याद इबादत है ज़िंदगी के लिये
उसीका नाम हमें बार-बार लेने दो

जमील मलिक

---

१. बंदगी की बेइज्जत २. पत्थर हृदय ३. अनिवार्य ४. लगातार ५. अभी तक
६. उपासना और उसे न करने की मजबूरियाँ ७. खुदा, माशूक

दिल है कदमों पर किसीके, सर झुका हो या न हो
बन्दगी तो अपनी फितरत[१] है, खुदा हो या न हो

जिगर मुरादाबादी

बन्दगी से कभी नहीं मिलती
इस तरह ज़िन्दगी नहीं मिलती

फिराक गोरखपुरी

बन्दगी में तो है वो लुत्फ जो शाही में नहीं
दिल से कोई मगर अल्लाह का बन्दा भी तो हो

अकबर ईलाहाबादी

यह भी नहीं खबर कि सर सज़दे में है झुका हुआ
जिसमें हो बंदगी का होश वो कोई बन्दगी नहीं

'हादी'

खुलूस-ए-दिल[२] से सज़दा हो तो उस सज़दे का क्या कहना
वहीं काबा सरक आया जबीं[३] मैंने जहाँ रख दी

सीमाब अकबराबादी

महकते शेर (प्रेरणादायक)

न सुनो, गर बुरा कहे कोई
न कहो, गर बुरा करे कोई

ग़ालिब

---

१. प्रकृति २. निष्ठापूर्ण दिल ३. मस्तक

रोक लो, गर गलत चले कोई
बख्श दो गर खता करे कोई

ग़ालिब

बशर[१] ने खाक पाया, लाल[२] पाया या गुहर[३] पाया
मिज़ाज अच्छा अगर पाया तो सब कुछ उसने भर पाया

दाग़ देहलवी

जो चाहो फकीरी में इज़्ज़त से रहना
न रक्खो अमीरों से मिल्लत[४] ज़ियादा

मौलाना हाली

तिफल[५] में बू आए क्या, माँ बाप के अवतार[६] की
दूध तो डिब्बे का है, तालीम है सरकार की

अकबर ईलाहाबादी

जान जाए हाथ से जाए न सत
है यही इक बात हर मज़हब का तत

ईकबाल

समन्दर से मिले प्यासे को शबनम[७]
बखीली[८] है, यह रज्झाकी[९] नहीं है

ईकबाल

यकीं [१०] पैदा कर ऐ नादाँ, यकीं से हाथ आती है
वह दरवेशी कि जिसके सामने झुकती है फगफूरी[११]

---

१. मनुष्य २. माणिक ३. मोती ४. मेल-मिलाप ५. बालक ६. चाल-चलन
७. ओस ८. कंजूसी ९. उदारता १०. श्रद्धा ११. राजकीय सत्ता

दुनिया में कहने को सभी कहलाते हैं भले
पर है वही भला जो किसीका भला करे

ग़ालिब

जो भले हैं वो बुरों को भी भला कहते हैं
न बुरा सुनते हैं अच्छे, न बुरा कहते हैं

ग़ालिब

कभी भूल कर किसीसे न करो सलूक[१] ऐसा
कि जो तुमसे कोई करता, तुम्हें नागवार[२] होता

इस्माईल मेरठी

होता नहीं है कोई बुरे वक्त में शरीक[३]
पत्ते भी भागते हैं खिझाँ[४] में शजर से दूर

जब डूब ही जाने का यकीं है तो न जाने
ये लोग सफीनों से[५] उतर क्यों नही जाते ?

अमीर कझलबाश

आप से झुक के जो मिलता होगा
उसका कद आप से ऊँचा होगा

अहमद नदीम कासमी

आने वाली नस्लें[६] तुम पर रश्क[७] करेंगी हमअस्रो[८]
जब ये ध्यान आयेगा उनको तुमने फिराक को देखा था

फिराक गोरखपुरी

---

१. बरताव २. जो अच्छा न लगे ३. शामिल ४. पतझड़ ५. नौका से ६. वंश ७. ईर्ष्या ८. समकालीन

फिराक अकसर बदलकर भेस मिलता है कोई काफिर
कभी हम जान लेते हैं, कभी पहचान लेते हैं

फिराक गोरखपुरी

न अपने आप बदली है, न अपने आप बदलेगी
ये दुनिया है, तू दुनिया को बदल दे, देखता क्या है ?

फिराक गोरखपुरी

कहाँ आके रुकने थे रास्ते, कहाँ मोड़ था, उसे भूल जा
वह जो मिल गया उसे याद रख, जो नहीं मिला, उसे भूल जा

अमजद ईस्लाम

शायर उनकी दोस्ती का अब भी दम भरते हैं आप
ठोकरें खाकर तो सुनते हैं सँभल जाते हैं लोग

हिमायत अली शायर

कहें क्या जो पूछे कोई हमसे 'मीर'
जहाँ में तुम आए थे क्या कर चले ?

मीर

वक्त अच्छा भी आएगा 'नासिर'
गम न कर ज़िंदगी पड़ी है अभी

नासिर काझिमी

करे क्या फायदा नाचीज़ को तकलीद[१] अच्छों की
कि जम जाने से कुछ ओला तो गौहर[२] हो नहीं सकता

ख्वाजा मीर दर्द

किस रुत के मुंतझिर[३] हैं ये पेड़ रास्तों पर
खुद धूप में खड़े हैं साया मुसाफिरों पर

शहझाद अहमद

---

१. अनुकरण २. मोती ३. इन्तझार करने वाला

बरसात में तालाब तो हो जाते हैं कमझर्फ[१]
बाहर कभी आपे से समंदर नहीं होता

एज़ाज़ रुहमानी

मौजों[२] की सयासत[३] से मायूस[४] न हो 'फानी'
गरदाब की हर तह[५] में साहिल[६] नज़र आता है

फानी बदायूनी

बड़े लोगों से मिलने में हमेशा फासला रखना
जहाँ दरिया[७] समंदर से मिला, दरिया नहीं रहता

बशीर बद्र

हजारों साल नरगिस[८] अपनी बेनूरी[९] पे रोती है
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर[१०] पैदा

ईकबाल

दुश्मन के आगे सर न झुकेगा किसी तरह
यह आस्माँ झमीं से मिलाया न जायेगा

दाग़

जहाँ राम होता है मीठी जबाँ से
नहीं लगती कुछ इस में दौलत झियादा

हाली

गैर अपने होंगे शीरीं[११] हो गर अपनी जबाँ
दोस्त हो जाते हैं दुश्मन, तल्ख[१२] हो जिसकी जबाँ

जहीन

---

१. कमीना २. पानी की लहरें ३. वेग ४. निराश ५. परत ६. किनारा ७. नदी
८. आँख जैसा एक फूल ९. अँधेरा १०. जौहरी ११. मधुर १२. कडुवा

न कुछ हम हँस के सीखे हैं, न कुछ हम रो के सीखे हैं
जो कुछ हम सीखे हैं, किसीके हो के सीखे हैं

बहादुरशाह 'झफर'

हर एक को दावा है कि हम भी हैं कोई चीज़
और हमको ये नाज़ कि हम कुछ भी नहीं

अकबर ईलाहाबादी

अकबर ने सुना है अहले-गैरत[१] से यही
जीना ज़िल्लत[२] से हो तो मरना अच्छा

अकबर ईलाहाबादी

जहाँ वो ऐश[३] की रातें गुज़र गयीं 'दरवेश'
वहाँ ये रंज के दिन भी गुज़र ही जायेंगे

दरवेश मेरठी

बादशाहों के फेंके हुए सिक्के भी न लिये
हमने खैरात भी माँगी है बड़ी खुद्दारी से

राहत इन्दौरी

वही हकदार हैं किनारों के
जो बदल दें बहाव धारों के

निसार ईंटावी

देख यूँ वक्त की दहलीज़[४] से टकरा के न गिर
रास्ते बंध नहीं सोचने वालों के लिए

फारिग बुखारी

---

१. आत्म-सम्मान का ख्याल रखने वालों २. बेइज्जती ३. सुख ४. देहली, डेहरी

कुछ लोग थे कि वक्त के साँचे में ढल गये
कुछ लोग थे कि वक्त के साँचे बदल गये

मखमूर सईदी

आग अपने ही लगा देते हैं
गैर तो सिर्फ हवा देते हैं

मुहम्मद अलवी

करीब आओ तो शायद हमें समझ लोगे
ये फासले तो गलतफहमियाँ बढ़ाते हैं

मस्जिद की अझाँ[१] हो कि शिवाले का गजर हो
अपनी तो ये हसरत है किसी तरह सहर[२] हो

कतील शिफाई

फैसला होता है नेकी-ओ-बदी का हरदम
दिल को इस सीने में छोटी सी अदालत समझो

शाद अझीमाबादी

हिम्मत न हार एक कदम का ही फर्क है
काँटों की वादियों से गुलों के दयार[३] तक

अदम

कुछ लोग जो सवार हैं कागज़ की नाव पर
तोहमत तराशते हैं हवा के दबाव पर

एहसाना दानिश

---

१. बाँग २. सुबह ३. प्रदेश

क्या बतलाऊँ, कैसे दिन मैं काट रहा हूँ,
मोती हूँ और रास्ते में बेकार पड़ा हूँ

खलील रामपुरी

आज सबमें घुल-मिल जाऊँ, मुझको क्या खबर कल तक
किसको भूल जाऊँ मैं, किसको याद आऊँ मैं !

जाफर शीराजी

गये दिनों की लाश पर पड़े रहोगे कब तलक
अलमकशो[१] उठो कि सर पे आफताब[२] आ गया

नासिर काझमी

सुकरात से इन्सान अभी है कि नहीं राम !
थोड़ा सा किसी जाम में बिस घोल के देखो

राम रियाझ

किसीका दिल न दुःखाया, किसीकी आह न ली
तमाम उम्र मैं लोगों की बद्दुआ से बचा

राम रियाझ

कई ज़मीन पे दौड़े, कई खला[३] में उड़े
कोई अजाब[४] से छूटा, कोई कझा[५] से बचा ?

राम रियाझ

फिर एक दिन हवा ने कहा, मैं तो थक गयी
खुशबू का बोझ मेरी कमर को झुका गया

वझीर आगा

किसीको अपने अलम[६] का हिसाब क्या देते?
सवाल सारे गलत थे, जवाब क्या देते ?

मुनीर नियाझी

---

१. दुःख झेलने वालों २. सूरज ३. आकाश ४. यातना ५. मौत ६. दुःख

खयाले-खाम[१] है अपनों से फाईदा पाना
सदफ[२] के काम किसी दिन गुहर[३] नहीं आता

ढूँढ़ ऊजड़े हुए लोगों में वफा के मोती
ये खज़ाने तुझे मुमकिन है खराबों[४] में मिले

अहमद फराझ

तालीम लड़कियों की जरूरी तो है मगर
खातूने-खाना[५] हों वो, सभा की परी न हों

अकबर ईलाहाबादी

ज़िंदा रहने का सलीका कोई हमसे सीखे
खारझारों[६] में भी रहना तो महकते रहना

साहिर होशियारपुरी

जहाँ तेरा नक्शे कदम देखते हैं
खियाँबा[७] खियाँबा इरम[८] देखते हैं

ग़ालिब

खूने-दिल, खूने जिगर[९] खूब पिया करता है
वो फकत अपने सहारे पे जिया करता है

आँधियों को किसी तरकीब से रोको, वर्ना
गाँव में एक भी छप्पर न दिखाई देगा

कैसर ऊल झाफरी

---

१. गलत विचार २. सीप ३. मोती ४. वीरान जगह ५. घर की भद्र महिला
६. काँटों भरी जगह ७. बाग बगीचा ८. स्वर्ग ९. प्रेम वेदना

हाँ भला कर तेरा भला होगा
और दरवेश[१] की सदा[२] क्या है

ग़ालिब

दीवारों पर दस्तक देते रहियेगा
दीवारों में दरवाज़ें बन जाएँगे

कुंअर बेचैन

सिर्फ होने से कुछ नहीं होता
अपने होने का हक अदा कीजे

राजू रंगीला

आदमी दिन-ब-दिन गिरा नीचे
और उपर ऊठे मकान यहाँ

भवानी शंकर

कुछ लोग जी रहे हैं शराफत[३] को बेचकर
थोड़ी बहुत उन्हीं से शराफत खरीदिये

अहमद मुश्ताक

तलब के पहले ही जब हुकम दे चुका था तू
तेरे फकीर ने क्या सोचकर सवाल किया ?

शाद अझीमाबादी

जहाँ तक हो बसर कर ज़िंदगी आला[४] खयालों में
बना देता है कामिल[५] बैठना साहब-कमालों में

शाद अझीमाबादी

जो दे सवाल पे उनकी सनद नहीं ऐ 'शाद'
वही करीम[६] हैं जो बे-सवाल[७] देते हैं

शाद अझीमाबादी

---

१. साधु संत २. आवाझ ३. सज्जनता ४. श्रेष्ठ ५. पूर्ण ६. दयालु ७. बिना याचना

खाली हाथ आयेंगे और जायेंगे भी खाली हाथ
मुफ्त की सैर है, क्या लेते हैं, क्या देते हैं
पं. अमरनाथ साहिर

हकीर[१] हूँ, मगर इतना हकीर भी न समझ
मैं जर्रा[२] भी तो नहीं हूँ, जो आफताब[३] नहीं
सीमाब अकबराबादी

अपने ही हाथ से दे-दे जो तुझे देना है
मेरी तशहीर न फर्मा[४] मुझे साईल[५] न बना
सीमाब अकबराबादी

लाख में एक कोई निकलेगा
कौन करता है, मुफलिसी में लिहाज ?
आगा शायर क्रिझिलबाश

वो भी न चैन से कहीं दम भर को रह सका
दुनिया में जिसने आके सताये पराये दिल
आगा शायर क्रिझिलबाश

खाकसारी का[६] है गाफिल ! बहुत ऊंचा मर्तबा
यह ज़मीं वौ है कि जिस पर आसमाँ कोई नहीं
अलम मुझफ्फरनगरी

हुआ करती हैं दुश्वारी[७] ही से आसानियाँ पैदा
बड़े नादान हैं, मुश्किल को जो मुश्किल समझते हैं
अलम मुझफ्फर नगरी

---

१. तुच्छ २. कण, अणु ३. सूर्य ४. दोषों को सब पर प्रकट करना ५. भिक्षुक
६. नम्रता का ७. मुश्किल

मुझको न देख, शाने-करम पर[1] निगाह कर
मुझसे खता हुई है, मगर बेबसी के साथ

अलम मुझफ्फर नगरी

हर चीझ का खोना भी बड़ी दौलत है
बेफिकरी से सोना भी बड़ी दौलत है

अमजद हैदराबादी

कतरा[2] दरिया है अगर अपनी हकीकत जाने
खोये जाते हैं जो हम आपको पा जाते हैं

अमरनाथ 'साहिर'

पढ़िये इस के सिवा न कोई सबक
खिदमते-खल्क[3]-ओ-इश्के-हझरते-हक[4]

हसरत मोहानी

सदमा[5] दिया तो सब्र[6] की दौलत भी देगा वो
किस चीज़ की कमी है सखी[7] के खजाने में ?

यगाना चंगेझी

वो क्यों फूल तोड़े, वो क्यों फूल सूँघे ?
जो दिल का दु:खाना बुरा जानता है

यगाना चंगेझी

फैल गई बालों में सफेदी चौंक जरा करवट तो बदल
शाख से गाफिल सोने वाले देख तो कितनी रात रही

आरझू लखनवी

---

१. दयालुता के मर्तबे पर २. बूँद ३. संसार सेवा ४. सत्य से प्रेम ५. आघात
६. सन्तोष ७. उदार

जिन के दिल में है दर्द दुनिया का
वही दुनिया में ज़िंदा रहते हैं
जो मिटाते हैं खुद को जीते जी
वही मर कर भी ज़िंदा रहते हैं

रियाझ खैराबादी

देखिये तो हर एक जगह है वो
ढूँढ़िये तो कहीं नहीं मिलता

हफीझ जौनपुरी

न हौसला, न तमन्ना, न वलवला, न उमंग
यह बेहिसी[१] नहीं ऐ दिल, तो बेहिसी क्या है ?

असर लखनवी

कोई सुने न सुने इन्कलाब की आवाज़
पुकारने की हदों तक तो हम पुकार आये

अनवर साबरी

अपनी कूवत आज़मा कर अपने बाज़ू तोल कर
आर्शि-ए-हस्ती में[२] उड़ना है तो उड़, पर खोल कर

आनंदनारायण मुल्ला

पैदा वो बात कर कि तुझे रोयें दूसरे
रोना खुद अपने हाल पे यह झार-झार[३] क्या ?

अझीझ लखनवी

बारे दुनिया में रहो गमझदा[४] या शाद[५] रहो
ऐसा कुछ करके चलो, याँ[६] कि बहुत याद रहो

मीर

---

१. अकर्मण्यता २. जीवन-आकाश में ३. बहुत, लगातार ४. दुःखी ५. प्रसन्न
६. यहाँ

कहता है कौन तुझको याँ यह न कर, तू वोह कर
पर हो सके तो प्यारे टुक दिल में भी जगह कर

मीर

खेतों को दे लो पानी यह बह रही है गंगा
कुछ कर लो नौजवानो ! उठती जवानियाँ हैं

हाली

आगे किसीके क्या करें दस्ते-तमआ[१] दराज़[२]
यह हाथ सो गया है सिरहाने धरे-धरे

मीर

आँख नीची हुई अरे यह क्या ?
क्यों गरज़ दरमियान में आई ?
बन्दा वो जो दम न मारे
प्यासा खड़ा हो दरिया किनारे

यास यगाना चंगेज़ी

अपना अदाशनास[३] बन, अपना जमाल[४] भी तो देख
तुझमें कमी है कौन सी ? तुझमें कमी कोई नहीं

अदीब मालीगाँवी

यह मुमकिन है कि लिक्खी हो कलम ने फतह आखिर में
जो हैं अहबाबे-हिम्मत[५] गम नहीं करते शिकस्तों में[६]

शाद अज़ीमाबादी

---

१. लालची हाथ २. लंबा ३. ढंग पहचानने वाला ४. सौंदर्य ५. हिम्मत के दोस्त ६. हार में

खा - खा के शिकस्त[1] फतह पाना सीखो
गिरदाब में[2] कह-कहा[3] लगाना सीखो

नज़ीर बनारसी

मुर्दों की कनाअतों पे[4] है रश्क[5]
पहने रहे इक कफन हमेशा

शाद अज़ीमाबादी

खेलते हैं जो मज़लूमों की[6] जानों से
हैवान अच्छे हैं ऐसे ईन्सानों से

खलिश दर्दी

जरा दरयिा की तह[7] तक तू पहुँच जाने की हिम्मत कर
तो फिर ऐ डूबने वाले किनारा ही किनारा है

माहिर-उल-कादरी

किसने लिखा है यह दीवारों पे जिन्दा[8] की 'शकील'
'जान देना जिसने सीखा, उसको जीना आ गया'

शकील बदायूनी

गफलत में सोने वालों की मैं नींद उड़ाने आया हूँ
दुनिया को जगा कर छोड़ूँगा, दुनिया को जगाने आया हूँ

सीमाब अकबराबादी

हदूद-ए-ज़ात[9] से बाहर निकल के देख जरा
न कोई गैर, न कोई रकीब[10] लगता है

जाँनिसार अख्तर

---

१. हार २. भँवर में ३. अट्ट हास ४. सन्तोष पर ५. ईर्ष्या ६. सताये हुओं की
७. नीचे ८. कैदखाना ९. अस्तित्व की सीमाओं १०. प्रतिद्वंद्धी

एक भी ख्वाब न हो जिसमें वो आँखें क्या हैं ?
इक न इक ख्वाब तो आँखों में बसाओ यारो

जाँनिसार अख्तर

जहाँ में 'हाली' किसी पे अपने सिवा भरोसा न कीजिएगा
यह भेद है अपनी ज़िन्दगी का बस इसका चर्चा न कीजिएगा

हाली

मीर अफसोस वह कि जो कोई
उसके दरवाज़े का गदा[१] न हुआ

मीर

तेरी आह किससे खबर पाईए
वही बेखबर है जो आगाह[२] है

मीर

न कोई सहारा, न कोई ठिकाना
चले जा रहे हैं चले जाने वालें

फिराक गोरखपुरी

सीरत[३] के हम गुलाम हैं, सूरत हुई तो क्या ?
सुर्खो-सुफीद[४] माटी की मूरत हुई तो क्या ?

अहसनुल्लाह बयान

सोचो तो बड़ी चीज़ है तहज़ीब बदन की
वरना तो बदन आग बुझाने के लिये है

जाँनिसार अख्तर

और जो कुछ हो, यह अन्धेर न होने पाये
यास[५] उम्मीद का बेड़ा न डुबोने पाये

असर लखनवी

---

१. भिक्षुक २. जानने वाला ३. चरित्र ४. लाल और उजली ५. निराशा

जिनको मकदूर[१] है, वह काश मुनादी[२] कर दें
'बीज नफरत का न अब से कोई बोने पाये'

असर लखनवी

ऐ ताइरे-लाहूती[३] उस रिज़्क[४] से मौत अच्छी
जिस रिज़्क से आती हो परवाज़[५] में कोताही[६]

ईकबाल

मोती बनने से क्या हासिल, जब अपनी हकीकत ही खो दी
कतरे के लिए बेहतर था यही कुलजम[७] बनता, दरिया होता

जमील मजहरी

लोहा सोना बन सकता है, पत्थर हीरा मोती
सोच समझ की बात है सारी, कुछ सोचें, कुछ समझें

अहमद झफर

हो न हो ये कोई सच बोलने वाला है 'कतील'
जिसके हाथों में कलम, पाँव में जंजीरें हैं

कतील शिफाई

दुनिया में 'कतील' उस सा मुनाफिक[८] नहीं कोई
जो जुल्म तो सहता है, बगावत[९] नहीं करता

कतील शिफाई

हाथ दिया उसने मेरे हाथ में
मैं तो वली[१०] बन गया इक रात में

कतील शिफाई

---

१. सामर्थ्य २. ढिंढोरा ३. अलौकिक क्षमतावाला पक्षी ४. जीविका ५. तरक्की
६. कमी ७. सागर ८. पाखंडी ९. विद्रोह १०. साधु

हमको 'नइम' इसकी अब फिक्र नहीं है
कोई बिठाए सर पे, कोई उठाए दर[१] से

हसन नइम

पैदा न हो ज़मीं से नया आस्माँ कोई
दिल काँपता है आप की रफ्तार देख कर

यगाना चंगेझी

दूँगा जरा समझ के जवाब उनकी बात का
रुख[२] देखता हूँ सिलसिला-ए-वाकिआत[३] का

अकबर इलाहाबादी

लोग इस अंदाज़ में देते हैं दुनिया की मिसाल[४]
मैं तो जैसे तजुर्बों के दौर से गुज़रा न था

जमील नझर

अक्से-खुशबू[५] हूँ, बिखरने से न रोके कोई
और बिखर जाऊँ तो मुझको न समेटे कोई

परवीन शाकिर

ज़िंदगी से नज़र मिलाओ कभी
हार के बाद मुस्कुराओ कभी

परवीन शाकिर

रात हो पड़ाव की, फिर भी जागिए वरना
आप सोते रह जाएँ और घात हो जाए

परवीन शाकिर

---

१. द्वार २. रंग-ढंग ३. घटनाओं का क्रम ४. तुलना ५. सुगंधि की छाया

सब्र करो मुहासिबों[1], वक्त तुम्हें बताएगा
दह्र[2] को मैंने क्या दिया, दह्र से क्या मिला मुझे

अनवर शउर

जिस भी फनकार[3] का शाहकार[4] हो तुम
उसने सदियों तुम्हें सोचा होगा

अहमद नदीम कासमी

हर तमाशाई फकत साहिल से मंजर देखता
कौन दरिया को उलटता, कौन गौहर[5] देखता

अहमद फराझ

तुम हिरासाँ[6] हो तो फिर शौक से साहिल को चलो
हम तो गिर्दाब[7] में साहिल[8] का मज़ा पायेंगे

परवीन फना सैयद

बस यूँ ही चमकती हुई रंगत पे न जाओ
अंदर से कहीं तल्ख[9] न हो, सेब चखो भी

महमूद शाम

अता-पता किसी खुशबू से पूछ लो मेरा
यहीं कहीं किसी मंज़र, किसी बहार में हूँ

अतहर नफीस

इक राह रुक गई तो ठिठक क्यों गयीं 'अदा'
आबाद बस्तियाँ है, पहाड़ों के पार भी

अदा जाफरी

---

१. हिसाब लेने वालों २. युग ३. कलाकार ४. सर्वोत्तम कृति ५. मोती
६. भयभीत ७ भँवर ८. किनारा ९. कडुवा

सुबह होने को है उठो 'नासिर'
घर में बैठे हो क्यों निराश उदास

नासिर काझमी

रास्ता रोकने वालों तुम्हें मालूम नहीं
तुमने पैगाम दिया है मुझे चलने के लिए

फरीद जावेद

सियहबख्ती[१] में कोई कब किसीका साथ देता है
कि तारीकी[२] में साया भी जुदा होता है इन्सां से

नासिख

रात का न जिक्र कर, रात तो गुज़र गई
है सहर[३] तो ये बता, रौशनी किधर गई ?

'जोश' खिलती थी जिनसे दिल की कली
कैसे वो लोग हो गए नायाब[४]

जोश मलिहाबादी

इक दर[५] जो हुआ बंद तो आई ये सदा[६]
सौ दर न अगर खुलें तो मेरा जिम्मा

जोश मलिहाबादी

गुँचे ! तेरी ज़िंदगी पे दिल हिलता है
बस एक तबस्सुम के लिए खिलता है
गुँचे ने कहा कि ' इस चमन में बाबा,
ये एक तबस्सुम भी किसे मिलता है '?

जोश मलिहाबादी

---

१. दुर्भाग्य २. अंधेरे में ३. सुबह ४. अप्राप्य ५. दरवाजा ६. आवाज़

फिर तूफानों पर भी काबू पा लोगे
पहले टकराना सीखो तूफानों से

खलिश बडौदवी

काम हिम्मत से जवाँमर्द अगर लेता है
साँप को मार के गंजीनयेज़र[१] लेता है

आतिश

मंज़िले हस्ती में दुश्मन को भी अपना दोस्त कर
रात हो जाये तो दिखलायें तुझे दुश्मन चिराग

आतिश

दर[२] पे शाहों के नहीं जाते फकीर अल्लाह के
सर जहाँ रखते हैं सब, हम वहाँ कदम रखते नहीं

अनीस

आन[३] में फर्क न आने दीजिये
जान अगर जाये तो जाने दीजिये

नसीम

करीब है यार रोज़े महशर[४] छूपेगा कुश्तों का[५] खून क्यों कर
जो चुप रहेगी जबाने खंजर लहू पुकारेगा आस्तीं[६] का

अमीर मीनाई

मुसीबत का इक-इक से अहवाल कहना
मुसीबत से है मुसीबत ज़ियादा

हाली

जो कहिये तो झूठी, जो सुनिये तो सच्ची
खुशामद भी हमने अजब चीज़ पाई

हाली

---

१. गड़ा धन २. द्वार ३. ढंग, तर्ज ४. क्यामत का दिन ५. जिसको मार डाला गया हो ६. बाँह

जी बहुत चाहता है सच बोलें
क्या करें, हौसला नहीं होता

बशीर बद्र

धूप में प्यासे को पानी, शब को रास्ते में चिराग
जाने वाले लोग कितने साहिबे-किरदार[१] थे

शेख परवेझ'आरिफ'

मुमकिन है कि तू जिसको समझता है बहाराँ[२]
औरों की निगाहों में वो मौसम हो खिझाँ[३] का

इकबाल

मैं परबतों से लड़ता रहा और चंद लोग
गीली ज़मीन खोद के फरहाद[४] हो गये

राहत इंदौरी

तूले-गमे-हयात[५] से घबरा न ऐ 'जिगर'
ऐसी भी कोई शाम है जिसकी सहर न हो ?

जिगर मुरादाबादी

अलग हम सबसे रहते हैं, मिसाले-तार-तम्बूरे[६]
जरा छेड़े से मिलते हैं, मिला ले जिसका जी चाहे

भँवर से लड़ो, तुन्द लहरों से उलझो
कहाँ तक चलोगे, किनारे-किनारे

रझा हमदानी

---

१. कार्य करने वाले महाशय २. वसंत ३. पतझड़ ४. फारस का एक संग-तराश जो शीरीं पर आसक्त था ५. जीवन यातनाओं की दीर्घता ६. तम्बूरे के तार की तरह

मर्द वह कब है, भँवर से जो उभर सकता नहीं
हक ही जीने का नहीं उसको जो मर सकता नहीं

नतीजा कुछ भी हो लेकिन हम अपना काम करते हैं
सवेरे से ही दूरन्देश[१] फिक्रे-शाम करते हैं

यगाना चंगेझी

मरते दम इबरत[२] पुकारी हाथ खाली देख कर
उम्र भर का है यही हासिल[३] कि कुछ हासिल नहीं

शफीक

मुहैया[४] गो कि हर सामान मिल्की[५] और माली थे
सिकंदर जब चला दुनिया से दोनों हाथ खाली थे

जौक

क्या लाया था सिकंदर, क्या ले चला जहाँ से
ये दोनों हाथ खाली बाहर कफन से निकले

जब आए हाथ खाली थे, चले भी तो हाथ खाली
न लाए यहाँ के लिए, ले चले न वहाँ के लिए

हजारों खिज्र[६] पैदा कर चुकी हैं नस्ल[७] आदम[८] की
यह सब तस्लीम[९] लेकिन आदमी अब तक भटकता है

फिराक गोरखपुरी

एक लम्हा अगर गुज़र जाये
दूसरा तो गुज़र ही जायेगा

वझीर आगा

---

१. दूर की सोचने वाले २. नसीहत ३. लाभ, ४. मौजूद ५. भू-स्वामित्व सम्बन्धी ६. एक अमर पैगम्बर जो भूले-भटकों को रास्ता दिखाते हैं ७. वंश ८. मनुष्य ९. कबूल, स्वीकार

मिरे रास्ते में जो पत्थर पड़ा है
नगीने की सूरत ज़मीं में जड़ा है

वझीर आगा

अगर बदल न दिया आदमी ने दुनिया को
तो जान लो कि यहाँ आदमी की खैर नहीं

फिराक गौरखपुरी

रात सर पर है और सफर बाकी
हमको चलना जरा सबेरे था

जावेद अख्तर

लुटा के अपनी खुशी जिसने बटोरे आँसू
वो शहनशाह था गो उसपे ताजो-तख्त[१] न था

नीरज

वो काम कर बुलन्द हो जिससे मझाके-जीस्त[२]
दिन ज़िन्दगी के गिनते नहीं माहो-साल[३] से

असर लखनवी

वो हम नहीं है कि सिर्फ अपने ही घर में शम्माएं जला के बैठे
वहाँ-वहाँ रौशनी करेंगे, जहाँ-जहाँ तीरगी[४] मिलेगी

अबुल मजाहिद झाहिद

वो ही चिराग हवाओं का जोर तोड़ेंगे
कि बाज़ी हार के भी जिनके हौंसले[५] न गये

ज़मील नझर

---

१. राजमुकट और सिंहासन २. ज़िंन्दगी की खुशी ३. महीना और वर्ष ४. अँधेरा
५. हिम्मत

सीरत[१] नहीं है जिस में वह सूरत फज़ूल[२] है
जिस गुल में बू नहीं है वह कागज़ का फूल है

राज जौनपुरी

हजार बर्क[३] गिरे, लाख आँधियाँ ऊठे
वो फूल खिल के रहेंगे जो खिलने वाले हैं

साहिर लुधियानवी

हमको, तुमको हर इक को बस ये ही तो रोना है
सामने ही थी जो चीज़ उम्र भर न हाथ आई

फिराक गोरखपुरी

राहे खुद्दारी[४] से मरकर भी भटक सकते नहीं
टूट तो सकते हैं हम, लेकिन लचक सकते नहीं

जोश मलिहाबादी

तेरा जलवा, मेरा जलवा, जो है तू, मैं हूँ वही
परदा इतना है कि मैं ज़ाहिर हूँ, तू मस्तूर[५] है

सीमाब अकबराबादी

किस तरह जान देने के इकरार[६] से फिरुँ ?
मेरी ज़बान है, यह तुम्हारी ज़बान नहीं

दाग़

जो भी करना हो, वो कर गुज़रो, ये दिल की राय है
सोचने वाला हमेशा सोचता रह जाय है

वकील'अख्तर'

---

१. चरित्र २. निरर्थक ३. बिजली ४. स्वाभिमान का पथ ५. परदे में छुपा हुआ
६. प्रतिज्ञा

राह दुश्वार[१], दूर है मंझिल, हर कदम को सँभालना होगा
पाँव से चुभा हुआ हर काँटा, चलते-चलते निकालना होगा

नियाझ हैदर

कलियों के अंग-अंग में मीठा-सा दर्द है
बीमार नकहतों को[२] जरा गुदगुदाइये

आदम

हँस के दुनिया में मरा कोई, कोई रो के मरा
ज़िंदगी पाई मगर उसने, जो कुछ हो के मरा

अकबर इलाहाबादी

हमेशा कहता था हर बात पर नमीदानम[३]
कुछ इसमें शक नहीं 'अकबर' बड़ा ही आलिम[४] था

अकबर इलाहाबादी

हर खिजाँ[५] के गुबार[६] में हमने
कारवाने-बहार देखा है

अफसर मेरठी

हवा चलेगी तो खुशबू मेरी भी फैलेगी
मैं छोड़ आयी हूं पेड़ों पे अपनी बात के रंग

फातिमा हसन

हस्ती अपनी हुबाब[७] की-सी है
ये नुमाइश[८] सराब[९] की-सी है

मीर

---

१. मुश्किल २. खुशबू को ३. मैं कुछ नहीं जानता ४. विद्वान ५. पतझड़ ६. धूल
७ बुद्बुदा ८. तड़क भड़क ९. मृग तृष्णा

है बहुत अँधियारा, अब सूरज निकलना चाहिये
जिस तरह से भी हो ये मौसम बदलना चाहिये

नीरज

बदनझर उठने ही वाली थी किसीकी जानिब[१]
अपनी बेटी का खयाल आया तो दिल काँप गया

नवाझ देवबंदी

किस कदर खुशफहम[२] थे, जो लोग अगले वक्त में
मस्जिदें बनवा दिया करते थे, बुतखानों के[३] साथ

बिस्मिल सइदी

जो तेरे दर के फकीर होते हैं
हाँ, वही बेनज़ीर[४] होते हैं

अदम

जहाँ रहेगा वहीं रौशनी लुटायेगा
किसी चराग का अपना मकाँ नही होता

वसीम बरेलवी

अगर फलक को ज़िद है बिजलियाँ गिराने की
तो हमें भी ज़िद है वहीं आशियाँ बनाने की

न जाने कितनी शम्माएं गुल हुई, कितने बुझे तारे
तब एक खुर्शीद[५] इतराता हुआ बालाए-बाम[६] आया

आनन्द नारायण मुल्ला

---

१. तरफ २. समझदार ३. मंदिरो के ४. अद्वितीय ५. सूर्य ६. अटारी पर

है कुछ एक बाकी खलिश[१] उम्मीद की
यह भी मिट जाए तो फिर क्या चाहिए ?

हाली

'दाग़' इक आदमी है गर्मा गर्म
खुश बहुत होंगे जब मिलेंगे आप

दाग़

बहुत जी खुश हुआ 'हाली' से मिल के
अभी कुछ लोग बाकी है जहाँ में

हाली

बहुत जी खुश हुआ ऐ हमनशीं[२] कल 'जोश' से मिल के
अभी अगली शराफत[३] के नमूने पाये जाते हैं

जोश मलिहाबादी

यही जाना कि कुछ न जाना हाए
सो भी इक उम्र पर हुआ मालूम

मीर

यह क्या कहा कि 'दाग़' को पहचानते नहीं
वह एक ही तो शख्स है, तुम जानते नहीं ?

दाग़

जिन्हें दुनिया बनाती है, मकाम उनका नहीं बनता
ज़माना उनका है जो खुद बनाते हैं मकाम अपना

बिस्मिल सईदी

कुछ लोगों से जब तक न मुलाकात हुई थी
मैं भी ये समझता था, खुदा सब से बड़ा है

---

१. कसक २. मित्र ३. सज्जनता

खुद जिसे मेहनत मशक्कत[१] से बनाता हूँ 'जमाल'
छोड़ देता हूँ वो रास्ता, आम हो जाने के बाद

जमाल अहसानी

कोई आवाज़, न मशाल, न इशारा कोई
राह ये कौन अँधेरे में दिखाता है मुझे

मिदहतुल अख्तर

एक लमहा[२] भी मसर्रत[३] का बहुत होता है
लोग जीने का सलीका ही कहाँ रखते हैं ?

सैयद झमीर जाफरी

वो कागज़ की नाव तुम्हारी, कहो 'जफर' कैसे डूबी
तुम तो यार बहुत माहिर[४] थे, ऐसी नाव चलाने में

झफर् गोरखपुरी

अजीब लोग हैं, कैसी ये मुंसिफी[५] की है
हमारे कत्ल को कहते हैं, खुदकुशी[६] की है

हफीझ मेरठी

कितना मुश्किल, कितना कठिन
जीने से जीने का हुनर

जाँनिसार अख्तर

कत्ल दुश्मन का नहीं मुश्किल, बहुत आसान है
चाहिए इक दोस्त मुझसा दिल बढ़ाने के लिए

दाग़

हुए बाल गफलत से सर के सफेद
उठो 'मीर' जागो सहर हो गई

मीर

---

१. परिश्रम २. क्षण ३. उल्लास, आनंद ४. होशियार ५. न्याय ६. आत्महत्या

फरमान से पेड़ों पे कभी फल नहीं लगते
तलवार से मौसम कोई बदला नहीं जाता

मुझफ्फर वारसी

सूरज के हमसफर जो बने हो तो सोच लो
इस रास्ते में प्यास का दरिया भी आएगा

कतील शिफाई

बुलन्दियों पे पहुँचना कोई कमाल नहीं
बुलन्दियों पे ठहरना कमाल होता है

अशोक 'साहिल'

क्या भरोसा है ज़िन्दगानी का
आदमी बुलबुला है पानी का

एक ने बेटी एक ने बेटा जनम दिया
कितना फर्क है हम दोनों की माँओं में

इशरत आफरीं

जाने कैसे पँख लगा कर पल-पल उड़ता जाता है
वक्त तो है आवारा पंछी कहाँ पकड में आता है

डो. श्रीमती रमा सिंह

वो ज़िन्दगी का सफर हो कि जंग का मैदान
मुहाझ[१] कोइ भी हो हौसला ज़रूरी है

इद्रीस झिया

रफ्ता- रफ्ता[२] बढ़ती जाती है मेरी महरूमियाँ[३]
और जीने में मज़ा आने लगा है अब मुझे

नझर रशीदी

---

१. मुकाबले का हिस्सा २. धीरे धीरे ३. वंचित होने का भाव, दुर्भाग्य

खुद अपने वास्ते बेहतर जिसे समझते हो
वही सुलूक[१] मेरे साथ भी रवा[२] रखना

हयात वारसी

सुनो, यहाँ से मेरे दोस्तों इज़ाज़त दो
मुझे तलाश में अपनी रवाना होना है

रउफ‘खैर’

लिबास भीग न जाये, बदन न गीला हो
ये शर्त है और समंदर के पार जाना है

मंजूर हाश्मी

दिन सैय्यारा[३], तब बंजारा, कदम-कदम दुश्वारी[४] है
जीवन जीना सहज न जानो, ये बहुत बड़ी फनकारी[५] है

निदा फाझली

‘पीपा’ पाप न कीजीए, तो पुण्य किया सौ बार
हक से अधिक लिया नहीं, तो दिया हझार बार

पीपा भगत

‘मीर’ अम्दन[६] भी कोई मरता है
जान है तो जहान है प्यारे

मीर

अब एक रात अगर कम जिये, तो कम ही सही
यही बहुत है कि हम मशालें जला के जिये

साहिर लुधियानवी

---

१. व्यवहार २. योग्य ३. नक्षत्र ४. मुश्किल ५. कला ६. जान-बूझकर

अब तो मज़हब कोई ऐसा भी चलाया जाये
जिसमें इन्सान को इन्सान बनाया जाये

नीरज

मिल्लतें[१] रास्तों के हैं सब हेर-फेर
सब जहाजों का है लंगर एक घाट

हाली

करो दोस्तो, पहले आप अपनी इज़्ज़त
जो चाहो करें लोग इज़्ज़त जियादा

हाली

इतनी ही दुश्वार[२] अपने ऐब[३] की पहचान है
जिस कदर करनी मलामत[४] और की आसान है

हाली

जीते हो तो कुछ कीजिए ज़िन्दों की तरह
मुर्दों की तरह जिये तो क्या खाक जिये

हाली

जितने भी लफ्ज़ हैं वो महकते गुलाब हैं
लहजे के फर्क से इन्हें तलवार मत बना

कतील शिफाई

कोई सुने न सुने, कोई दाद दे कि न दे
ये ही बहुत है खयालात मेरे अपने हैं

झफड़ खाँ नियाझी

दुनिया को बदल देना है कारे-अहम[५] लेकिन
इससे भी अहम तर[६] है अपने को बदल देना

फिराक गोरखपुरी

---

१. मज़हब २. मुश्किल ३. गुनाह ४. बुरा-भला कहना ५. महत्वपूर्ण कार्य
६. ज्यादा महत्त्वपूर्ण कार्य

भरा समन्दर पी जाने की
मछली की औकात कहाँ ?

चिनु मोदी 'इर्शाद'

जीएँ तो अपने बगीचे में गुलमोहर के तले
मरें तो गैर की गलियों में गुलमोहर के लिए

दुष्यंत कुमार

ये कैसा इत्तिफाक है, तुम खुद ही सोच लो
बच तो गये हम आग से, पानी से जल गये

प्रेमकुमार शर्मा

आगाज़ जो अच्छा है, अंजाम बुरा क्यों हो
नादाँ है जो कहता है – अंजाम खुदा जाने

अर्श मल्सियानी

कोई अपना नहीं यहाँ ऐ 'अर्श'
सबको अपना बना के देख लिया

अर्श मल्सियानी

देख, छोटों को है अल्लाह बड़ाई देता
आस्माँ आँख के तिल में है दिखाई देता

जौक

अगरचे मैंने अभी तक उसे नहीं देखा
वो मेरी रुह में नग्मा-सरा[१] लगे है मुझे

शहवार बेगम

अड़े वक्त तुम दाएँ-बाएँ न झाँको
सदा अपनी गाड़ी को तुम आप हाँको

हाली

१. गायक

अरे चौंक ये ख्वाबे-गफलत[१] कहाँ तक ?
सहर हो गई और तू सो रहा है

नूर नारवी

आसान नझर आए हर एक मुश्किले-दुनिया
दे साथ अगर हिम्मते-मर्दाना किसीका

साइल देहलवी

कदम उठाओ कि पैदा करें नई राहें
कहाँ तलाश करें हम निशां मिटाये हुए

अख्तर अंसारी

कभी आँसू बहाये हैं किसीकी बदनसीबी पर ?
कभी दिल तेरा भर आया है मुफलिस की गरीबी पर ?

महाराज बहादुर 'बर्क'

कभी कैसे हो 'सफी' पूछ तो लेता कोई
दिल-दिही[२] का मगर इस शहर में दस्तूर[३] नहीं

सफी लखनवी

कहिये तो आस्माँ को ज़मीं पर उतार लायें
मुश्किल नहीं है कुछ भी अगर ठान लीजिये

शहरयार

काम छोटों से निकलता है बड़ा
यह सबक भी आँख के तिल से मिला

हफीझ जौनपुरी

कुछ न इधर है न उधर तू है
जिस तरफ कीजिये नझर तू है

बेदार

---

१. गफलत के ख्वाब २. सांत्वना, ढाढस ३. रस्म

कैसे पहुँचेंगे अपनी मंझिल तक
थक गये तुम तो चन्द गाम[१] के बाद

शाद अझीमाबादी

गिरेंगी किस तरह ये नफरतों की दीवारें
हमीं बढ़ाते रहे गर दिलों के फासले भी

आसी खानपुरी

झमीनो-आसमाँ से तंग है तो छोड़ दे उनको
मगर पहले नये पैदा झमीनो-आसमाँ कर ले

सीमाब अकबराबादी

जितने सुखन[२] हैं सब में यही है सुखने-दुरुस्त[३]
'अल्लाह आबरु से रखे और तन्दुरुस्त'

नझीर अकबराबादी

जिस शख्स की 'बिस्मिल' से मुलाकात हुई है
वो शख्स मुहब्बत के पयंबर से मिला है

बिस्मिल सइदी

जो फसानों को हकीकत में बदल देते थे
आज दुनिया में कहीं उन का फसाना[४] भी नहीं

दिल को रिया से[५] पाक[६] रख, काम दिखावे का न कर
जी में अगर खुदा नहीं, मुँह से खुदा-खुदा न कर

हफीझ जौनपुरी

---

१. कदम २. कथन ३. उचित कथन ४. कहानी, कथा ५. छल से ६. पवित्र

दुनिया पहुँच रही है कहाँ-से-कहाँ 'शफीक'
तुम हो शरीके-महफिले-शेरो-सुखन[१] अभी

शफीक

दूसरे मुझको न समझें तो कोई बात न थी
शिकवा ये है कि मुझे तू ही न समझा ऐ दोस्त

हुश्मत-उल-इकराम

न इतराइये देर लगती है क्या ?
ज़माने को करवट बदलते हुए

दाग़

न पूछो कौन हैं, क्यूँ राह में नाचार बैठे हैं
मुसाफिर हैं, सफर करने की हिम्मत हार बैठे हैं

आझाद अंसारी

न मुँह छुपा के जिये हम, न सर झुका के जिये
सितमगरों की नज़र से नज़र मिला के जिये

साहिर लुधियानवी

बागे-हस्ती में[२] सबक फूल से लें एहले-नझर[३]
जिसने की उम्र तबस्सुम से बसर खारों में[४]

कौसर

मुसीबत में शरीफों की कभी इज़्ज़त नहीं घटती
जला भी डालो सोने को मगर कीमत नहीं घटती

---

१. शायरी एवम् साहित्य की मजलिस में हाजिर २. जीवन रूपी उपवन ३. दृष्टि वाले ४. काँटों में.

यार ‘खलील’, अब भूल भी जाओ क्या खोया क्या पाया है
क्यों इतनी सी बात को लेकर बैठे हो तकरार लिये
खलील धनतेजवी

खाके-मायूसी[१] नहीं है मेरे चेहरे पर ‘खलील’
अजनबी राहों की थोड़ी गर्द[२] है, और कुछ नहीं
खलील धनतेजवी

दूर तक चलना हो, मेरे साथ चल
वर्ना अब भी वक्त है, रस्ता बदल
खलील धनतेजवी

जो शाम आए, परिन्दों की तरह मिल बैठो
जो सुब्ह हो तो उड़ो, हर दिशामें बँट जाओ
खलील धनतेजवी

यूँ माँगने से मिलेगा न एक कतरा[३] भी
खुद आगे बढ़ के समन्दर समेट ले प्यारे
खलील धनतेजवी

हम चिरागों की तरह जलते रहेंगे रातभर
तुम अँधेरों से कहो, बहका करें, फैला करें
खलील धनतेजवी

यारो सफर का कुछ सरो-सामान तो करो
जाना कहाँ है तुमको जरा ध्यान तो करो
बहादुरशाह ‘झफर’

ये फकत आप की इनायत है
वरना मैं क्या, मेरी हकीकत क्या?

---

१. निराशा की मिट्टी २. धूल ३. बूँद

हमने देखे हैं कई ऐसे खुदाओं को यहाँ
सामने जिनके वो सचमुच का खुदा कुछ भी नहीं

राजेश रेड्डी

कोई नाखुश 'रियाझ' से क्यों हो
इस रविश[१] का वो आदमी ही नहीं

रियाझ खैराबादी

किसी रइस की महफिल का जिक्र क्या है 'अमीर'
खुदा के घर भी न जायेंगे, बिन बुलाये हुए

अमीर

मुहब्बत

शायद इसीका नाम मुहब्बत है 'शेफ्ता'
इक आग सी है सीने के अंदर लगी हुई

शेफ्ता

मुहब्बत के लिए कुछ खास दिल मखसूस[२] होते हैं
ये वो नग्मा[३] है जो हर साझ[४] पर गाया नहीं जाता

मखमूर देहलवी

वो आते हैं तो दिल में कुछ कसक मालूम होती है
मैं डरता हूँ कहीं इसको मुहब्बत तो नहीं कहते

अदम

१. आचरण २. निश्चित ३. गीत ४. वाद्य

कभू रोना, कभू हँसना, कभू हैरान हो रहना
मुहब्बत क्या भले चंगे को दीवाना बनाती है

ख्वाजा 'मीर' दर्द

मोहब्बत में इक ऐसा वक्त भी दिल पर गुज़रता है
कि आँसू खुश्क[१] हो जाते हैं तुगियानी[२] नहीं जाती

जिगर मुरादाबादी

ऐ दोस्त, मेरे सीने की धड़कन तो देखना
वो चीज़ तो नहीं है मोहब्बत कहें जिसे

अदम

न जाने कौन सी मंज़िल है ये मोहब्बत की
कि तुमको देख कर नाशाद[३] हो गया हूँ मैं

अदम

मोहब्बत इस तरह मालूम हो जाती है दुनिया को
कि ये मालूम होता है, नहीं मालूम होती है

अख्तर शीरानी

मोहब्बत ज़िंदगी की सबसे मुश्किल आज़माईश है
मगर ये आज़मा लेने के काबिल आज़माईश है

नियाझ हैदर

मुहब्बत से है आबरु ज़िंदगी की
उठा ले ये इल्ज़ाम क्या देखता है ?

काशिफ इंदोरी

---

१. सूखा २. पूर ३. अप्रसन्न

किसने बदल दिये हैं मुहब्बत के जाविये
हमसे नहीं ये अपनी मुहब्बत से पूछिये

उमर अंसारी

दो शख़्स जब ऐसे मिलते हैं, आपस में जिनको मुहब्बत है
खामोशी तारी[१] होती है, लब खुल के रह जाते हैं

अफसर मेरठी

कभी दरिया की लहरों से, कभी साहिल से उठता है
वो नग्मा[२] है मुहब्बत का जो आबोगिल[३] से उठता है

रम्झी

अब इत्र भी मलो तो मुहब्बत की बू नहीं
वो दिन हवा हुए कि पसीना गुलाब था

माधोराम जौहर

लोग कहते हैं, मुझे तुमसे मुहब्बत है मगर
तुम जो कहते हो कि वहशत[४] है, तो वहशत होगी

अदम

दुनिया के सितम याद, न अपनी ही वफा याद
अब मुझको नहीं कुछ भी मोहब्बत के सिवा याद

जिगर मुरादाबादी

मुहब्बत में नहीं है फर्क जीने और मरने का
उसीको देख कर जीते हैं जिस काफिर पे दम निकले

ग़ालिब

---

१. छा जाना २. गीत ३. मिट्टी और पानी ४. पागलपन

हमसे क्या हो सका मोहब्बत में
तुमने तो खैर बेवफाई की

फिराक गोरखपुरी

अपनी तबाहियों का मुझे कोई गम नहीं
तुमने किसीके साथ मोहब्बत निभा तो दी

साहिर लुधियानवी

मोहब्बत रंग दे जाती है जब दिल दिल से मिलता है
मगर मुश्किल तो ये है दिल बड़ी मुश्किल से मिलता है

जलील मानिकपुरी

हमें भी देख जो इस दर्द से कुछ होश में आए
अरे दिवाना हो जाना मोहब्बत में तो आसाँ है

फिराक गोरखपुरी

सैंकडों फूल मुहब्बत के उधर खिल उठ्ठे
तुमने हँसती हुई नज़रों से जिधर देख लिया

फलक देहलवी

तेरी खुशी से अगर गम में भी खुशी न हुई
वो ज़िंदगी तो मुहब्बत की ज़िंदगी न हुई

जिगर मुरादाबादी

इब्तदा[१] वो थी कि जीना था मुहब्बत में मुहाल[२]
इन्तहा[३] ये है कि अब मरना भी मुश्किल हो गया

जिगर मुरादाबादी

एक लफ्झे मुहब्बत का अदना सा फसाना है
सिमटे तो दिले-आशिक, फैले तो झमाना है

जिगर मुरादाबादी

---

१. आरंभ २. मुश्किल ३. अंत

यूँ कर रहा हूँ उनकी मुहब्बत के तज़किरे[१]
जैसे कि उनसे मेरी बड़ी राहो-रस्म[२] थी

माहिर उल कादरी

आगाज़-ए-मुहब्बत[३] का अंजाम बस इतना है
जब दिल में तमन्ना थी अब दिल ही तमन्ना है

जिगर मुरादाबादी

मुहब्बत और मजनूँ, हम तो सौदा[४] इसको कहते हैं
फिदा[५] लैला पे था, आँखो का अंधा इसको कहते हैं

बेखुद देहलवी

मुहब्बत तर्क की मैंने गरीबाँ सी लिया मैंने
ज़माने अब तो खुश हो, झहर यह भी पी लिया मैंने

साहिर लुधियानवी

अपना काम है सिर्फ मुहब्बत, बाकी उसका काम
जब चाहे वो रुठे हमसे, जब चाहे मान जाए

जमीलुद्दी 'आली'

हमें तेरी मुहब्बत में फकत दो काम आते हैं
जो रोने से कभी फुर्सत मिली, खामोश हो जाना

फानी बदायूनी

चन्द दिन आह मियाँ, मैं भी खुदाई कर लूँ
झूठ ही कह दो कि हाँ, तुमसे मुहब्बत है हमें

'खाकसार'

जीने भी नहीं देते मरने भी नहीं देते
क्या तुमने मुहब्बत की हर रस्म[६] उठा डाली

फानी बदायूनी

---

१. चर्चाए, २. संबंध ३. प्यार की शुरुआत ४. पागल ५. आसक्त ६. रिवाज

तुम जिसको समझते हो कि है हुस्न तुम्हारा
मुझको तो वो अपनी ही मुहब्बत नज़र आई

आनंद नारायण मुल्ला

अजब किस्मत है अपने दिल की बाझारे-मुहब्बत में
जो कोई सुबह इसको ले गया ताशाम[१] ले आया

गुलाम हैदर

अगर तू मुहब्बत का एकरार कर दे
तो 'अख्तर' दो आलम[२] से इन्कार कर दे

अख्तर ओरैनवी

हकीकत खुल गई 'हसरत' तेरे तर्के मुहब्बत[३] की
तुझे तो वो अब पहले से भी बढ़कर याद आते हैं

हसरत मुहानी

नहीं मिलते, न मिलिए, खैर, कोई मर न जायगा
खुदा का शुक्र है पहले मुहब्बत आपने कम की

आगा शायर देहलवी

ये सब कहने की बातें हैं, हम उनको छोड़ बैठे हैं
जब आँखें चार होती हैं, मुहब्बत आ ही जाती है

जहीर देहलवी

मुहब्बत की दुनिया में सब कुछ हसीं है
मुहब्बत नहीं है तो कुछ भी नहीं है

हफीझ जालंधरी

तुझे कुछ इल्म[४] है, कहती है दुनिया
मुझे तुमसे मोहब्बत हो गई है

अदम

---

१. शाम तक २. लोक ३. प्यार का त्याग ४. जानकारी

सर में सौदा[१] भी नहीं, दिल में तमन्ना भी नहीं
लेकिन इस तर्के-मुहब्बत[२] का भरोसा भी नहीं

फिराक गोरखपुरी

बेसबब उससे मैं लड़ रहा हूँ
ये मुहब्बत नहीं है तो क्या है ?

कतील शिफाई

इसे किसीकी मुहब्बत का एतबार नहीं
इसे झमाने ने शायद बहुत सताया है

बशीर बद्र

ऐ मुहब्बत तेरे अंजाम पे रोना आया
जाने क्यों आज तेरे नाम पे रोना आया

शकील बदायूनी

अजब था जुर्मे-मुहब्बत कि जिसपे दिल ने मेरे
सज़ा भी पाई नहीं और मुआफ भी न हुआ

परवीन शाकिर

चुन लिया तेरी मुहब्बत ने मुझे
और दुयिा हाथ मल कर रह गई

फानी बदायूनी

जिसकी ज़िल्लत[३] में भी इज़्ज़त है, सज़ा में भी मज़ा
कुछ समझ में नहीं आता कि मुहब्बत क्या है

हसरत मुहानी

अरे, सूदो-झियाँ[४] देखा नहीं जाता मुहब्बत में
ये सौदा और सौदा है, ये दुनिया और दुनिया है

उम्मीद उमैठवी

---

१. उन्माद २. प्रेम का त्याग ३. बेइज़्ज़ती ४. लाभ-हानि

मोहब्बत ! आह, मोहब्बत की ज़िंदगी मत पूछ
बड़ी मुसीबतों में मुबतेला[1] रहा हूँ मैं

ताजवर नजीबाबादी

'अनीस' आसाँ नहीं आबाद करना घर मुहब्बत का
ये उनका काम है जो ज़िंदगी बरबाद करते हैं

मीर अनीस

मोहब्बत का तुमसे असर क्या कहूँ
नज़र मिल गई, दिल धड़कने लगा

असर

मोहब्बत में एक ऐसा वक्त भी आता है इन्सां पर
सितारों की चमक से चोट लगती है रगे-जाँ[2] पर

सीमाब अकबराबादी

मोहब्बत का वो दौर भी आ रहा है
कि हर हाल में मुस्कुराना पड़ेगा

शौकत थानवी

न जाने मुहब्बत का अंजाम क्या है
मैं अब हर तसल्ली[3] से घबरा रहा हूँ

अेहसान दानिश

तुम्हें राज़े-मुहब्बत क्या बतायें
तुम्हारे खेलने-खाने के दिन है

बेखुद देहलवी

कुछ और पूछिए यह हकीकत न पूछिए
क्यों आपसे है मुझको मुहब्बत न पूछिए

तस्कीन कुरैशी

---

१. फँसा हुआ २. लाल रग ३. धैर्य

खुशी–खुशी में न गम में कोई मलाल[1] मुझे
बना दिया है मुहब्बत ने बे–मिसाल[2] मुझे

अलम मुझफ्फर नगरी

यह भी आदाबे–मुहब्बत ने गवारा न किया
उनकी तस्वीर भी आँखो से लगाई न गई

हसरत मोहानी

देखी है मुहब्बत भी कभी संगदिलों में[3]
ऐसा नहीं पत्थर पे कोई फूल खिले ना

जाँनिसार अख्तर

अब मेरी मोहब्बत को नहीं इसकी भी परवाह
वो याद मुझे करते हैं या भूल गए हैं

खुमार बारहबंकवी

कहने देती नहीं कुछ मुँह से मुहब्बत तेरी
लब पे रह जाती है आ–आ के शिकायत मेरी

दाग़

है समझना तो मुहब्बत से गुज़र ऐ हमदम
बात आएगी समझ में न यूँ समझाने से

नसीर आरज़ू

जहाँ से छोड़ रहे हो मुझे अँधेरे में
यहीं से राहे–मोहब्बत निकल तो सकती है

सलाम मछली शहरी

गले मिलकर वो रुखसत[4] हो रहे हैं
मोहब्बत का ज़माना आ रहा है

जिगर मुरादाबादी

---

१. दुःख २. अनुपम ३. पाषाण हृदयों में ४. बिदा

बहुत दिनों में मोहब्बत को ये हुआ मालूम
जो तेरे हिज्र[१] में गुज़री वो रात रात हुई

फिराक गोरखपुरी

हमसे पहले भी मोहब्बत का यही अंजाम था
कैस[२] भी नाशाद[३] था, फरहाद भी नाकाम[४] था

आसी उल्दनी

फसाने अपनी मुहब्बत के सच हैं, पर कुछ कुछ
बढ़ा भी देते हैं हम झेबे-दास्तां[५] के लिए

शेफता

मुहब्बत मानी-ओ-अल्फाज़[६] में लाई नहीं जाती
यह वो नाज़ुक हकीकत है जो समझाई नहीं जाती

शेरी भोपाली

मालूम जो होता हमें अंजाम-ए-मुहब्बत[७]
लेते न कभी भूल के हम नाम-ए-मुहब्बत[८]

जौक

मुहब्बत की नहीं जाती, मुहब्बत हो ही जाती है
यह शोला[९] खुद भड़क उठता है, भड़काया नहीं जाता

मखमूर देहलवी

कुछ तबियत ही मिली थी ऐसी, चैन से जीने की सूरत न हुई
जिसको चाहा उसे अपना न सके, जो मिला उससे मुहब्बत न हुई

निदा फाजली

---

१. वियोग २. मजनूँ ३ अप्रसन्न ४. असफल ५. कहानी की शोभा ६. शब्द और अर्थ ७. प्यार का नतीजा ८. प्यार का नाम ९. आग की लपट

कुछ हकीकत न हो मुहब्बत की
नश्शा सा इक ज़रूर रहता है

सागर निझामी

'हफीझ' अपनी बोली मुहब्बत की बोली
न उर्दू, न हिंदी, न हिन्दोस्तानी

हफीझ जालंधरी

अनगिनत लोगोंने दुनिया में मोहब्बत की है
कौन कहता है कि सादिक[१] न थे जज़्बे[२] उनके ?
लेकिन उनके लिये तशहीर[३] का सामान नहीं
क्योंकि वो लोग भी अपनी ही तरह मुफलिस[४] थे

साहिर लुधियानवी

इक शहनशाह ने दौलत का सहारा लेकर
हम गरीबों की मोहब्बत का उड़ाया है मज़ाक

साहिर लुधियानवी

'बेदार' ! छुपाये से छुपते हैं कहीं तेरे
चेहरे से नुमायाँ हैं आसार मुहब्बत के

मुहम्मद अली'बेदार'

नसीब से कहीं मरना किसी पे होता है
मज़ा जो इसमें है वो उम्रे-जावेदाँ[५] में नहीं

जलील मानिकपुरी

हमीं ने ऐ मुहब्बत कद्र पहचानी है कुछ तेरी
तुझे तूफाँ, तुझे किश्ती[६], तुझे साहिल[७] समझते हैं

आझाद

---

१. सच्चे २. आवेश ३. विज्ञापन ४. निर्धन ५. अमर जीवन ६. नाव ७. किनारा

क्या मुहब्बत गमों को कहते हैं
बड़ी हसरत थी आज़माने की

अनवर

मुहब्बत क्या है, तासीर-ए-मुहब्बत[1] किसको कहते हैं
तेरा मजबूर कर देना, मेरा मजबूर हो जाना

जिगर मुरादाबादी

तेरे सिवा किसीसे मुहब्बत नहीं सनम
तेरी कसम नहीं, खुदा की कसम नहीं

दाग़

जब मुहब्बत का नाम सुनता हूँ
हाय ! कितना मलाल[2] होता है

मुइन हसन ज़ज़बी

मुहब्बत और हसीनों की मुहब्बत हझरत-ए-नासेह[3]
कहीं कहने से जाती है, कहीं कहने से होती है

बेदम अकबराबादी

लिल्लाह,[4] मुझसे आप मुहब्बत न कीजिए
दो रोज़ ही में आपका चेहरा उतर गया

शकील बदायूनी

नसीबों से मिलता है दर्द-ए-मुहब्बत[5]
यहाँ मरने वाले ही अच्छे रहे हैं

दाग़

खामोश! ऐ दिल, भरी महफिल में चिल्लाना नहीं अच्छा
अदब[6] पहला करीना[7]; है, मुहब्बत के करीनों में

इकबाल

---

१. प्यार का प्रभाव २. अफसोस ३. हे उपदेशक ४. खुदा के लिये ५. प्यार का दर्द ६. शिष्टाचार ७. तरीका

खामोश, मुहब्बत क्या शय है, कब दिल में किसीने झाँका है
वो शम्मा सदा छुप-छुप के जली, दुनिया को नज़ारा हो न सका

जाँनिसार अख्तर

हाँ याद मुझे तुम कर लेना, आवाज़ मुझे तुम दे लेना
इस राहे मुहब्बत में कोई दरपेश[१] जो मुश्किल आ जाए

बहझाद लखनवी

किसीकी तो झाहिद[२] को होती मुहब्बत
बुतों[३] की न होती, खुदा की तो होती

आसी उल्दनी

मुहब्बत के महल में आशिके-जाँबाझ[४] रहता है
नहीं खाला[५] का घर इसमें जो आये जिसका जी चाहे

कामिला बेगम 'जाफरी'

बेहतर यही है ज़िक्रे[६] मुहब्बत न छेड़िये
नक्शा बिगड़ गया तो बनाया न जाएगा

शकील बदायूनी

दोनों जहान तेरी मुहब्बत में हारकर
वो जा रहा है कोई शब-ए-गम[७] गुज़ारकर

फैझ अहमद फैझ

ऐ सनम, जिसने तुझे चाँद-सी सूरत दी है
उसी अल्लाह ने मुझ को भी मुहब्बत दी है

आतिश

---

१. सामने २. ईश्वर की ऊपासना करनेवाला ३. मूर्ति, प्रेयसी ४. प्राण उत्सर्ग करने वाला प्रेमी ५. मौसी ६. बात ७. पीड़ा की रात्रि

खुदा रख्खे मुहब्बत ने किये आबाद घर दोनों
मैं उनके दिल में रहता हूं, वो मेरे दिल में रहते हैं

दाग़

अब उनका क्या भरोसा, वो आएँ या न आएँ
आ ऐ गमे मुहब्बत तुझको गले लगायें

जिगर मुरादाबादी

मुहब्बत नहीं आग से खेलना है
लगाना पड़ेगा, बुझाना पड़ेगा

आरझू लखनवी

मुहब्बत को समझना है तो नासेह खुद मुहब्बत कर
किनारे से कभी अंदाज़ा-ए-तूफाँ नहीं होता

खुमार बाराबंकवी

वो काँटा है कि चुभ के टूट जाये
मुहब्बत की बस इतनी दास्तां है

खुमार बाराबंकवी

लुत्फे दोझख भी, लुत्फे जन्नत भी
हाय ! क्या चीज़ है मुहब्बत भी

खुमार बाराबंकवी

आके बाज़ारे-मुहब्बत में जरा सैर करो
लोग क्या कहते हैं, क्या लेते हैं, क्या देते हैं ?

दाग़

अब मुहब्बत ही मुहब्बत है, न हम हैं ओर न तुम
जिसके आगे कुछ नहीं है, वो मुकाम आ ही गया

आसी लखनवी

इसे सुन लो, सबब[१] इसका न पूछो
मुझे तुमसे मुहब्बत हो गई है

फिराक गोरखपुरी

दो बातों में पोशीदा[२] जीवन की कहानी है
कुछ मेरी मोहब्बत है, कुछ उनकी जवानी है

अनवर आगेवान

मोहब्बत एक नादानी सही लेकिन खिरदमन्दो![३]
जवानी में यह नादानी हसीं मालूम होती है

शाद अझीमाबादी

या खुदा दर्दे-मोहब्बत में असर है कि नहीं
जिसपे मरता हूँ, उसे मेरी खबर है कि नहीं ?

जलील मानीकपुरी

याद आ ही जाता है कभी नासेह[४] का कौल[५] भी
सब कीजिये जहाँ में, मोहब्बत न कीजिये

अझीज लखनवी

कुछ तो होते हैं मुहब्बत में जुनूँ के आसार
और कुछ लोग भी दीवाना बना देते हैं

झहीर देहलवी

नाज़ुक तेरे मरीज़े-मुहब्बत[६] का हाल है
दिन कट गया तो रात का कटना मुहाल[७] है

जिगर मुरादाबादी

---

१. वजह २. छिपा हुआ ३. अक्लमंद ४. उपदेशक ५ कथन ६. मुहब्बत का बीमार
७. ना-मुमकिन

जहाँपनाह ! ये गुस्ताखियाँ हैं मजबूरन
खता मुआफ, मुझे आपसे मुहब्बत है

उम्मतुलरुफ नसरी

मुहब्बत का दरिया, जवानी की लहरें
यहीं डूब जाने को जी चाहता है

अमजद नझमी

मुहब्बत का हर भेद पाना भी है
मगर अपना दामन बचाना भी है

मजाझ

मुहब्बत सीधी सादी चीज़ हो पर इसको क्या कीजे
कि ये सुलझी हुई गुत्थी कोई उलझा ही जाता है

फिराक गोरखपुरी

मैखाना (शराबघर, बार)

ईद के दिन मैकदे में है कोई ऐसा 'रियाझ'
एक चुल्लू देके जो ले तीस रोझों[१] का सबाब[२]

रियाझ खैराबादी

मैखाना हमारा कोई मस्जिद तो नहीं है
तसबीह[३] लिये कौन बुझुर्ग आये इधर आज ?

रियाझ खैराबादी

सदसाला[४] दौरे-चर्ख[५] था सागर का एक दौर
निकले जो मयकदे से तो दुनिया बदल गई

रियाझ खैराबादी

१. व्रत २. पुण्य ३. माला ४. सौ साल ५. आकाश का चक्कर

टपका दे बूँद भर कोई मुँह में 'रियाझ' के
दम मैकदे में तोड़ रहा है पड़ा हुआ

रियाझ खैराबादी

जन्नत से कम सही, मगर अच्छा था मयकदा
जब तक थे हम वहाँ, गमे-फर्दा[१] तो कुछ न था

रियाझ खैराबादी

वीरां है मयकदा[२], खुमो-सागर[३] उदास हैं
तुम क्या गये कि रुठ गये दिन बहार के

फैज अहमद फैझ

दुनिया तमाम छुट गयी पैमाने के लिए
वो मैकदे में आये तो पैमाना छुट गया

मुस्तफा झैदी

खबर इतनी तो है शीशे से पैमाने में आती है
खुदा जाने कहाँ से खिंच के मयखाने में आती है

मुबारक अझीमाबादी

एक शोला सा गिरा शीशे से पैमाने में
लो किरन फूटी सबेरा हुआ मैखाने में

खुमार बाराबंकवी

आबाद करें बादाकश[४] अल्लाह का घर आज
दिन जुम्मे[५] का है बन्द है मयखाने के दर आज

रियाझ खैराबादी

इतना नहीं अल्लाह का बंदा कोई 'शौकत'
मस्जिद में जो एक छोटा-सा मयखाना बना दे

शौकत थानवी

---

१. अवधि की चिन्ता २. मधुशाला ३. मदिरा पात्र ४. शराबी ५. शुक्रवार

कटी रात सारी मयकदे में
खुदा याद आया सबेरे - सबेरे

सइद राही

मस्ताना[१] पिये जा, यूँ ही मस्ताना पिये जा
पैमाना[२] तो क्या चीज़ है, मैखाना पिये जा

अख्तर शीरानी

कल रात मैकदे में अजब हादिसा हुआ
वाइझ मेरे हिसाब में पी कर चला गया

ये किसने कह दिया, गुमराह[३] करता है मैखाना
खुदा के फइल[४] से इसके लिये मस्जिद है, मंदिर है

अर्श मल्सियानी

रुह किसी मस्त की प्यासी गई मयखाने से
मय उड़ी जाती है साकी ! तेरे पैमाने से

दाग़

मयखाने के करीब थी मस्जिद, भले को 'दाग़'
हर एक पूछता है कि 'हझरत इधर कहाँ ?'

दाग़

भला तौबा का मयखाने में क्या ज़िक्र ?
जो है भी तो कहीं टूटी पड़ी है

जलील मानिकपुरी

राहे-खुदा में आलमे-रिन्दाना[५] मिल गया
मस्जिद को ढूँढ़ते थे कि मयखाना मिल गया

शकील बदायूनी

---

१. उन्मत्त २. प्याली ३. जो रास्ता भूल गया है ४. कृपा ५. पीने वालों की बस्ती

एक जगह बैठ के पी लूँ मेरा दस्तूर नहीं
मैकदा तंग बना दूँ, मुझे मंज़ूर नहीं

जिगर मुरादाबादी

कदम रखना सँभलकर महफिल-ए-रिन्दाँ[१] में ऐ ज़ाहिद
यहाँ पगड़ी उछलती है, इसे मयखाना कहते हैं

शैखजी हरगिझ न समझाओ, मुझे मालूम है
मस्जिद-ओ-मंदिर भी हैं रास्ते में मयखाने के बाद

साजन पेशावरी

निकल कर दैरो-काबा[२] से अगर मिलता न मैखाना
तो ठुकराये हुए इन्साँ, खुदा जाने कहाँ जाते

कतील शिफाई

मर गये फिर भी तअल्लुक है जो मयखाने से
मेरे हिस्से की छलक जाती है पैमाने से

रियाझ खैराबादी

झुक-झुक के शीशे मिलते हैं, हँस-हँस के जामे-मय[३]
ये मयकदा मकाम नहीं है गरुर[४] का

नासिख

दैरो-हरम[५] में चैन जो मिलता
क्यों जाते मैखाने लोग ?

कुंवर महिंदरसिंह बेदी

पीने वाले एक ही दो हों तो हों
मुफ्त सारा मयकदा बदनाम है

जिगर मुरादाबादी

---

१. शराबियों की मजलिस २. मंदिर-मस्जिद ३. शराब की प्याली ४. घमंड
५. मंदिर-मस्जिद

बाद इक उम्र के मयखाने में आये हैं 'रियाझ'
आप बैठे हैं बचाये हुए दामन कैसा ?

रियाझ खैराबादी

आये थे हँसते खेलते मयखाने में 'फिराक'
जब पी चुके शराब तो संजीदा[१] हो गये

फिराक गोरखपुरी

उठ्ठे कभी 'रियाझ' तो मयखाने हो आये
पी आये तो फिर बैठ गये याद-ए-खुदा में

रियाझ खैराबादी

चाल है मस्त, नज़र मस्त, अदा में मस्ती
जैसे वो आते हैं लौटे हुए मयखाने से

जलील मानिकपुरी

हाथ से किसने पटका सागर मौसम की बेकैफी पर
ऐसा बरसा टूट के बादल डूब चला मयखाना भी

आरझू लखनवी

महफिल-ए-वाझ[२] तो ता-देर[३] रहेगी कायम
यह है मयखाना अभी पीके चले आते है

एक चुल्लू में बहुत 'दाग़' बहक उठते थे
आज सुनते हैं निकाले गये मयखाने से

दाग़

मैं मयकदे की राह से होकर निकल गया
वर्ना सफर हयात[४] का काफी तवील[५] था

अदम

---

१. गंभीर २. धार्मिक कथा की सभा ३. देर तक ४. जिंदगी ५. लंबा

जब मयकदा छूटा तो फिर क्या जगह की कैद
मसजिद हो, मदरसा हो, कोई खानकाह[१] हो

ग़ालिब

यह इमारत तो इबादतगाह है
इस जगह इक मयकदा था, क्या हुआ ?

सहर सीतापुरी

मयकदा है यह, समझ बूझकर पीना ऐ रिन्द[२]
कोई गिरते हुए पकड़ेगा न बाज़ू[३] तेरा

शाद अझीमाबादी

क्या हमने छलकते हुए पैमाने में देखा
ये राज़ है मयखाने का ईफ्शा[४] न करेंगे

असर लखनवी

इस मयकदे में 'सौदा' हम तो कभी न बहके
सब मस्तो-बेखबर थे, हुशियार था सो मैं था

सौदा

तुम्हीं कहो रिंदो-मुहतसिब[५] में है आज शब[६] कौन फर्क ऐसा
ये आके बैठे हैं मयकदे में, वो उठके आये हैं मयकदे से

फैझ अहमद फैझ

आज इतनी भी मयस्सर[७] नहीं मयखाने में
जितनी हम छोड़ दिया करते थे पैमाने[८] में

दिवाकर राही

---

१. मठ २. शराबी ३. हाथ ४. प्रकट ५. शराब पीने वाला और पीने से रोकने वाला
६. रात्रि ७. प्राप्त ८. प्याली

रिंद जो ज़र्फ[१] उठा ले वही कूज़ा[२] बन जाये
जिस जगह बैठके पी ले वही मयखाना बने

असगर गोंडवी

ये मयकदा है तेरा मदरसा[३] नहीं वाएज़
यहाँ शराब से इन्सां बनाये जाते हैं

सागर निज़ामी

दरे-मस्जिद[४] ही पे मैखाना है 'बेखुद' अफसोस
मुझको बदनाम मेरे-नक्शे-कदम[५] करते हैं

बेखुद देहलवी

दुनिया से अलग हमने मैखाने का दर[६] देखा
मैखाने का दर देखा, अल्लाह का घर देखा

रियाज़ खैराबादी

मौत (मृत्यु)

मौत अच्छी है, जो दम निकले तुम्हारे सामने
आँख से ओझल हो तुम तो ज़िंदगी अच्छी नहीं

हुस्न बरेलवी

मौत क्या है, ज़माने को समझाऊँ क्या ?
इक मुसाफिर था, रास्ते में नींद आ गई

'दिल' लखनवी

---

१. बर्तन २. शराब पीने का मिट्टी का प्याला ३. पाठशाला ४. मस्जिद का द्वार
५. पाद चिह्न ६. द्वार

तुम न आओगे तो मरने की हैं सौ तदबीरें
मौत कुछ तुम तो नहीं हो कि बुला भी न सकूँ

ग़ालिब

मौत का भी एक दिन मुअय्यन है
नींद क्यों रात भर नहीं आती

ग़ालिब

सहारा मौत ने आकर दिया तो कब दिया हमको
हमारी ज़िंदगी जब दिन मुसीबत के गुज़ार आई

अर्श मल्सियानी

मौत अगर आसान नहीं, जीना भी आसान नहीं
मौत को मुश्किल जानने वाले, जीना मौत से मुश्किल है

जगन्नाथ आझाद

क्या कभी मौत के तेवर नहीं इसने देखे
ज़िंदगी है कि अकड़ती चली जाती है

मुनव्वर लखनवी

कौन जी से न जायेगा ऐ 'मीर'
हैफ[१] ये है कि तू जवान गया

मीर

मौत आने तक न आये अब जो आये हो, तो हाय!
ज़िंदगी मुश्किल ही थी, मरना भी मुश्किल हो गया

फानी बदायूनी

खुशी का ज़िक्र क्या, गम का गिला क्या ?
न हो मरना तो जीने का मज़ा क्या ?

आफताब जहाँ

---

१. अफसोस

मेरे याद करने से यह मुदआ था
निकल जाय दम हिचकियाँ आते आते

दाग़

मर गये तो मर गये हम इश्क में नासेह[१] को क्या ?
मौत आने के लिए है, जान जाने के लिए

दाग़

ऐ मौत, बशर[२] की ज़िंदगी आज
तेरा एहसान हो गई है

फिराक गोरखपुरी

मौत अन्जामे-ज़िंदगी[३] है मगर
लोग मरते हैं ज़िंदगी के लिये

साहिल

मौत के डर से नाहक परेशान हैं
आप ज़िन्दा कहाँ है जो मर जायेंगे

अन्सार कम्बरी

मौत से कोई न घबराये अगर ये समझे
कि ये दुनिया के बखेड़ों से छूड़ा देती है

अकबर ईलाहाबादी

लायी हयात[४] आये, कज़ा[५] ले चली, चले
अपनी खुशी न आये, न अपनी खुशी चले

जौक

हर साँस के साथ जा रहा हूँ
मैं तेरे करीब आ रहा हूँ

फानी बदायूनी

---

१. उपदेशक २. मनुष्य ३. जीवन का अंत ४. जीवन ५. मृत्यु

लगा के सीने से शादाबियों[१] को सो जाता
मुझे बहारे-जवानी[२] में मौत आ जाती

अख्तर अंसारी

ऐ अजल[३], एक दिन आखिर तुझे आना है, वले[४]
आज आती शबे-फुरकत[५] में तो एहसाँ होता

नासिख

अब तो घबरा के ये कहते हैं कि मर जाएँगे
मर के भी चैन न पाया तो किधर जाएंगे ?

जौक

मौत ने कर दिया लाचार वर्ना[६] इन्साँ
है वो खुदबीं[७] कि खुदा का भी न कायल होता

जौक

जो देखी हिस्टरी[८] कौमों की तो ऐसा नज़र आया
उसे जीना नहीं आया, जिसे मरना नहीं आया

अकबर इलाहाबादी

निकली यह कह के आलमे-पीरी में[९] तन से रुह[१०]
'बस अब हमारे रहने के काबिल यह घर नहीं'

शाद अझीमाबादी

कैसी चाहत, कैसी हसरत ?
साँस रुके तो पाये राहत

चिनु मोदी 'इर्शाद'

---

१. खुशियाँ २. जवानी की बहार ३. मौत ४. लेकिन ५. विरह की रात ६. नहीं तो ७. अभिमानी ८. इतिहास ९. वृद्धावस्था में १०. आत्मा

उम्र लम्बी लिक्खी है तकदीर में
मौत को 'इर्शाद' फुसलाता हूँ मैं

चिनु मोदी 'इर्शाद'

अब यहाँ से जाना है
मौत तो बहाना है

चिनु मोदी 'इर्शाद'

देख लीजे चल के अपने चाहने वाले की नाश[१]
आप फरमाते थे ऐसे को कज़ा[२] आती नहीं

कैसर देहलवी

हाए किस वक्त हुई दोनों मुरादें पूरी
यार बाली पे जब आया तो कज़ा भी आई

दाग़

मौत ने आसरा दिया भी तो कब
जब मुसीबत के दिन गुज़ार आए

अर्श मल्सियानी

मौत क्या आके फकीरों से तुझे लेना है
मरने से आगे ही ये लोग तो मर जाते हैं

ख्वाजा मीर दर्द

मर भी जाऊँ तो कहाँ लोग भूला ही देंगे
लफ्झ मेरे, मेरे होने की गवाही देंगे

परवीन शाकिर

आसमाँ ! मर के तो राहत हो कहीं थोड़ी सी
पाँव फैलाने को हाथ आये झमीं थोड़ी-सी

आतिश

---

१. लाश २. मौत

कैदे-हयात-ओ-बन्देगम[1] अस्ल में दोनों एक हैं
मौत से पहले आदमी गम से निजात[2] पाये क्यों ?

ग़ालिब

जब एक रोज़ जान का जाना जरुर है
फिर फर्क क्या वह आज गई ख्वाह कल गई

सफी लखनवी

मर गये फिर भी तगाफुल[3] ही रहा आने में
बेवफा पूछे हैं - 'क्या देर है ले जाने में ?'

जौक

दर्द से इक आह भी करने नहीं देते मुझे
मौत है आसाँ मगर मरने नहीं देते

साकिब लखनवी

मैयत तो उठ गई, वो न आये, नहीं सही
'साकिब' किसी के दिल पे, कोई अख्तियार[4] था ?

साकिब लखनवी

मौत भी क्या जाने कुछ बीमार है
क्यों नही आती तेरे बीमार तक ?

हुस्न बरेलवी

उम्र भर देखा किये मरने की राह,
मर गये, पर देखिये, दिखलाएँ क्या ?

ग़ालिब

जाती हुई मैयत देख के भी वल्लाह[5] तुम उठकर आ न सके
दो चार कदम तो दुश्मन भी तकलीफ गवारा करते हैं

कमर जलालाबादी

---

१. मनुष्य के दुःख और जिन्दगी के बंधन २. मुक्ति ३. उपेक्षा ४. अधिकार ५. ईश्वर की शपथ है

छेड़ देखो, मिरी मैयत पे जो आए तो कहा
तुम वफादारों में हो या मैं वफादारो में हूँ ?

अमीर मीनाइ

या रब पड़ी रहे मेरी मैयत इसी तरह
बैठे रहें वो बाल परीशाँ किए हुए

फानी बदायूनी

ऐ ज़िंदगी खुदा के लिये अब मुआफ कर
बैठी हुई है मौत मेरे इंतिज़ार में

मुनव्वर लखनवी

आने के वक्त तुम तो कहीं के कहीं रहे
अब आये तुम तो फायदा ? हम ही नहीं रहे

मीर

रहे मर्ग[१] से क्यों डराते हैं लोग
बहुत इस तरफ को तो जाते हैं लोग

मीर

मर्ग एक माँदगी का वक्फा[२] है
यानी आगे चलेंगे दम लेकर

मीर

मिल गई राहत हमेशा के लिए नींद आ गई
चारागर[३] रुखसत हुए, बीमार अच्छा हो गया

दिल शाहजहानपुरी

सुना है ऐ अजल[४] कल आएँगे वो, इससे कहता हूँ
जहाँ इक ऊम्र तू ठहरी है, और इक दिन ठहर जाना

अहसन मारहरवी

---

१. मौत २. ठहराव ३. हकीम, इलाज करने वाले ४. मृत्यु

मौत से यारी न थी, हस्ती से बेज़ारी न थी
उस सफर पर चल दिये हम, जिसकी तैयारी न थी

मुहसिन एहसान

मौत से क्यों इतनी दहशत[१], जान क्यों इतनी अज़ीज़[२]
मौत आने के लिए है, जान जाने के लिए

वफा

अब मेरे रोने वालों खुदा-रा[३] जवाब दो
वो बार-बार पूछते हैं, कौन मर गया ?

हफीझ जालंधरी

आना है तो आ वगर्ना प्यारे
हम आप से[४] आज जा रहे हैं

कायम चान्दपुरी

कहते हैं आज 'जौक' जहाँ से गुज़र गया
हक[५] मगफरत[६] करे अजब आज़ाद मर्द था

जौक

मौत से न डर, हौसला न हार
ज़िंदगी को ढूँढ़ हादसात[७] में

अझीझ नहटौरी

ज़िंदगी से तो खैर शिकवा[८] था
मुद्दतों मौत ने भी तरसाया

नरेशकुमार शाद

तू मेरी ज़िंदगी से भी कतरा के चल दिया
तूझको तो मेरी मौत पे भी इख्तियार[९] था

---

१. भय २. प्रिय ३. ईश्वर के लिये ४. मर रहे हैं ५. ईश्वर ६. अपराध क्षमा करना
७. दुर्घटनाएं ८. शिकायत ९. अधिकार

खुशी न हो मुझे क्यों कर कज़ा के आने की
खबर है लाश पे उस बेवफा के आने की

मोमिन

अब कोई क्या करे इलाज अफसोस
मौत ने भी दिया जवाब हमें

मोमिन

आज इलाहाबाद है सूना शाईर के उठ जाने से
सदियों-सदियों ढूँढोगे लेकिन कहाँ फिराक को पाओगे ?

फिराक गोरखपुरी

ऐ मौत आके हमको खामोश कर गयी तू
सदियों दिलों के अन्दर हम गूँजते रहेंगे

फिराक गोरखपुरी

कहूँ किससे मैं कि क्या है ? शबे गम[१] बुरी बला है
मुझे क्या बुरा था मरना, अगर एक बार होता

ग़ालिब

हो मुन्हसिर[२] मरने पे जिसकी उम्मीद
ना उम्मीदी उसकी देखा चाहिये

ग़ालिब

इस सरा[३] में मुसाफिर नहीं रहने आया
रह गया थक के अगर आज तो कल जाऊँगा

अमीर मीनाई

ऐ रुह[४], क्या बदन में पड़ी है, बदन को छोड़
मैला बहुत हुआ है अब इस पैरहन[५] को छोड़

अमीर मीनाई

---

१. दुःखों की रात्रि २. निर्भर ३. मुसाफिरखाना ४. आत्मा ५. लिबास

हिर्सो[1] हविसो[2] ताबो[3] तवाँ[4] 'दाग़' जा चुके
अब हम भी जाने वाले हैं, सामान तो गया

दाग़

हज़ार फूलों से आबाद बागे हस्ती[6] है
अज़ल[7] की आँख फकत एक को तरसती है

फैझ अहमद 'फैझ'

मंज़िल

अजनबी वादियाँ[8], कोई मंज़िल न घर
रास्ते में कहीं भी उतर जाऊँगा

मैंने पूछा था कि है मंज़िले-मकसूद[9] कहाँ
खिज्रने[10] राह बताई मुझे मयखाने की

जलील मानिकपुरी

सामने मंज़िल है और आहिस्ता उठते हैं कदम
पास आकर हो रहे हैं दूर फिर मंज़िल से हम

अलम मुझफ्फरनगरी

---

१. लालसा २. तृष्णा ३. तेज ४. शक्ति ५. पूरा ६. संसार का बाग ७. मौत
८. पहाड की घाटियाँ ९. आखिरी मुकाम १०. एक पैयगम्बर

न कामयाब हुआ और न रह गया महरुम[1]
बडा गज़ब है कि मंज़िल पे खो गया हूँ मैं

असगर गोंडवी

जिस दिन से चला हूँ मेरी मंज़िल पे नज़र है
आँखो ने कभी मील का पत्थर नहीं देखा

पहुँचा कोई काबे[2] से, कोई दैर[3] से पहुँचा
थी जिस पे तेरी मेहर[4] वही खैर[5] से पहुँचा

जुनूँ अझीमाबादी

मंज़िल पे आके 'शाद' अजब हादिसा हुआ
मैं हमसफर को भूल गया, हमसफर मुझे

शाद अमृतसरी

ठोकर किसी पत्थर से अगर खाई है मैंने
मंज़िल का निशाँ भी उसी पत्थर से मिला है

बिस्मिल सइदी

हम थक के गिरे, गिर के ऊठे, ऊठ के चले भी
तुझ पर असर ऐ दूरि-ए-मंज़िल[6] नहीं होता

रियाझ खैराबादी

काट दी यों हमने 'जझ्बी' राह-ए-मंज़िल[7] काट दी
गिर पड़े हर गाम[8] पर, हर गाम पर सँभला किये

मुइन हसन जज़्बी

---

१. बद-नसीब २. मक्का जहाँ मुसलमान हज करने जाते हैं ३. मंदिर ४. दया
५. खैरियत ६. मंज़िल की दूरी ७. मुकाम का मार्ग ८. कदम

तेरी मंज़िल पे पहुँचना कोई आसान न था
सरहदे अक्ल[१] से गुज़रे तो यहाँ तक पहुँचे

हफीझ होशियारपुरी

मंज़िले इश्क[२] तक न पहुँचा, आह !
मैं तो चलते ही चलते हार गया

बशीर अली अफसोस

हो न हो अब आ गई मंज़िल करीब
रास्ते सुनसान नज़र आते हैं

खुमार बाराबंकवी

मंज़िले गर्द[३] की मानिन्द[४] ऊडी जाती हैं
वही अंदाज़े[५] जहाने-गुज़राँ[६] है कि जो था

फिराक गोरखपुरी

कटते भी चलो, बढ़ते भी चलो, बाज़ू[७] भी बहुत हैं, सर भी बहुत
चलते भी चलो कि अब डेरे मंज़िल ही पे डाले जाएंगे

फैझ अहमद 'फैझ'

मिलते गये हैं मोड़ नये हर मकाम पर
बढ़ती गई है दूरि-ए-मंज़िल जगह जगह

तबस्सुम

गिरा पड़ता हूँ क्यों हर हर कदम पर
इलाही[८], आ गई क्या पास मंज़िल !

मुइन हसन जझबी

---

१. बुद्धि की सीमा २. प्यार की मंझिल ३. धूल ४. समान ५. रीति ६. प्रगतिशील संसार ७. भुजाएं ८. हे ईश्वर

सफर ज़रुर है और ऊज्र की मजाल नहीं
मज़ा तो ये है, न मंज़िल, न रास्ता मालूम

शाद अझीमाबादी

मंज़िले-मकसूद[१] तक पहुँचे बड़ी मुश्किल से हम
झोफ[२] ने अक्सर बिठाया, शौक[३] अक्सर ले चला

दाग़

फरेब[४] खाता है हर हर कदम पे मंज़िल का
वो क्या करे कि न देखा हो जिसने मंज़िल को

वहशत कलकतवी

कभी छोड़ी हुई मंज़िल भी याद आती है राही को
खटक सी है जो सीने में गम-ए-मंज़िल[५] न बन जाये

इकबाल

अर्श-तक[६] तो ले गया था साथ अपने हुस्न को
फिर नहीं मालूम अब खुद इश्क किस मंज़िल में है

असगर गोंडवी

एक पल के रुकने से दूर हो गई मंज़िल
सिर्फ हम नहीं चलते, रास्ते भी चलते हैं

शाहिद सिद्दिकी

नाकामी-ए-किस्मत[७] क्या शै है, क्या चीज़ शिकस्तापाइ[८] है
दो गाम पे मंज़िल है लेकिन, दो गाम[९] भी चलना मुश्किल है

इकबाल सफीपुरी

---

१. लक्ष्य की चरम सीमा २. दुर्बलता ३. अभिलाषा ४. धोखा ५. मंझिल का दुःख ६. सातवें आकाश तक ७. भाग्य की असफलता ८. थकना, हार ९. कदम

सिर्फ इक कदम ऊठा था गलत राह-ए-शौक में[१]
मंज़िल तमाम ऊम्र मुझे ढूँढ़ती रही

अदम

वो भी दिन थे ढूँढ़ती फिरती थी जब मंज़िल को मैं
ढूंढ़ती फिरती है लेकिन आज खुद मंज़िल मुझे

इक खलिश होती है महसूस रग-ए-जाँ[२] के करीब
आन[३] पहुँचे हैं मगर मंज़िल-ए-जानाँ[४] के करीब

हसरत मुहानी

मुहब्बत में कदम रखते ही गुम होना पड़ा मुझको
निकल आई हज़ारों मंज़िलें इक-इक मंज़िल से

जिगर मुरादाबादी

गुज़र जा अक्ल से आगे, कि यह नूर[५]
चिरागे-राह[६] है, मंज़िल नहीं है

इकबाल

खिज्रे-मंज़िल[७] अपना हूँ, अपनी राह चलता हूँ
मेरे हाल पे दुनिया क्या समझ के हँसती है

यगाना चंगेझी

अपने दर्द को गर्द समझ कर मंज़िल-मंज़िल छोड़ दिया
आइने पर धूल जमी है, आइने में देखे कौन ?

अहमद झफर

मैं हवा का हमसफर[८], मंज़िल कहाँ मेरी मगर
तुम जहाँ आवाज़ दे लोगे, ठहर जाऊँगा मैं

मख्मूर सईदी

---

१. लालसा के मार्ग में २. मुख्य रग जिससे सारे शरीर में रक्त पहुँचता है ३. समय ४ माशूक का मुकाम ५. ज्योति ६. मार्ग का दिपक ७. मंझिल का पथप्रदर्शक ८. सह यात्री

सफर लिया है, तो हिम्मत न हार, थक के न बैठ
बहुत करीब है मंज़िल, कदम बढ़ाए जा

आसी उल्दनी

किसीसे मेरी मंज़िल का पता पाया नहीं जाता
जहाँ मैं हूँ, फरिश्तो से वहाँ आया नहीं जाता

मख्मूर देहलवी

मुझे सहल हो गई मंज़िलें, वो हवा के रुख भी बदल गए
तेरा हाथ हाथ में आ गया कि चिराग राह में जल गए

मझरुह सुलतानपुरी

अभी तकमीले-उल्फत[१] पर न दिल मगरुर हो जाये
ये मंज़िल वो है जितनी तय हो उतनी दूर हो जाये

ईज़हार रामपुरी

सर उपर शाम आई अब तलक मंज़िल नहीं पाता
कहाँ बिस्तर बिछाऊँ मैं, किसीका दिल नहीं पाता

मीर सोझ

गझब है जुस्तोजूए-दिल[२] का ये अंजाम हो जाना
कि मंज़िल दूर हो और रास्ते में शाम हो जाना

शेरी भोपाली

किसीको घर से निकलते ही मिल गई मंज़िल
कोई हमारी तरह उम्र भर सफर में रहा

अहमद फराझ

मंज़िले-सुबह आ गई शायद
रास्ते हर तरफ को जाने लगे

महबूब खजाँ

---

१. प्रेम की मूर्ति २. दिल की खोज

मंज़िलें ख्वाब बन के रह जायें
इतना बिस्तर से प्यार मत करना

अशोक'मिझाज' बद्र

मंज़िले-इश्क[१] पे तन्हा पहुँचे, कोई तमन्ना साथ न थी
थक-थक कर इस राह में आखिर इक-इक साथी छूट गया

फानी बदायूनी

ऐ जज़्ब-ए-दिल[२] गर मैं चाहूँ हर चीज़ मुकाबिल[३] आ जाये
मंज़िल के लिये दो गाम[४] चलूँ, और सामने मंज़िल आ जाये

बहज़ाद लखनवी

चले चलो कि चलना ही दलीले-कामरानी[५] है
जो थक कर बैठ जाते हैं वो मंज़िल पा नहीं सकते

सोझ होशियारपुरी

हज़ार नाकामियाँ[६] हो 'नश्तर' हज़ार गुमराहियाँ हों लेकिन
तलाशे-मंज़िल अगर है दिल से, तो एक दिन लाझिमी[७] मिलेगी

हरगोविंद दयाल 'नश्तर'

खुद यकीं होता नहीं जिनको अपनी मंज़िल का
उनको राह के पत्थर कभी रास्ता नहीं देते

गोपाल मित्तल

अल्ला री बेखुदी कि चला जा रहा हूँ मैं
मंज़िल को देखता हुआ, कुछ सोचता हुआ

मुइन हसन जज़्बी

---

१. प्यार का मुकाम २. दिल की भावना ३. प्रत्यक्ष ४. कदम ५. सफलता की युक्ति
६. असफलताएं ७. जरूर

शेख काबे से गया उस तक बिरहमन दैर से
एक थी दोनों की मंज़िल, फेर था कुछ राह का

अमीर मीनाइ

मैं राही सूनी राहों का, मेरी मंज़िल कोई नहीं
मेरे साथ आने से पहले देख लो मेरे छालों को

खलील धनतेजवी

मंज़िलों की दुश्वारी[१], रास्तों के सन्नाटे
है तमाम अंदेशे[२] इक कदम बढ़ाने तक

प्रोफेसर मंशा

उनसे तमन्ना का इज़हार[३] ?
रहज़न[४] से मंज़िल की बात ?

साहिर होशियारपुरी

बस एक कदम पड़ा था गलत, राहे-शौक[५] में
मंज़िल तमाम उम्र हमें ढूँढ़ती रही

तय हुई जाती है, मंज़िल उम्र की
अब सहर, अब दोपहर, अब शाम है

वसीम

१. कठिनाई २. सन्देह ३. जाहिर करना ४. लुटेरा ५. प्रेम मार्ग

याद

शब[1] वही शब हैं, दिन वही दिन हैं
जो तेरी याद में गुज़र जायें

हसरत मुहानी

वो जो हममें तुममें करार[2] था, तुम्हें याद हो कि न हो
वही यानी वादा निबाह का तुम्हें याद हो कि न हो

मोमिन

यूँ याद आओगे हमें इस्ला[3] खबर न थी
यूँ भूल जाओगे हमें वहमो-गुमाँ[4] न था

आझाद अंसारी

जब सुना तुम भी मुझे याद किया करते हो
क्या कहूँ हद न रही कुछ मेरी हैरानी की

हसरत मुहानी

एक-एक नफस[5] में रौशनी है
यादों के चिराग जल रहे हैं

शायर लखनवी

तुम्हारी याद से शीरीं[6] है तल्खी-ए-अय्याम[7]
सलाम लिखता है शायर तुम्हारे हुस्न[8] के नाम

फैझ अहमद फैझ

हम ही में थी न कोई बात, याद न तुमको आ सके
तुमने हमें भुला दिया, हम न तुम्हें भुला सके

हफीझ जालंधरी

---

१. रात २. प्रतिज्ञा ३. बिलकुल ४. शंका और अनुमान ५. साँस ६. मधुर ७. समय की कड़वाहट ८. खूबसूरती

याद में तेरी जहाँ को भूलता जाता हूँ मैं
भूलने वाले कभी तुझको भी याद आता हूँ मैं

आगा शायर

हम तो उसीको खुदा समझते हैं
जो मुसीबत में याद आ जाये

असर लखनवी

सुहबतें अगली जो याद आती हैं, जी कटता है
कोई पूछे भी तो कहते हैं हमें याद नहीं

पं. दत्तात्रय कैफी

याद कर ले भूलने वाले मेरे
अब तो बिछुड़े एक मुद्दत हो गई

असर लखनवी

तुम जो याद आये तो सारी कायनात[१]
एक भूली-सी कहानी हो गई

असर लखनवी

वो गये दिन जब तड़पता था मैं उनकी याद में
याद में अब तो खुद अपनी उनको तड़पाता हूँ मैं

बहज़ाद लखनवी

अब इस फिक्र में रात दिन कट रहे हैं
तुझे भूल जायें कि खुद को भुला दें

शफक टोंकी

अव्वल[२] तो यह कि नींद न आये तमाम रात
फिर उस पर उनकी याद सताये तमाम रात

शमीम जयपुरी

---

१. दुनिया २. पहला

तुम्हीं उस वक्त याद आते हो
जब कोई आसरा नहीं होता

सीमाब अकबराबादी

मेरा दामन से लिपटना आप शायद भूल जायें
मुझको अब तक आप का दामन छुड़ाना याद है

नख्शब जारचवी

मेरे परदेसियों, सीखी है ये किस देस की रीत
जो तुम्हें याद करे, उसको न तुम याद करो

अख्तर शीरानी

उनको मैं किस तरह भुलाऊँ 'निझाम'
याद किस बात पर नहीं आते !

निझाम रामपुरी

कोई चुटकी सी कलेजे में लिये जाता है
हम तेरी याद से गाफिल[१] नहीं होने पाते

फानी बदायूनी

न गरज़ किसीसे न वास्ता[२], मुझे काम अपने ही काम से
तेरे ज़िक्र[३] से, तेरी फिक्र से, तेरी याद से, तेरे नाम से

जिगर मुरादाबादी

बंसरी बज रही थी दूर कहीं
रात किस दरजा याद आए हो तुम

बिल्कीस राना

याद उस की इतनी खूब[४] नहीं 'मीर' बाज़ आ[५]
नादान, फिर वो जी से भुलाया न जाएगा

मीर

---

१. बेखबर २. संबंध ३. चर्चा ४. अच्छी ५. छोड़ना

कहीं ये अपनी मुहब्बत की इन्तहा[१] तो नहीं
बहुत दिनों से तेरी याद भी नहीं आई

अहमद राही

अब करके फरामोश[२] तो नाशाद[३] करोगे
पर हम जो न होंगे तो बहुत याद करोगे

मीर

याद अव्वल[४] तो अब आती ही नहीं उसकी 'शउर'
और आती है तो सीने में लगा देती है आग

अनवर शउर

कितने नादाँ हैं तेरे भूलने वाले कि तुझे
याद करने के लिए उम्र पड़ी हो जैसे

अहमद फराज

आज सब में घुल-मिल जाऊं, मुझको क्या खबर कल तक
किसको याद आऊँ मैं, किसको भूल जाऊँ मैं

जाफर शीराझी

फिर ये कैसी कसक सी है दिल में
तुझको मुद्दत हुई कि भूल चुका

फिराक गोरखपुरी

सच है 'निझाम' याद भी उसको न होंगे हम
पर क्या करें वो हमसे भुलाया न जायगा

निझाम रामपुरी

यह इल्म का सौदा, यह रिसाले, यह किताबें
एक शख्स की यादों को भुलाने के लिये हैं

जाँनिसार अख्तर

---

१. चरमसीमा, अंत २. विस्मृत ३. दुःखी ४. पहला

जाते हो तो जाओ, मुड़कर न देखो उस तरफ
यह सितम हम पर न ढाओ याद आने के लिए

वज़ीर

नहीं आती तो याद उनकी महीनों तक नहीं आती
मगर जब याद आते हैं तो अक्सर[१] याद आते हैं

हसरत मोहानी

भुलाई नहीं जा सकेंगी ये बातें
बहुत याद आएंगे हम, याद रखना

हफीझ जालंधरी

तुम जिसे याद करो, फिर उसे क्या याद रहे
न खुदाई[२] की हो परवा, न खुदा याद रहे

जौक

याद आओ मुझे लिल्लाह[३], न तुम याद करो
मेरी और अपनी जवानी को न बर्बाद करो

अख्तर शीरानी

मुझे याद है अपना अंजाम नासेह[४],
मैं एक रोज मर जाऊंगा, बस यही ना

हफीझ जालंधरी

भूल कर भी कभी न याद किया
हम तेरे जी से ऐसे भूल गये

झीयाउद्दीन झीया

दिल धड़कने का सबब[५] याद आया
वो तेरी याद थी, अब याद आया

नासिर काझमी

---

१. प्रायः २. संसार ३. खुदा के लिये ४. उपदेशक ५. वजह

तबीयत अपनी जब घबराती है सुनसान रातों में
हम ऐसे में तेरी यादों की चादर तान लेते हैं

फिराक गोरखपुरी

जब तुझे याद कर लिया, सुबह महक-महक ऊठी
जब तिरा गम जगा लिया, रात मचल-मचल गई

फैज़ अहमद फैज़

अब तुम्हारी याद से पड़ते हैं यूँ दिल में भँवर
जैसे फेंक दे कोई भरे तालाब में पत्थर

कतील शिफाई

हो सकता है कुछ देर को आ जाए तेरी याद
वर्ना वही तनहाई[१] का आलम[२] है बदस्तूर[३]

गुलाम रब्बानी 'ताबाँ'

तुमने किया न याद कभी भूल कर हमें
हमने तुम्हारी याद में सब कुछ भुला दिया

बहादुरशाह 'ज़फर'

यादों का एक हुजूम[४] है इस दिल के आसपास
मैं बीते वाकिआत[५] का एहसानमंद हूँ

'बर्क'

मालूम हुआ हमको जब रुठ गई हमसे
यादें भी पराई थीं, जागीर न थी अपनी

शह्‌रयार

तर्के-उल्फत को ज़माना हुआ लेकिन ऐ दोस्त
दिल में यादों के चिराग अब भी जला करते हैं

नसीम शाहजहानपुरी

---

१. अकेलापन २. दशा ३. नियमानुसार ४. भीड़भाड़ ५. घटनाओं का

किसी की याद में दहलीझ[1] पर दीये न रखो
किवाड सूखी हुई लकडियों के होते हैं

बशीर बद्र

दिल की चोटों ने कभी चैन से सोने न दिया
जब चली सर्द हवा, मैंने तुझे याद किया

जोश मलिहाबादी

मुसाफिर राह में है, शाम गहरी होती जाती है
सुलगता है तेरी यादों का बन आहिस्ता-आहिस्ता

शाझ तमकनत

तुम भूल कर भी याद नहीं करते हो कभी
हमने तुम्हारी याद में सब कुछ भुला दिया

जौक

याद में जिसकी भुलाया सब कुछ
उसकी मैं याद भुलाऊँ क्योंकर

शेफता

जाते हो खुदा हाफिझ, हाँ, इतनी गुझारिश है
जब याद हम आ जायें, मिलने की दुआ करना

जलील मानिकपुरी

मुद्दतें गुजरीं तेरी याद भी आयी न हमें
और हम भूल गये हों तुझे, ऐसा भी नहीं

फिराक गोरखपुरी

फिर आज खेल रहा हूँ पुरानी यादों से
यही तो आखिरी कोशिश है भूल जाने की

अहमद नदीम कासमी

---

१. देहली/द्वार

मिल कर जुदा हुए तो न सोया करेंगे हम
एक दूसरे की याद में रोया करेंगे हम

कतील शिफाई

इतना तो मुझे याद है कुछ उसने कहा था
क्या उसने कहा था यह मुझे याद नहीं है

असगर गौंडवी

हमारी याद भुला कर वो चल दिये 'अख्तर'
और अपनी याद फकत यादगार छोड़ गये

अख्तर शीरानी

जिसको तुम भूल गये याद करे कौन उसे
जिसको तुम याद हो वो और किसे याद करे

जोश मलिहाबादी

याद एक जख्म बन गई है वर्ना
भूल जाने का कुछ खयाल तो था

अदम

कर रहा था गम-ए-जहाँ[१] का हिसाब
आज तुम याद बेहिसाब आये

फैज़ अहमद फैज़

अब बुझा दो यह सिसकते हुए यादों के चिराग
इनसे कब हिज्र[२] की रातों में ऊजाला होगा

रहमान

---

१. दुनिया के दुःख २. विरह

उसको भूल कर भी जिसने की न बात कभी
बगैर याद किये कट न सकी रात कभी

आनंदनारायण मुल्ला

तुम गैर के घर बैठ के दिल शाद करोगे
हम कौन हैं साहब हमें क्यों याद करोगे ?

झफर

आता नहीं खयाल अब अपना भी ऐ 'जलील'
इक बेवफा की याद में सब कुछ भुला दिया

जलील मानिकपुरी

सब्र कर लेंगे तेरी याद में रोने वाले
झिलमिला जाते हैं इन्सान की यादों के चिराग

गरझ कि काट दिये ज़िंदगी के दिन ऐ दोस्त
वो तेरी याद में हों या तुझे भुलाने में

फिराक गोरखपुरी

उनका जिक्र, उनकी तमन्ना, उनकी याद
वक्त कितना क़ीमती है आज कल

शकील बदायूनी

गुज़ारी थी खुशी की चंद घड़ियाँ
उन्हीं की याद अपनी ज़िंदगी है

अंदलीब शादानी

यह भीगी रात और यह बरसाती हवाएँ
जितना भुला रहा हूँ, वो याद आ रहे हैं

असर लखनवी

ऊजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो
न जाने किस गली में ज़िंदगी की शाम हो जाए

बशीर बद्र

उनकी याद, उनकी तमन्ना, उनका गम
कट रही है ज़िंदगी आराम से

कतील शिफाइ

तुम्हारी याद के ज़ख्म जब भरने लगते हैं
किसी बहाने तुम्हें याद करने लगते हैं

फैझ अहमद फैझ

तुम आ गये जब याद तो कुछ भी न रहा याद
कब तुमने भुलाया मुझे कब तुमने किया याद

जगन्नाथ आझाद

मैं आज सिर्फ मुहब्बत के गम करूँगा याद
ये और बात है कि तेरी याद आ जाए

फिराक गोरखपुरी

भुलाना हमारा मुबारक मुबारक
मगर शर्त ये है न याद आईयेगा

जिगर मुरादाबादी

मैं अपने दिल से मिटा दूँगी तेरी याद मगर
तू अपने झेहन[१] से पहले निकाल दे मुझको

झरीना सानी

१. बुद्धि/दिल

दुनिया ने तेरी याद से बेगाना[१] कर दिया
तुझसे भी दिलफरेब[२] हैं गम रोझगार के

फैझ अहमद 'फैझ'

तेरे जिक्र[३] ने, तेरी फिक्र[४] ने, तेरी याद ने वो मज़ा दिया
कि जहाँ मिला कोई नक्शे-पा[५] वहीं हमने सर को झुका दिया

बहझद लखनवी

वो बात ही न जाने क्यों याद है अभी तक
जो बात मैंने अपने दिल से निकाल दी थी

अल्फ अहमद बर्क

तेरी याद में जो मैं खो गया तो कभी-कभी मुझे यों लगा
मेरी ज़िंदगी मेरे पास से दबे पाँव जैसे गुज़र गई

खुमार बाराबंकवी

हाँ, मुझे भी चंद साँसों की ज़रूरत है मगर
उसकी यादों के एवझ[६] सौदा बड़ा महँगा लगे

असलम कौलसरी

जिसे आप कहते थे आशना जिसे आप कहते थे बावफा
मैं वही हूँ 'मोमिन'-ए-मुब्तला[७], तुम्हें याद हो कि न याद हो

मोमिन

रात यों दिल में तेरी भूली हुई याद आई
जैसे वीरानों में चुपके से बहार आ जाये

फैझ अमहद 'फैझ'

---

१. अजनबी २. मोहक ३. चर्चा ४. ध्यान ५. पैर की आकृति ६. बदले में ७ तुम्हारा प्रेमी मोमिन

भुलाता लाख हूँ लेकिन बराबर याद आते हैं
इलाही ! तर्के-उल्फत[१] पर वो क्यों कर याद आते हैं

हसरत मुहानी

करूँ न याद मगर किस तरह भुलाऊँ उसे
ग़ज़ल बहाना करूँ और गुनगुनाऊँ उसे

अहमद फराझ

कोई याद आये हमें, कोई हमें याद करे
और सब होता है, ये किस्से नहीं होते है

जावेद अख्तर

उनकी यादें भटक न जाए कहीं
दिल की दहलीझ[२] पर दीया रखना

खलील धनतेजवी

रश्क[३] से नाम नहीं लेते कि सुन ले न कोई
दिल ही दिल में हम उसे याद किया करते हैं

नासिख

आयेगा दिन कि याद करोगी मुझे यूँ ही
जिस तरह तुमको याद किये जा रहा हूँ मैं

यावर अली

आप जब-जब याद आती हैं, अमाँ[४]
चंद काँटे रोज चुभते हैं, अमाँ

चिनु मोदी 'इर्शाद'

---

१. प्यार का त्याग २. देहली ३. ईर्ष्या ४. अम्मा, माँ

राज़ (रहस्य, भेद)

एक ऐसा राज़ दिया है मुझे छुपाने को
जिसे वो चाहें तो खुद भी छुपा नहीं सकते

मुइन हसन जझबी

राज़ उनके खुले जाते हैं एक एक सभों पर
और उसपे तमाशा है कि मैं कुछ नहीं कहता

पं. दत्तात्रेय कैफी

राज़े माशूक न रुस्वा[१] हो जाये
वरना मर जाने में कुछ भेद नहीं

दाग़

हुजूमे[२] शौक[३] है दिल में मगर खामोश रहते हैं
छुपाया था ये हमने राज़ तुमसे, आज कहते हैं

हसरत मुहानी

शुक्रिया पुरसिशे-गम[४] का, मगर इसरार[५] न कर
पूछने वाले, ये तेरा ही कहीं राज़ न हो

अन्दलीब शादानी

आँख में आँसू लब पे खामोशी
दिल की बात अब राज़ कहाँ ?

माहिर-ऊल-कादरी

क्यों कर हुआ है फाश[६] ज़माने पे क्या कहें ?
वो राज़े-दिल[७] जो कह न सके राज़दाँ[८] से हम

मजाझ

---

१. बदनाम २. भीड़भाड़ ३. लालसा ४. दुःख का हाल पूछने का ५. हठ ६. प्रकट
७ हृदय का रहस्य ८. भेद जानने वाला

हल कर लिया मजाझो-हकीकत[१] के राज़ को
पाई है मैंने ख्वाब में ताबीर[२] ख्वाब की

असगर गोंडवी

हज़रते 'आज़ाद' आप और इत्तका[३]
काश ! ज़ाहिर हो कि ये क्या राज़ है

आज़ाद अंसारी

राज़े-हकीकत[४] जानने वाले देखिए अब क्या कहते हैं
दिल को हम अपना दिल नहीं कहते, उनकी तमन्ना कहते हैं

फानी बदायूनी

तेरी नज़र में रह के इक राज़ बन गया था,
गिरकर तेरी नज़र से अफसाना हो गया हूँ

मुइन हसन जइबी

सबब[५] हर एक मुझसे पूछता है मेरे रोने का
इलाही[६], सारी दुनिया को मैं क्यों कर राज़दाँ[७] कर लूँ ?

ताजवर नझीबाबादी

तूने ये क्या गज़ब किया ! मुझको भी फाश[८] कर दिया
मैं ही तो एक राज़ था सीना-ए-कायनात[९] में

इकबाल

अपनी मुहब्बत के अफसाने[१०] कब तक राज़ बनाओगे ?
रुस्वाई[११] से डरने वालों बात तुम्हीं फैलाओगे

अहमद फराझ

---

१. मायारुप और तथ्य २. सपने का फल ३. आत्म नियंत्रण ४. तत्त्व का भेद
५. वजह ६. ईश्वर ७. रहस्य ज्ञाता ८ प्रकट ९. दिल की दुनिया १०. कथाएँ ११. बदनामी

क्यों हम से छिपाते हो तुम राज़ की बातें
हम तुमसे किसी बात का पर्दा नहीं करते

शैदा बेगम

जिसको खबर नहीं, उसे जोशो-खरोश[१] है
जो पा गया है राज़, वो गुम है, खामोश है

पं ब्रजमोहन 'कैफी'

जबाँ पे आह जो आई तो हँस के टाल दिया
किसीके इश्क का अफसाना मैंने राज़ किया

शाद अझीमाबादी

तुझको अपनी खबर नहीं ऐ 'जोश'
तू खुदाई के राज़[२] क्या जाने ?

जोश मलसियानी

उनसे मिल कर मैं उन्हींमें खो गया
और जो कुछ है, वह आगे राज़ है

नूह नारवी

भरी बज़्म में राज़ की बात कह दी
बड़ा बेअदब हूँ सजा चाहता हूँ

इकबाल

खुल गया मेरी ज़िन्दगी का राज़
ऐ शबे-हिज्र[३] तेरी उम्र दराज़[४]

फानी बदायूनी

किस-किसका राज़ अब तुम्हें बतलायें हम जनाब
हर शख्स ने रखा है पहने चेहरे पे नकाब

हमीद बलोच अलामी

---

१. तपाक और आवेश २. सृष्टि का भेद ३. विरह की रात ४. तेरी आयु लम्बी हो

राज़ तेरा छुपा नहीं सकता
मुझे तू अपना राज़दाँ[१] न बना

मजाझ

राहबर–रहनुमा (मार्गदर्शक)

चलता हूँ थोड़ी दूर हर एक तेज़ रौ[२] के साथ
पहचानता नहीं हूँ अभी राहबर को मैं

ग़ालिब

तनहा[३] उठा लूँ, मैं भी जरा लुत्फे–गुमरही[४]
ऐ रहनुमा[५], मुझे मेरी किस्मत पे छोड़ दे

हूमायूँ शाह

रहनुमाओं से यही हमने सबक सीखा है
दूर मंज़िल हो अगर, तेज़ चला करते हैं

'फलक'

राहबर, रहज़न[६] न बन जाए कहीं इस सोच में
चुप खड़ा हूँ भूल कर रास्ते में मंज़िल का पता

आरझू लखनवी

हम सरे–राह लूट गये और सफर से क्या मिला,
वो जो था अपना राहबर, रहजनों से जा मिला

शबाब

---

१. रहस्य जानने वाला २. तेज चलने वाला ३. अकेला ४. भुलाने का आनंद
५. पथ–प्रदर्शक ६. लुटारा

मंज़िल तो मेरे अपने इरादों के साथ है
रहबर मिले, न अब कोई नक्श-ए-कदम[१] मिले

उस्मान आरिफ

हम जानते हैं शायद यह रहज़न है फिर भी
कुछ राहबर अभी तक बाकी हैं कारवाँ में

शाद अझीमाबादी

ठहरा गया है लाके जो मंज़िल में इश्क की
क्या जाने रहनुमा था, कि रहज़न था, कौन था

आगाहज्जो शरफ

जिस जगह से ले चला था राहबर
हम वहीं फिर आ गये हैं घूम के

सीमाब अकबराबादी

मुझे तलाश है उस रहनुमा की मुद्दत से
जो राह भूल गया, रास्ता दिखा के मुझे

अफझल'एहसन'

इस फासलों के दश्त[२] में रहबर वही बने
जिसकी निगाह देख ले सदियों के पार भी

शकेब जलाली

कैसे कैसे हैं रहबर हमारे
कभी इस किनारे, कभी उस किनारे

राझ इलाहाबादी

चाहूँ तो अब भी जानिबे-मंज़िल[३] पलट चलूँ
गुमराह[४] इसलिये हूँ कि रहबर खफा[५] न हो

रंगीन

---

१. पैरों का निशान २. जंगल ३. मुकाम की ओर ४. जो रास्ता भूल गया हो ५. नाराझ

तमाम लोग अकेले थे, राहबर ही न था
बिछड़ने वालों मे इक मेरा हमसफर ही न था

परवीन शाकिर

अपने रहनुमा है कि मंज़िल तो दरकिनार[१]
काँटे रहे-तलब में बिछाते चले गये

असर लखनवी

हमसफर[२] है चाँद-सूरज काफिला बन जायेगा
आगे चल कर रास्ता ही रहनुमा बन जायेगा

सुहैल जाफर

न आने दिया राह पर रहबरों ने
किये लाख मंज़िल ने हमको इशारे

अर्श मल्सियानी

रहज़न[३] हो तो हाज़िर है मताए-दिलो-जाँ[४] भी
रहबर हो मंज़िल का पता क्यूँ नहीं देते ?

अहमद फराझ

दो गाम[५] पे तुम खुद से बिछड़ जाते हो 'खुर्शीद'
और लोग समझते हैं तुम्हें राहबरों में

खुर्शीद रिझवी

एक भी तो दिखाओ मंज़िल पर
जिसको देखा हो रहनुमा के सिवा

हफीझ जालंधरी

रहबर ने रहज़न से बढ़ाई है दोस्ती
मंज़िल पे आके लूटने का इम्काँ[६] अभी से है

निशात सइदी

---

१. एक तरफ, दूर २. दोस्त ३. लुटेरा ४. दिल और जान की दौलत ५. डग, कदम ६. संभावना

मेरे राहबर मुझको गुमराह[१] कर दे
सुना है कि मंज़िल करीब आ गई है

खुमार बाराबंकवी

अब अपना इख्तियार है चाहें जहाँ चलें
रहबर से अपनी राह जुदा कर चुके हैं हम

फैझ अहमद फैझ

कदम कदम पे जहाँ बेशुमार राहबर हैं
मुसाफिरों को वहाँ किसपे एतबार आए ?

राहबरों की भूल थी या रहबरी का मुद्दआ
काफिलों को मंज़िलों के पास भटकाते रहे

अली सरदार जाफरी

यकीनन[२] रहबरे-मंज़िल कहीं पर रास्ता भूला
वगरना काफिले-के-काफिले गुम हो नहीं सकते

निसार इटावी

तमीज़े[३] रहबरो-रहज़न[४] करो न आज के दिन
हर एक से हाथ मिलाओ कि जश्न[५] का दिन है

प्रो. मंशा

जनाज़ा कहता जाता है बराबर काँधे वालों से
मेरे पीछे चले आओ, तुम्हारा रहनुमा मैं हूँ

'बेदिल'

---

१. पथभ्रष्ट २. निश्चित ३. विवेक ४. पथ-प्रदर्शक और लुटारा ५. उत्सव

उन्हीं को हम जहाँ में रहबरे-कामिल[1] समझते हैं
जो हस्ती को सफर और कब्र को मंज़िल समझते हैं

बर्क

तमाम जादे-सफर[2] रास्ते में लुट जाता
खुदा ने खैर किया, कोई रहनुमा न मिला

राझ इलाहाबादी

मुद्दत के बाद पहुँचे हैं ऐ राहबर जहाँ
मेरा क्यास[3] है कि चले थे वहीं से हम

अकबर फर्रुखाबादी

मंज़िलों से नावाकिफ, रास्तों से अनजाने
कैसे कैसे लोगों को रहबरी का चक्कर है

जलील साझ

क्यों किसी रहबर से पूछुँ अपनी मंज़िल का पता
मौजे-दरिया[4] खुद लगा लेती है साहिल[5] का पता

आरझू लखनवी

रिश्ता (संबंध)

अपने ही खून में देखी है सफेदी जब से
उठ गया खून के रिश्ते से अकीदा[6] मेरा

शमीम तारिक

१. पूर्ण पथप्रदर्शक २. रास्ते का भोजन ३. अनुमान ४. नदी की लहरें
५. किनारा, तट ६. आस्था

तज़किरा[१] अपनी तबाही का करूँ भी किससे
लूटने वाले सभी अपने अकारिब[२] निकले

बेकल उत्साही

तुम ही कातिल, तुम ही मुख्बिर[३], तुम ही मुंसिफ[४] ठहरे
अक्रिबा[५] मेरे करें, खून का दावा किस पर ?

हसरत मोहानी

छोड़ के संघर्षों के झंझट, तोड़ के आशा के रिश्ते
गौतम बरगद के साए में बैठा है संन्यास लिए

रिफअत सरोश

मिली हवाओं में उड़ने की वो सज़ा यारो
मैं ज़मीन के रिश्तों से कट गया यारो

वसीम बरेलवी

तमाम रिश्तों को मैं घर पे छोड़ आया था
फिर उसके बाद मुझे कोई अजनबी न मिला

बशीर बद्र

दिल के रिश्ते ही गिरा देते हैं दीवारें भी
दिल के रिश्तों को ही दीवार कहा जाता है

कुछ वो खिंचे खिंचे रहे, कुछ हम तने-तने
इस कश्मकश[६] में टूट गया रिश्ता चाह का

टूटता फिर क्यों नहीं दुश्मनी का सिलसिला
तुम अगर कहते हो, हर रिश्ते की इक मीयाद[७] है

वज़ीर आगा

१.चर्चा २. सगे संबंधी ३. भेदिया ४. न्याय करने वाला ५. स्वजन ६. खींचातानी ७. अवधि

चला लेते हैं हम, तो चलते हैं रिश्तें
वरना, बिखरते, पिघलते हैं रिश्तें

आमीन झीणा

न सोचे हों हमने, न समझे हों हमने
कभी ऐसे ऐसे निकलते हैं रिश्तें

आमीन झीणा

न करना भरोसा कभी इनका 'आमीन'
ये ठंड़े कलेजे से छलते हैं रिश्ते

आमीन झीणा

किसी भी रिश्ते को नज़दीक से न देखो तुम
पहाड़ दूर से अच्छा दिखाई देता है

खलील धनतेजवी

कोई रिश्ता नहीं रखा उसने
फिर भी कहता है, आपका हूँ मैं

खलील धनतेजवी

अगर तुमको नहीं रखना है कुछ भी रिश्ता मुझसे
तो अपना तसव्वुर[१] भी मुझसे लेकर ऐ हसीं जाओ

अनवर आगेवान

घर की तक्सीम[२] वसीयत के मुताबिक होगी
फिर भी क्यों अपने सगे भाई से डर लगता है

मेराज अहमद

भाईयों से उमीद क्या रखिये
हाल मालूम है हुमायूँ का

जगदीश भटनागर 'हयात'

---

१. कल्पना, ख्याल २. बँटवारा

रुसवाई (बदनामी)

मेरी रुसवाई का हाल ऐ दावरे-महशर[१] न पूछ
मैं भरी महफिल में यह किस्सा सुना सकता नहीं

जोश मल्सियानी

कैसे कह दूँ कि मुझे छोड़ दिया है उसने
बात तो सच है, मगर बात है रुसवाई की

परवीन शाकिर

हो गई शहर-शहर रुसवाई
ऐ मेरी मौत तू भली आई

मीर

तेरी रुसवाई का है डर वर्ना
दिल के जज़बात तो महदूद[२] नहीं

मुइन हसन जझ्बी

सारी दुनिया यह समझती कि सौदाई[३] है
अब मेरा होश में आना तेरी रुसवाई है

मुहम्मद अली 'जौहर'

हो गई घर में खबर, है मना वाँ[४] जाना हमें
वो भी हो रुसवा खुदा जिसने किया रुसवा हमें

मोमिन

खूब रुसवा-ए-ज़माना हम हुए
दिल लगाने की नसीहत हो गई

बेदम

---

१. न्यायकर्ता ईश्वर २. सीमित ३. पागल ४. वहाँ

'कमर' जरा भी नहीं तुमको खौफ-ए-रुसवाई[१]
चले हो चाँदनी शब में उन्हें बुलाने को

कमर जलालवी

होंगे बदनाम तो हो लेने दो
हमको जी खोल के रो लेने दो

अज़ीझ लखनवी

आप रुसवाई के डर से नहीं मिलते हैं तो क्या
लेकिन अब मिल के न मिलने में भी रुसवाई है

शकील बदायूनी

वो तो बदनाम ही करने पे तुले थे मुझको
मेरी रुसवाई ने शोहरत[२] भी दिला दी है मुझे

खलील धनतेजवी

रुसवाई से क्यूं डरते हैं इस दौर के आशिक
हम भी तो तेरे इश्क में बदनाम रहे हैं

फिराक गोरखपुरी

हम डुबो आये स्वयं अपनी ही कश्ती 'राही'
तू तो बेकार ही बदनाम हुई जाती है

बाल स्वरुप राही

नेकनामी से मेरी खुश कौन है ?
क्या बुरा था मैं अगर बदनाम था !

खलिश कादरी

ऐ दोस्त, कोई मुझसा रुसवा न हुआ होगा
दुश्मन के भी दुश्मन पर ऐसा न हुआ होगा

मीर

---

१. बदनामी का डर २. प्रसिद्धि

हुए हम जो मरके रुसवा, हुए क्यों न गर्क-ए-दरिया[१]
न कभी जनाज़ा[२] उठता, न कहीं मज़ार[३] होता

ग़ालिब

दिल गया, रुसवा हुए, आखिर को सौदा[४] हो गया
इस दो रोज़ा जीस्त[५] में, हमपे भी क्या-क्या हो गया

मीर

मेरे हाल-ए-दिल की किस सूरत में रुसवाई हुई
रोक ली ज़ालिम ने होठों पर हँसी आई हुई

माहिर उल-कादरी

चाह की चितवन मिरी, आँख उसकी शरमाई हुई
ताड़ ली मजलिस में सब ने सख्त रुसवाई हुई

दाग़

नादाँ नहीं जो अपने को रुसवा करे कोई
दिल ही न बस में होवे तो फिर क्या करे कोई

इश्क करता हूँ मै माशूक से दानाई[६] का
ध्यान रहता है मुझे उसकी भी रुसवाई का

इश्क चाहता है में रुसवा ही करूँ आशिक को
शर्म कहती है न इस बात का चर्चा होवे

मुझको एहसास हुआ जब तेरी रुसवाई का
रुक गया हाथ मेरा जा के गिरेबाँ के करीब

तबस्समु देहलवी

---

१. नदी में डूबना २. लाश ३. कब्र ४. पागलपन ५. जीवन ६. अक्लमन्दी

आप ही के तो इशारे से हर इक काम हुआ
छुप गये आप तो मैं मुफ्त में बदनाम हुआ

बेखुद देहलवी

बदनाम कौन होगा अगर मर गया 'निझाम'
तुम जानते हो, कोई उसे जानता नहीं

निझाम रामपुरी

ऐ दाग़ ! सब ये हज़रते-दिल के फुतूर[१] है
जो कुछ किया जनाब ने रुसवा किया मुझे

दाग़

अच्छा है उनसे कोई तकाज़ा किया न जाए
अपनी नज़र में आपको रुसवा किया न जाये

जाँनिसार अख्तर

पहले-पहल का इश्क अभी याद है 'फराझ'
दिल खुद ये चाहता था कि रूसवाईयाँ भी हो

अहमद फराझ

अपनी रुसवाई का गम था हमें, वो दिन गये
अब तो ये गम है कि ऐसी फिर न रुसवाई हुई

नातिक गुलावटी

वो कितना होशमंद था जो मेरे नाम से
मशहूर खुद हुआ, मुझे रुसवाई दे गया

कतील शिफाई

इतना भी क्या 'शेरी' से तकल्लूफ[२]
ऐसा तो वो बदनाम नहीं है

शेरी भोपाली

१. उपद्रव २. शिष्टाचार

अहले-दिल को याद सदियाँ, आएगा मेरा जुनूँ[१]
शोहरतें होंगी फना, रुसवाईयाँ रह जायेगी

हसन नइम

मैं फकत इस जुर्म में दुनिया में रुसवा हो गया
मैंने जिस चेहरे को देखा, तेरे जैसा हो गया

अफझल मिन्हास

जिस जगह बैठे, मेरा चर्चा किया
खुद हुए रुसवा, मुझे रुसवा किया

दाग़

हम तालिबे शुहरत[२] हैं हमें नंग[३] से क्या काम ?
बदनाम अगर होंगे तो क्या नाम न होगा ?

शेफ्ता

नाम मेरा सुनते ही शरमा गये
तुमने तो खुद आपको रुसवा किया

नसीम देहलवी

जो मुझको बदनाम करे हैं काश वे इतना सोच सकें
मेरा परदा खोले हैं या अपना परदा खोले हैं

फिराक गोरखपुरी

---

१. उन्माद २. प्रसिद्धि के इच्छुक ३. बदनामी

रुठना मनाना

एक बात भला पूछें किस तरह मनाओगे
जैसे कोई रुठा है और तुमको मनाना है

असर लखनवी

तुम रुठ जाओ हमसे तो हम मिन्नतें करें
हम रुठ जायें तुमसे तो हमको मनाये कौन ?

दाग़

रुठकर बैठे हो उनसे किस तवक्को पर[१] निझाम
होश में आओ, वो आएँगे मनाने के लिए ?

निझाम शाह

रुठने का लुत्फ[२] ये है, रुठिये, मान जाईये
रुठते हैं आप लेकिन रुठना आता नहीं

हिज्र

वस्ल की[३] रात है, पहले से बता दो हमको
तुम किसी बात पे रुठो तो मनाएँ क्यों कर ?

मिझाँ हादी 'रुसवा'

कहता है मुबारक, कोई कहता है सलामत
है रुठकर मिलना भी मुलाकात मज़े की

निसार देहलवी

आप रुठे हैं, खुदा तो नहीं रुठा हमसे
अपने बन्दों का है वो पूछने वाला कैसा ?

कैसर

---

१. आशा पर २. आनंद ३. मिलन की

कुछ खबर भी है रुठने वाले
ज़िन्दगी रुठती है 'फानी' से

फानी बदायूनी

मान लो तुमसे रुठ जाए कोई
तुम भला किस तरह मनाओगे ?

फिराक गोरखपुरी

ले चला जान मेरी रुठकर जाना तेरा
ऐसे आने से तो बेहतर था न आना तेरा

दाग़

ये गुस्ताखी, ये छेड अच्छी नहीं है, ऐ दिले-नादाँ
अभी फिर रुठ जाएँगे, अभी वो मान के बैठे हैं

दाग़

रुठने को तो चले रुठ के हम उनसे वले[१]
मुड़ के तकते थे कि अभी कोई मनाकर ले जाए

मजनूँ

आप से रुठ कर 'उम्मीद' कहाँ जाएँगे ?
बिन बुलाये अभी आते हैं, मनाना कैसा ?

उम्मीद

वो मुझसे बेतरह रुठा था लेकिन मैंने उसे गोया
मनाया लाख मिन्नत से, खुशामद से, समाजत[२] से

उन्हें मालूम है, हमको मनाना खूब आता है
इसी कारण वो हमसे रुठ कर, हमको सताते हैं

शमशेर हैदराबादी

---

१. लेकिन र. विनय

रुठकर तो अक्सर मिले हैं यार से,
हो चुके हैं ऐसे झगड़े बार-बार

छेड़ कैसी, बात कहते रुठ जाते हैं 'रियाझ'
इक हसीं हर वक्त हो उनको मनाने के लिए

रियाझ खैराबादी

हाय उस शोख[१] का वो रुठ के जाना बगरुर[२]
और अब यह कहना हमें अब न मनाये कोई

मसरुफ

जाना वहाँ का आपसे हाँ छुट चुका 'निझाम'
यों रुठना तो आपका सौ बार हो चुका

निझाम रामपुरी

मिरा सर उनके कदमों पर है, वो दामन छुड़ाते हैं
इलाही[३] किस तरह दुनिया में रुठों को मनाते हैं

हसन बरेलवी

वो बरसों से खफा थे, मुद्दतों से रुठे थे
खुदा का शुक्र है अब तो रसाई[४] होती जाती है

अकबर मैरठी

रात भर रुठे रहे, खूब मुझे तड़पाया
अब तो मिल जाओ गले से कि सहर[५] होती है

न बन पड़ा कोई उज्रे-जफा[६] किसीसे तो हाय
अदा वो याद है, घबरा के रुठ जाने की

फानी बदायूनी

---

१. चंचल २. गर्व के साथ ३. अल्लाह ४. पहुँच ५. सुबह ६. अत्याचार का कारण

न मने रुठ के शब को किसी तदबीर के साथ
वो भी बिगड़े रहे बिगड़ी हुई तकदीर के साथ

जलाल

पहले इसमें इक अदा थी, नाज़ था, अन्दाज़ था
रुठना अब तो तेरी आदत में शामिल हो गया

आगा शायर किज़िलबाश

रुठे हुए थे आप कई दिन से, मन गये
बिगड़े हुए तमाम मेरे काम बन गये

हफीझ जौनपुरी

या तो बिगड़े हुए तेवर मेरे पहचान गये
या तो कुछ बात ही ऐसी थी कि झट मान गये

हफीझ जौनपुरी

बिगड़े न बात-बात पे क्यों, जानते हैं वो
हम वो नहीं कि हमको मनाया न जाएगा

हाली

आ देख मुझसे रुठने वाले तेरे बगैर
दिन भी गुज़र गया, मेरी शब[१] भी गुज़र गई

बाकी सिद्दीकी

सुबह से शाम हुई, रुठा हुआ बैठा हूँ
कोई ऐसा नहीं, आकर जो मना ले मुझको

मुहसिन एहसान

रुठ कर वो चले गये हमसे
अपनी किस्मत बनाएँ हम कैसे ?

रैना सागर

---

१. रात

यूँ तो रुठे हैं, मगर लोगों से
पूछते हाल हैं, अक्सर मेरा

निजाम रामपुरी

रुठे को मनाते हैं वो प्यार से यह कहकर
'तेरी तो यह आदत है, नाहक गिला करना'

दाग

आप मेरे अब्बू हैं, आप मेरी अम्माँ हैं
मैं बड़ा हुआ, लेकिन रुठने का बाकी है

चिनु मोदी'इर्शाद'

जो खुदा रुठ जाए तो सज़दे करुँ
और सनम रुठ जाए तो मैं क्या करुं ?

ताबिश कानपुरी

लब (होंठ)

कुछ तो मिल जाये लबे-शीरी[१] से
ज़हर खाने की इजाझत ही सही

आरझू लखनवी

इन लबों की जाँनवाझी[२] देखना
मुँह से बोल उठने को है जामे-शराब

जिगर मुरादाबादी

---

१. मीठे होंठ २. अनुकंपा

नाज़ुकी उसके लब की क्या कहिए
पंखुड़ी इक गुलाब की सी है

मीर

गुलशन में तेरे लबों ने गोया
रस चूस लिया कली-कली का

दाग़

जिसने देखे तेरे लबे-शीरीं
नज़र उनकी नहीं शकर की तरफ

शाकिर नाझी

रंग फूलों का उड़ गया 'शैदा'
जब कभी उन लबों की बात आई

शैदा अम्बालवी

इन लबों को ही न था, गुस्ताखियों का हौसला
हमने माना, उम्र भर, वो हमको तरसाता रहा

अख्तर शीरानी

छलकती है जो तेरे जाम से उस मय का क्या कहना
तेरे शादाब[१] होंठों की मगर कुछ और है साकी

मजाझ

ज़हर से धो लिये हैं होंठ अपने
लुत्फे-साकी[२] ने जब कमी की है

फैझ अहमद फैझ

कुछ तो वैसे ही रंगीं लब-ओ-रुखसार[३] की बात
और कुछ खूने-जिगर हम भी मिला देते हैं

आले अहमद 'सरुर'

---

१. हरे-भरे २. साकी की मेहरबानी ३. होंठ और कपोल

कितने शीरीं[१] हैं तेरे लब कि रकीब[२]
गालियाँ खाके बेमज़ा न हुआ

ग़ालिब

हाय ! उसकी शर्बती लब से जुदा
कुछ बताशा सा घुला जाता है जी

मीर

वो लब 'फराझ' अगर कर सकें मसीहाई[३]
ब-कौले-'दर्द'[४] मैं सौ-सौ तरह से मर देखूँ

अहमद फराझ

नरगिसी आँखें हैं गरचे आपकी,
होंठ भी तो आप के गुलकन्द हैं

साजन पेशावरी

कयामत खेझ[५] है सुर्खी ये पानों की लबे-तर में
खुदा जाने, ये दोनों लाल हैं, किसके मुकद्दर[६] में

सफीर बिलग्रामी

गुलाब की पंखड़ी पे जैसे कोई किरन झिलमिला रही है
तुम्हारे याकूत[७] से लबों पर निगाह को नींद आ रही है

कतील शिफाई

देख कर आये हैं क्या आरिझो-गेसू[८] उनके
लोग हैरान, परेशान चले आते हैं

नसीम भरतपुरी

---

१. मधुर २. दुश्मन ३. चिकित्सा ४. शायर दर्द के कथनानुसार ५. प्रलयकारी
६. भाग्य ७. एक रत्न का नाम ८. कपोल एवं केश

याद आयी है जाने किस–किस की
लब पे जब ज़िक्र उसका आया है

जमील नज़र

यह और बात कि वो लब थे फूल से नाज़ुक
कोई न सह सके, लह्जा[१] करख्त[२] ऐसा था

शिकेब जलाली

आईना जरा देखिये बोसों के बाद
क्या होंठ थे इतने ही गुलाबी पहले ?

सहबा अख्तर

जब लब से मिले लब तो हुआ यह एहसास
इक रुह[३] मेरी रुह में दर[४] आयी है

सहबा अख्तर

जलता रहा वो उम्र भर अपनी ही आग में
तेरे लबों की आँच न थी जिसके भाग में

ऐन सलाम

जिस लब के बोसे गैर ले, उस लब से 'शेफ्ता'
कमबख्त गालियाँ भी नहीं मेरे वास्ते

शेफ्ता

उन लबों ने न की मसीहाई[५]
हमने सौ–सौ तरह से मर देखा

ख्वाजा मीर दर्द

---

१. स्वर २. कठोर ३. आत्मा ४. प्रवेश ५. प्रेमिका का वह गुण जिससे वह अपने प्रेमियों को जीवन–दान देती है

शीरीं शीरीं तेरे लब है, मर जावां
असली दारु के दो पब है, मर जावां

चिनु मोदी 'इर्शाद'

मुझे पीने दे, पीने दे कि तेरे जामे-लाली[१] में
अभी कुछ और है, कुछ और है, कुछ और है साकी

मजाझ

वतन-प्रेम

गर्दो-गुबार[२] यहाँ का खिलअत[३] है अपने तन को
मर कर भी चाहते हैं, खाके-वतन[४] कफन को

ब्रजनारायण चकबस्त

वतन-परस्त शहीदों की खाक लायेंगे
हम अपनी आँख का सुर्मा उसे बनायेंगे

ब्रजनारायण चकबस्त

वतन, प्यारे वतन, तेरी मोहब्बत जुझवे-इमाँ है
तू जैसा है, तू जो कुछ है, सकूने-दिल[५] का सामाँ है

सीमाब अकबराबादी

प्यासी ज़मीं थी, लहू सारा पिला दिया
मुझपे वतन का कर्ज था, मैंने चुका दिया

सागर आझमी

---

१. लाल रंग के प्याले (होंठ) २. धूल और मिट्टी ३. राजा की ओर से सम्मानार्थ मिला वस्त्र ४. वतन की धूल ५. दिल की शांति

बहादुरो, न जाने पाये हाथ से ये सरज़मीं[१]
वतन ही से जहान है, वतन नहीं तो कुछ नहीं

शातिर हकीमी

इन्किलाब आएगा, सब लोग बराबर होंगे
शक्ले-मज़दूर में सुलतान बदल जायेंगे

कामिल कुरेशी

हमें भी याद रखें, जब लिखें तारीख[२] गुलशन की
कि हमने भी लुटाया है चमन में आशियाँ अपना

भारत प्यारा देश हमारा, सब देशों से न्यारा है
हर रुत और हर मौसम इसका कैसा प्यारा-प्यारा है

अफसर मेरठी

न रख पास कौडी कफन के लिए
खज़ाने लुटा दे वतन के लिए

जोश मल्सियानी

अगर तेग रखते नहीं 'जोश' तुम
कलम हाथ में लो वतन के लिए

जोश मल्सियानी

कौन कहता है, मर गये ये लोग
मौत को ज़िन्दा कर गये ये लोग

असर लखनवी

क्या ही आराम से वे सोते हैं
जो वतन पर निसार[३] होते हैं

असर लखनवी

---

१. मुल्क २. इतिहास ३. कुरबान

यह वक्त वह नहीं कि नशेमन बचाईये
बाज़ी लगा के जान की, गुलशन बचाईये

असर लखनवी

मिली तो क्या मिली सैयाद ! ऐसी आज़ादी
जब एक शाखे-नशेमन पे अख्तरयार न हो

अलम मुझ्फ्फरनगरी

उसको क्या हक है कि वो खाके-वतन में दफन हो
जिसके दिल में अज़मते-खाके-वतन[१] कुछ भी नहीं

सीमाब अकबराबादी

वतन से इश्क, गरीबी से बैर, अम्न से प्यार
सभीने ओढ़ रखे हैं, नकाब जितने हैं

जाँनिसार अख्तर

दम-दमें[२] में दम नहीं, अब खैर माँगो जान की
ऐ जफर बस हो चुकी शमशीर[३] हिंदुस्तान की

उर्दू जाननेवाला अंग्रेज

हिन्दियों में बू रहेगी जब तलक इमान[४] की
तख्ते-लंदन पर चलेगी तेग[५] हिंदुस्तान की

बहादुरशाह 'झफर'

हम ज़मीं को तेरी नापाक न होने देंगे
तेरे दामन को कभी चाक न होने देंगे

जोश मलिहाबादी

ऐ वतन ! खाके-वतन वो भी तुझे दे देंगे
बच गया है जो लहू अब के फसादात के बाद

अली सरदार जाफरी

---

१. वतन की मिट्टी पर गर्व २. मोरचा ३. तलवार ४. अच्छी नियत ५. तलवार

कलम के सिपाही अगर सो गये तो
वतन के मसीहा वतन बेच देंगे

न समझोगे तो मिट जाओगे ऐ हिन्दोस्ताँ वालों
तुम्हारी दास्ताँ तक भी न होगी दास्तानों में

इकबाल

बैठे बेफिक्र क्या हो, हमवतनों !
उठो, अहले वतन के दोस्त बनो
मर्द हो तो किसीके काम आओ
वर्ना खाओ, पियो, चले जाओ

मौलाना हाली

मज़हब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना
हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्ताँ हमारा

इकबाल

फिदा[१] वतन पे जो हो, आदमी दिलेर है वो
जो यह नहीं तो फकत हड्डियों का ढेर है वो

चकबस्त

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है
देखना है ज़ोर कितना बाजू-ए-कातिल[२] में है

रामप्रसाद 'बिस्मिल'

अब न अगले वलवले हैं, और न अरमानों की भीड़
एक मिट जाने की हसरत, अब दिले-बिस्मिल में है

रामप्रसाद'बिस्मिल'

---

१. आसक्त २. कातिल के हाथ में

कोई आरज़ू नहीं है, इक आरज़ू तो यह है
रख दे कोई जरा सी खाके-वतन कफन में

(काकोरी शहीद) अश्फाक उल्लाखाँ

फरिश्ते[१] आस्माँ से बहरे-पाबोसी[२] उतरते हैं
कि 'साबिर' झुलते हैं देश के सरदार फाँसी से

सरदार नौबहारसिंह 'साबिर'

मुद्दतों से है गुलिस्ताने वतन उजड़ा हुआ
यह हमारे खूँ से लालाझार[३] होना चाहिए

'साबिर'

भारत की एक शान है, दीवाना भगतसिंह
हम बागी का अरमान है, दीवाना भगतसिंह

कुंवर प्रतापसिंह आझाद

क्या कुचलते हैं समझकर वह हमें बर्गे-हिना[४]
अपने खूँ से हाथ उनके तरबतर कर जाएँगे

कुंवर प्रतापसिंह आझाद

न इज़्ज़त दे, न अज़मत[५] दे, न सूरत दे, न सीरत[६] दे
वतन के वास्ते या रब, मुझे मरने की हिम्मत दे

भुवनेश्वर दत्त

सूख न जाय कहीं पौधा यह आज़ादी का
खूँ से अपने इसलिये तर करते हैं

राजेन्द्र लाहिडी

वतन में मुझको जीना है, वतन में मुझको मरना है
वतन पर ज़िदगी को एक दिन कुरबान करना है

सीमाब अकबराबादी

---

१. देवदूत २. पैर चुमने के लिये ३. लाल फूलों का बाग ४. मेंहदी का पत्ता
५. बड़प्पन ६. गुण

ऐ वतन ! उस वक्त भी मैं तेरे नग्मे[1] गाऊँगा
तेरे नग्मे गाऊँगा और आग पर सो जाऊँगा

सागर निझामी

सर से बाँधे हुए हैं तिरंगा कफन
अय वतन, अय वतन, अय वतन !

सागर निझामी

सींच कर खूने दिल से तेरी क्यारियाँ
और भी तुझको जन्नत बना देंगे हम

सागर निझामी

वतन हमारा रहे शादकाम और आज़ाद
हमारा क्या है अगर रहे, रहे न रहे

अशफाक उल्लाखाँ

जो करो दिल से करो, मुल्क की खातिर ही करो
बात सच कहता है, 'रौशन' कि न टालो अब तो

रौशन

तुम मरो चाहे जीओ, कोशिश मगर मत छोड़ियो
खुलते दरवाझे हैं यारो, खटखटा देने के बाद

माहिर-उल-कादरी

किसीने भी न पहचाना वतन में
मैं समझता था बहुत मशहूर हूँ मैं

हफीझ जालन्धरी

आबे-कुलझम[2] जिसे बुझा न सके
वो है आझादिये-वतन[3] की आग

अख्तर अंसारी

१. गीत २. समंदर का पानी ३. देश की स्वतंत्रता

गुँचे[1] हमारे दिल के इस बाग में खिलेंगे
इस खाक[2] से उठे हैं, इस खाक में मिलेंगे

ब्रजनारायण चकबस्त

बुलबुल को गुल मुबारक, गुल को चमन मुबारक
हम हिन्दियों को अपना हिंदुस्ताँ मुबारक

चकबस्त

कोई न यहाँ पर हिन्दू है, मुस्लिम है, न सिख, न ईसाई है
हर हिन्दी भाई-भाई था, हर हिन्दी भाई-भाई है

साझिद सिद्दीकी

नाकूस[3] से गरज़ है, न मतलब अजाँ[4] से है
मुझको अगर है इश्क तो हिन्दोस्ताँ से है

झफर अलीखाँ

यादे-वतन न आये हमें, क्यों वतन से दूर
आती नहीं है बूए-चमन, क्या चमन से दूर

मोहम्मद अली जौहर

वफा-ओ-जफा (वफादारी और जुल्म)

सितम को हम करम[5] समझे, जफा[6] को हम वफा समझे
न इस पर भी अगर समझे तो उस बुत को खुदा समझे

जौक

१. कलियाँ २. मिट्टी ३. शंख जो फूँक कर बजाया जाता है ४. बाँग ५. कृपा
६. बेवफाई

वफा तुमसे ऐ बेवफा चाहता हूँ
मेरी सादगी देख क्या चाहता हूँ

हसरत मोहानी

कहते न थे हम, दर्द-मियाँ छोड़ो ये बातें
पाई न सज़ा और वफा कीजिये उससे

मीर दर्द

लुत्फ आने लगा जफाओं में
वो कहीं मेहरबाँ न हो जाए !

हफीझ जालंधरी

'वफा करेंगे, निबाहेंगे, बात मानेंगे'
तुम्हें भी याद है कुछ, यह कलाम[१] किसका था ?

दाग़

अपनी बिसात भर तो हमने कमी नहीं की
अब तुम बताओ क्यों कर रस्मे-वफा निभाएँ ?

असर लखनवी

तुमने 'फराझ' इस इश्क में सब कुछ खोकर भी क्या पाया है?
वो भी तो ना-कामे-वफा[२] थे, जो 'गालिब' और 'मीर' बने

अहमद फराझ

वफा नहीं, न सही, काश वो जफा तो करे
अता[३] हमें वो कभी, कोई ज़ाईका[४] तो करे

फारिग बुखारी

---

१. प्रतिज्ञा २. वफादारी पाने में असफल ३. प्रदान ४. स्वाद

वफा को तुम जफा समझे, सितम[1] को हम करम[2] समझे
उधर कुछ दिल में तुम समझे, इधर कुछ दिल में हम समझे

बालमुकुन्द हुझूर

अब नाम भी वफा का न लूँगा तमाम उम्र
मुझसे खता[3] हुई, मुझे बख्शो किसी तरह

बेखुद देहलवी

दिखाकर मुँह छुपा लेना हया[4] इसको नहीं कहते
लगाकर दिल हटा लेना वफा इसको नहीं कहते

दिलसोझ

किसीको फिर न हुआ हौसला मुहब्बत का
वफा की रस्म एक ऐसी निकाल दी मैंने

कमर सिद्दीकी

पता मिलता नहीं जिन्स-ए-वफा[5] का इस ज़माने में
कहीं यह हाथ आ जाती तो नझर-ए-दोस्ताँ[6] करते

रिन्द

मैं अभी से किस तरह उनको बेवफा कहूँ ?
मंज़िलों की बात है, रास्ते में क्या कहूँ ?

नुशूर वाहिदी

कोई परवानों को समझाओ कि मरने के सिवा
और भी चंद मकामाते-वफा[7] होते हैं

आबिद अली ''आबिद''

एक औरत से वफा करने का ये तोहफा[8] मिला
जाने कितनी औरतों की बद्दुआएँ साथ है

बशीर बद्र

---

१. अत्याचार २. कृपा ३. गलती ४. लज्जा ५. वफा नामक चीज ६. मित्रों को भेंट ७. वफा के मुकाम ८. सौगात

जब किसीसे कोई पैमाने-वफा[1] करता है
काँप उठता हूँ कि मेरा ही सा अन्जाम न हो

अन्दलीब शादानी

नज़अ[2] में यार से पैमाने-वफा करते हैं
उस दगाबाज़ से हम आज दगा करते हैं

रियाझ खैराबादी

याद बड़ी दौलत है ये तसलीम मगर
उसकी वफाएँ, उसकी जफाएँ याद न कर

फिराक गोरखपुरी

वफा ही उठ गयी दुनिया से जब 'बद्र'
फिर अपने और पराये का गिला क्या ?

बद्रे जहाँ कुरैशी

बावफा[3] था तो मुझे पूछने वाले भी न थे
बेवफा हूँ तो हुआ नाम भी घर घर मेरा

अतहर नफीस

कुछ इस अदा से मेरे साथ बेवफाई कर
कि तेरे बाद मुझे कोई बेवफा न लगे

कैसर उल जाफरी

ये क्या सितम है उसे बेवफा कहा तुमने
कि लोग जिसकी वफा की मिसाल[4] देते हैं

झफर गोरखपुरी

पकड़ लिया सरे महशर[5] किसीने हाथ मेरा
बस आज मिल गई अपनी वफा की दाद मुझे

फिराक गोरखपुरी

---

१. वफादार रहने की प्रतिज्ञा २. मरने के समय साँस तोडना ३. वफादार ४. उदाहरण
५. क्यामत के दिन

इस कदर जल्द जो पैमाने-वफा तोड़ दिया
आप ही कहिये भला आप को झेबा[१] है यही ?

हसरत मुहानी

अहले गम को [२] तेरा पैमाने-वफा
याद तो क्या है, मगर भूला नहीं

फिराक गोरखपुरी

जफा[३] से बाज़ न आये तुम, और क्यूँ आते ?
कि हमसे तर्के-वफा[४] का ख्याल हो न सका

हसरत मुहानी

हमने तेरी जफा के परदे में
दिल पे खुद भी बहुत सितम ढाया

नरेश कुमार शाद

सितम से तेरे मैं जाता हूँ, फिर न कहियो तू
कि आशनाई[५] का 'हातिम' निबाह भी न किया

शाह हातिम

यूँ वफा उठ गई ज़माने से
कभी जैसे किसीमें थी ही नहीं

दाग़

हमको उनसे वफा की है उम्मीद
जो नहीं जानते वफा क्या है ?

गालिब

जो मिला उसने बेवफाई की
कुछ अजब रंग है ज़माने का

मुसहफी

---

१. शोभा देता है ? २. गम वालों को ३. बेवफाई ४. वफा के त्याग का
५. मित्रता

इश्क करना नहीं आसान, बहुत मुश्किल है
छाती पत्थर की है उनकी जो वफा करते हैं

मीर

याद मेरी आ गई मुँह फेर कर रोने लगे
अंजुमन में उनकी जब ज़िक्रे वफा[१] होने लगा

तस्लीम

बेवफा, तेरी कुछ नहीं तक्सीर[२]
मुझको मेरी वफा ही रास[३] नहीं

मीर असर

अपनी खूए-वफा[४] से डरता हूँ
आशिकी बन्दगी न हो जाये

बेखुद बदायूनी

हम भी कुछ खुश नहीं वफा करके
तुमने अच्छा किया निबाह न की

मोमिन

जो कुछ कहा कहा, नहीं इस का गिला[५] मुझे
तू बेवफा है, आपने ये क्या कहा मुझे ?

अहकर मुझफ्फरपुरी

रश्के-दुश्मन[६] बहाना था, सच है
हम ही ने तुमसे बेवफाई की

मोमिन

---

१. वफा की चर्चा २. अपराध ३. अनुकूल ४. वफा की आदत ५. शिकायत
६. प्रतिद्वन्दी की ईर्ष्या

बेवफाई पे तेरी जी है फिदा[१]
कहर[२] होता जो बावफा[३] होता

मीर असर

कुछ तो मजबूरियाँ रही होंगी
यूँ कोई बेवफा नहीं होता

बशीर बद्र

इक तुम, कि वफा तुमसे न होगी न हुई है
इक हम, कि तकाज़ा न किया है न करेंगे

हसरत मोहानी

फरेबे-ज़िन्दगी[४] जिसने न देखा, मुझे देखे
न सीने में है दिल अपना, न मुँह में है जुबाँ अपनी

चकबस्त

असर अब इससे ज़ियादा वफा का क्या होगा ?
कसम हमारी मुहब्बत की लोग खाने लगे

शाद अझीमाबादी

जफाएँ तुम किये जाओ, वफाएँ मैं किये जाऊँ
तुम अपने फन[५] में कामिल[६] हो, मैं अपने फन में यकता[७] हूँ

बेखुद देहलवी

गिला मैं जिससे करूँ तेरी बेवफाई का
जहाँ में नाम न ले फिर वह आशनाई[८] का

मीर

१.निछावर २. गजब ३. वफादार ४. जीवन का धोखा ५. कला ६. पूर्ण
७. अनुपम ८. दोस्ती

जी में था ऐ 'हश्र', उससे अब न बोलेंगे कभी
बेवफा जब सामने आया तो प्यार आ ही गया

आगा हश्र कश्मीरी

किसने किस हाल में छोड़ा था वफा का दामन
मसअला[१] ये तो मेरी जाँ बड़ी तकरार[२] का है

ज़हूर नज़र

वफा का नाम कोई भूल कर नहीं लेता
तेरे सुलूक[३]ने चौंका दिया ज़माने को

जिगर मुरादाबादी

कभी नेकी भी उसके जी में गर आ जाये है मुझसे
जफाएँ करके अपनी याद शरमा जाये है मुझसे

ग़ालिब

वादा

वादे पे तुम न आये तो कुछ हम न मर गये
कहने को बात रह गई और दिन गुज़र गये

मुहम्मदखाँ रिन्द

इक बात पूछता हूँ अगर तू खफा न हो
इन्सान क्या जो वादा करे और वफा न हो

हया देहलवी

१. समस्या २. वाद-विवाद ३. व्यवहार

भूलने वाले को शायद याद वादा आ गया
मुझको देखा, मुस्कुराया, खुद बखुद शर्मा गया

अमर लखनवी

करूँ मैं वादा खिलाफी का शिकवा[१] किस किससे
अजल[२] भी रह गई ज़ालिम सुना के आने की

मोमिन

आज किसे ज़ीस्त की[३] उम्मीद है
आपने जो वाद-ऐ-फर्दा[४] किया

निज़ाम रामपुरी

मैं भी हैरान हूँ ऐ 'दाग़' कि यह बात है क्या
वादा वो करते हैं, आता है तबस्सुम मुझको

दाग़

देकर मुझे तसल्ली बेचैन कर रहे हो
हँसते हो वादा करके, कुरबान इस हँसी के

रसा देहलवी

लिये वादे हज़ारों उसने हमसे इस तमन्ना पर
कि सदहा[५] झूट में इक आध सच्चा हो ही जाता है

अकबर मेरठी

इस वादे का मतलब क्या समझूँ, इकरार भी है इन्कार भी है
अबरू[६] पे है बल, होठों पे हँसी, इन्कार भी है इकरार भी है

वहशी शाहजहाँपुरी

कल का वादा न करें, कौन जीयेगा कल तक
आप तूले-शबे-हिज्राँ[७] को नहीं जानते क्या ?

सरीर काबरी गेयावी

---

१. शिकायत २. मृत्यु ३. जीने की ४. कल का वादा ५. सेंकडों ६. भौंह
७. वियोग की रात की लंबाई

खा जाएँ फरेब[1] ऐसे तो नादाँ नहीं हम भी
वादा भी गलत आपका, झूठी है कसम भी

बेखुद देहलवी

उम्मीद तो बँध जाती, तस्कीन[2] तो हो जाती
वादा न वफा करते, वादा तो किया होता

चिराग हसन हसरत

आधी से ज्यादा शबे-गम[3] काट चूका हूँ
अब भी अगर आ जाओ तो ये रात बड़ी है

फिराक गोरखपुरी

वादा करते हो तो वो करना जो झूठा न हो
वो कसम तुम आज खाओ जो न हो खाई हुई

हजारों खूबियों के साथ तुझमें यह बुराई है
तेरे वादे को झूठा हमने ज़ालिम बेशतर[4] पाया

बेखुद देहलवी

झूठा वादा ही सही, दिल तो बहल जाता है
वर्ना हम आपकी इस 'हाँ' को नहीं जानते क्या ?

सरीर काबरी गेयावी

वादे हररोज़ रहे और तुम आते ही रहे,
हमको देखो कि लगे चलने तो जाते ही रहे

मीर

---

१. धोखा २. तसल्ली ३. विरह की रात ४. बहुधा

साफ कह दीजिये वादा ही किया था किसने
उज्र[1] क्या चाहिये झूठों को मुकरने के लिए

साकिब लखनवी

उसके इफाये-अहद[2] तक न जिये
उम्र ने हमसे बेवफाई की

मीर

तुम न आये तो क्या सेहर[3] न हुई ?
हाँ, मगर चैन से बसर न हुई

मान लेता हूँ तेरे वादे को
भूल जाता हूँ मैं कि तू है वही

जलील मानिकपुरी

वादा-ए-दोस्त[4] याद आता है
जब कोई मेहरबान होता है

काविश

वादे की रात नींद ने फुरसत उन्हें न दी
अफसोस जागकर मेरी तकदीर सो गई

शफीक

वो फिर वादा मिलने का करते हैं यानी
अभी कुछ दिनों हमको जीना पड़ेगा

आसी उल्दनी

सुबह बिछड़ कर शाम का वादा, शाम का होना सहल नहीं
उनकी तमन्ना फिर कर लेना, सुबह को पहले शाम करो

निसार इटावी

---

१. बहाना २. वादा पूरा करना ३. सुबह ४. मित्र का वचन

वादा उनका वफा नहीं होता
काश ! होता तो क्या नहीं होता

अख्तर कादिर

न आते, हमें इसमें तकरार क्या थी
मगर वादा करते हुए आर[१] क्या थी ?

इकबाल

झूठे वादों पर थी अपनी ज़िदगी
अब तो वो भी आसरा जाता रहा

अझीझ लखनवी

क्यों वो आँखें चुराये फिरता है
वादा करके मुकर गया होगा

साजन पेशावरी

वादा करके और भी आफत में डाला आपने
ज़िदगी मुश्किल थी अब मरना भी मुश्किल हो गया

जलील मानिकपुरी

फिर न आये जो वादा करके गये
आज का दिन है और वो दिन है

असर लखनवी

ऐ मेरे वादा भूलने वाले
डूबने के करीब है तारे

जोश मलिहाबादी

वो यहाँ आयें, मुझे तो नहीं उम्मीद 'निझाम'
यही हैरत है किया आने का वादा क्यों कर ?

निझाम रामपुरी

---

१. शरम

झूठे वादे भी नहीं करते आप
कोई जीने का सहारा ही नहीं

जलील मानिकपुरी

वादा करके भूलने वाले, शब-ए-फिराक
तुमको भी आज नींद न आये खुदा करे

आदतन तुमने कर दिये वादे
आदतन हमने एतबार किया

गुलज़ार

आज तो आप सर-ए-शाम[१] चले आयें जरुर
लाखों वादे हैं, मगर एक तो सच्चा निकले

तजल्ली देहलवी

क्यों वादा करो, बेखबर आ जाओ किसी वक्त
हूँ वस्ल[२] का ख्वाहाँ[३] नहीं मुश्ताक[४] खबर का

साकिब लखनवी

वह भी सच्चे, ख्वाब में आने का वादा भी दुरुस्त
शक मगर हमको शबे-गम[५] नींद के आने में है

नैयर अकबराबादी

वादों को खून-ए-दिल[६] से लिखो तब तो बात है
कागज़ पे किस्मतों को सँवार आये, ये नहीं

जाँनिसार अख्तर

---

१. शाम होते ही २. मिलन ३. इच्छा रखने वाला ४. कामना रखने वाला
५. दुःख भरी रात्रि ६. हृदय का रक्त

याद आया याँ के आने का वादा भी खूब उन्हें
जब रात को वह पाँव में मेहँदी[१] लगा चुके

जौक

मुद्दत गुज़री एक वादे पे आज भी कायम है 'मुहसिन'
हमने सारी उम्र निभाई अपनी पहली मजबूरी

मुहसिन भोपाली

जबाँ से गर किया भी वादा तूने तो यकीं किसको ?
निगाहें साफ कहती हैं कि देखो यूँ मुकरते हैं

दाग

अभी आए हो अभी मुझसे रुख्सत का सवाल
हाँ, यह कहिए कि किसी और से वादा होगा

नातिक फैज़ाबादी

कभी दामने-दिल[२] पर दागे-मायूसी[३] नहीं आया
इधर वादा किया उसने, उधर दिल को यकीं आया

नातिक लखनवी

वो अहद[४] अहद की क्या है, जिसे निभाओ भी
हमारे वादा-ए-उल्फत[५] को भूल जाओ भी

मुस्तफा ज़ैदी

वादा जरूर करते हैं, आते नहीं कभी
फिर ये भी चाहते हैं, शिकायत कभी न हो

कृष्ण मोहन

एक दिन की कही नहीं जाती
वादा मौकुफ[६] है क्यामत पर

बिस्मिल हैदराबादी

---

१. हीना २. दिल का दामन ३. निराशा का दाग ४. वचन ५. प्यार का वादा ६. निर्भर

हाँ 'असर' सच है कि सब वादे हैं उसके झूठे
कुछ अजब लुत्फ है रुक-रुक के कसम खाने में

असर लखनवी

डूब चुका जब नील गगन की झील में तेरा हर वादा
चमक रहा था मेरे दिल में फिर भी तेरे गम का चाँद

कतील शिफाई

इससे बढ़कर और क्या है सादा लौही[१] इश्क की
आपने वादा किया और मुझको बावर[२] हो गया

नौबतराय 'नज़र'

एक मुद्दत से न कासिद[३] है, खत है न पयाम[४]
अपने वादे को तू कर याद, मुझे याद न कर

जलील मानिकपुरी

वादा झूठा कर लिया, चलिए तसल्ली[५] हो गई
है जरा सी बात खुश करना दिले-नाशाद[६] का

दाग़

जो तुझ बिन न जीने को कहते थे हम
सो उस अहद[७] को हम वफा कर चले

मीर

अपने अहदे-वफा[८] को भूल गये
तुम तो बिलकुल खुदा को भुल गये

मुज़्तर खैराबादी

---

१. सरलता २. विश्वास ३. पत्रवाहक ४. संदेश ५. शांति ६. नाराज हृदय
७. प्रतिज्ञा ८. प्रेम-प्रतिज्ञा

वो नहीं आएगा, लेकिन मुझको
उसके वादे पे भरोसा क्यों है ?

मौज रामपुरी

झूठा ही क्यों न कीजिये, वादा तो मुँह से कीजिये
इन्कार सुनते सुनते बरसों गुज़र गये

बेखुद देहलवी

वादा करके वो अगर वादे का इफा[१] न करें
उससे बेहतर तो यही है कोई वादा न करें

जोश मल्सियानी

वादा किया था आपने और फिर मुकर गये
दम भर का तज़किरा[२] है, यह आधी घड़ी की बात

साइल देहलवी

'हाँ' को इतना खींचते क्यों हो खुदा के वास्ते
फिर तो इस वादे का मतलब दूसरा हो जायेगा

बेखुद देहलवी

झूठे वादे का भी यकीन आ जाये,
कुछ वो इन तेवरों से कहते हैं

आरज़ू लखनवी

झूठे वादे हज़ार करते हैं
हम यकीं बार-बार करते हैं

बेगम अख्तर

१. वचन पालन करना २. चर्चा

मत आइयो ऐ वादा-फरामोश[1] तू अब भी
जिस तरह कटा रोज़[2], गुज़र जायेगी शब[3] भी

अहसनुल्लाह बयान

आपसे वादा रहा 'इर्शाद' का
मैं मिलूँगा नेकदिल इन्सान में

चिनु मोदी 'इर्शाद'

मैं उसके वादे का अब भी यकीन करता हूँ
हजार बार जिसे आजमा लिया मैंने

मखमुर देहलवी

शबाब (युवावस्था)

अभी शबाब है, कर लूँ खतायें[4] जी भर के
फिर इस मुकाम पे उम्रे-रवाँ[5] मिले न मिले

आनंद नारायण 'मुल्ला'

शबाब नाम है उन जाँनवाज़[6] लम्हों का[7]
जब आदमी को ये महसूस हो जवाँ हूँ मैं

नियाझ फतहपुरी

खयाल और किसीका अगर नहीं, न सही
तुझे तो चैन से तेरा शबाब रहने दे

उम्मीद उमैठवी

आया था साथ ले के मुहब्बत की आफतें
जाएगा जान ले के ज़माना शबाब का

जिगर बसवानी

---

१. वादा पूरा न करने वाला २. दिन ३. रात्रि ४. अपराध ५. बहती आयु
६. आनंददायक ७. क्षणों का

वक्ते पीरी[1] शबाब की बातें
ऐसी हैं जैसे ख्वाब[2] की बातें

जौक

वही शबाब की बातें, वही शबाब का रंग
तुम्हें 'रियाझ' बुढ़ापे में भी जवाँ देखा

रियाझ खैराबादी

शबाब मिट चुका, यादे शबाब बाकी है
है बू शराब की सागर में[3], अब शराब नहीं

अख्तर शिरानी

हर चीज़ पर बहार थी, हर शै[4] पे हुस्न था
दुनिया जवान थी मेरे अहदे-शबाब में[5]

सीमाब अकबराबादी

शबाबे-रफ्ता[6] के कदम की चाप सुन रहा हूँ मैं
नदीम[7], अहदे-शौक[8] की सुनाए जा कहानियाँ

जोश मलिहाबादी

न जाने बर्क[9] की चश्मक[10] थी या शरर[11] की लपक
जरा जो आँख झपककर खुली, शबाब न था

मीर अनीस

अब है दिल बाकी न दिल की शोरिशें[12]
आह ! वो हंगामये-अहदे-शबाब[13]

हसरत मुहानी

---

१. बुढ़ापा २. सपना ३. प्याले में ४. चीझ ५. जवानी के ज़माने में ६. गत-यौवन ७. मित्र ८. अभिलाषा पूर्ण जीवन ९. बिजली १०. चमक ११. चिनगारी १२. उमंगे १३. जवानी का हंगामा

हाय वो दौरे-ज़िंदगी[१] जिसका लकब[२] शबाब था
कैसी लतीफ[३] नींद थी, कैसा हसीन ख्वाब[४] था

कदीर लखनवी

पियो शराब जवानों, कि मौसमे-गुल[५] है
हमें भी याद वो अहदे शबाब आता है

अहसनुल्लाह 'बयान'

बदमस्तियों का रंग है जोशे-शबाब में
गोया कि वो नहाए हुए हैं शराब में

उमराव मिर्झा अनवर

तेरे शबाब से बढ़कर कोई शबाब नहीं
कसम खुदा की, कहीं भी तेरा जवाब नहीं

वफा मेरठी

कोई आज तक न समझा कि शबाब है तो क्या है ?
यही उम्र जागने की, यही नींद का ज़माना

नुसूर वाहिदी

नाम है क्या इसी हंगामे का आगाज़े-शबाब[६]
एक आँधी सी चली आती है अरमानों[७] की

नेहाल सेवहारवी

उनको शबाब का, न मुझे दिल का होश था
एक जोश था कि महवे-तमाशाये[८] जोश था

फानी बदायूनी

---

१. जिंदगी का चक्कर २. उपनाम ३. आनंददायक ४. खूबसूरत सपना ५. वसंत
६. यौवन का प्रारंभ ७. कामनाओं की ८. तमाशे में लीन

छिलकाए लाओ भर के गुलाबी शराब की
तस्वीर खैंचें आज तुम्हारे शबाब की

रियाझ खैराबादी

जड़े पहाड़ों की टूट जातीं, फलक[१] तो क्या अर्श[२] काँप उठता
अगर मैं दिल पर न रोक लेता तमाम जोरे शबाब तेरा

जोश मलिहाबादी

गुलशन में देखकर मेरे मस्ते-शबाब[३] को
शर्माई जा रही है जवानी बहार की

आगा हश्र कश्मीरी

सँभाला होश तो मरने लगे हसीनों पर
हमें तो मौत ही आयी शबाब के बदले

मजाझ

जवाँ होने लगे जब वो तो हमसे कर लिया परदा
हया[४] यकलख्त[५] आई और शबाब आहिस्ता आहिस्ता

अमीर मीनाइ

जो ज़िन्दादिल है हमेशा जवान रहते हैं
बहारे-जीस्त[६] यकीनन[७] इसी शबाब में है

पं.दत्तात्रय कैफी

काम है मेरा तगय्युर[८], नाम है मेरा शबाब
मेरा नारा इन्कलाबो इन्कलाबो इन्कलाब

जोश मलिहाबादी

---

१. आकाश २. सब से ऊँचा स्वर्ग ३. यौवन से मतवाला ४. शर्म ५. एक बारगी
६. जीवन की वसंत ७. अवश्य ८. बहुत बड़ा परिवर्तन

हालाँकि इब्तिदा[1] भी नहीं है शबाब की
उनको कमाले-हुस्न[2] का दावा अभी से है

हसरत मोहानी

हाय ! 'सीमाब' उसकी मजबूरी
जिसने की हो शबाब में तौबा

सीमाब अकबराबादी

शबाब आ रहा है, शबाब आ रहा है
दहकता हुआ आफताब आ रहा है

अमल मुझफ्फरनगरी

शबाब आया, किसी बुत पर फिदा होने का वक्त आया
मेरी दुनिया में बंदे के खुदा होने का वक्त आया

पंडित हरिचन्द अख्तर

शबाब मयकश[3], खयाल मयकश, जमाल[4] मयकश, निगाह मयकश
खबर वो रक्खेंगे क्या किसीकी, उन्हें खुद अपनी खबर नहीं है

जिगर मुरादाबादी

फूल लाखों बरस नहीं रहते
दो घड़ी और है बहारे शबाब[5]

फैझ अहमद 'फैझ'

करते हो आज शैखजी हमको नसीहतें
क्या क्या किया न होगा तुम्हींने शबाब में !

रहमत

तू 'काश' मुझसे न पूछ शबाब की तकसीर[6]
मेरे हबीब[7] मैं सब कुछ लुटा के आई हूँ

कनीज़ फातिमा 'काश'

---

१. आरंभ २ सौंदर्य की पूर्णता ३. शराबी ४. सौंदर्य ५. यौवन की वसंत
६. गुनाह, खता ७. दोस्त

मेरी निगाहे-शौक[१] भी कुछ कम नहीं मगर,
फिर भी तेरा शबाब तेरा ही शबाब है

जिगर मुरादाबादी

तलाक तो दे रहे हो गुरुरो कहर[२] के साथ
मेरा शबाब भी लौटा दो मेरे महर के[३] साथ

बेगम अंजुम

शमा

खयाल तक न किया अहले-अंजुमन ने[४] कभी
तमाम रात जली शमा अंजुमन के लिए

वहशत कलकतवी

परवाने की मौत पे ऐ शमा मुझको रश्क[५]
तेरा शहीदे-नाज़[६] तेरे रूबरू[७] तो है

वहशत कलकतवी

जल जाने का अंदाज़ कोई शमा से सीखे
परवाना है और कहने को परवाना नहीं है

फानी बदायूनी

इसी पे नाज़ घड़ी दो घड़ी जली होगी
इसी पे शमा हमारी बराबरी होगी ?

मुबारक अझीमाबादी

---

१. देखने की तीव्र अभिलाषा २ विपत्ति और घमंड ३. निकाह के वक्त तय की गई धनराशि ४. सभा वालों ने ५. ईर्ष्या ६. नाज़ का मारा हुआ ७. सम्मुख

ऐ शमा तेरी उम्र-ए-तबीई[1] है एक रात
रो कर गुज़ार या इसे हँसकर गुज़ार दे

जौक

ऐ शमा सुबह होती है रोती है किस लिए
थोड़ी सी रह गई है इसे भी गुज़ार दे

आगा जानऐश

शमा भी कम नहीं कुछ इश्क में परवाने से
जान देता है अगर वो तो ये सर देती है

जौक

ये कुछ नहीं खुला कि जली शमा किसलिये
इतना सुना कि खाक में परवाना मिल गया

आसी उल्दनी

शमा परवाने को जलाती है
साथ, पर उसके आप जलती है

असर

देखते ही शमा को जाता है परवाने का होश
आह ! पर रहता है क्यों कर उसको जल जाने का होश ?

जाफरअली 'हसरत'

कहा पतंगे ने यह दारेशमअ पर[2] चढ़कर
'अजब मज़ा है जो मर ले किसीके सर चढ़कर'

जौक

तन जले, नहीं परवा, सर कटे, नहीं कुछ गम
सीखे शमा से कोई वजह जी खपाने की

अख्तर

१. कुदरती आयु २. मोमबत्ती रुपी सूली पर

तुझको मालूम भी है आग उगलने वाले
शम्आ पर शौक से जल जाते हैं जलने वाले

झार अल्लामी

ऐ शम्आ, अपने परवानों पर रहम कर
जलाने वाले को भी खुद जल जाना है

अनवर आगेवान

यूँ खाक किया फूँककर परवाने को जिसने
उस आग से खुद शम्मा भी महफ़ूज़[१] नहीं है

झफर सहारनपुरी

शम्अ जिस आग में जलती है नुमाईश[२] के लिये
हम इसी आग में गुमनाम[३] से जल जाते हैं

कतील शिफाई

फूँक देती क्यों न परवाने को शमा
प्यार करने को सर-ए-महफिल गया

अमीर मीनाइ

रुख-ए-रौशन[४] के आगे शमा रखकर वो यह कहते हैं
उधर जाता है देखो या इधर परवाना आता है

दाग़

ऐ शमा तुझपे रात ये भारी है जिस तरह
मैंने तमाम उम्र गुज़ारी है इस तरह

नातिक लखनवी

उड़ के आया है लगन में तिरे जल जल जाने को
शौक से फूँक दे ऐ शमा तू परवाने को

तराब काकोरवी

---

१. भली भाँति रक्षित २. प्रदर्शन ३. जिसका नाम कोई जानता न हो ४. प्रकाशित मुख

सहर[1] हमारा मुकद्दर[2] है या नसीब तेरा
हम आज शमा तेरे साथ जल के देखेंगे

हफीझ होशियारपुरी

शमा इक मोम के पैकर[3] के सिवा कुछ भी नहीं
आग जब तन में लगाई है तो जान आई है

आनंदनारायण 'मुल्ला'

हो गया ढेर वहीं आह भी निकली न कोई
जाने क्या बात कही शमा ने परवाने से

साहिर होशियारपुरी

गुस्ताख बहुत शमा से परवाना हुआ है
सर चढ़ता है, मौत आई है, दीवाना हुआ है

आतश

हो शमा तो बताएँ कि जलते हैं किस तरह
जुगनू भी मर गये हों तो परवाना क्या करे ?

सईद अहमद अख्तर

है आतशे-उल्फत[4] शोला-फशां[5] जलता है कोई तो जलने दे
है शमा की बेशक शान यही परवा न करे परवाने की

वहशत कलकतवी

रात भर रोती रही सुबह को दम तोड़ दिया
शमा से लाश न देखी गयी परवाने की

खलिश बडौदवी

---

१. सुबह २. भाग्य ३. आकार ४. प्रेमाग्नि ५. लपटें बिखेरने वाली

मुझमें और शमा में होती थीं बातें शब भर
आज की रात बचेंगे तो सहर देखेंगे

मौ फसाहत

जरा देख परवाने करवट बदलकर
सती हो गयी शमा महफिल में जलकर

साकिब लखनवी

शमा ने ली न खबर सोख्ता-सामानों[१] की
सुबह तक लाश पड़ी रह गयी परवानों की

असर मुझफ्फरपुरी

ऐ शमा देख आखिर तू उनका हौसला भी
जो तुझको देखते ही, कुरबान हो रहे हैं

नाझ लायलपुरी

ऐ शमा तेरी लौ में वह कौन-सा जादू है
जलने को चले आये परवानों पे परवाने

गोपालकृष्ण 'शफक'

दोनों की रौशनी से रौनक है अंजुमन की
जब शमा झिलमिलाई, परवाना याद आया

कैसर उल कादरी

पराई आग में जलते कभी न परवाने
जो अपनी आग में जलकर निखर गये होते

नरेश कुमार 'शाद'

पिघलकर दिल लहू हो-हो के बह जाता है आँखों से
सितम है शमा को जो झीनते-महफिल समझते हैं

असर सहबाई

---

१. मिटने वालों

शमा का ज़िक्र और मेरे सामने
क्या जली इक रात, जल कर रह गई

मंझर लखनवी

ज़िंदगी भर शमा की मानिन्द[१] जला हूँ 'नदीम'
बुझ तो जाऊँगा, मगर सुबह तो कर जाऊँगा

अहमद नदीम कासमी

डूबा हो जब अँधेरे में हमसाए[२] का मकान
अपने मकां में शमा जलाना गुनाह है

खुमार बाराबंकवी

न साथ देंगी ये दम तोड़ती हुई शम्माएँ
नये चराग जलाओ कि रौशनी कम है

शाहिद सिद्दीकी

उम्र भर जलता रहा दिल और खामोशी के साथ
शमा को इक रात की सोझे-दिली[३] पे नाझ था

साकिब लखनवी

सुबह तक शमा सर को धुनती रही
क्या पतंगे ने इल्तेमाश[४] किया

मीर

गम न कर शमा रात गुज़रेगी
जलते-बुझते हयात[५] गुज़रेगी

निहाल सेवहारवी

इक न इक शम्मा अँधेरे में जलाये रखिये,
सुबह होने को है, माहौल बनाये रखिये

तारिक बदायूनी

---

१. समान २. पड़ोसी ३. दिल की जलन ४. निवेदन ५. ज़िंदगी

शमा है, गुल भी है, बुलबुल भी है, परवाना भी,
रात की रात ये सब कुछ है, सहर[१] कुछ भी नहीं

मुहम्मदअली तिश्ना

शमा की मानिन्द हम इस बज़्म में
चश्मे-नम[२] आये थे, दामन तर चले

ख्वाजा मीर दर्द

परवानों का हश्र[३] जो होना था, हो चुका
गुज़री रात शमा पे क्या, देखते चले

हफीज मेरठी

भड़क के अपने घरों को जला भी सकती है
हम अपनी शमा की लौ[४] से भी होशियार रहे

मिदहत

हुस्न और इश्क के नैरंग[५] खुदा ही जाने
शमा जलती है कि दिल जलता है परवाने का

साकिब लखनवी

उड़ के जलने के लिये, जल के पिघल जाने को
शमा को आग मिली, पर मिले परवाने को

नूह नारवी

जल रहे हैं आज तक दिल के चराग
तूर[६] पर इक शमा जलकर रह गई

फानी बदायूनी

सर शमा सा कटाईये पर दम न मारिये
मंज़िल हज़ार सख्त हो, हिंमत न हारिये

आतिश

---

१. सुबह २. गीली आंख ३. अंत ४. ज्योत ५. छलकपट ६. शाम देश का एक पर्वत

ये कह के आखिरे-शब शमा हो गई खामोश
किसी की ज़िंदगी लेने से ज़िंदगी न मिली

आनंदनारायण मुल्ला

जो शमा हुआ करती है रौशन सरे-बाज़ार
उस शमा पे गिरता नहीं परवाना हमारा

शाद अझीमाबादी

जिससे चाहो पूछ लो तुम मेरे सोज़े-दिल[१] का हाल
शमा भी महफिल में है, परवाना भी महफिल में है

वहशत कलकतवी

जी भर के तड़प लेने दे उन्हें, रह रह के जरा जलने दे उन्हें
ऐ शमा की लौ, ये परवाने एक रात के मेहमाँ होते हैं

अलम मुझफ्फरनगरी

बढ़ा दी इतना कहकर शमा ने परवानों की हिम्मत-
'है जलना काम उनका जो है दिल वाले जिगर वाले!'

असगर मुझफ्फरनगरी

बुझ गई कल जो सरेबझ्म वो शमा न थी
शमा तो आज भी सीने में है परवानों के

असगर गोण्डवी

जो किस्मत में जलना ही था, शमा होते
कि पूछे तो जाते किसी किसी अंजुमन में

सफी लखनवी

वो शमा नहीं हैं, कि हों इक रात के मेहमाँ
जलते हैं तो बुझते नहीं हम वक्ते-सहर[२] भी

नझर लखनवी

---

१. दिल की जलन २. प्रातःकाल

दौरे-फलक[१] था जिसके बुझाने की फिक्र में
वो शमा रात सुबह से पहले ही जल गई

साकिब लखनवी

उसने आने वालों का बढ़कर इस्तकबाल[२] किया
शमा को यह मालूम न था परवाने जल जायेंगे

माहिर-उल-कादरी

चलो हो गया फैसला बात का
हवा ने शमा को बुझाया नहीं

चिनु मोदी 'इर्शाद'

गमे-हस्ती[३] का 'असद'[४] किस से हो जूझ-मर्ग[५] इलाज
शमा हर रंग में जलती है सहर[६] होने तक

ग़ालिब

शराब और तौबा

तू जो झाहिद मुझे कहता है कि तौबा कर ले
क्या कहूँगा जो कहेगा कोई पीने वाला

मुबारक

इलाही[७] क्यूँ करूँ तौबा कोई मैं रोज़ पीता हूँ
उडा लेता हूँ सावन में कभी यारों के कहने से

हमने बरसात के मौसम में जो चाही तौबा
अब्र[८] इस जोर से गरजा कि इलाही तौबा

१.आकाश का चक्कर २. स्वागत ३. अस्तित्व का दुःख ४. ग़ालिब का तखल्लुस
५. मृत्यु के अतिरिक्त ६. प्रभात ७. ईश्वर ८. बादल

ऐसी किस्मत कहाँ कि जाम[१] आता
बूए-मै[२] भी इधर नहीं आती

मुझ्तर मुझफ्फरपुरी

न गुल खिले हैं, न उनसे मिले, न मै[३] पी है
अजीब तरह से अब के बहार गुज़री है

फैझ अहमद फैझ

करवटें लेती है फूलों में शराब
हमसे इस वक्त में तौबा होगी ?

अली अख्तर

मैकदे[४] में कभी तौबा को जो आते देखा
एक दीवार खड़ी हो गई पैमानों की

नूर नारवी

मेरी तौबा भी कोई तौबा है
जब बहार आयी, तोड़ डाली है

जलील मानिकपुरी

की तर्के-मय[५] तो माईले-पिन्दार[६] हो गया
मैं तोबा कर के और गुनहगार हो गया

दाग़

बादे तौबा भी वही याद है मैखाने की
गर्दिश[७] आँखो में फिरा करती है पैमाने की

हफीझ जौनपुरी

---

१. मधुपात्र २. शराब की खुशबू ३. शराब ४. मधुशाला ५. शराब का त्याग
६. घमंड का चाहक ७. चक्र

अंगूर में थी ये मय[1] पानी की चंद बूँदें
जिस दिन से खिंच गई है तलवार हो गई है

अमीर मीनाई

इस महफिले-कैफो-मस्ती[2] में इस अंजुमने-इरफानी[3] में
सब जाम-बकफ[4] बैठे ही रहे, हम पी भी गये, छलका भी गये

मजाझ

उठवाओ मेज से मयो-सागर 'रियाझ' जल्द
आते हैं एक बुझुर्ग पुराने खयाल के

रियाझ खैराबादी

वो सामने धरी है सुराही भरी हुई
दोनों जहाँ[5] है आज मेरे इख्तियार[6] में

हफीझ जालन्धरी

'आरझू' जाम लो, झिझक कैसी
पी ली और दहशते-गुनाह[7] गई

आरझू लखनवी

हंगामा है क्यों बरपा थोड़ी सी जो पी ली है
डाका तो नहीं डाला चोरी तो नहीं की है

अकबर इलाहाबादी

खनक जाते हैं जब सागर तो पहरों कान बजते हैं
अरे तौबा ! बड़ी तौबा-शिकन[8] आवाज़ होती है

साकिब लखनवी

---

१. शराब २. विस्मृति और मादकता की सभा ३. ज्ञान की महफिल ४. मधुपात्र हाथों में लिये ५. दुनिया ६. अधिकार ७. पाप का भय ८. तौबा तोड़ने वाली

मयकशों ने[१] पी के तोड़े जामे-मय[२]
हाय ! वो सागर[३] जो रक्खे रह गये

आनंदनारायण मुल्ला

मय की तौबा को तो मुद्दत हुई 'काइम' लेकिन
बे-तलब[४] अब भी जो मिल जाये तो इन्कार नहीं

काइम

यह कम नहीं है बुढ़ापे में हमने तौबा की
तमाम ऊम्र में हमने यह एक काम किया

रियाझ खैराबादी

तौबा से तो मेरी बोतल अच्छी
जब भी टूटी है जाम हो गयी है

रियाझ खैराबादी

हाय ! 'सीमाब' उसकी मजबूरी
जिसने की हो शराब से तौबा

सीमाब अकबराबादी

या तो इस काली घटा को रोक लो
या इजाज़त दो कि तौबा तोड़ दो

खामोश गाझीपुरी

मैंने अंगूर की बेटी[५] से मुहब्बत की है
मैं तो आशिक हूँ, मुझे कोई शराबी न कहे

जिगर श्योपूरी

शराब कर के पिया उसने ज़हर जीवन भर
हमारे शहर में 'नीरज' सा कोई मस्त न था

गोपालदास 'नीरज'

---

१. शराबियों ने २. शराब के प्याले ३. प्याले ४. माँगे बगैर ५. शराब

तौबा तो कर चुका था मगर इसका क्या इलाज
वाइज़ की ज़िद ने फिर मुझे मजबूर कर दिया

जिगर मुरादाबादी

पी के कर लेता हूँ तौबा, जब से ये दस्तूर[१] है
दिल भी रौशन है मेरा, मुँह पर भी मेरे नूर है

रसा

मय से मैंने कब की तौबा ?
तौबा, तौबा ! कैसी तौबा ?

हुस्न बरेलवी

मेरा यही खयाल है, गो मैंने पी नहीं
कोई हसीं पिलायें तो ये शय बुरी नहीं है

रियाझ खैराबादी

यारो ! खता मुआफ मेरी, मैं नशे में हूँ
सागर[२] में मय है, मय में नशा, मैं नशे में हूँ

ऐ मुहतसिब[३] न फेंक, मेरे मुहतसिब न फेंक
जालिम शराब है, अरे जालिम शराब है

जिगर मुरादाबादी

इक हमीं है कि बहक जाते हैं तौबा की तरफ
वरना रिन्दों में बुरा चाल-चलन किसका है

रियाझ खैराबादी

आप है, ये जाम है, 'इर्शाद' है
कोई भी अब दरमियाँ होता नहीं

चिनु मोदी 'इर्शाद'

---

१. रस्म २ शराब की प्याली ३. वह कर्मचारी जो लोगों के आचरण के निरीक्षण के लिये नियुक्त हो

मैकदे में बैठकर पीते रहे,
इस तरह 'इर्शाद' भी खैयाम था

चिनु मोदी 'इर्शाद'

तौबा तौबा बोल रहा है कब से ये 'इर्शाद' मगर
तौबा करना, जाम भी भरना, अच्छी बात नहीं

चिनु मोदी 'इर्शाद'

शिकायत

कह के ये और कुछ कहा न गया
कि मुझे आपसे शिकायत है

आरज़ू लखनवी

जब पुरसिशे-हाल[१] पे कहता हूँ एहसाँ है आपका, ज़िंदा हूँ
कहते हैं किस-किस पहलू से[२] अब मेरी शिकायत होती है

अन्जुम मानपुरी

तुम्हारा ज़िक्र नहीं है, तुम्हारा नाम नहीं है
किया, नसीब का शिकवा, हज़ार बार किया

जोश मलिहाबादी

बदगुमाँ[३] आप है क्यूँ, आप का शिकवा है किसे
जो शिकायत है हमें, गर्दिश-ए-अय्याम[४] से है

हसरत मुहानी

---

१. हाल पूछना २. तरीके से ३. असंतुष्ट ४. कालचक्र

हर आन[1] एक ताज़ा शिकायत है आपसे
अल्लाह, मुझको कितनी मुहब्बत है आपसे

जलाल उद्दीन अकबर

शिकवे तू शौक से कर वस्ल[2] में लेकिन ऐ दिल
बात कुछ ऐसी न बिगड़े कि बना भी न सकूँ

अमीर मीनाई

कहूँ कुछ उनसे, मगर ये खयाल होता है
शिकायतों का नतीजा[3] मलाल[4] होता है

कमर बदायूनी

होता है सितम जाँबाज़ो[5] पर गैरों पे[6] इनायत[7] होती है
इस जुल्म को उनके क्या कहिये, कहिये तो शिकायत होती है

अंजुम मानपुरी

वो करें भी तो किन अल्फाज़[8] से तेरा शिकवा
जिनको तेरी निगाहे-लुत्फ[9] ने बर्बाद किया

जोश मलिहाबादी

शिकवे के बदले किया शुक्रे-सितम[10]
फिर खफा[11] है, क्या मज़े की बात है

दाग़

ज़िंदगी से तो खैर शिकवा था
मुद्दतों मौत ने भी तरसाया

---

१. क्षण २. मिलन ३. परिणाम ४. दुःख ५. जान देने वाले ६. दूसरों पर ७. कृपा
८. शब्द ९. प्यार भरी दृष्टि १०. अत्याचार ११. क्रुद्ध

अदा से देख लो जाता रहे गिला दिल का
बस एक निगाह पे ठहरा है फैसला दिल का

फलक लखनवी

'अर्श' पहले यह शिकायत थी खफा होता है वह
अब यह शिकवा है कि वो ज़ालिम खफा होता नहीं

अर्श मलसियानी

बे-महल[१] बात भली भी हो तो बुरी होती है
शुक्र करते हुए डरता हूँ शिकायत कैसी ?

दाग़

मुहब्बत ही में मिलते हैं शिकायत के मजे पैहम[२]
मुहब्बत जितनी बढ़ती है, शिकायत उतनी होती है

शकील बदायूनी

शिकायतें भी बहुत हैं, हिकायतें भी बहुत
मज़ा तो जब है कि यारों के रू-ब-रू[३] कहिये

अली सरदार झाफरी

चुप हो गया हूँ, आप की सूरत को देखकर
करनी थीं मुझे आपसे कितनी शिकायतें

अदम

जो भी कहना है कहो साफ, शिकायत कैसी ?
इन इशारात-ओ-कनायात[४] से जी डरता है

सईद

न शिकवा शिकायत, न हर्फ-ए-हिकायत[५]
कहो 'मीरजी' आज क्यों हो खफा से ?

मीर

१. बेमौका २. लगातार ३. सम्मुख ४. इशारे और संकेत ५. किस्सा-कहानी का शब्द

आप ही अपनी जफाओं[1] पर जरा गौर[2] करें
हम अगर अर्ज़ करेंगे तो शिकायत होगी

सुने जाते न थे तुमसे मिरे दिन-रात के शिकवे
कफन सरकाओ, मेरी बेज़बानी देखते जाओ

फानी बदायूनी

तुम्हारी बात तो 'रासिख' समझ में कुछ नहीं आती
गिला भी यार का करते हो और रोते भी जाते हो

रासिख अझीमाबादी

तू भी बदल गया तो शिकायत नहीं मुझे
करता है कौन टूटे मकानों की देखभाल ?

मुमताझ राशिद

गिला कुछ भी नहीं मुझको वायझ[3] से, लेकिन
ये कौन आपका तझकिरा[4] करने वाले ?

बेताब अझीमाबादी

जब ये मिल जाएँ, कलेजे से लगाएँ इनको
इन हसीनों की किसी बात का शिकवा कैसा ?

रियाझ खैराबादी

अर्ज़े-अहवाल[5] को गिला समझे
क्या कहा मैंने, आप क्या समझे ?

दाग़

---

१. जुल्म, बेवफाई २. ध्यान ३. उपदेशक ४. चर्चा ५. हाल का निवेदन

सब न मिलने की बातें थी, जब आकर मिल गये
सारे शिकवे मिट गये, सारा गिला जाता रहा

अख्तर शीरानी

मैं गिला करता हूँ अपना तू न सुन गैरों की बात
है यही कहने को वो भी और क्या कहने को हैं ?

मोमिन

देने वाले, तुझे देना है तो इतना दे दे
कि मुझे शिकवए-कोताहिए-दामाँ[१] हो जाये

बेदम वारसी

कहीं जवाब है इस हद की बदगुमानी का
कि शुक्र भी जो करूँ आप उसे गिला कहिये

शाद अझीमाबादी

मैं अपने हाल से खुद बेखबर हूँ
तुम्हारी कमनिगाही[२] का गिला क्या ?

सीमाब अकबराबादी

आपके होते दुनिया वाले मेरे दिल पर राज करें ?
आपसे मुझको शिकवा है, खुद आपने बेपरवाई की

कतील शिफाई

नामेहरबानियों का गिला तुमसे क्या करें ?
हम भी कुछ अपने हाल पे अब मेहरबाँ नहीं

फानी बदायूनी

जाँ न ख़ा, वस्ले-उदू[३] सच ही सही, पर क्या करूँ
जब गिला करता हूँ, हमदम[४], वो कसम खा जाए हैं

मोमिन

---

१. दामन छोटा होने की शिकायत २. विमुखता ३. रकीब से मिलन ४. दोस्त

तुमने जो चाहा किया कौन तुम्हें दे इल्ज़ाम ?
हम अगर शुक्र न करते तो शिकायत होती

वहशत कलकतवी

मेरी किस्मत ही में लिक्खी थी तबाही ऐ दोस्त,
है शिकायत, मुझे अपनेकी, न बेगाने[१] की

अझीज वारिसी

नहीं शिकवा मुझे कुछ तेरी बेवफाई का हरगिज़
गिला तब हो अगर तूने किसीसे भी निभाई हो

ख्वाजा मीर दर्द

करूँ मैं शिकवा अगर तेरी बेवफाई का
जहाँ में नाम न ले कोई आशनाई[२] का

वाकिफ देहलवी

शिकवा-ए-गम[३] तिरे हुजूर किया
हमने बेशक बड़ा कुसूर किया

हसरत मुहानी

इसमें कोई शिकवा न शिकायत न गिला है
ये भी कोई खत है कि मुहब्बत से भरा है

इफ्तिखार इमाम

शिकायत उनसे न कर बेरुखी[४] की ऐ 'सहगल'
ये क्या झरूरी है कि वो दिलदिही[५] की बात करें

राधाकृष्ण सहगल

---

१. पराये २. दोस्ती ३. दुःख की फरियाद ४. ऊपेक्षा ५. सांत्वना

गुस्ताख[1] हवाओं की शिकायत न किया कर
उड़ जाए दुपट्टा तो धनुक ओढ़ लिया कर

कतील शिफाई

अगर अच्छे नहीं लगते तुम्हें मेरे गिले-शिकवे
मुझे भी तो तुम्हारी बेरुखी अच्छी नहीं लगती

आविदी

जबाँ कट जाय गर लब से तुम्हारा कुछ गिला निकले
मगर यह तो कहूँगा तुमको क्या समझा था, क्या निकले ?

सालिक

दूसरे मुझको न समझे तो कोई बात न थी
शिकवा यह है कि मुझे तू भी न समझा ऐ दोस्त !

हुरमत उलइकराम

कर रहे थे जाने हम अल्लाह से किसका गिला
आप अपना सर झुका कर क्यों पशेमाँ[2] हो गए ?

सीमाब अकबराबादी

दो हर्फ[3] भी मेरे सुन न सके, तुम इतने क्यों बेज़ार हुए
मैंने तुम्हे अपना समझा था, अपनों से शिकायत होती है

माहिर-उल-कादरी

कैसे कहें कि उसको भी हमसे कोई लगाव है
उसने तो हमसे आज तक कोई गिला नहीं किया

जौन इलिया

गैरों की बात छोड़िए, गैरों से क्या गिला ?
अपनों ने क्या दिया हमें, अपनों से क्या मिला?

कैफी आझमी

---

१. अशिष्ट २. लज्जित ३. शब्द

न तड़पने की इजाज़त है न फरियाद की है
घुट के मर जाऊँ यह मर्ज़ी मेरे सैयाद[१] की है

मुहम्मद जान शाद

जो चीज़ नहीं बस की फिर उसकी शिकायत क्या
जो कुछ नज़र आता है, अच्छा नज़र आता है

सफी लखनवी

ये सुना है कर रहे थे गैर से मेरा गिला
शुक्र है उनको किसी सूरत तो याद आता हूँ

रुसवा मझलूमी

हसीं भी हो तुम, अच्छे आदमी भी हो, गिला ये है
मोहब्बत वालों से तुमको मोहब्बत है मगर कम-कम

फिराक गोरखपुरी

नाहक है गिला हमसे, बेजा[२] है शिकायत भी
हम लौट के आ जाते, आवाज़ तो दी होती

जरा सी बात का इतना मलाल[३] करते हो ?
शिकायतें भी वहीं हैं, जहाँ मुहब्बत है

बशीर बद्र

उस शोख[४] का शिकवा किया, 'हसरत' ये तूने क्या किया
इससे तो ऐ मर्दे-खुदा[५], बेहतर तेरा मर जाना था

हसरत मोहानी

१.शिकारी २. अनुचित ४. दुःख ४. नटखट ५. मर्द का बच्चा

आप को 'इर्शाद' से अब भी गिला ?
जो पड़ा रहता है कब्रस्तान में

चिनु मोदी 'इर्शाद'

सबका अहवाल वही है, जो हमारा है आज
ये अलग बात है कि शिकवा किया तनहा[१] हमने

शहस्यार

साकी

मैं और बज़्म-ए-मय[२] से यों तश्नाकाम[३] आऊँ
गर मैंने की थी तौबा साकी को क्या हुआ था ?

ग़ालिब

साकिया तश्नगी[४] की ताब[५] नहीं
ज़हर दे दे अगर शराब नहीं

दाग़

साकी हमारे जाम में क्यों बाल पड़ गया ?
ऐसा न हो कि गैर की झूठी शराब हो

दाग़

अलग बैठे थे फिर भी आँख साकी की पड़ी हम पर
अगर है तश्नगी कामिल[६] तो पैमाने भी आयेंगे

मजरूह सुल्तानपुरी

---

१. अकेला २. शराब की महफिल ३. प्यासा ४. प्यास ५. सहनशक्ति ६. पूर्ण

नशा पिला के गिराना तो सबको आता है
मज़ा तो जब है कि गिरतों को थाम ले साकी

इकबाल

असर न पूछिये साकी की मस्त आँखों का
यह देखिये कि कोई होशियार बाकी है

बेताब

मैं समझता हूँ तेरी इश्वागरी[१] को साकी
काम करती है नज़र नाम है पैमाने का

जलील मानिकपुरी

एक सागर भी इनायत[२] न हुआ याद रहे
साकिया जाते हैं महफिल तेरी आबाद रहे

चकबस्त लखनवी

मेरी निगाह में वो रिन्द ही नहीं साकी
जो होशियारी-ओ-मस्ती में इम्तियाझ[३] करे

इकबाल

मय भी हे, मीना[४] भी है, सागर भी है, साकी नहीं
जी में आता है लगा दे आग मयखाने को हम

नझीर अकबराबादी

आज पी हो, तो साकी, हराम शै[५] पी हो
ये शब[६] की पी हुई मय का खुमार बाकी है

---

१. हाव-भाव दिखाना २. कृपा ३. भेद ४. शराब रखने का शीशे का पात्र
५. चीझ ६. रात्रि

मुझ तक कब उनकी बज़्म में आता था दौरे-जाम
साकी ने कुछ मिला न दिया हो शराब में

ग़ालिब

मयकशों[१] ! मय की कमी-बेशी[२] पे नाहक जोश है
ये तो साकी जानता है, किसको कितना होश है

नातिक लखनवी

गज़ब निगाह ने साकी की बंदोबस्त किया
शराब बाद को दी पहले सबको मस्त किया

शाद अज़ीमाबादी

नज़र मिला के कहा मुझसे मेरे साकी ने
हराम कहते हैं जिसको ये वो शराब नहीं

सुगीर बिलगिरामी

लबालब जाम फिर साकी ने वापस ले लिया मुझसे
न जाने क्या कहा मैंने, न जाने क्या हुआ मुझसे

तासीर

ज़मीं पे जाम को रख दे, जरा ठहर साकी
मैं इस पे हो लूँ तसदुक[३], तो फिर उठा के पियूँ

शाद अज़ीमाबादी

दूसरों से बहुत आसान है मिलना साकी
अपनी हस्ती से मुलाकात बड़ी मुश्किल है

अदम

दूर से आये थे साकी सुन के मैखाने को हम
पर तरसते ही चले, अफसोस ! पैमाने को हम

नज़ीर अकबराबादी

---

१. शराबीयों २. कम-ज्यादा होना ३. बलिहार

साकी और वाइझ[१] में ज़िद है, बादाकश[२] चक्कर में है
तौबा लब पर और लब डुबा हुआ सागर में है

अहसन मारहरवी

साकी ! तेरा अक्से-रुख[३] है, वरना
सहबा[४] रंगीं न जाम रंगीं

तिलोकचन्द महरुम

बड़े अज़ाब[५] में है जाने-मैकशाँ[६] साकी
नहीं शराब तो ज़िक्रे शराब रहने दे

हसरत मुहानी

वो आ रहा है असा[७] टेकता हुआ वायझ
बहा दे इतनी कि साकी, कहीं न थाह मिले

रियाझ खैराबादी

जिगर की आग बुझे जिससे जल्द वो शय[८] ला
लगा के बर्फ में साकी सुराहिये मय ला

इन्शा

पिलाने की पीने से झ्यादा खुशी है
मेरे हाथ से आज साकी ने पी है

निगाहे नाज़ से साकी का देखना मुझको
फिर अपने हाथ में सागर ऊठा के रह जाना

शाद अझीमाबादी

---

१. उपदेशक २. शराबी ३. चेहरे का प्रतिबिम्ब ४. शराब ५. मुसीबत ६. शराबी की जान ७. लाठी ८. चीझ

मै पर किसीका, खुम[१] पर किसीका
साकी पे अपने, दावा हमारा

शाद अझीमाबादी

शराब दे कि न दे तुझ पे मैं फिदा साकी
मुझे तो बात में तेरी बड़ा मज़ा आया

शाद अझीमाबादी

यह इख्तियार है तुझे कि दे न दे साकी
गिला समझते हैं हम बादाकश[२] हराम तेरा

शाद अझीमाबादी

इक जाम की बिसात तो साकी बहुत न थी
पानी भी अब मुझे तेरे घर का हराम है

शाद अझीमाबादी

साकी-ओ-मुतरिब[३] आये, जाम[४] आये, सुबू[५] आये
आना था जिनको वो ही न आये तमाम रात

शमीम जयपुरी

साकी की इक नज़र ही हमें मस्त कर गई
किसको सुराही-ओ-खुमो-सागर[६] का होश था

दत्तात्रय 'कैफी'

किसीसे हाय ! साकी का यह कहना
'लहू मेरा पिये जो बेपिये जाय'

रियाझ खैराबादी

---

१. शराब रखने का पात्र २. शराबी ३. गायक ४. शराब की प्याली ५. शराब रखने का पात्र ६. शराब पीने का सामान - सुराही, मटका और प्याला

मस्त कर दे मुझे साकी ! मगर इस शर्त के साथ
होश इतना रहे बाकी कि तुझे याद करुँ

जलील मानिकपुरी

कुछ अपनी करामात दिखा दे साकी !
जो खोल दे आँख वो पिला दे साकी

जोश मलसियानी

पैमाने[१] को हम मुँह से लगाते न लगाते
साकी की मुलाकात ही तौबा-शिकनी[२] थी

अहमद फराझ

बात साकी की न टाली जाएगी
तौबा कर के तोड़ डाली जाएगी

जलील मानिकपुरी

नहीं है रब्त[३] साकी से 'कतील' अपना मगर फिर भी
हमारे प्यार की बुनियाद पर मैखाना बनता है

कतील शिफाई

मस्त मैं तो हो गया तेरी निगाह से साकिया
अब नहीं मुझमें रहा है और पैमाने का होश

जाफरअली 'हसरत'

पिला मय आश्कारा[४] हमको किसकी साकिया, चोरी
खुदा की जब नहीं चोरी तो फिर बन्दे की क्या चोरी ?

जौक

मैं तो जब मानूँ, मेरी तौबा के बाद
करके मजबूर पिला दे साकी

जिगर मुरादाबादी

---

१. मद्यपान का पात्र २. तौबा तोड़ना ३. मेल ४. प्रकट रूप से

चाप सुनकर जो हटा दी थी, उठा ला साकी
शैख साहब है, मैं समझा था मुसलमाँ है कोई

अकबर इलाहाबादी

रूह किसी मस्त की प्यासी गई मयखाने से
मय ऊडी जाती है साकी ! तेरे पैमाने से

दाग़

कुछ कमी तो नहीं साकी तेरे मैखाने में
कितनी आ जायेगी टूटे हुए पैमाने में

राझ

सोचकर तोड़ना उन्हें साकी
टूट कर जाम फिर नहीं जुड़ते

अब्दुल हमीद 'अदम'

साकी तेरे मैखाने में जब हम नही होंगे
तब टूटे हुए जाम हमें याद करेंगे

आरझू लखनवी

ये हालत हो गई है एक साकी के न होने से
कि खुम के खुम भरे है मै से और मैखाना खाली है

जौहर

कोई प्यासा ही रहे, कोई पीए जाम पे जाम
कैसा दस्तूर[१] है साकी तेरे मैखाने का ?

अन्जुम कुरैशी

साकी ने भर के जाम दिये सबको बज़्म में
सागर जो हमने माँगा तो शीशा हिला दिया

नझीर अकबराबादी

---

१. रिवाज

साकिया, मय से मैं तौबा करुँ, तौबा, तौबा
मैंने दुनिया के दिखाने को कसम खाई है

तेरी दर्यादिली का ज़िक्र था साकी, बहुत लेकिन
नहीं आया मुझ तक रात पैमाना, मैं क्या समझूँ ?

राधाकृष्ण सहगल

साकिया, शौक से भर-भर के पिला जाम हमें
होके बेहोश तेरी राह में कुर्बां होंगे

एजाझ

क्यूँ न टूटे मेरी तौबा जो कहे तू साकी
पी ले, पी ले, अरे घनघोर घटा छायी है

रियाझ खैराबादी

तेरे शीशे में मय बाकी नहीं है
बता क्या तू मेरा साकी नहीं है ?

इकबाल

सितारा

तारों की झिया[१] दिल में इक आग लगाती है
आराम से रातों को सोते नहीं सौदाई

बुझे बुझे से हैं जब आसमान के तारे
तो क्यों न फिर किसी ज़ुहराज़बीं[२] की बात करें

नाझिश परतापगढी

१. प्रकाश २. सुंदरी

जाओ अब सो रहो सितारो
दर्द की रात ढल चली है

फैज़ अहमद फैज़

दिन को तारे तो मुकद्दर[१] ने दिखाये मुझको
फिर भी आती हैं सदाएं[२] अभी देखा क्या है ?

जोश मलसियानी

फूलों से पूछिए न सितारों से पूछिए
दिल क्या है अश्के-गम के[३] शरारों[४] से पूछिए

अलम मुझफ्फरनगरी

तारा टूटते देखा सबने, यह नहीं देखा एक ने भी
किसकी आँख से आँसू टपका, किसका सहारा टूटा है

आरझू लखनवी

दिन को तारे दिखा दिये तूने
ऐ शबे-इन्तज़ार क्या कहना !

पं. जगमोहननाथ रैना शौक

जो गम हद से ज़ियादा हो, खुशी नज़दीक होती है
चमकते हैं सितारे रात जब तारीक[५] होती है

अफसर मेरठी

थकी थकी सी फज़ाएं, बुझे बुझे से तारे
बड़ी उदास घड़ी है, जरा ठहर जाओ

सैफुद्दीन सैफ

---

१. भाग्य २. आवाजें ३. दुःख के आँसू ४. चिनगारियाँ ५. अँधेरी

मेरे आँसूओं की जरा कद्रो-कीमत
चमकते हुए इन सितारों से पूछो

जलील मानिकपुरी

चलो आज जी भर के आँसू बहा लें
यह तारों भरी रात आये-न-आये

ख़िज़ाँ प्रेमी

जिस तरह माह[१] सारे सितारों में एक है
यूँ मेरा महज़बीं[२] भी हज़ारों में एक है

जौक

अब तो आराम करें सोचती आँखें मेरी
रात का आखिरी तारा भी है जाने वाला

वज़ीर आगा

रौनके-चर्ख[३] देखने वालो
कुछ ज़मीं पर भी चाँद-तारे हैं

शकील बदायूनी

ख्वाबों के आसमाँ से गिरा, तो पता चला
मौसम के साथ-साथ सितारा बदल गया

अदीब

तारों का गो[४] शुमार[५] में आना मुहाल[६] है
लेकिन किसी को नींद न आये तो क्या करे ?

अफसर मेरठी

ये ठीक है कि सितारों पे घूम आये हम
मगर किसे है सलीका[७] ज़मीं पे चलने का ?

जाँनिसार अख्तर

---

१. चाँद २. प्रेयसी ३. आकाश की भव्यता ४. यद्यपि ५. गिनती ६. ना-मुमकिन
७. तमीज़

एक तसल्ली-सी थी सितारों से
वो भी अब झिलमिलायें जाते हैं

युसूफ रामपुरी

अभी न जाओ कि तारों का दिल धड़कता है
तमाम रात पड़ी है, जरा ठहर जाओ

सैफुद्दीन 'सैफ'

हमें भी नींद आ जाएगी, हम भी सो ही जाएगे
अभी कुछ बेकरारी है, सितारों तुम तो सो जाओ

कतील शिफाई

तुम्हें क्या आज भी कोई मिलने नहीं आया
ये बाझी हमने हारी है, सितारों तुम तो सो जाओ

कतील शिफाई

वो सितारे जो चमकते हैं तेरे आँगन में
उन सितारों से तो अपनी भी शनासाई[१] है

नसीर तराबी

तमाम रात जो लड़ता रहा घटाओं से
अरे वो आखिरी तारा भी छुप गया, देखो

नूर बिजनौरी

टूटता देखा सितारा
तो परिन्दा[२] रो पड़ा था

चिनु मोदी 'इर्शाद'

---

१. परिचय २. पक्षी, चिडिया

हम और तुम

तू इस कदर मुझे अपने करीब लगता है
तुझे अलग से जो सोचूँ अजीब लगता है

जाँनिसार अख्तर

मैं तेरी जात में गुम हो सका न तू मुझमें
बहुत करीब थे हम, फिर भी फासला तो रहा

जाँनिसार अख्तर

तुझको गये हुए तो बहुत देर हो चुकी,
अब तक तुझे गले से लगाये हुए हैं हम

जाँनिसार अख्तर

यों तो मुरदे से पड़े रहते हैं हम
पर वह आता है तो आ जाता है जी

मीर

देर लगी आने में तुमको, शुक्र हे फिर भी आए तो,
आस ने दिल का साथ न छोड़ा, वैसे हम घबराए तो

अंदलीब शादानी

चाहत के बदले में हम तो बेच दें अपनी मर्ज़ी तक
कोई मिले तो दिल का गाहक, कोई हमें अपनाए तो

अंदलीब शादानी

खूब हमारा साथ निभाया, बीच भँवर में छोड़ा हात[१]
हमको डुबोकर साहिल[२] पर जा पहुँचे हो, अच्छी बात

इब्ने-इन्शा

---

१. हाथ   २. तट

अपने-अपने हौसले अपनी तलब की बात है
चुन लिया हमने तुम्हें, सारा जहाँ रहने दिया

'अदीब' सहारनपुरी

चंद लम्हों के[१] लिए तूने मसीहाई[२] की
फिर वही मैं हूँ, वही उम्र है तन्हाई[३] की

अहमद फराज़

हम नहीं फिर भी तो आबाद है महफिल उनकी
हम समझते थे कि रौनक है तो दम से अपने

अहमद फराज़

जब सुबह हो चुकी है तो क्या सोचना फराज़
वो रात क्यों न आए थे कैसे न आए थे

अहमद फराज़

खिले तो अब के भी गुलशन[४] में फूल हैं लेकिन
न मेरे ज़ख्म की सूरत न तिरे लब[५] की तरह

अहमद फराज़

तू खुदा है न मेरा इश्क फरिश्तों जैसा
दोनों इन्सां है तो क्यूँ इतने हिजाबों में[६] मिलें

अहमद फराज़

उसे 'फराज़' अगर दुःख न था बिछड़ने का
तो क्यूँ वो दूर तलक देखता रहा मुझको

अहमद फराज़

भला हुआ कि कोई और मिल गया तुम सा
वगरना हम भी किसी दिन तुम्हें भुला देते

खलीलु र्रहमान आझमी

---

१. क्षणों के २. इलाज ३. एकांत ४. बाग ५. होंठ ६. पर्दों में

रात बाकी थी जब वो बिछड़े थे
कट गइ उम्र, रात बाकी है

खुमार बाराबंकवी

मेरी हर साँस में खुशबू है उसकी
कहूँ कैसे कि वो मुझसे जुदा है

वझीर आगा

कभी सरे-राह[१] इत्तफाकन[२] जो अजनबी की तरह मिला था
'नियाझ' फिर मेरी रुह[३] में भी उतर गया कौन शख्स था वह ?

नियाझ बदायूनी

धनक[४] के रंग में साडी तो रंग ली मैंने
और अब यह दुःख, कि पहनकर किसे दिखाना हुआ

परवीन शाकिर

हुक्म पर उनके जान देता हूँ
मैं नही जानता कज़ा[५] क्या है ?

हसरत मोहानी

आये हो कल और आज ही कहते हो कि जाऊँ
माना कि हमेशा नहीं, अच्छा कोई दिन और

ग़ालिब

हमीं को कत्ल करते हैं, हमीं से पूछते हैं वो-
'शहीदे-नाझ' बतलाओ, मेरी तलवार कैसी है ?

हर शै[६] में रौशनी है तुम्हारे जमाल[७] की
मेरा न हो यकीं तो सितारों से पूछ लो

आलम बस्तवी

---

१. मार्ग में २. संयोग से ३. आत्मा ४. इन्द्रधनुष ५. मृत्यु ६. चीज
७. खूबसूरती

खुली किताब थे, हमको पढ़ा नहीं तुमने
हर इक वरक[१] पे तुम्हारा ही नाम लिक्खा था

वाजिदा तबस्सुम

वो भी मेरे पास से गुज़रा इसी अंदाज़ से
मैंने भी ज़ाहिर किया जैसे उसे देखा न हो

नौ बहार साबिर

दो तुन्द[२] हवाओं पर बुनियाद है तूफाँ की
या तुम न हसीं होते या मैं न जवां होता

आरझू लखनवी

मैं जब भी उसके खयालों में खो जाता हूँ
वो खुद भी बात करे तो, बुरा लगे है मुझे

जाँनिसार अख्तर

नींद आये तो अचानक तेरी आहट सुन लूँ
जाग उठूँ तो बदन से तेरी खुशबू आए

शहझाद अहमद

आप के बाद हर घड़ी हमने
आप के साथ ही गुज़ारी है

गुलझार

अगर तलाश करुँ कोई मिल ही जाएगा
मगर तुम्हारी तरह कौन मुझको चाहेगा ?

बशीर बद्र

आज वो इस राह से गुज़रा है
आज मैं फर्श न धोना चाहूँ

हुमेरा रहमान

१. पृष्ठ २. तेज

बहुत अजीब है ये कुरबतों[1] की दूरी भी
वो मेरे साथ रहा और मुझे कभी न मिला

बशीर बद्र

मिरी ख्वाहिश है कि आँगन में न दीवार उठे
मिरे भाई मिरे हिस्से की ज़मीं तू रख ले

राहत इन्दौरी

तुम हमारे किसी तरह न हुए
वरना दुनिया में क्या नहीं होता ?

मोमिन

जो भी आवे हैं वो नज़दीक ही बैठे हैं तिरे
हम कहाँ तक तेरे पहलू से सरकते जावें

मीर हसन

तुम मिरे पास होते हो गोया
जब कोई दूसरा नहीं होता

मोमिन

जब मैं चलूँ तो साया भी अपना न साथ दे
जब तुम चलो, ज़मीन चले, आसमाँ चले

जलील मानिकपुरी

मिरी मुफलिसी[2] से बचकर कहीं और जाने वाले
ये सुकूँ[3] न मिल सकेगा, तुझे रेशमी कफन में

कतील शिफाई

बिन तुम्हारे मैं जी गई अब तक
तुमको क्या खुद मुझे यकीन नहीं

एक खातून

---

१. सामीप्य २. गरीबी ३. चैन

उन्हीं रास्तों ने जिन पर कभी तुम थे साथ मेरे
मुझे रोक रोक पूछा तिरा हमसफर[१] कहाँ है ?

बशीर बद्र

मैं सोचती हूँ कि मुझमें कमी थी किस शै[२] की
कि सब का होके रहा वो, बस एक मेरा न हुआ

परवीन शाकिर

सबके यहाँ तुम हुए करमफर्मा[३]
इस तरफ को कभी गुज़र न किया

ख्वाजा मीर दर्द

मेरी हयात[४] का अंजाम और कुछ होता
जो आप कहते कभी अपना जांनिसार[५] मुझे

अझीझ वारसी

मिली बारहा[६] उधर से मुझे दावते-नज़्ज़ारा[७]
मेरी सादगी तो देखो, न समझ सका इशारा

असर करीमी

कोई प्यासा है तेरी एक झलक का 'शाही'
दो घड़ी के लिये दीदार[८] तुम्हारा माँगे

इस्लाम शाही

कहना है कह दीजिये, तश्रीह[९] न किजे
हम लोग समज लेते हैं हर बात के तेवर[१०]

राही

---

१. साथी २. चीज ३. दयालु ४. जिंदगी ५. जान देने वाला ६. बार बार
७. दीदार का निमंत्रण ८ दर्शन ९. खुलासा १०. मर्म

वो बेरहमी[१] से सर काटे 'अमीर' और मैं कहूँ उनसे
हज़ूर आहिस्ता, आहिस्ता जनाब, आहिस्ता, आहिस्ता

अमीर मीनाई

रफ्ता-रफ्ता[२] वो मेरी हस्ती का सामां हो गये
पहले जां[३], फिर जानेजां[४], फिर जानेजाना[५] हो गये

तस्लीम फाझली

बैठे उदास, उठे परेशां, खफा चले
पूछे तो कोई आपसे, क्या आये, क्या चले ?

दाग़

वो अजनबी था तो क्यूँ मुझसे फेरकर आँखें
गुज़र गया किसी देरीना[६] आश्ना[७] की तरह ?

अहमद फराझ

क्या देखता है हाथ मेरा छोड़ दे तबीब
यहाँ जान ही बदन में नहीं, नब्ज़ क्या चले ?

तमा थी फकत तेरे मिलने की दिल को
यही अपनी दौलत, खज़ाना यही था

शाद अझीमाबादी

कता[८] कीजे न ताल्लुक[९] हम से
कुछ नहीं है तो अदावत[१०] ही सही

ग़ालिब

---

१. निर्दयता २. धीरे-धीरे ३. प्राण ५. प्रियतमा ५. एक दूसरे में मग्न ६. पुराना
७. परिचित ८. तोड़ डालना ९. संबंध १०. दुश्मनावट

जहाँ कहीं भी रहूँगा मैं लौट आऊँगा
न हो यकीन तो मेरा खयाल कर देखो

शाहिद कबीर

जा के मिलता हूँ न अपना पता देता हूँ
मैं उसे ही नहीं खुद को भी सज़ा देता हूँ

शाहिद कबीर

चंद-जुम्ले[१] मेरी ताईद[२] में तुमने जो कहे,
तक्वियत[३] पहुँची बहुत उनसे खयालों के मेरे

अमीन ताबिश

हाथ रखकर मेरे सीने पे जिगर थाम लिया
तुमने इस वक्त तो गिरता हुआ घर थाम लिया

अमीर मीनाई

इसमें कुछ अपने प्यार की इज़्ज़त का है सवाल
आ जाए राह पर, दिले-नादान से कहो

कतील शिफाई

एक दिन कह लीजिए, जो कुछ है दिल में आपके
एक दिन सुन लीजिए, जो कुछ हमारे दिल में है

जोश मलिहाबादी

आओ आपस में समझ लें, गैर काहे को सुनें
तुम कहो दिल से हमारे कुछ, तुम्हारे दिल से हम

नसीम देहलवी

मुझको तो होश नहीं, तुमको खबर हो शायद
लोग कहते हैं कि तुमने मुझे बर्बाद किया

जोश मलिहाबादी

---

१. कुछ वाक्य २. समर्थन ३. आधार

कोई सवाल जो पूछे, तो क्या कहूँ उससे
बिछड़ने वाले ! सबब[१] तो बता जुदाई का

परवीन शाकिर

कोई ऐ 'शकील' देखे, ये जुनूँ[२] नहीं तो क्या है ?
कि उसीके हो गये हम, जो न हो सका हमारा

शकील बदायूनी

कितना बोझ उठाया हमने, क्या-क्या ठोकर खाई
सुनकर ये सब पहले हमसे, अपना हाल सुनाना

प्रकाश 'फिक्री'

तमाम उम्र तअल्लुक[३] का बोझ कौन सहे
उसे कहो कि चुकाने हिसाब कितने हैं ?

शमीम फारुकी

क्या कहें कैसे मरासम[४] थे हमारे उसके
वो जो एक शख्स है मुँह फेर के जाने वाला

अहमद फराझ

तुझे देखा नहीं है फिर भी तुझसे
मेरी अक्सर मुलाकातें रही हैं

कमर शेरवानी

तेरे बगैर आज मुझे लग रहा है यूँ
इक अजनबी नगर में बसा हूँ तमाम उम्र

प्रेमी रोमानी

ये न आने के बहाने हैं सभी, वर्ना मियाँ
इतना तो घर से मिरे कुछ नहीं घर दूर तिरा

आसिफ-उद्दौला 'आसिफ'

---

१. वजह, कारण २. उन्माद ३. संबंध ४. संबंध

जो हो सके तो चले आओ आज मेरी तरफ
मिले भी देर हुई, और जी उदास भी है

अझीम मुर्तझा

ऐ दोस्त, आ भी जा कि मैं तस्दीक[१] कर सकूँ
सब कह रहे हैं, आज फज़ा[२] खुशगवार[३] है

खुमार बाराबंकवी

इधर से आज वो गुज़रे तो मुँह फेरे हुए गुज़रे
अब उनसे भी हमारी बेकसी देखी नहीं जाती

असर लखनवी

मुद्दई मुझको खड़े साफ बुरा कहते हैं
चुपके तुम सुनते हो बैठे, इसे क्या कहते हैं ?

मीर

उनसे मिले जो आज तो महसूस ये हुआ
जैसे कि मिल रहे हों किसी अजनबी से हम

जावेद वशिष्ट

मालूम थीं मुझे तेरी मजबूरियाँ मगर
तेरे बगैर नींद न आई तमाम रात

माइल नकवी

तेरे फिराक की रातें कभी न भूलेंगी
मज़े मिले इन्हीं रातों में उम्र भर के लिये

नासिर काझमी

गम तो इसका है वो अहदे-वफा[४] टूट गया
बेवफा कोई भी हो, तुम न सही, हम ही सही

राही मासूम 'रझा'

---

१. पुष्टि २. वातावरण ३. मनोहर ४. प्रेम की प्रतिज्ञा

जग सूना है तेरे बग़ैर आँखों का क्या हाल हुआ
जब भी दुनिया बसती थी, अब भी दुनिया बसती है

फानी बदायूनी

तेरे बग़ैर किसी चीज़ की कमी तो नहीं,
तेरे बग़ैर तबीयत उदास रहती है

अदम

सौ हसरतों से पूछना मेरा कि जाओगे
उनका वो एक नाज़ से कहना कि हाँ चले

मोहम्मद झकरिया खाँ 'झकी'

वक्ते-रुखसत[१] तसल्लियाँ[२] देकर
और भी तुमने बेकरार किया

'दिल' शाहजहानपुरी

तुझसे अब मिल के ताज्जुब है कि अर्सा इतना
आज तक तेरी जुदाई में ये क्यों कर गुज़रा

हसरत मुहानी

चन्द कलियाँ निशात[३] की चुनकर मुद्दतों महवे-यास[४] रहता हूँ
तेरा मिलना खुशी की बात सही, तुझसे मिल कर उदास रहता हूँ

साहिर लुधियानवी

तुम्हें पहले-पहल देखा तो दिल कुछ इस तरह धड़का
कोई भूली हुई सूरत मुझे याद आ गई जैसे

मखमूर देहलवी

मैंने कभी ज़िद तो नहीं की पर आज शब[५]
ऐ महज़बीं[६] न जा कि तबीयत उदास है

अदम

---

१. बिदाई के समय २. सांत्वना ३. सुख शांति ४. निराशा मग्न ५. रात
६. चांद सी सूरत वाली

मुझे आज़माईश[१] में मत डालियेगा
मैं मर जाऊँगा आपसे दूर होकर

अदम

आवाज़ दी है तुमने कि धड़का है दिल मेरा
कुछ खास फर्क तो नहीं है दोनों सदाओं में[२]

कतील शिफाई

आप तो रात सो लिये साहिब,
हमने तकिये भिगो लिये साहिब

मौज

तुम्हें गैरों से कब फुरसत, हम अपने गम से कब खाली
चलो बस हो चुका मिलना, न तुम खाली न हम खाली

जाफरअली 'हसरत'

बदनाम है जहाँ में 'ज़फर' जिनके वास्ते
वो जानते नहीं कि 'ज़फर' किसका नाम है

ज़फर

मिलना था इत्तफाक[३], बिछड़ना नसीब था
वो इतनी दूर हो गया, जितना करीब था

कल की बात और है, मैं अब सा रहूँ या न रहूँ
जितना जी चाहे तेरा, आज सता ले मुझको

कतील शिफाई

बरंगे-उद[४] मिलेगी उसे मेरी खुशबू
वो जब भी चाहे, बड़े शौक से जलाए मुझे

कतील शिफाई

---

१. जाँच २. आवाज़ों में ३. संयोग ४. अगरबत्ती की तरह

तुम पूछो और मैं न बताऊँ ऐसे तो हालात नहीं
एक जरा-सा दिल टूटा है, और तो कोई बात नहीं

कतील शिफाई

मैं आसमानों-ज़मीं की हदें मिला देता
कोई सितारा अगर झुक के चुमता मुझको

बशीर बद्र

वो लम्हा जब मेरे बच्चे ने माँ कहा मुझको
मैं एक शाख से कितना घना दरख्त[१] हुई

हुमेरा रहमान

अनकहे लफ़्ज़ों में[२] मतलब ढूंढ़ता रहता हूँ मैं
क्या कहा था उसने और क्या सोचता रहता हूँ मैं

अनवर महमूद खालिद

आपके हाथ से करम[३] कि सितम
जो हुआ मुझपे बेहिसाब हुआ

हसरत मोहानी

वो तो कर दें मेरा कुसूर मुआफ
मैं ही कहता नहीं, 'हुझूर मुआफ'

हसरत मोहानी

जो देखेगा रोते मुझे, तुमको हँसते
मेरी बात छोड़ो, तुम्हे क्या कहेगा ?

आरझू लखनवी

फिर तुम्हे फुरसत न हो या मैं ही आपे में न रहूँ
यह बताते जाओ मेरे हक में क्या मंज़ूर है?

असर लखनवी

---

१. पेड़ २. शब्दों में ३. कृपा

तेरी भी कद्र है, तेरे दिल की कद्र है
दो लफ़्ज़ कह के आपने बहला दिया मुझे

बहझाद लखनवी

मुमकिन हो तो इक दिन आ जाओ, या खुद ही बुलाओ तुम हमको
और यह भी तुम्हारे बस में न हो, तो याद न आओ तुम हमको

हसरत तरमझवी

मैं उसका कुछ भी नहीं था तो फिर दम-ए-रुखसत[१]
पलट पलट के मुझे किसलिए वो तकता था ?

वझीर आगा

रात मैं इस कश्मकश में एक पल सोया नहीं
कल मैं जब जाने लगा तो उसने क्यों रोका नहीं ?

अमजद इस्लाम अमजद

सदमा तो है मुझे भी कि तुझसे जुदा हूँ मैं
लेकिन ये सोचता हूँ कि अब तेरा क्या हूँ मैं

कतील शिफाई

जब कभी मैं खुद को समझाऊँ कि तू मेरा नहीं
मुझमें कोई चीख उठता है, नहीं ऐसा नहीं

खुर्शीद रिझवी

दीपक - राग है चाहत अपनी काहे सुनाएँ तुम्हें
हम तो सुलगते ही रहते हैं, क्यों सुलगाए तुम्हें ?

झहूर नझर

हाय वो लोग कि मैं जिनका पुजारी हूँ 'नसीर'
हाय वो लोग कि मैं जिनका खुदा हो जाऊँ

नसीर तराबी

१. बिदा के समय

मिला भी वो तो कहाँ उसका नाम लिक्खेंगे
किताब-ए-झीस्त[१] का कोई वरक[२] भी सादा नहीं

नासिर झैदी

वो झूठे मोतियों की चमक पर फिसल गई
मैं हाथ में लिए हुए अल्मास[३] रह गया

अदम

कहर[४] हो या बला हो, जो कुछ हो
काश कि तुम मेरे लिये होते

ग़ालिब

खाकसारों[५] में अपने दे के जगह
तुमने मगरुर कर दिया हमको

हसरत मोहानी

वो तो खुशबू की तरह फैला था मेरे चार सू[६]
मैं उसे महसूस कर सकता था, छू सकता न था

अलीम हाश्मी

मैं लड़खड़ा रहा हूँ तुझे देख देख कर
तूने तो मेरे सामने इक जाम रख दिया

कतील शिफाई

तुझे न देख सकूँ मैं तो कुछ मलाल[७] नहीं
यही बहुत है कि तू मुझको देख सकता है

सीमाब अकबराबादी

---

१. जीवन की पुस्तक २. पन्ना ३. हीरा ४. आफत ५. विनम्र ६. चारों तरफ ७. दुःख

ये वहम हो कि हकीकत सुकूँ[1] इसीसे है दिल को
समझ रहा हूँ कि तू बेकरार मेरे लिए है

सीमाब अकबराबादी

वही 'बेखूद' हूँ मैं समझे हो बेखुद जिसको तुम अपना
तुम्हारी याद कैसी मैं तो खुद अपने से गाफिल हूँ

बेखुद देहलवी

किस आजिज़ी से हम ने कहा – 'बेकरार हूँ'
किस बेरुखी से उस ने कहा –'कोई क्या करे?'

बेखूद बदायूनी

ये भी क्या जीने में जीना है बगैर उनके 'अदीब'
शमा गुल कर दी गई, बाकी धुआँ रहने दिया

'अदीब' सहारनपुरी

वक्त तो दो ही कठिन गुज़रे हैं सारी उम्र में
इक तेरे आने से पहले इक तेरे जाने के बाद

दाग़

आखिरी हिचकी तेरे जानू[2] पे आए
मौत भी मैं शायराना चाहता हूँ

कतील शिफाई

कभी मुझको साथ लेकर, कभी मेरे साथ चल के
वो बदल गए अचानक, मेरी ज़िंदगी बदल के

एहसान दानिश

गैरों से कहा तुमने, गैरों से सुना तुमने
कुछ हमसे कहा होता, कुछ हमसे सुना होता

चिराग हसन 'हसरत'

---

१. चैन २. घुटना

वो जब मुझको देख रही थी, मैंने उसको देख लिया था
बस इतनी सी बात थी लेकिन बढ़ते-बढ़ते कितनी बढ़ी है

अमीक हन्फी

एक साथ रहकर भी दूर ही रहे हम तुम
धूप और छाँओं की दोस्ती अजब गुज़री

झहूर नझर

जो कहोगे तुम, कहेंगे हम भी 'हाँ, यूँ ही सही
आपकी गर यूँ खुशी है, मेहरबाँ यूँ ही सही

जौक

तेरे बन्दे हम हैं खुदा जानता है,
खुदा जाने तू हमको क्या जानता है ?

मीर

मेरी बर्बादियों का, हमनशीनों[१]
तुम्हें क्या, खुद मुझे भी गम नहीं है

मझाज

ये सोहबत, ये जलसे, ये आलम[२] कहाँ ?
खुदा जाने कल तुम कहाँ, हम कहाँ ?

बड़ा गज़ब है कि 'हातिम' को तुम न पहचाना
वही कदीम[३] तुम्हारा गुलाम, भूल गये ?

शाह हातिम

मेहरबाँ होके बुला लो मुझे चाहो जिस वक्त
मैं गया वक्त नहीं हूँ कि फिर आ भी न सकूँ

ग़ालिब

---

१. दोस्तों २. दशा, स्थिति ३. पुराना

तुम सलामत रहो हज़ार बरस
हर बरस के हो दिन पचास हज़ार

ग़ालिब

अभी से हर्फे रुखसत[१] क्यों जब आधी रात बाकी है
गुलो शबनम तो होते हैं जुदा आहिस्ता–आहिस्ता

अहमद नदीम कासमी

मैं बचा लूँगा तुझे दुनिया के सर्दो–गर्म से
ढाँप ले मुझसे बदन अपना तेरी चादर हूँ मैं

इख़्तखार 'नसीम'

वो जिनके ज़िक्र से 'नाहीद' ज़िंदगी है हसीं
वो लोग आएँ तो आँखों पे हम बिठाएँ भी

किश्वर 'नाहीद'

सुनो तो अर्ज़ करें, मान लो तो क्या कहना
तुम्हारे पास हम आए थे, इक ज़रुरत से

फिराक गोरखपुरी

मैं उसकी दस्तरस[२] में हूँ, मगर वो
मुझे मेरी रज़ा[३] से माँगता है

परवीन शाकिर

मैं सच कहूँगी फिर भी हार जाऊँगी
वो झूठ बोलेगा और लाजवाब कर देगा

परवीन शाकिर

खुद तुमसे मिलने आयी भी
और आके बहुत पछतायी भी

फातमा हसन

१. बिदाई का शब्द २. पहुँच ३. इच्छा

ऐ मुझको फरेब[१] देने वाले
मैं तुझ पर यकीन कर चुका हूँ

अतहर नफीस

वह मेरी दुनिया का मालिक था, मगर मेरा न था
मैंने इस अंदाज़ पर पहले कभी सोचा न था

जमील नज़र

बंदा तो इस इकरार[२] पे बिकता है तेरे हाथ
लेना है अगर मोल तो आज़ाद न करना

नज़्म

अक्सर तेरे बगैर हमें चैन आ गया
तू आए तब ही हमको करार आए, ये नहीं

अख्तर अंसारी

आज उसकी इनायत[३] का अंदाज़ न पूछो
इक जिस्म[४] ही क्या रुह भी सेराब[५] लगे हैं

महताब झफर

जब शाख कोई हाथ लगाते ही चमन में
शर्मा के लचक जाये तो लगता है कि तुम हो

अख्तर

तुम ज़माने के हो हमारे सिवा
हम किसीके नहीं तुम्हारे हैं

शकील बदायूनी

तुम्हीं इन्साफ से कह दो, यह आना कोई आना है
न कुछ कहना, न कुछ सुनना, इधर आना, उधर जाना

असर लखनवी

---

१. धोखा २. स्वीकृति ३. कृपा ४. शरीर ५. हरा-भरा

तुम्हें भी याद नहीं और मैं भी भूल गया
वो लम्हा[१] कितना हसीं था मगर फज़ूल गया

जावेद अखतर

तेरे जमाल[२] की तस्वीर खींच दूँ लेकिन
जुबाँ में आँख नहीं, आँख में जुबान नहीं

जिगर मुरादाबादी

इस खौफ से वह साथ निभाने के हक में है
खोकर मुझे यह लड़की कहीं दुःख से मर न जाये

परवीन शाकिर

औरों का हाथ थामो, उन्हें रास्ता दिखाओ
मैं भूल जाऊँ अपना ही घर, तुमको इससे क्या ?

परवीन शाकिर

अब तो इस राह से वह शख्स गुज़रता भी नहीं
अब किस उम्मीद पे दरवाज़े से झाँके कोई

परवीन शाकिर

मेरी खामोशी को मेरी सर्द-मेह्री[३] मत समझ
तू यकीं कर मैं तेरा अब भी हूँ सौदाई[४] बहुत

पाशा रहमान

लगा के आग बदन में वह मुझसे चाहता है
कि साँस लूँ तो फज़ा को धुआँ-धुआँ न करुँ

मुहसिन एहसान

लोग न जाने किन रातों की मुरादें माँगा करते हैं
अपनी रात तो वह जो तेरे सात[५] गुज़र गयी जानाँ

परवीन शाकिर

---

१. क्षण २. सौंदर्य ३. कठोरता ४. पागल प्रेमी प. साथ

ये हवा कैसे उड़ा ले गई आँचल मेरा
यूँ सताने की आदत तो मेरे घनशाम की थी

परवीन शाकिर

मैं हमेशा से उसके सामने थी
उसने देखा नहीं, तो मेरा नसीब

परवीन शाकिर

पहले पहल जब तुझको देखा, क्या जाने क्या आई मन में
जीवन क्यारी ऐसी महकी फूल खिले जैसे बन में

शाद अझीमाबादी

मुझे ये डर है, दिले-ज़िन्दा[१] ! तू न मर जाये
कि ज़िंदगानी इबादत[२] है तेरे जीने से

ख्वाजा मीर दर्द

तेरी खुशबू ही तेरे पास ले आयेगी मुझे
राह भूलूँगा, दिशा को मैं नही भूलूँगा

खलील धनतेजवी

रात उसने ख्वाब में आकर कहा
आयेंगे, आकर बुला ले जायेंगे

खलील धनतेजवी

कौन कहता है कि वो ज़ख्मे-जिगर अच्छा करें
आते-जाते कम से कम कुछ हाल तो पूछा करें

खलील धनतेजवी

हम तो ठहरे परदेसी, हमको इतना मत चाहो
जी लगा तो ठहरेंगे, वर्ना उठ के चल देंगे

खलील धनतेजवी

---

१. जीवित दिल २. बंदगी

वो अश्क[१] बन के मेरे चस्म-तर[२] में रहता है
अजीब शख्स है, पानी के घर में रहता है

परवीन शाकिर

सब्ज़ा भी, कली भी, गुँचे भी, मौसम भी, घटा भी, जाम भी है
ऐसे में काश तुम आ जाओ, ऐसे में तुम्हारा काम भी है

इकबाल सफीपुरी

बस ये हुआ कि उसने तकल्लुफ[३] से बात की
और हमने रोते-रोते दुपट्टे भिगो लिए

परवीन शाकिर

तेरी चाहत के भीगे जंगलों में
मेरा तन मोर बन के नाचता है

परवीन शाकिर

जो कुछ कहो कबूल है, तकरार क्या करुँ
शर्मिन्दा अब तुम्हें सरे-बाज़ार क्या करुँ

अनवर शउर

मैं उसको सोच तो सकता हूँ, छू नहीं सकता
वो मेरे सामने मौजूद है, खुदा की तरह

अहमद नदीम कासमी

तुम आ सको तो शब[४] को बढ़ा दूँ कुछ और भी
अपने कहे में सुबह का तारा है इन दिनों

कतील शिफाई

अपनी साँस मिला दी उसने आज हमारी साँसों में,
अब शायद दो चार बरस हम भी जी लें

कतील शिफाई

---

१. आँसू २. भीगी आँख ३. शिष्टाचार ४. रात्रि

हम अपने जिस्म के सारे नशे उसे दे दे
कोइ खलूस[१] से आकर मुतालबा[२] तो करे

फारिग बुखारी

तुम फिर न आ सकोगे, बताना तो था मुझे
तुम दूर जा के बस गए, मैं ढूँढ़ता फिरा

मजीद अमजद

सारी दुनिया के हैं वो मेरे सिवा
मैंने दुनिया छोड़ दी जिनके लिये

अमीर मीनाई

हमने समा लिया है तुझे साँस-साँस में
ये और बात है कि तुझे आगाही[३] नहीं

शाद अझीमाबादी

हमीं झूठे हैं, दगाबाज़ हमीं है, साहब,
हम सितम करते हैं, और आप करम करते हैं

हसरत मोहानी

ये भी नया सितम है, हिना[४] तो लगाये गैर[५]
और दाद उसकी चाहे वो, मुझको दिखा के हाथ

निझाम रामपुरी

हम तो जैसे थे अब भी वैसे हैं
आप कहिये मिज़ाज कैसे हैं ?

अनवर मसउद

बहारों पे रंगत जो छाई हुई है
बदन से तुम्हारे चुराई हुई है

कलीम राही

---

१. निश्छलता २. माँग ३. जानकारी ४. मेंहदी ५. अन्य

मैंने तो दुआओं में फकत माँगा है तुझको
मालूम नहीं मुझको कि है मर्जी-ए-रब[1] क्या ?

इब्राहीम फैझ

इक तुम हो कि पल भर को भुलाए नहीं जाते
इक हम है कि खुद को भी नहीं आए कभी याद

शुहरत बुखारी

हमने भी चाहा तुम्हें, तुमने भी हमको चाहा
और फिर सर से गुज़रते रहे तूफाँ कैसे !

अहमद हमदानी

किसीने मुझको बहुत दूर से पुकारा है
वो आप ही तो नहीं है जरा बता दीजे

जाझिब कुरैशी

कड़े सफर में मुझको छोड़ देने वाला हमसफर
बिछड़ते वक्त अपने साथ सारी धूप ले गया

झेहरा निगाह

मेरी निगाह में कुछ और ढूँढ़ने वाले
तेरी निगाह में कुछ और ढूँढ़ता हूँ मैं

महबूब खिज़ाँ

हमारे और तुम्हारे दरमियाँ जादू का रिश्ता है
धनेरी शाम में उड़ते हुए जुगनू का रिश्ता है

महबूब खिज़ाँ

जी में आता है कि इक रोज़ ये मंज़र[2] देखें
सामने तुझको बिठायें तुझे शब[3] भर देखें

सलीम बेताब

---

१. खुदा की मर्जी २. दृश्य ३. रात्रि

तेरे जमाल[१] की रानाइयों[२] का गीत हूँ मैं
जो हो सके तो मधुर लय में गुनगुना मुझको

आरिफ अब्दुल मतीन

मैंने दुनिया के रवैये[३] की शिकायत की थी
तुमने कुछ और जो समझा तो गलत समझा है

नझीर अली अदील

फिज़ा उदास है, रुत[४] मुझमहिल[५] है, मैं चुप हूँ
जो हो सके तो चला आ, किसीकी खातिर तू

अहमद फराझ

वफापेशा[६] आशिक नहीं देखा तुमने
मुझे देख लो, जाँच लो, आज़मा लो

साइल

तौबा, तौबा, मैं तुम्हें ज़ालिम कहूँ ?
ऐसी गुस्ताखी तुम्हारी शान में ?

नूह नारवी

तेरे सर की कसम, तुझ-सा ही एक महबूबे-सानी[७] है
यही नक्शा, यही अंदाज़, ऐसी ही जवानी है

जिगर मुरादाबादी

आये जो तेरा ज़िक्र किसीकी ज़बान पर
हो गैर भी तो चूम लूँ मुँह इसी बयान पर

अहसन मारहवी

मत पूछ कि क्या हाल है मेरा तेरे पीछे
तू देख कि क्या रंग है तेरा मेरे आगे

ग़ालिब

---

१. रूप २. छटा ३. आचार ४. ऋतु ५. शिथिल ६. एकनिष्ठ ७. अन्य प्रिय पात्र

जिस साज़ को तुम छेड़ो, नग्मात[१] की बारिश हो
जिस तार को हम छू दें, रोने की सदा[२] निकले

अली जव्वाद ज़ैदी

कौन कहता है तेरे दिल में उतर जाऊँगा
मैं तो लम्हा[३] हूँ, तुझे छू के गुज़र जाऊँगा

रशीद कैसरानी

मुझको जो लाया है ये दरिया दिखाने के लिए
वो नहीं उतरेगा पानी में बचाने के लिए

अख़्तर नज़्मी

अपनी हालत का खुद एहसास नहीं है हमको
मैंने औरों से सुना है कि परेशाँ हूँ मैं

अब्दुल बारी आसी

मैं परीशां था, परीशां हूँ, नई बात नहीं
आज वो भी हैं परीशां, खुदा खैर करे

उमर अन्सारी

ये मौसम सुहाना, फिज़ा[४] भीगी-भीगी
बड़ा लुत्फ[५] आता, अगर तुम भी होते

शोरिश कश्मीरी

ये कह-कह के हम दिल को बहला रहे हैं
'वो अब चल चुके हैं, वो अब आ रहे हैं'

जिगर मुरादाबादी

कागज़ के घरौन्दों में इक उम्र बितानी है
इस पर ये हिदायत[६] है, ये बात छिपानी है

रंजना अग्रवाल

---

१. गीतों की २. आवाझ ३. क्षण ४. ऋतु ५. मझा ५. सूचना

यही बहुत है ज़माने में चार दिन के लिये
अगर हयात[१] कटे एक हमखयाल[२] के साथ

शाज़ तम्कनत

तेरे बगैर जीना तो दुश्वार था मेरा
वादा किया तो मौत भी दुश्वार हो गई

अझल पालनपुरी

तुम नहीं तो ज़िंदगी कैसे कटे ?
बात तेरी सुन के मुस्काता हूँ मैं

चिनु मोदी 'इर्शाद'

जो वो हौवा[३] की बेटी है तो मैं आदम का बेटा हूँ
मुझे उसकी ज़रुरत है, उसे मेरी ज़रुरत है

कतील शिफाई

आप को नज़दीक से देखा है आज
दूर से तो सब ही लगते हैं हसीन

वो कहते हैं तुम मुझसे क्या चाहते हो
यही बात मैं जानना चाहता हूँ

हरिचंद अख्तर

वो मुझको चाहती है और मुझ तक आ नहीं सकती
मैं उसको पूजता हूँ और उसको पा नहीं सकता

मजाझ

तेरे माथे पे ये आँचल बहुत ही खूब है लेकिन
तू इस आँचल से इक परचम[४] बना लेती तो अच्छा था

मजाझ

१. जीवन २. समान विचार रखने वाला ३. इव्हा ४. पताका

फिर हम कहाँ, कहाँ तुम, जी भर के देखने दो
अल्लाह ! कितनी मुद्दत तुमसे जुदा रहे हैं

असर लखनवी

जो तूने की सो दुश्मन भी नहीं दुश्मन से करता है
गलत था जानते थे तुझको जो हम महर्बां अपना

मझहर

हमसे मिले न आप तो हम भी न मर गये
कहने को रह गया ये सुखन[१], दिन गुज़र गये

कायम चान्दपुरी

कभू मेरा भी कहना मानियेगा
जो कहा तूने, मैंने माना है

असर लखनवी

फूल थे गैर की किस्मत में अगर ऐ ज़ालिम !
तूने पत्थर ही मुझे फेंक के मारा होता

दाग़

तुम गये तो कभी सहर न हुई
रात ही आयी रोज़ रात के बाद

माजिद देवबंदी

मेरे जीने के लिए एक आसरा दरकार था
आप गम देते गये, मेरी गुज़र होती गयी

शेरी भोपाली

मुसाफिर हैं हम भी, मुसाफिर हो तुम भी
किसी मोड़ पर फिर मुलाकात होगी

बशीर बद्र

---

१. कथन, बात

तुम्हारी शान घट जाती कि रुतबा[1] घट गया होता
जो गुस्से से कहा तुमने वही हँसकर कहा होता

शौकत

कोई तुझ सा भी काश ! तुझको मिले
मुद्दआ हमको इन्तिकाम[2] से है

मीर

मैंने कहा कि दिल से तुझे चाहता हूँ मैं
उसने कहा कि मुझको तेरे दिल की क्या खबर ?

फहीम गोरखपुरी

आपको भी कुछ खबर है, आप जब जाने लगे
आपके बीमार का उस वक्त क्या आलम हुआ ?

अनजान तुम बने रहे यह और बात है
ऐसा तो क्या है तुमको हमारी खबर न हो ?

बेदिल

कहा कहा भी था कुछ, कहा कहा होगा
किसी खयाल में हूँगा, मुझे ख्याल नहीं

महशर अमरोहवी

जब तक बिके न थे तो कोई पूछता न था
तुमने खरीद कर हमें अनमोल कर दिया

कतील शिफाई

मैं सदा दूँ और तू आवाज़ दे
इस भरी दुनिया में मुम्किन क्या नहीं ?

वज़ीर आगा

---

१. इज्जत २. बदला, प्रतिशोध

चली गई मिरे दिल से तो रंजिशें[१] सारी
बता मुझे कि तेरे दिल से भी मलाल[२] गया ?

वज़ीर आगा

मैंने तुझको दिल दिया, तुमने मुझे रुसवा किया
मैंने तुमसे क्या किया, और तुमने मुझसे क्या किया

मोमिन

दिये रहो यूँ ही कुछ और देर हाथ में हाथ
अभी न पास से जाओ बड़ी उदास है रात

फिराक गोरखपुरी

अच्छे इसा हो, मरीजों का खयाल अच्छा है,
हम मर जाते हैं, तुम कहते हो हाल अच्छा है

अमीर मीनाई

यूँ बिछड़ना भी बहुत आसाँ न था उससे मगर
जाते-जाते उसका वह मुड़कर दुबारा देखना

परवीन शाकिर

तर्क-ए-तअल्लुकात[३] पे रोया न तू, न मैं
लेकिन यह क्या कि चैन से सोया न तू, न मैं

खालिद अहमद

बादा[४] फिर बादा है, मैं ज़हर भी पी जाऊँ 'कतील'
शर्त यह है कोई बाँहो में सँभाले मुझको

कतील शिफाई

मुझसे मिलते हुए यह बात तो सोची होती
मैं तेरे दिल में समा जाऊँगा धड़कन की तरह

मुर्तजा बरलास

---

१. मन-मुटाव २. दुःख ३. सम्बन्ध का त्याग ४. शराब

जो तुझ बिन न जीने को कहते थे हम
सो उस अहद[१] को अब वफा कर चले

मीर

तेरी गली में मैं न चलूँ और सबा चले
जब चाहे ये खुदा ही तो बन्दे की क्या चले ?

जलील मानिकपुरी

लूटने वाले हमारी नींद के
रात भर किस चैन से सोते रहे

'साकिब' लखनवी

मिटाकर हमें आप पछताइयेगा
कमी कोई महसूस फर्माइयेगा

जिगर मुरादाबादी

ये तो कहिये, इस खता की क्या सज़ा ?
मैं जो कह दूँ 'आप पर मरता हूँ मैं'

दाग़

मैंने पूजा है हर इक रोज़ तसव्वुर[२] में तुम्हें
दिल के मंदिर में चले आओ इनायत होगी

मुंसिफ[३] हो अगर तुम तो कब इंसाफ करोगे ?
मुजरिम[४] हैं अगर हम तो सज़ा क्यों नहीं देते ?

अहमद फराझ

अब तुझसे बिछड़ के सोचता हूँ
कुछ तूने कहा था ! क्या कहा था ?

अहमद फराझ

---

१. प्रतिज्ञा २. कल्पना ३. इन्साफ करने वाला ४. अपराधी

हमारे पास भी बैठो बस इतना चाहते हैं
हमारे साथ तबीयत अगर तुम्हारी लगे

अहमद फराज़

तेरे होते हुए आ जाती थी सारी दुनिया
आज तन्हा[१] हूँ तो कोई नहीं आने वाला

अहमद फराज़

सख़्त तारीक[२] है दिल की दुनिया
ऐसे आलम में अगर तू चमके

अहमद फराज़

फिर इसी राहगुज़र[३] पर शायद
हम कभी मिल सकें मगर शायद

अहमद फराज़

ज़िंदगी पर इससे बढ़कर तंज़[४] क्या होगा 'फराज़'
उसका ये कहना कि तू शाइर[५] है दीवाना[६] नहीं

अहमद फराज़

अब और क्या किसीसे मरासिम[७] बढाएँ हम
ये भी बहुत है, तुझको अगर भूल जाएँ हम

अहमद फराज़

---

१. अकेला २. अँधेरी ३. मार्ग ४. कटाक्ष ५. कवि ६. पागल ७. मेल-जोल

हिज्र और वस्ल (जुदाई और मिलन)

काट ही लेंगे जुदाई का ज़माना हम तो
देखिये, कैसे गुज़रते हैं महो-साल[1] उसके ?

वज़ीर आगा

बाद मुद्दत के तेरे हिज्र में फिर आज बैठा हूँ दिल को समझाने
हासिले-हुस्नो-इश्क बस है यही आदमी आदमी को पहचाने

फिराक गोरखपुरी

तुझे चाँद बन के मिला था जो, तेरे साहिलों पे[2] खिला था जो
वह था एक दरिया विसाल[3] का, सो उतर गया, उसे भूल जा

अमजद इस्लाम

देख ले बुलबुल-ओ-परवाना की बेताबी को
हिज्र अच्छा, न हसीनों का विसाल अच्छा है

अमीर मीनाई

मंज़ूर हो तो वस्ल से बढ़ कर सितम नहीं
इतना रहा हूँ दूर कि हिजराँ[4] का गम नहीं

मोमिन

आई सहर[5] इधर कि उधर शाम हो गई
दो-दो घड़ी के होने लगे दिन विसाल[6] के

अमीर मीनाई

---

१. मास और वर्ष २. किनारे पर ३. मिलन ४. विरह ५. सुबह ६. मिलन

मैं जाग रहा हूँ हिज्र की शब[१]
पर मेरे नसीब सो रहे हैं

अमीर मीनाई

जानता था कि यह होनी है जुदाई एक दिन
वह अचानक यूँ बिछड़ जायगा – यह सोचा न था

अनवर महमूद खालिद

रोते ही उसको गुज़रे हैं हिज्र में तेरे रात–दिन
हाल मैं क्या बयाँ करूँ 'हसरत'–ए बेकरार[२] का

हसरत मोहानी

वस्ल में रंग उड़ गया मेरा
क्या जुदाई को मुँह दिखाऊँगा ?

मीर

वस्ल में हिज्र का खयाल भी है
दिल को शादी[३] भी है मलाल[४] भी है

अहकर बिहारी

'फानी' उम्मीदे–मर्ग[५] ने भी दे दिया जवाब
जीने की हिज्र में कोई सुरत नहीं रही

फानी बदायूनी

कुछ समझ, क्या था, जो हिज्र में तड़पा किये
नाम लेके तेरा, मर जाना तो कुछ मुश्किल न था

नासिरी

हिज्र की ये रात कैसी रात है
एक मैं हूँ या खुदा की ज़ात है

दाग़

---

१. रात्रि २. दुःखी की कामना ३. खुशी ४. शोक, गम ५. मृत्यु की आशा

क्यों कर बसर हुई शबे-फुर्कत[१] न पूछिये
सब मुझसे पूछिये, ये मुसीबत न पूछिये

नूह नारवी

आह उस आशिके-नाशाद[२] का जीना ऐ दोस्त
जिसको मरना भी तेरे हिज्र में मुश्किल हो जाये

एहसान दानिश

कुछ ऐसी भी गुझरी हैं तेरे हिज्र में रातें
दिल दर्द से खाली हो, मगर नींद न आए

फिराक गोरखपुरी

कहाँ का वस्ल तनहाई ने शायद भेस बदला है
तेरे दम भर के आ जाने को हम भी क्या समझते हैं

फिराक गोरखपुरी

और कुछ देर न गुज़रे शबे-फुर्कत[३] से कहो
दिल भी कम दुःखता है, वो याद भी कम आते हैं

फैझ अहमद 'फैझ'

दिन-रात की ये बेचैनी है, ये आठ पहर का रोना है
आसार[४] बुरे हैं फुर्कत[५] में, मालूम नहीं क्या होना है

अकबर इलाहाबादी

ख्वाब था, या खयाल था, क्या था ?
हिज्र था, या विसाल था, क्या था ?

मुसहफी

---

१. जुदाई की रात २. दुःखी प्रेमी ३. जुदाई की रात्रि ४. लक्षण ५. जुदाई

मिलने को तुमसे दिल तो मेरा बेकरार है
तू आके मिल न मिल, यह तेरा अख्तयार है

आसफुदौला

बलाये हिज्र में जब से फँसी हूँ
मैं अंगारों के उपर लोटती हूँ

बदरआलम बेगम

थी वस्ल में भी फिक्रे-जुदाई[१] तमाम शब
वो आए तो भी नींद न आई तमाम शब

मोमिन

औरों को हिज्र में है सहारा उम्मीद का
मुश्किल मेरे लिए है कि मैं पाकबाझ[२] हूँ

हकीम नातिक

कट तो गई हिज्र की रात
कैसे कटी ये और बात है

शाद अझीमाबादी

क्या कहें हिज्र बुरा और विसाल अच्छा है
यार जिस हाल में रक्खे वही हाल अच्छा है

अहसान रामपुरी

तुझको क्या पायें खो गये हम तो
वस्ल और हिज्र के झमेलों में

फिराक गोरखपुरी

शबे-फिराक[३] में इक दम नहीं करार आया
खुदा गवाह है, शाहिद[४] है आरज़ू तेरी

आतिश

---

१. बिछडने की चिंता २. पवित्र ३. बिरोह की रात ४. साक्षी

शबे-फुरकत[1] की बेताबी से मैं वाकिफ नहीं लेकिन
किसीने जैसे काँटे रख दिये हो मेरे बिस्तर पर

अकबर हैदरी

हिज्र की ज़िन्दगी से मौत भली
कि जहाँ सब कहें विसाल हुआ

शाह हातिम

हिज्र के बाद अगर है वस्ल, तब तो कोई अलम[2] नहीं
रहम है जिसकी इन्तहा[3], फिर वह सितम-सितम नहीं

शाह अझीमाबादी

और तो पास मेरे हिज्र में क्या रक्खा है
इक तेरे दर्द को पहलू में छुपा रक्खा है

हसरत मोहानी

फूल को तोड़ के देखो, असरे-वस्लो-फिराक[4]
मौत है चाहने वालों से जुदा हो जाना

साकिब लखनवी

हो गई खत्म हिज्र की घड़ियाँ
और थोड़ी सी रात बाकी है

नूह नारवी

गम हिज्र का हम हिज्र के मारों से तो पूछो
दिन चाहे गुज़र जाये, मगर रात कटे ना

जाँनिसार अख्तर

१. वियोग की रात २. दुःख ३. अंत ४. मिलन और विरह का प्रभाव

हमको जीना पड़ेगा फुर्कत[१] में
वो अगर हिम्मत आज़माने लगे

हाली

आधी से ज़्यादा शबे-गम[२] काट चुका हूँ
अब भी अगर आ जाओ तो ये रात बड़ी है

साकिब लखनवी

न अजां[३] हो, न सहर[४] हो, न गजर[५] हो शबे-वस्ल[६]
क्या मज़ा हो जो किसीको न जगाए कोई

अहसन मारहरवी

हिज्र की रात काटने वाले
क्या करेगा अगर सहर न हुई ?

अझीझ लखनवी

शबे-फिराक[७] ज़िक्रे-जवानी में कट गई
क्या रात थी कि एक कहानी में कट गई

अझीझ लखनवी

शबे-गम किस तरह गुज़री, शबे-गम इस तरह गुज़री
न तुम आए, न चैन आया, न मौत आई, न ख्वाब आया

नूह नारवी

तेरे फिराक की रातें कभी न भूलेंगी
मज़े मिले इन्हीं रातों में उम्र भर के मुझे

नासिर रझा

---

१. जुदाई २. जुदाई की रात ३. अज़ान ४. सुबह ५. घंटियों की आवाज़
६. मिलन की रात ७. विरोह की रात

बाकी है अभी चार पहर रात का झगड़ा
ऐ शमा-ए-हिज्र[1] मेरा साथ दिए जा

नूह नारवी

आज आँखों में काट दे शबे-हिज्र[2]
ज़िन्दगानी पड़ी है सो लेना

फिराक गोरखपुरी

ऐ हुस्न, हमको हिज्र की रातों का खौफ क्या
तेरा खयाल जागेगा, सोया करेंगे हम

मुइन हसन जझ्बी

फुर्कत की रात रोज़े-कयामत[3] से कम नहीं
ऐ दोस्त, बार-बार खुदा याद आ गया

अब्दुल कयूम अझमत

तेरे फिराक के गम ने बचा लिया सबसे
मेरे करीब कोई अब बला नहीं आती

जिगर मुरादाबादी

मेरी हालत तेरी फुर्कत में सँभल जाएगी
क्या ये दुनिया है कि दो दिन में बदल जाएगी

जोश मलिहाबादी

वस्ल[4] की रात न जाने क्यों इसरार[5] था उनको जाने पर
वक्त से पहले डूब गए, तारों ने बड़ी दानाई[6] की

कतील शिफाई

---

१. जुदाइ की रात के दीये २. जुदाई की रात ३. प्रलय का दिन ४. मिलन ५. आग्रह, हठ ६. बुद्धिमानी

ये ठीक है नहीं मरता कोई जुदाई में
खुदा किसीसे किसीको मगर जुदा न करे

कतील शिफाई

मिलने और बिछड़ने को मैं इस दुनिया की रीत कहूँगा
अपना जी बहलाने को फिर नज़्में, गज़लें, गीत कहूँगा

कतील शिफाई

मैं भी कब से चुप बैठा हूँ, वो भी कब से चुप बैठी है
है ये विसाल[१] की रस्म अनोखी, ये मिलने की रीत नई है

अमीक हन्फी

हिज्र में है कौन कितना बेकरार
लेकिन इन बातों में अब क्या रह गया

हमीद अल्मास

तेरे विसाल[२] की क्या आरज़ू हो दिल में कि अब
तेरे बगैर तबीअत उदास भी तो नहीं

मुहसिन एहसान

कितना ही बे-किनार समंदर हो, फिर भी दोस्त
रहता है बेकरार[३] नदी के मिलाप को

शिकेब जलाली

तुझको इन नींद की तरसी हुई आँखों की कसम
अपनी रातों को मेरे हिज्र में बर्बाद न कर

जोश मलिहाबादी

बैठे हैं तेरे दर पे, कुछ कर के उठेंगे
या वस्ल ही हो जाएगा या मर के उठेंगे

हफीझ जालंधरी

---

१. मिलन २. मिलन ३. व्याकुल

वस्ल का दिन और इतना मुख़्तसर[१]
दिन गिने जाते थे इस दिन के लिए

अमीर मीनाई

मेरी ज़िंदगी तो गुज़री तेरे हिज्र के सहारे
मेरी मौत को भी प्यारे कोई चाहिये बहाना

जिगर मुरादाबादी

रात कम है, न छेड़ हिज्र की बात
ये बड़ी दास्तान है प्यारे

हाफिझ जालंधरी

एवज़[२] ले लिया हिज्र का मैंने मर के
वो तुरबत[३] पे रोते थे मैं सो रहा था

साकिब लखनवी

हुस्न

किया इक सिज्दा[४] मैंने हुस्न को तो हो गया काफिर
अगर सर काटकर कदमों पे रख देता तो क्या होता ?

सीमाब अकबराबादी

हुस्न और मेहरबानी, इश्क और शादमानी[५]
ऐसा कभी न होगा, ऐसा कभी हुआ है ?

जोश मलसियानी

---

१. संक्षिप्त २. बदला ३. कब्र ४. प्रणाम ५. प्रसन्नता

जो बयाने-इश्क भी समझे, ज़बाने-हुस्न भी
आपकी महफिल में ऐसा राज़दाँ कोई नहीं

अलम मुझफ्फरपुरी

किसीको हुस्न दिया और किसीको माल दिया
गरीब जान के उसने मुझीको टाल दिया

शाद अझीमाबादी

रहने दे हुस्न का ढका परदा
वक्त-बेवक्त झाँकता क्या है ?

यगाना चंगेझी

हुस्न आया था खुद मनाने को
सो तवज्जह ही इश्क ने कम की

जिगर मुरादाबादी

फूल, गुल, शम्स-ओ-कमर[१] सारे ही थे
पर हमें उनमें तुम्हीं भाये बहुत

मीर

जो हुस्नो-इश्क की रुदाद[२] से हैं बेगाने[३]
वो क्या समझ के चले आये मुझको समझाने

अयूब

जिसे न हुस्न से मतलब न इश्क से सरोकार
वो शख्स मुझको बहुत बदनसीब लगता है

जाँनिसार अख्तर

मैंने अक्सर तराश कर देखा
हुस्न देता है पत्थरों को गुरुर

जमील नझर

---

१. सूर्य और चंद्र २. कहानी, वृत्तांत ३. अनभिज्ञ

सूरत तुझे हक[१] ने दी परी-सी
पर आदमीयत न दी जरी-सी

अफसोस

हुस्न उसका अब समाँ कुछ और दिखलाने लगा
चाँद-सा परदे से वो मुखड़ा नज़र आने लगा

मुसहफी

जो जलवा[२] सनम[३] तुझमें हम देखते हैं
खुदा की खुदाई में कम देखते हैं

नवाब आसफुद्दौला

'अमीर' उस रास्ते से जो गुज़रते हैं वो लुटते हैं
मुहल्ला है हसीनों का कि कज़्ज़ाकों की[४] बस्ती है

अमीर मीनाइ

उनके ही हो जाएँगे सब उनकी सूरत देखकर
कौन मेरा हमखयाल-ओ-हमज़बाँ[५] रह जायेगा ?

अर्श मेरठी

नाक में नथ पहनी है वास्ते ज़ीनत[६] के लिए नहीं
हुस्न को नाथ रक्खा है कि न जाये और कहीं

मार्का[७] है आज हुस्नो इश्क का
देखिए, वो क्या करे, हम क्या करें

दाग़

---

१. खुदा २. रूप की शोभा ३. माशूक ४. लुटेरों की ५. एक ही भाषा और विचार वाले ६. शोभा ७. प्रतियोगिता

हुस्न को एक हुस्न ही समझे नहीं हम ऐ 'फिराक'
मेहरबाँ[१] ना-मेहरबाँ[२], क्या क्या समझ बैठे थे हम

फिराक गोरखपुरी

ये हुस्नों इश्क में क्या रब्त[३] है खुदा जाने
चिरागे-बज़्म[४] को लौ दे[५] रहे हैं परवाने[६]

मेहदी शेखपुरवी

तू जो चाहे कि रहे हुस्न पे मगरुर[७] सदा
ये गलत है, नहीं निभने का ये दस्तूर[८] सदा

धासीराम खुशदिल

असरे-हुस्ने-यार से[९] आखिर
आ गई इश्क में भी रानाई[१०]

हसरत

कमसिनी का हुस्न था वो, ये जवानी की बहार
था यही तिल पहले भी रुख[११] पर मगर कातिल न था

माजिद

अपनी सूरत[१२] को जो कहते हो ये सूरत क्या है ?
तुमको युसुफ[१३] कहें हम इसकी ज़रूरत क्या है ?

मुबारक अझीमाबादी

लाख परदा करो ज़माने से
हुस्न छिपता नहीं छिपाने से

मुनव्वर खाँ असर

---

१. दयालु २. निर्दय ३. संबंध ४. महेफिल का दीपक ५. दीपक की बत्ती तेज करना ६. पतंगे ७. गर्वित ८. रीति, रसम ९. प्रेयसी की सुंदरता के प्रभाव से १०. सुन्दरता ११. चेहरा १२. रुप १३ एक पैगंबर जो बेहद खूबसूरत थे

तेरी सूरत को देखता हूँ मैं
उसकी कुदरत को देखता हूँ मैं

दाग़

कुछ न कुछ हुस्न भी तो है मुजरिम
सबका सब आँख का गुनाह नहीं

मंजूर आरिफ

जो आईने ने दिखाया वही है हुस्न तेरा
कि वो जो अब मेरे नग्मात में[१] झलकता है

फिराक गोरखपुरी

तू हुस्न है, मैं इश्क हूँ, तू जान है, मैं जिस्म[२]
किसकी है ये ताकत कि मुझे तुझसे छुड़ा दे

जिगर मुरादाबादी

रात में किसने यह चेहरे से उलट दी है नकाब
रौशनी चाँद सितारों की बढ़ाई किसने ?

अनवर आगेवान

तुमने गुलशन में अगर पाँव न रक्खा होता
रुत बहारों की दरख्तों पे[३] न छाई होती

अनवर आगेवान

वो हुस्न है कि कब्ज़ा करे दो जहान पर
वो इश्क है कि कुछ न रहे इख्तियार[४] में

हुस्न बरेलवी

---

१. गीतों में २. शरीर ३. वृक्षों पर ४. अधिकार

हुस्ने-सूरत[१] के लिए खूबिये-सीरत[२] है ज़रुर
गुल वही जिसमें कि खुशबू भी हो रंगत के सिवा

आसी जौनपुरी

यूँ रोबे-हुस्न[३] था कि बन आई न हमसे बात
यूँ हाले-दिल कहा कि न कहना कहें जिसे

तिलोकचंद महरुम

हुस्न से बेहतर नहीं जादू कोई
हुस्न से बढ़कर कोई अफसूँ[४] नहीं

चोंच मुझतर

बेमानी[५] है इश्क कि जिसमें कशिश[६] न हो
दिलचस्प न हो हुस्न तो सूरत हराम है

आतिश

गर हुस्न नहीं इश्क भी पैदा नहीं होता
बुलबुल गुल-ए-तस्वीर पे शैदा नहीं होता

धूम है जब से तुम्हारे हुस्न की
मिश्र में यूसुफ का है बाज़ार बंद

तोताराम शायाँ

तुम्हारे हुस्न की तशबीह[७] चाँद से क्या हो
वो सिर्फ दूर से प्यारा दिखाई देता है

अहसन मुरादाबादी

---

१. रुप, सौंदर्य २. चरित्र की सुंदरता ३. सौंदर्य का दबदबा ४. मंत्र, ईंद्रजाल
५. व्यर्थ ६. आकर्षण ७. उपमा

ये नशा भी क्या नशा है, कहते हैं जिसे हुस्न
जब देखिए इक नींद सी आँखों में भरी है

जिगर मुरादाबादी

नासेहा दिल से न जाएगा ख्याले-हुस्ने-यार[१]
कौन खो देता है दौलत, हाथ में आई हुई

मुंशी अंबर प्रसाद

तुम्हारे हुस्न की जलवागरी[२] देखी नहीं जाती
झपक जाती हैं पलकें, रोशनी देखी नहीं जाती

'फूलक'

टूटते हैं रात भर तारें, ये रोबे-हुस्न है
बेखबर, यूं कोठे पर न सोया कीजिए

नासरीन

रात रोशन है बड़ी आज, कोई बात तो है
क्या तेरे हुस्न के जलवे में नहा आई है

शान्ता बाली रोशन

तुमने तो अपने हुस्न को महफूझ[३] कर लिया
हम किसके साथ उम्रे-मुहब्बत बसर करें ?

सीमाब अकबराबादी

तेरे जमाल[४] को दिल में बसा लिया मैंने
तुम्हारा हुस्न मेरी आशिकी में चमका है

सफदर हुसैन

ये मय[५] छलक के भी उस हुस्न को न पहुँच सकी
ये फूल खिल के भी तेरा शबाब हो न सका

अख्तर शीरानी

---

१. माशूक की खूबसूरती का विचार २. तड़क-भड़क का प्रदर्शन ३. भली भाँति रक्षित
४. खूबसूरती ५. शराब

ये नाज़े-हुस्न[१] तो देखो कि दिल को तड़पाकर
नज़र मिलाते नहीं मुस्कुराए जाते हैं

जिगर मुरादाबादी

नज़र उस हुस्न पर ठहरे तो आखिर किस तरह ठहरे
कभी जो फूल बन जाए कभी रुखसार[२] हो जाए

असगर गोंडवी

एक सी शोखी खुदा ने दी है हुस्न-ओ-इश्क को
फर्क बस इतना कि वो आँखो में है ये दिल में है

मीर झामिन अली 'झलाल'

मैं तो इस छुपने के सदके[३] कि ये ज़िद है उन्हें
हुस्न को इश्क की सूरत में 'जिगर' देख न लें

जिगर मुरादाबादी

इतने हिजाब[४] पर तो ये आलम है हुस्न का
क्या हाल हो जो देख लें परदा उठा के हम

जिगर मुरादाबादी

ऐ हुस्न, जो सज़ाए-तमन्ना[५] हो वो कुबूल
लेकिन मेरी नज़र को फिर एक बार देखकर

दिल शाहजहाँ पुरी

रात महफिल में तेरे हुस्न के शोले[६] के हुज़ूर
शमा के मुँह पे जो देखा तो कहीं नूर[७] न था

ख्वाजा मीर दर्द

---

१. खूबसूरती की अदा २. गाल, कपोल ३. बलिहारी ४. लज्जा-परदा ५. कामना के लिए सजा ६. आग ७. प्रकाश

अल्लाह ! अल्लाह ! हुस्न की ये पर्दादारी[१] देखिये
भेद जिसने खोलना चाहा वो दीवाना हुआ

आरज़ू लखनवी

देखना भी तो उन्हें दूर से देखा करना
शेब-ए-इश्क[२] नहीं हुस्न को रुसवा[३] करना

हसरत मुहानी

कहीं न हुस्न के शोले से सहने-बाग जले
बे-नकाब कहाँ तुम चले, चिराग जले ?

अब ये आलम है, तेरे हुस्न की खैर
होशो-मस्ती में इम्तियाज़[४] नहीं

नवाब जान खाँ आरिफ

कुछ तो उस हुस्न को जाने है ज़माना सारा
और कुछ बात चली है मेरे अहबाब[५] से भी

अहमद फराज़

क्या हुस्न, क्या जमाल है, क्या रंग रूप है
वो भीड़ में भी जाये तो तन्हा दिखाई दे

कृष्ण बिहारी 'नूर'

हुस्न ने उसको चुन लिया ऐ 'बर्क'
इश्क ने हमको इन्तिखाब[६] किया

बर्क लखनवी

तुम हुस्न हो, मैं इश्क हूँ, तुम जान हो, मैं जिस्म[७]
मेरा जवाब है ना तुम्हारा जवाब है

जिगर मुरादाबादी

---

१. पर्दा करना २. प्यार का दस्तूर ३. बदनाम ४. भेद ५. मित्र ६. पसंद ७. शरीर

जन्नत को उनके हुस्न से पहचानता हूँ मैं
जन्नत है उनकी सूरते-झेबा[१] मेरे लिये

आबिद लाहौरी

फिक्र अपनी है न गैरों का तमन्नाई है
दिल अझल[२] ही से तेरे हुस्न का शैदाई[३] है

खलिश कादरी

सूरतें क्या - क्या मिली हैं खाक में
है दफीना-हुस्न[४] का ज़ेरे-ज़मीं[५]

ख्वाजा मीर दर्द

करेंगे ज़िक्र तेरे हुस्न का भी
अगर फुरसत मिली कारे जहाँ से[६]

साबिर अंबोहरी

खुद हुस्न तड़पता है कि चाहे उसे कोई
क्या है ये, अगर इश्क का एजाझ[७] नहीं है !

उमर अंसारी

हुस्न खुद ही इश्क का पैगाम[८] है
आँख मेरी मुफ्त में बदनाम है

हुस्न खुद आये तवाफे-इश्क[९] करने के लिए
इश्क वाले ज़िंदगी में हुस्न तो पैदा करें

---

१. सुंदर चेहरा २. शुरुसे ३. वह जो किसी पर आशिक हो ४. खूबसूरती का खजाना ५. जमीं के नीचे ६. संसार की झंझटों से ७. करामात ८. संदेश ९. प्रेम की प्रदक्षिणा

हुस्न का दरिया फिज़ा[१] में हर तरफ लहराय है
देखता है दिल, नज़र की नाव डूबी जाय है

आरज़ू लखनवी

अजब तेरी है ऐ महबूब[२] सूरत
नज़र से गिर गये सब खूबसूरत

आतिश

अझल[३] से हुस्न-परस्ती[४] लिखी थी किस्मत में
मेरा मिझाज लड़कपन से आशिकाना था

रहमत

जिसके लिए मैं गज़लें कहता रहा 'कतील'
उसका सारा हुस्न मेरे दीवान[५] में है

कतील शिफाई

पसंद आई न तेरे हुस्न की तारीफ यारों को
गज़ल मैंने कही तुझ पर, हुइ तकलीफ यारों को

कतील शिफाइ

सिर्फ इस शौक से पूछी है हज़ारों बातें
मैं तेरा हुस्न, तेरे हुस्न-ए-बयाँ[६] तक देखूँ

अहमद नदीम कासमी

उस हुस्न का शेवा[७] है, जब इश्क नज़र आये,
परदे में चले जाना, शरमाये हुए रहना

मुनीर नियाझी

---

१. बहार २. प्रिय ३. आदि काल से ४. सौंदर्य की भक्ति ५. गज़लों का संग्रह
६. कथन की सुंदरता ७ शैली

हुस्न को आता है जब अपनी ज़रूरत का खयाल
इश्क पर लुत्फ[१] की बरसात भी हो जाती है

अदम

दिया था हुस्न कस्मा मे-अझल[२] ने जब हसीनों को
तो क्या ये भी कहा था हुस्न पर मगरुर हो जाना ?

हुस्न और इश्क में गर है तो मुश्किल एक है
उस तरफ सारी खुदाई[३] है, इधर दिल एक है

अझीझ लखनवी

हुस्न में और इश्क में जब राबता[४] कायम हुआ
गम बना दिल के लिए और दिल बना मेरे लिए

पं. अमरनाथ साहिर

हुस्न के खिलते फूल हमेशा बेदर्दों के हाथ बिके
और चाहत के मतवालों को धूल मिली वीरानों की

साहिर लुधियानवी

अच्छी सूरत भी क्या बुरी शै[५] है !
जिसने डाली बुरी नज़र डाली

सैफ टौंकी

देखना है हुस्न के जलवे तो बूतखाने में आ
तेरे काबे में तो बस वाइज ! खुदा का नाम है

चकबस्त

हुस्न वाले मेरे कातिल है - ये दावा है मेरा
हुस्न वालों को सज़ा हो, मुझे मंज़ूर नहीं

हफीझ जालंधरी

---

१. आनन्द २. ईश्वर ३. संसार ४. सम्बन्ध ५. वस्तु

मुझ से मत पूछ, 'मेरे हुस्न में क्या रक्खा है ?'
आँख से पर्दा-ए-झुल्मात[१] उठा रक्खा है

मजाझ

हँसी-दिल्लगी

शेखजी घर से न निकले और लिखकर दे दिया
आप बी.ए. पास हैं तो बन्दा बीबी पास है

अकबर इलाहाबादी

बोला चपरासी जो मैं पहुँचा ब-उम्मीदे-सलाम-
'फाँकिये खाक आप भी, साहब हवा खाने गये'

अकबर इलाहाबादी

बर्क के लैम्प से आँखों को बचाये अल्लाह
रौशनी आती है और नूर चला जाता है

अकबर इलाहाबादी

मय भी होटल में पियो, चन्दा भी दो मस्जिद में
शेख भी खुश रहे, शैतान भी बेझार[२] न हो

अकबर इलाहाबादी

कौम के गम में डिनर खाते हैं हुक्काम[३] के साथ
रंज लीडर को बहुत है, मगर आराम के साथ

अकबर इलाहाबादी

१. अँधेरों का पर्दा २. नाखुश ३. हुकूमत करने वाले

तुम बीबियों को मेम बनाते हो आजकल
क्या गम जो हमने मेम को बीबी बना लिया ?

अकबर इलाहाबादी

खुश-नसीब आज यहाँ कौन है गौहर[१] के सिवा
सब कुछ अल्लाह ने दे रक्खा है शौहर[२] के सिवा

अकबर इलाहाबादी

मैंने पूछा, तुम्हे, मुझसे मुहब्बत है कि नहीं ?
हँस के फरमाया - 'नहीं अब तक, मगर हो जायगी'

अकबर इलाहाबादी

जरा सी देर हो जायगी तो क्या होगा ?
घड़ी-घड़ी न उठाओ नज़र घडी की तरफ

अकबर इलाहाबादी

उनसे बीबी ने फकत स्कूल ही की बात की
ये न बतलाया, कहाँ रक्खी है रोटी रात की

अकबर इलाहाबादी

फिरंगी से कहा - पेन्शन भी लेकर बस यहीं रहिये
कहा - जीने को आये हैं, यहाँ मरने नहीं आये

अकबर इलाहाबादी

बोले वो मुझसे दीन[३] की इस्लाह[४] फर्ज़ है
मैं चल दिया ये कह के-कि आदाब अर्ज़ है

अकबर इलाहाबादी

---

१. कलकत्ता की मशहूर नृत्यांगना २. पति ३. धर्म ४. संशोधन

हूर मिस को मए-गुलगूँ[1] को परी कहते हैं
शेख खुश हों कि खफा, हम तो खरी कहते हैं

अकबर इलाहाबादी

'अकबर' दबे नहीं किसी सुलताँ की फौज से
लेकिन शहीद हो गये बीबी की नौज[2] से

अकबर इलाहाबादी

---

१. गुलाबी शराब २. ना, इन्कार

नोंध

ગુલિસ્તાઁ-એ-શાયરી

સંપાદક : નટવર ભટ્ટ

નટવર ભટ્ટ

નટવર ભટ્ટ ઉર્દૂ શાયરીના ગુલશનમાં છ દાયકાથી વધુ સમયથી ફરી રહ્યા છે. એ દરમિયાન એમણે લાખો શેરોમાંથી એવા શેરોને પસંદ કર્યા છે, જેમાંથી જિંદગીની ઝલક જોવા મળે છે. એમણે જોશ મલિહાબાદી, જિગર મુરાદાબાદી, ફિરાક ગોરખપુરી, બશીર બદ્ર, નિદા ફાઝલી, જાઁનિસાર અખ્તર, કૈફી આઝમી, અલી સરદાર જાફરી, સાહિર લુધિયાનવી વગેરે શાયરોને મુશાયરામાં ખૂબ ખૂબ માણ્યા છે.

આ ઉપરાંત મિરઝા ગાલિબ, મીર તકી મીર, અલ્લામા ઈકબાલ, મોમિન, મિરઝા દાગ, બહાદુર શાહ 'જફર' જૌક વગેરે અનેક શાયરોના એ શેરો પસંદ કર્યા છે, જેની ખુશબૂ આપણાં દિલ અને દિમાગને હંમેશાં મહેકાવતી રહેશે.

પાકિસ્તાની શાયરી પણ એમની નજરમાં રહી છે. ફૈઝ અહમદ 'ફૈઝ', અહમદ ફરાઝ, કતીલ શિફાઈ, પરવીન શાકિર, ઝેહરા નિગાહ, અદા જાફરી અહમદ નદીમ કાસમી, વગેરેના શેરો પણ તમારું દિલ ઝખ્મી કરવાની સાથે-સાથે મરહમ લગાવવાનું પણ કામ કરે છે.

ગુલશનમાં હજારો રંગબેરંગી ફૂલો ખીલે છે પરંતુ એમાંના કેટલાક ફૂલોમાં એવી ભીગી-ભીગી મહેક હોય છે, જે આપણાં મનને મુગ્ધ કરે છે.

આવા શેરોનો ગુલદસ્તો 'ગુલિસ્તાઁ-એ-શાયરી' શેરો-શાયરીના ચાહકોની ખિદમતમાં પેશ કરે છે.

નટવર ભટ્ટ

"હમારે મેલ મેં કુદરત કા હાથ શામિલ હૈ,
ચલો, મૈં ખાર સહી, આપ અગર ગુલાબ હુએ."